ज़ख़ीरा -ए- मालूमात

चारों हिस्सा 1-4

लेखक
मौलाना मुहम्मद ग़ुफ़रान रशीदी कैरानवी

हिन्दी अनुवाद
मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

ज़ख़ीरा
-ए-
मालूमात

(पहला हिस्सा)

लेखक

मौलाना मुहम्मद गुफ़रान रशीदी कैरानवी

हिन्दी अनुवाद

मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

RELIABLE SHOP
Badi Masjid (Markaz) Gali,
Ranitalav, SURAT-395003.
Mo. 98981-36436

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताबः

ज़ख़ीरा-ए-मालूमात
(पहला हिस्सा)

लेखकः

मौलाना मुहम्मद ग़ुफ़रान रशीदी कैरानवी

हिन्दी अनुवादः

मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

कम्पोज़िंगः अब्दुल तव्वाब

बा एहतिमामः

फ़िरोज़ ख़ान

प्रकाशकः

فرید بکڈپو (پرائیوٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

Zakheera-e-Ma'lumaat (Part I)

By: Maulana Muhammad Ghufran Rashidi Kairanvi

Pages: 100 Edition: 2014 Size: 23x36/16

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

विषय-सूची

❑ ❑ ❑

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इंतिसाब

हर मुसन्निफ़ (लेखक) अपनी किताब का किसी न किसी की तरफ़ इंतिसाब किया करता है, बन्दा भी इस किताब का इंतिसाब अपने मादर-ए-इल्मी अशरफ़ुल उलूम गंगोह की तरफ़ करने की सआदत हासिल करता है, जिसके तुफ़ैल इस काविश के क़ाबिल हुआ।

—मुहम्मद गुफ़रान कैरानवी
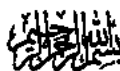
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी शर्र-फ़ नौअल इन्सानि व फ़ज़्ज़-ल-लहू अ़ला जमीअ़िल हैवानाति बि नेअ़्मतेे-अन-नुत्क़ि वल बयानि व अहमदुहू हम्दन दाइमन अ-ब-दन बिहक़्क़िल एहसानि वस्सलातु वस्सलामु अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िहिल मख़्सूसि बिल आयातिल बय्यिनाति कुल्लल बयानि व अ़ला आलिही व सहबिही सलातंव् व सलामन यदूमानि मादामल मलवानि व यब्क़ियानि फ़ी कुल्लि ज़मानिंव्-व अवानिन अम्मा बाद!

हक़ जल्ल मज्दुहू का बे पायाँ करम व एहसान है कि उसने बन्दे को क़ीमती और नादिर मालूमात का एक मज्मूआ़ ख़्वास व अ़वाम के सामने पेश करने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाई है।

बहुत से अहले इल्म व अहले तहक़ीक़ हज़रात अ़जीब व ग़रीब और नादिर मालूमात व तहक़ीक़ात हासिल करने का ज़ौक़ रखते हैं और इस बात की ख़्वाहिश करते हैं कि ऐसी कोई किताब सामने आए जो मुख़्तलिफ़ क़िस्म के सवालात के जवाबात और नई और उम्दा मालूमात पर मुश्तमिल हो। बन्दे ने इस ज़रूरत को महसूस करते हुए अपनी इस किताब में मोतबर किताबों के हवालों से सवाल व जवाब के अन्दाज़ पर नादिर मालूमात और अ़जीब व ग़रीब तहक़ीक़ात पेश की हैं।

बहुत से वे लोग जो उर्दू बोर्ड से 'अदीब माहिर' 'आ़लिम' 'फ़ाज़िल' 'कामिल' वग़ैरह के इम्तिहानात देते हैं, वे अपने पर्चों में आए हुए सवालों के जवाब और उनका हल तलाश करने में परेशान रहते हैं, यह किताब उन लोगों के लिए भी इन्शाअल्लाह काफ़ी हद तक मुफ़ीद और मददगार साबित होगी। ख़ुदावन्दे

करीम इसको क़ुबूल फ़रमा कर अ़वाम और ख़वास के लिए नाफ़े बनाए। आमीन

बन्दे का किताब लिखने के मैदान में यह पहला क़दम है, इसलिए पढ़ने वालों से दरख़्वास्त है कि बन्दे की हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाएं और इस किताब में जो कोताही और ग़लती नज़र आए, उसको हदफ़-ए-तन्क़ीद (नुक्ता चीनी निकालना) न बनाते हुए बन्दे को मुत्तला फ़रमाएं, ताकि आइन्दा इस्लाह के साथ पेश किया जा सके।

यह जो कुछ आप देख रहे हैं मौला-ए-करीम का फ़ज़्ल व एहसान और मेरे मुश्फ़िक़ असातिज़ा किराम की नज़र-ए-करम और तवज्जोहात का समरा है, अल्लाह इन हज़रात को अज्रे अज़ीम अ़ता फ़रमाए और बन्दे की इस काविश को क़ुबूल फ़रमाकर आख़िरत के लिए तौशा बनाए। आमीन

—दुआ का तालिब

मुहम्मद ग़ुफ़रान कैरानवी

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुताल्लिक़ चीज़ें

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्रील अलैहिस्सलाम फ़रिश्ते को उनकी असली सूरत में कितनी बार देखा और किस किस वक़्त देखा?

जवाबः— हुज़ूर-ए-अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को असली शक्ल में पूरी ज़िन्दगी में सिर्फ़ चार बार देखा।

❶ एक उस वक़्त जबकि आप सल्ल० ग़ार-ए-हिरा में मौजूद थे और हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ऐ जिब्रील! मुझको अपनी असली शक्ल दिखलाओ तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने असली शक्ल दिखला दी।

❷ दूसरे मेराज में, यानी सिद्रतुल मुन्तहा पर।

❸ तीसरे मक्का के मुक़ाम अजयाद पर और यह वाक़िआ ज़माना-ए-नुबुव्वत के क़रीब पेश आया।[1] (फ़तहुल बारी, हिस्सा 1, पेज 18, 19, मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 1, पेज 24, तफ़्सीर-ए-ख़ाज़िन, हिस्सा 4, पेज 191)

❹ चौथे उस वक़्त जबकि आपके चचा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्ल० से अर्ज़ किया था कि मैं हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को उनकी असली सूरत में देखना चाहता हूँ। पहले तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना किया कि तुम देख न सकोगे। उन्होंने अर्ज़ किया, आप दिखा दीजिए। आप सल्ल० ने फ़रमाया, बैठ जाओ। वह बैठ गए और हज़रत जिब्रील

1. पहले दो वाक़िए तो सही सनद से साबित हैं, अलबत्ता यह तीसरा वाक़िआ सनद के ऐतिबार से कमज़ोर होने की वजह से मश्कूक है। (मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 1, पेज 24)

अलैहिस्सलाम काबे पर उतरे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, निगाह उठाओ। उन्होंने निगाह उठाकर देखा, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम का जिस्म हरे ज़ुबरजद यानी ज़मुर्रद-ए-सब्ज़ (हरे रंग का क़ीमती पत्थर) की तरह चमकता हुआ था। तो हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ताब न लाकर ग़श खा कर गिर गए।

(नशरुत्तीब, पेज 173, बैहक़ी दलाइलुन्नुबुव्वत व तबक़ाते इब्ने साद, अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से)

सवालः— हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुन्नियत अबू इब्राहीम किसने रखी?

जवाबः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आख़िरी ज़माना था। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और यह कहकर आवाज़ दी 'या अबा इब्राहीम!' जिससे आपकी कुन्नियत अबू इब्राहीम हो गई। (मुस्तदरक हाकिम)

(अज़ इफ़ादातुश्शेख़ अल उस्ताज़ अल मोहतरम हज़रत मौलाना वसीम अहमद साहब दामत बरकातुहुम)

सवालः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मोंढों के दर्मियान नुबुव्वत की मुहर लगाने वाले कौन हैं? और नुबुव्वत की मुहर पर क्या लिखा हुआ था?

जवाबः— जन्नत के दरबान रिज़वान ने आपके मोंढों के दर्मियान नुबुव्वत की मुहर लगाई थी और आपकी नुबुव्वत की मुहर पर लिखा हुआ था:

'सिर फ़ अन्-त मंसूरुन' और कुछ लोगों का कहना है कि उस पर लिखा हुआ था।

'मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' (ख़साइस-ए-नबवी, पेज 16, शरफ़ुल मुकालमा, पेज 20)

सवालः— जन्नत में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शादी दुनिया की किन किन औरतों से होगी?

जवाबः— जन्नत में आपकी शादी दुनिया की तीन औरतों से होगी।

1. मरयम बिन्ते इम्रान, 2. आसिया, फ़िरऔन की बीवी, 3. कुलसूम (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वह बहन जिसने फ़िरऔन को मूसा अलैहिस्सलाम के लिए दूध पिलाने वालियों की तरफ़ रहनुमाई की थी)

(हाशिया जलालैन, हिस्सा 2, पेज 327, पारा न० 20)

सवालः— आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद नुबुव्वत की मुहर बाक़ी रही थी या नहीं?

जवाबः— हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के बाद नुबुव्वत की मुहर ख़त्म हो गई थी। इसी वजह से मुझको यक़ीन हो गया था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम विसाल फ़रमा गए। (ख़साइल-ए-नबवी, पेज 16)

सवालः— हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक सीना कितनी बार चाक किया गया, किस वजह से किया गया और किसने चाक किया?

जवाबः— आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुबारक सीना चार बार चाक किया गया।

● बचपन में, जबकि आपकी उम्र तीन साल की थी, ताकि खेल-कूद और बचपने का शौक़ व रग़बत निकल जाए।

● जंगल में, जबकि आप की उम्र दस साल की थी, ताकि जवानी के ज़माने की कुव्वते शहवानिया व ग़ज़बिया ख़त्म हो जाए।

● ग़ारे हिरा में! जबकि नुबुव्वत मिलने का वक़्त क़रीब आया, ताकि आपके अन्दर अल्लाह की वही के अन्वार व बरकात बर्दाश्त करने की ताक़त पैदा हो जाए और यह वाक़िआ माहे रमज़ान या माहे रबीउल अव्वल में पेश आया।

● मेराज की रात में, ताकि आपके क़ल्बे मुबारक में आलम-ए-मलकूत की सैर, आलम-ए-अरवाह और उन तजल्लियात और चमकते हुए अन्वार का मुशाहदा करने की ताक़त पैदा हो जाए, जिनके देखने से दिल में वहशत आ जाती है।

शरफ़ुल मुकालमा, मुसन्निफ़ः हज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ाँ

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तलवार का नाम क्या था और आपने वह तलवार किसको इनायत फ़रमा दी थी?

जवाबः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तलवार का नाम ज़ुलफ़िक़ार था और आपने यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दे दी थी। (लामिउद्दारी)

सवालः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कितनी मिक़्दार पानी से वुज़ू और ग़ुस्ल फ़रमाते थे?

जवाबः— वुज़ू तो एक मुद्द पानी से करते थे और ग़ुस्ल एक साअ़ से।

(बुख़ारी, पेज 33, तिर्मिज़ी, पेज 18, अबू दाऊद, पेज 13)

सवालः— मुद्द और साअ़ की मिक़्दार क्या है?

जवाबः– मुद 795 ग्राम 958 मिली ग्राम का होता है और साअ़ तीन किलो 150 ग्राम का होता है।

(इम्दादुल औज़ान, पेज 6)

सवालः– इब्नुज़-ज़बीहैन किसका लक़ब है? और ज़बीहैन के मिस्दाक़ कौन-कौन हैं?

जवाबः– यह हमारे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का लक़ब है और दो ज़बीहों से मुराद एक तो हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम हैं जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के लड़के हैं, जिनकी औलाद में हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं और दूसरे ज़बीह आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वालिद मोहतरम हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब हैं जिनके ज़बीह नाम के साथ जुड़े होने का एक ख़ास वाक़िआ़ है कि एक बार हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने ख़्वाब में ज़मज़म कुएं का निशान देखा और खोदना शुरू किया। यह वह मुक़ाम था जहां 'असाफ़' और 'नाइला' दो बुत रखे हुए थे। क़ुरैश ने मना किया और लड़ने को तैयार हो गए। ये सिर्फ़ दो ही आदमी थे, बाप और बेटे। इनका कोई मुआविन और मददगार न था, मगर फिर भी अ़ब्दुल मुत्तलिब ही ग़ालिब रहे और कुवां खोदने के काम में मसरूफ़ रहे। उस वक़्त अ़ब्दुल मुत्तलिब ने अपनी तन्हाई को महसूस किया और मन्नत मानी कि अगर अल्लाह तआ़ला ने मुझको दस बेटे अ़ता फ़रमा दिए और पानी का चश्मा भी निकल आया, तो मैं अपने बेटों में से एक को ख़ुदा के नाम पर क़ुरबान कर दूंगा।

कुछ दिनों की मेहनत के बाद चश्मा भी निकल आया और अ़ब्दुल मुत्तलिब को अल्लाह ने दस बेटे भी अ़ता फ़रमा दिए। ज़मज़म कुंए के निकल आने से क़ुरैश में अ़ब्दुल मुत्तलिब का सिक्का बैठ गया था और उनको लोग बड़ा मानने लगे थे। जब अ़ब्दुल मुत्तलिब के बेटे जवान हो गए तो उन्होंने अपनी मानी हुई मन्नत पूरी करनी चाही। सब बेटों को लेकर काबा गए और हुबल नामी बुत के सामने क़ुरआ़ अन्दाज़ी की (पर्ची डाली)। इत्तिफ़ाक़ की बात कि क़ुरआ़ का तीर सबसे छोटे बेटे हज़रत अ़ब्दुल्लाह के नाम निकला जो अ़ब्दुल मुत्तलिब को सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ (प्यारा) था।

अ़ब्दुल मुत्तलिब चूंकि अपनी नज़्र को पूरा करना चाहते थे, मजबूरन अ़ब्दुल्लाह को साथ लेकर क़ुरबान गाह की तरफ़ चले। अ़ब्दुल्लाह के तमाम भाइयों, बहनों और क़ुरैश के सरदारों ने अ़ब्दुल मुत्तलिब को इस काम (अ़ब्दुल्लाह को ज़िब्ह

करने) से रोकना चाहा, मगर अ़ब्दुल मुत्तलिब न माने। आख़िरकार बड़ी रद्द व क़दह (बहस) के बाद यह मामला सुजाअ़ नामी काहिना के हवाले किया गया। उसने कहा कि तुम्हारे यहाँ एक आदमी का ख़ून बहाना दस ऊंटों के बराबर है, पस तुम एक तरफ़ दस ऊंट और एक तरफ़ अ़ब्दुल्लाह को रखो और क़ुरआ़ डालो। अगर क़ुरआ़ ऊंटों के नाम निकल आए तो उन दस ऊंटों को ज़िब्ह कर दो और अगर क़ुरआ़ अ़ब्दुल्लाह के नाम पर आए तो दस और बढ़ा कर बीस ऊंट अ़ब्दुल्लाह के मुक़ाबले में रखो और फिर क़ुरआ़ डालो। इसी तरह हर बार दस-दस बढ़ाते जाओ, यहां तक कि क़ुरआ़ ऊंटों के नाम पर आ जाए। चुनांचे ऐसा ही किया गया और क़ुरआ़ अ़ब्दुल्लाह ही के नाम पर निकलता रहा, यहां तक कि जब ऊंटों की तादाद सौ हो गई तब ऊंटों के नाम क़ुरआ़ आया। अ़ब्दुल मुत्तलिब ने अपना दिल मुतमइन करने के लिए दो बार फिर क़ुरआ़ डाला और अब हर बार ऊंटों ही के नाम क़ुरआ़ निकला। सौ ऊंट ज़िब्ह किए गए और अ़ब्दुल्लाह की जान बच गई। उस वक़्त से एक इन्सान का ख़ूनबहा क़ुरैश में सौ ऊंट मुक़र्रर हुए। इस वजह से हज़रत अ़ब्दुल्लाह ज़बीह-ए-सानी के मिस्दाक़ हैं। (तारीख़-ए-इस्लाम, हिस्सा 1, पेज 86, 87)

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की किस बीवी का निकाह आसमान पर हुआ?

जवाबः– वह बीवी हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अ़न्हा हैं।

(हाशिया जलालैन, पेज 355)

सवालः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के कितने साल बाद पैदा हुए?

जवाबः– आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के 6155 (छः हज़ार एक सौ पचपन साल) बाद पैदा हुए। (शरफ़ुल मुकालमा, पेज 18)

सवालः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दूध किस-किस औ़रत ने पिलाया और कितने-कितने दिन पिलाया?

जवाबः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को दूध पिलाने के बारे में दो क़ौल हैं:

❶ विलादत के बाद शुरू में सात दिन तक सुवैबा ने पिलाया जो कि अबू लहब बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब की आज़ाद की हुई बांदी थी। (अल्-कामिल, पेज 259)

और आठवें दिन हज़रत हलीमा सअ्दिया का क़ाफ़िला आ गया। आपने दो साल दाई हलीमा का दूध पिया।

(तारीख़-ए-इस्लाम)

● दूसरा क़ौल यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को शुरू में सात दिन तक बीबी आमिना ने दूध पिलाया, फिर सुवैबा ने, फिर सअ्दिया ने।

(रहमतुल लिल आलमीन)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खाना खाने के कितने तरीक़े थे और किस तरह बैठकर खाते थे?

जवाबः— हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो तरीक़े[1] पर बैठकर खाना खाते थे। एक उकड़ू बैठकर, दूसरे दो ज़ानू बैठकर।

और तरीक़ा यह था कि बाएं क़दम का तलवा दाहिने क़दम की पुश्त से लगा होता था और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीन उंगलियों (बीच की, शहादत की और अंगूठा) से खाना तनावुल फ़रमाते। (नश्रुत्तीब, पेज 191)

सवालः— खाने के शुरू और आख़िर में कैसी चीज़ खाना मस्नून है, मीठी या नमकीन?

जवाबः— खाने को नमकीन चीज़ से शुरू करना और नमकीन चीज़ ही पर ख़त्म करना मस्नून है और इसमें सत्तर बीमारियों से शिफ़ा है।

(शामी, हिस्सा 5, पेज 216, हाशिया मा ला बुद्-द मिन्हु, पेज 118)

सवालः— वह कौन सी सब्ज़ी है, जिसको आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सालन के बरतन में तलाश करके खाया करते थे?

जवाबः— वह सब्ज़ी यक़तीन यानी कद्दू है।

(तिर्मिज़ी शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 6, नश्रुत्तीब)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पानी पीने के प्याले कितने थे और किस किस चीज़ के प्याले थे?

जवाबः— दो प्याले थे, एक गच का, दूसरा लकड़ी का। (नश्रुत्तीब)

सवालः— ग़ार-ए-हिरा में क़ियाम के वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या खाना खाते थे और यह खाना कहाँ से आता था?

---

1. और ये दोनों तरीक़े जो बयान किए गए हैं ज़्यादातर वक़्तों में मिलते हैं, वरना कुछ रिवायतों से चार ज़ानू बैठकर खाना खाने का सबूत भी मिलता है।

जवाबः— ग़ार-ए-हिरा में क़ियाम के वक़्त आप सत्तू और पानी तनावुल फ़रमाते थे। यह खाना कभी तो हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा लेकर आतीं और कभी आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुद घर तशरीफ़ ले जाते और दो-तीन दिन का खाना साथ लाते। (नशरूत्तीब)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहनने के कपड़ों की तादाद कितनी थी और वे किस-किस चीज़ के थे?

जवाबः— आपके लिबास में कुर्ता, लुंगी, अमामा, चादर होते थे, जिसमें कुर्ता सूती होता था, जिसकी आसतीन छोटी थी, वैसे आपने ऊन और कत्तान भी पहना है, मगर ज़्यादातर सूती इस्तेमाल करते थे और आपके पास दो हरी चादरें थीं और दो खेस, एक सुर्ख़, दूसरी स्याह धारी वाली, एक कम्बल और एक तकिया जिसमें पोसत-ए-ख़ुरमा भरी हुई थी। (नशरूत्तीब)

सवालः— आपके तहबंद की लम्बाई और चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तहबंद की लम्बाई चार हाथ एक बालिश्त और चौड़ाई दो हाथ एक बालिश्त थी। (नशरूत्तीब)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अमामा बांधने का क्या तरीक़ा था?

जवाबः— आपके अमामा बांधने का तरीक़ा यह था कि कभी उसके शिमला को दोनों कंधों के दर्मियान छोड़ देते थे और कभी बग़ैर शिमला के अमामा बांधते थे और अमामा के नीचे कभी टोपी ओढ़ते और कभी न ओढ़ते थे।

(नशरूत्तीब, पेज 192)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कितने घोड़े थे, उनके नाम क्या क्या थे?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास सात घोड़े थे। जिनके नाम ये हैं। 1. सक्ब 2. मुरतजज़, 3. तीफ़, 4. लज़ार, 5. ज़र्ब, 6. सबहा, 7. दार। (नशरूत्तीब, ज़ादुल मआद)

सवालः— आपके पास ख़च्चर कितने थे और कहाँ से आए थे?

जवाबः— आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पांच ख़च्चर थे।

1. दुलदुल, यह मुक़ौक़िस (मिस्र के बादशाह) ने भेजा था।

2. फ़िज़्ज़ा, यह फ़रवा ने (जो क़बीला-ए-जुज़ाम से था) भेजा था।

3. एक सफ़ेद ख़च्चर था, जो ऐला के हाकिम ने पेश किया था।

4. चौथा ख़च्चर दौमतुल जुन्दल के हाकिम ने भेजा था।

5. पांचवां अस्हमा यानी हब्शा के बादशाह ने भेजा था। (नश्रुत्तीब, पेज 192)

सवालः— आपके पास दराज़ गोश यानी गधे कितने थे और उनके नाम क्या थे और कहाँ से आए थे?

जवाबः— आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास तीन गधे थे:

1. अफ़ीर, जो मिस्र के बादशाह ने भेजा था।

2. फ़रवा (जो क़बीला-ए-जुज़ाम में से था) ने भेजा था।

3. हज़रत सअ़्द बिन उ़बादा ने ख़िदमत-ए-अक़दस में पेश किया था।

(ज़ादुल मआ़द, बहवाला नश्रुत्तीब)

सवालः— आपके यहां सांडनियाँ (ऊंटनियाँ) कितनी थीं? और उनके नाम क्या हैं।

जवाबः— आपके पास तीन सांडनियाँ यानी ऊंटनियाँ थीं, जिनके नाम ये हैं:

1. क़स्वा, 2. उ़ज़्बा, 3. जद्आ और कुछ लोगों ने आख़िर के दो नामों को एक ही कहा है। (ज़ादुल मआ़द, बहवाला नश्रुत्तीब)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास दूध देने वाली ऊंटनियाँ कितनी थीं?

जवाबः— आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास दूध देने वाली ऊंटनियाँ 45 थीं।[1] (ज़ादुल मआ़द, बहवाला नश्रुत्तीब)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बकरियों की तादाद कितनी थी?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास सौ बकरियाँ थीं। इस तादाद से ज़्यादा न होने देते थे और जब कोई बच्चा पैदा होता तो एक बकरी ज़िब्ह कर देते थे।

(ज़ादुल मआ़द, बहवाला नश्रुत्तीब, अबू दाऊद शरीफ़, पेज 19, हदीस 9)

सवालः— हज्जतुल विदाअ़ और उमरतुल क़ज़ा में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि

1. ये तमाम चीज़ें यानी लिबास और सवारियाँ और दूसरे जानवरों की तादाद, हालात व ज़माने के लिहाज़ से है, जिनमें से कुछ बराबर रहते और कुछ ख़ास-ख़ास मौक़ों और ज़माने के लिहाज़ से हैं।

वसल्लम के सर के बाल काटने का शरफ़ किस किस ने हासिल किया?

जवाबः– यह शरफ़ हज्जतुल विदाअ़ में हज़रत मामर बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उमरतुल क़ज़ा में ख़राश बिन उमैया ने हासिल किया।

(ऐनस्सुतूर बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 633)

सवालः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की गोद में जिन बच्चों ने पेशाब किया, वे कितने हैं और कौन-कौन हैं?

जवाबः– वे बच्चे पाँच हैं। 1. सुलैमान बिन हिशाम, 2. हज़रत हसन, 3. हज़रत हुसैन, 4. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, 5. इब्ने उम्मे क़ैस और कुछ लोगों ने इन नामों को नीचे दिए शेरों में लिखा है।

क़द बा-ल फ़ी हिजरिन्नबिय्यि अत-फ़ालु
ह-स-नुंव् व हुसैनुंव् वब्नुज़्ज़ुबैरि बालु

व कज़ा सुलैमानुब्नु हिशामिन
वब्नु उम्मि क़ैसिन जा-अ फ़िलहिसाबि

(औजज़ुल मसालिक, हिस्सा 1, पेज 162)

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब वफ़ात पा गये तो आपको ग़ुस्ल व कफ़न किन कपड़ों में दिया गया?

जवाबः– हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रिवायत है कि जब आपको ग़ुस्ल देने का वक़्त आया तो सहाबा सोचने लगे कि आपके कपड़े मिस्ल दूसरे मुर्दों के उतारे जाएं या मय (साथ) कपड़ों के ग़ुस्ल दें। जब आपस में इख़्तिलाफ़ हुआ तो अल्लाह ने उन पर नींद मुसल्लत कर दी। घर के एक कोने से कहने वाले ने कहा कि आपको कपड़ों के साथ ग़ुस्ल दो, तब आपको कपड़ों के साथ ग़ुस्ल दिया गया। पस कुरते के ऊपर से पानी डालते थे और कुरते समेत मलते थे, फिर आपका कुरता निचोड़ा गया और निकाल लिया गया था। (नश्रुत्तीब, पेज 205)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तीन सूती कपड़ों में कफ़न दिया गया।

(बुख़ारी, मुस्लिम बहवाला नश्रुत्तीब)

सवालः– आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जनाज़े की नमाज़ कैसे पढ़ी गई? और पहले किसने पढ़ी?

जवाबः– हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के जनाज़े की नमाज़ जमाअ़त से नहीं पढ़ी गई, बल्कि अलग अलग पढ़ी गई। चूंकि सहाबा ने

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से आपके आख़िरी वक़्त में मालूम किया था कि आपकी जनाज़े की नमाज़ कौन पढ़ाएगा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि जब गुस्ल-कफ़न से फ़ारिग़ हो जाओ तो मेरा जनाज़ा क़ब्र के क़रीब रख कर हट जाना, पहले फ़रिश्ते नमाज़ पढ़ेंगे, फिर तुम गिरोह- गिरोह करके आते जाना और नमाज़ पढ़ते जाना और पहले अहले बैत के मर्द नमाज़ पढ़ेंगे फिर उनकी औरतें, फिर तुम और लोग। हमने अ़र्ज़ किया कि क़ब्र में कौन उतारेगा? आपने फ़रमाया, मेरे अहले बैत और उनके साथ फ़रिश्ते होंगे।

(नश्रुत्तीब, पेज 203)

सवालः— आपकी क़ब्र-ए-मुबारक किसने खोदी और कैसे खोदी?

जवाबः— हज़रत अबू तल्हा ने आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बग़ली क़ब्र खोदी। (तिर्मिज़ी, हिस्सा 1, पेज 124)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क़ब्र-ए-मुबारक में किन-किन हज़रात ने उतारा।?

जवाबः— आपको चार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने क़ब्र में उतारा, जिनके नाम नीचे दिए जा रहे हैं:

1. हज़रत अ़ली, 2. हज़रत अ़ब्बास और हज़रत अ़ब्बास के दो साहबज़ादे, 3. हज़रत क़ुसुम, 4. हज़रत फ़ज़्ल रज़ियल्लाहु अ़न्हुम। (नश्रुत्तीब, पेज 206)

सवालः— आपकी लहद-ए-मुबारक पर कितनी ईंटें रखी गईं और कैसे रखी गईं, कच्ची थीं या पक्की?

जवाबः— आपकी लहद पर रखी जाने वाली ईंटें नौ थीं, जो खड़ी करके रखी गईं और ये ईंटें कच्ची थीं। (नश्रुत्तीब, पेज 206)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को जब दफ़न किया जाने लगा तो आपकी कमर मुबारक के नीचे कपड़ा किसने बिछाया और क्या बिछाया?

जवाबः— हज़रत शक़रान रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो आपके आज़ाद किए हुए ग़ुलाम थे, उन्होंने अपनी राय से एक खेस, जो नज़रान का बना हुआ था, बिछा दिया था, जिसको यह सहाबी ओढ़ा करते थे। (तिर्मिज़ी, नश्रुत्तीब, पेज 206)

सवालः— आंहुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुबारक क़ब्र पर पानी

किसने छिड़का और कितना छिड़का, किधर से शुरू किया था?

जवाबः– हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने पानी छिड़का, एक मश्क छिड़का और सिरहाने की तरफ़ से शुरू किया था।! (नश्रूत्तीब, पेज 206)

सवालः– वह कौन से सहाबी हैं जिनको यह शरफ़ हासिल हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी नमाज़-ए-जनाज़ा मस्जिद-ए-नबवी में पढ़ाई?

जवाबः– हाँ, वह सहाबी हज़रत सहल बिन बैज़ा हैं।

(मुस्लिम बहवाला मिश्कात, हिस्सा 1, पेज 145)

सवालः– आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ से दफ़न होने का शरफ़ पाने वाले सहाबी कौन हैं?

जवाबः– हज़रत अब्दुल्लाह ज़ुल बजादतैन रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(तिर्मिज़ी, हिदाया)

सवालः– क्या कोई आदमी ऐसा भी है जिसको आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद अपने हाथ से नेज़ा मारा हो और उससे वह हलाक हो गया हो?

जवाबः– हाँ! वह एक काफ़िर है, जिसका नाम उबई बिन ख़ल्फ़ है। उहुद की लड़ाई में यह आपके हाथ से मारा गया। (बुख़ारी शरीफ़)

सवालः– ग़ज़्वा-ए-अहज़ाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा ने जो ख़न्दक़ खोदी थी, उसकी खुदाई कितने दिनों में हुई और उस ख़न्दक़ की मिक्दार (लम्बाई, गहराई) क्या थी?

जवाबः– उस ख़न्दक़ की खुदाई छः दिन में पूरी हो गई थी और वह ख़न्दक़ साढ़े तीन मील लम्बी और तक़रीबन पाँच गज़ गहरी थी।

(मआरिफ़ुल क़ुरआन, पेज 103, 107, पारा 21)

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहले कौन सा ग़ज़्वा किया?

जवाबः– आपने सबसे पहले जो ग़ज़्वा किया है वह ग़ज़्वा 'अबवा' है। इसके बाद 'बवात', फिर 'उशैर'। (बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 563)

सवालः– कुल कितने ग़ज़्वे पेश आए।

जवाबः– कुल ग़ज़्वों की तादाद 29 है।[1] (बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 563)

सवालः– वे ग़ज़्वे जिनमें काफ़िरों से लड़ाई हुई कितने हैं और वे कौन-कौन से हैं?

जवाबः– वे ग़ज़्वे सिर्फ़ नौ हैं। 1. ग़ज़्वा-ए-बद्र, 2. ग़ज़्वा-ए-उहुद, 3. ग़ज़्वा-ए-अहज़ाब, 4. ग़ज़्वा-ए-बनू क़ुरैज़ा, 5. ग़ज़्वा-ए-बनी मुस्तलिक़, 6. ग़ज़्वा-ए-ख़ैबर, 7. ग़ज़्वा-ए-फ़तह-ए-मक्का, 8. ग़ज़्वा-ए-हुनैन, 9. ग़ज़्वा-ए-ताइफ़। (हाशिया बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1. पेज 563)

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ मुँह करके कितने दिन नमाज़ अदा की?

जवाबः– सोलह महीने या सत्तरह महीने नमाज़ अदा की, इसके बाद बैतुल्लाह की तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म दे दिया गया था।

(जलालैन, पेज 21, पारा 2)

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का मरज़ुल वफ़ात किस दिन शुरू हुआ और आप उस मरज़ में कितने दिन रहे?

जवाबः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मरज़ की शुरूआ़त पीर (सोमवार) के दिन से हुई। कुछ लोगों ने हफ़्ते का दिन और कुछ ने बुध का दिन बताया है और मरज़ की कुल मुद्दत कुछ लोगों ने 13 दिन और 14 दिन और कुछ लोगों ने 10 दिन बयान की है। इस इख़्तिलाफ़ में मुताबक़त इस तरह मुम्किन है कि मरज़ की शुरूआ़त को कुछ लोग हल्का समझ कर गिनते नहीं और कुछ लोग गिन लेते हैं। (नश्रुत्तीब, पेज 402)

सवालः– विसाल के वक़्त आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आख़िरी कलाम क्या था?

जवाबः– आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का आख़िरी कलाम यह थाः

'अल्लाहुम्-म बिर्रफ़ीक़िल आला०' (बुख़ारी, हिस्सा 2, पेज 641)

---

1. हज़रत जाबिर से 31, इब्नुल मुसय्यिब से 24 और इब्ने सअ़्द से 27 ग़ज़्वे नक़ल किए गए हैं और इख़्तिलाफ़ की वजह यह है कि कुछ रावियों ने कुछ रिवायतों को सही नक़ल नहीं किया, बल्कि जिनका इल्म हुआ, उनको नक़ल कर दिया या यों कहा जाए कि कुछ ग़ज़्वों को दूसरे ग़ज़्वों में कुछ मुनासबत की वजह से दाख़िल मान कर एक समझ लिया, जैसे ताइफ़ व हुनैन या अहज़ाब व बनू क़ुरैज़ा। (हाशिया बुख़ारी, हिस्स 1, पेज 563)

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम[1] वग़ैरह से मुताल्लिक़ चीज़ें

सवालः– हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पैदाइश का दिन क्या है?

जवाबः– सहीह मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि सूरज निकलने वाले दिनों में सबसे बेहतर दिन जुमे का दिन है। उसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम पैदा हुए और उसी दिन जन्नत में दाख़िल किए गए और उसी दिन जन्नत से निकाले गए और उसी दिन क़ियामत आएगी।

(हयाते आदम, माख़ूज़ अज़ मुस्नद अहमद व इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 127)

और एक क़ौल यह भी है कि उसी दिन हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात हुई। (तबक़ात इब्ने साद, हिस्सा 1, पेज 8, बहवाला हयात-ए-आदम)

सवालः– हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत में कितने साल रहे?

जवाबः– इमाम औज़ाई ने हज़रत हस्सान बिन अ़तिय्या रज़ियल्लाहु अ़न्हु से नक़ल किया है कि:

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत में सौ साल तक मुक़ीम रहे और
2. एक दूसरी रिवायत में 70 साल का तज़्किरा है। (हयात-ए-आदम)
3. अ़ब्द बिन हुमैद ने हज़रत हसन के तरीक़ से रिवायत नक़ल की है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत में 130 साल रहे।

(इब्ने कसीर अरबी, हिस्सा 1, पेज 126)

सवालः– जब अल्लाह ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को **'इहबितू मिनहा जमीआ'** फ़रमाया कि तुम सब जन्नत से उतर जाओ तो इस उतरने का हुक्म हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के साथ और किस-किस को हुआ था और कौन कहाँ-कहाँ उतरा?

जवाबः– यह हुक्म हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के साथ हज़रत हव्वा, इब्लीस और साँप को भी था और उनके उतरने की जगह में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत हसन बसरी फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को हिन्दुस्तान में उतारा गया,

---

1. बाद में कुछ सवाल व जवाब हज़रत हव्वा और हज़रत शीस व हज़रत इदरीस अलैहिमुस्सलाम के मुताल्लिक़ दर्ज कर दिए गए हैं।

हज़रत हव्वा को जद्दा में, इब्लीस को दबसितमान में (जो बसरा से कुछ मील फ़ासले पर है) और साँप को अस्बहान में उतारा गया और हज़रत सुद्दी जो जलीलुल क़द्र मुफ़स्सिर हैं, फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को हिन्दुस्तान में उतारा गया। हज़रत इब्ने उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को सफ़ा पर, हज़रत हव्वा को मरवा पर उतारा गया। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, पेज 126) हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हिन्दुस्तान के एक पहाड़ पर जिसका नाम नूज़ था, हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को उतारा गया और हज़रत हव्वा को जद्दा में उतारा गया।

(हयात-ए-आदम)

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जन्नत से क्या-क्या चीज़ें साथ लाए थे?

जवाबः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जन्नत से नौ चीज़ें साथ लाए थेः

1. हजरे अस्वद, जो बर्फ़ की सिल से भी ज़्यादा चमकदार और सफ़ेद था, 2. जन्नती पेड़ों की पत्तियाँ या फूलों की पंखड़ियाँ, 3. वह लाठी, जो जन्नत के आस पेड़ की थी। 4. बेलचा, 5. कुदाल, 6. कुन्दर या सनूबर, 7. सन्दान (अहरान), 8. हथौड़ा, 9. संडासी। (हयात-ए-आदम, माख़ूज़ अज़ तबक़ात इब्ने सअ़्द)

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने दुनिया में आने के बाद कौन सा फल सबसे पहले खाया?

जवाबः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने फलों में सबसे पहले बेर तनावुल फ़रमाया। (नश्रुत्तीब, पेज 191)

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह को किन-किन पहाड़ों के पत्थरों से तामीर किया?

जवाबः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने पाँच पहाड़ों के पत्थरों से ख़ाना काबा की तामीर कीः 1. तूर-ए-सीना, 2. तूर-ए-ज़ैतून, 3. जबल-ए-लबनान, 4. जबल-ए-जूदी, 5. और उसके खम्भे हिरा पहाड़ के पत्थर से बनाए।

(हयात-ए-आदम, पेज 66, माख़ूज़ अज़ इब्ने सअ़्द)

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का क़द कितना था?

जवाबः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का मुबारक क़द 60 हाथ था।

(हयातुल हैवान)

सवालः— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने कितनी उम्र पाई?

जवाबः— हज़रत आदम की मुबारक उम्र 936 साल हुई। (हयात-ए-आदम, माख़ूज़ अज़ इब्ने कसीर) दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की उम्र 940 साल हुई। (हयातुल हैवान, पेज 426)

सवालः— वफ़ात के वक़्त हज़रत आदम की औलाद की तादाद कितनी थी?

जवाबः— हज़रत आदम की औलाद की तादाद 40 हज़ार थी, जिनमें पोते-पड़पोते सब शामिल हैं। (हयात-ए-आदम माख़ूज़ अज़ इब्ने कसीर, पेज 96)

सवालः— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात किस मुक़ाम पर हुई?

जवाबः— श्रीलंका में वाक़े नूज़ नामी पहाड़ पर हुई। (हयात-ए-आदम, पेज 67)

सवालः— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की नमाज़-ए-जनाज़ा किसने पढ़ाई और कितनी तक्बीरें कही थीं?

जवाबः— हज़रत उबई बिन कअ्ब फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात होने पर फ़रिश्ते तशरीफ़ लाए, जिन्होंने गुस्ल दिया और हनूत ख़ुश्बू मली। एक फ़रिश्ता आगे बढ़ा, आपकी औलाद और बाक़ी फ़रिश्ते पीछे खड़े हुए और नमाज़-ए-जनाज़ा हुई, फिर फ़रिश्तों ने बग़ली क़ब्र खोद कर दफ़ना दिया और दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हज़रत शीस अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि तुम नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाओ, चुनांचे हज़रत शीस अलैहिस्सलाम ने नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाई। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की नमाज़-ए-जनाज़ा में कही जाने वाली तक्बीरों की तादाद तीस है, जो सिर्फ़ आपके ऐज़ाज़ व इजलाल (बुज़ुर्गी) में कही गईं।

(तबक़ात-ए-इब्ने सअ्द, हिस्सा 1, पेज 15, बहवाला हयात-ए-आदम, पेज 75)

सवालः— हज़रत हव्वा के पेट से कितने बच्चे पैदा हुए?

जवाबः— इब्ने जरीर तबरी ने कहा है कि हज़रत हव्वा के पेट से 40 बच्चे पैदा हुए और दूसरा क़ौल यह है कि 120 बच्चे पैदा हुए। (हयात-ए-आदम, पेज 61)

सवालः— वे चीज़ें जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से जारी हुईं, कौन-कौन सी हैं?

जवाबः— 1. सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के मुँह से जो कलाम निकला वह 'अल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन' था।

(बग़ियतुज़्ज़मआन फ़ी अव्वलि मा क़ान)

2. सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अपना सर मूंडा।

(बग़ियतुज़्ज़मआन)

3. सबसे पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने मुर्ग़ परिन्दा पाला, चूंकि जब मुर्ग़ आसमान से फ़रिश्तों से तस्बीह की आवाज़ सुनता है, तो तस्बीह पढ़ता है। मुर्ग़ के तस्बीह पढ़ने से हज़रत आदम अलैहिस्सलाम भी तस्बीह पढ़ने लगते थे।

(बग़ियतुज़्ज़मआन, पेज 35)

सवालः– हिबतुल्लाह, जिसका तर्जुमा 'अल्लाह दिया' है, किस का लक़ब है?

जवाबः– यह हज़रत शीस अलैहिस्सलाम का लक़ब है, इसलिए कि जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया तो हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बशारत दी कि ख़ुदावन्द-ए-आलम ने हाबील (जो शहीद हो चुके हैं) के बदले में शीस को अता फ़रमाया। (इब्ने साद, पेज 149 बहवाला हयात-ए-आदम, पेज 59)

सवालः– क़ाबील ने हाबील को किस जगह क़त्ल किया?

जवाबः– इब्ने कसीर ने कहा है कि दमिश्क़ की शुमाली जानिब में क़ासियून पहाड़ के पास एक ग़ार है, जिसको 'मग़ारतुद्दम' कहा जाता है। अहल-ए-किताब का कहना है कि यहाँ क़ाबील ने हाबील को क़त्ल किया। (हयात-ए-आदम, पेज 72)

सवालः– हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का असल नाम क्या है? और उनको इदरीस कहने की वजह क्या है?

जवाबः– असल नाम उख़नूख़ है और इदरीस इस वजह से कहते हैं कि उन्होंने सबसे पहले दर्स किताब दिया। (सावी, हिस्सा 3, पेज 41)

सवालः– हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम से जारी होने वाली चीज़ें कौन सी हैं?

जवाबः– 1. सबसे पहले क़लम से हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने लिखा।

(सावी, पेज 41)

2. सबसे पहले इल्म-ए-नुजूम को जानने वाले हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम हैं। (जलालैन, पेज 503)

3. और तफ़्सीर-ए-ख़ाज़िन में है कि हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम कपड़ा सीने वाले (दर्ज़ी) थे और हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम ने सबसे पहले सिला हुआ कपड़ा पहना। इससे पहले लोग खाल पहनते थे। (तफ़्सीर-ए-ख़ाज़िन, पेज 238)

4. और सबसे पहले हथियार बनाकर दुश्मनों से हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम लड़े। (ख़ाज़िन, पेज 238)

5. और सबसे पहले रूई का कपड़ा हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम ने पहना। (मुहाज़रा, पेज 27, बहवाला बग़्यतुज़-ज़म्आन)

6. सबसे पहले आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में नुबुव्वत हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम को मिली। (मुहाज़रा, पेज 28, बहवाला बग़्यतुज़-ज़म्आन)

हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का असल नाम क्या है?

जवाबः— आपके नाम के बारे में इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार और कुछ ने यश्कुर बताया है। (सावी, हिस्सा 3, पेज 115, पारा 18, हाशिया जलालैन, पेज 288) और कुछ ने अ़ब्दुल जब्बार कहा है। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 12) और कुछ ने हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम बताया है।

(हयात-ए-आदम अज़ मौलवी मुहम्मद मियाँ साहब, पेज 74)

सवालः— हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का लक़ब नूह क्यों पड़ा?

जवाबः— नूह के असल मानी रोने के आते हैं और चूँकि आप अपनी उम्मत के गुनाहों पर बहुत ज़्यादा रोते थे, इस वजह से आपका लक़ब नूह हो गया। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 12) और या इस वजह से कि आप अपने नफ़्स पर रोते थे। (रूहुल मआ़नी) इसलिए कि एक बार हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का गुज़र एक ख़ारिश वाले कुत्ते पर हुआ तो हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम ने अपने दिल में सोचा कि यह कितना बद-शक्ल है, तो अल्लाह ने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के पास वही भेजी कि तूने मुझे ऐब लगाया है या मेरे कुत्ते को? क्या तू इससे अच्छा पैदा कर सकता है? हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम अपनी इस ग़लती पर रोते थे।

(सावी, हिस्सा 3, पेज 233)

सवालः— हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कुल उम्र कितनी हुई और जब नुबुव्वत मिली तो आपकी उम्र कितनी थी?

जवाबः– हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कुल उम्र एक हज़ार पचास साल थी और जब नुबुव्वत मिली तो उस वक़्त की उम्र के बारे में इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने 50 साल कहा और कुछ ने 52 साल और कुछ ने 100 साल कहा है। (सावी, हिस्सा 3, पेज 233) और एक क़ौल 40 साल का भी है। (सावी, हिस्सा 3, पेज 115)

सवालः– हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को कश्ती बनानी किसने सिखाई और यह कश्ती कितने दिनों में बनाई गई थी?

जवाबः– अल्लाह ने हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम को भेजा, जिन्होंने हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम को कश्ती बनानी सिखाई और यह कश्ती दो साल में बनाई गई थी? (सावी, हिस्सा 3, पेज 116)

सवालः– हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती की लम्बाई-चौड़ाई और ऊंचाई कितनी थी और यह कितनी मंज़िलों पर मुश्तमिल थी?

जवाबः– उस कश्ती की लम्बाई 300 हाथ, चौड़ाई 50 हाथ और ऊंचाई 30 हाथ और उस कश्ती में तीन मंज़िलें थीं। सबसे नीचे की मंज़िल में दरिंदे, कीड़े-मकोड़े, दूसरी (दर्मियानी) मंज़िल में चौपाए यानी गाय, बैल, भैंस वग़ैरह और सबसे ऊपर की मंज़िल में इन्सान थे। (हाशिया जलालैन)

और कुछ ने उसकी लम्बाई 30 हाथ और चौड़ाई 50 हाथ और ऊंचाई 30 हाथ बयान की है और यह हाथ मोंढे तक शुमार किया है।

(सावी, हिस्सा 3, पेज 116)

सवालः– उस कश्ती में कितने आदमी थे?

जवाबः– लोगों की तादाद कुछ ने 80, जिसमें आधे मर्द और आधी औ़रतें और कुछ ने सत्तर मर्द व औ़रत बयान किए हैं। (सावी, हिस्सा 3, पेज 116)

और कुछ ने 9 कहा है, तीन तो उनकी औलाद में से यानी हाम, साम, याफ़स और छः इनके अ़लावा और कुछ ने नौ तादाद हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की औलाद की बताई है। (सावी, पेज 233)

सवालः– हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम कौन से महीने में कश्ती में सवार हुए थे और कश्ती कौन से दिन जाकर ठहरी और कितनी मुद्दत उस कश्ती में रहे?

जवाबः– आप 10 रजब के बाद सवार हुए और दस मुहर्रम को यह कश्ती शहर मूसल के बुलन्द पहाड़ 'जूदी' पर जाकर ठहरी और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम

उस कश्ती में छः माह तक सवार रहे। (सावी, हिस्सा 3, पेज 116, पारा 18)

सवालः— जिस पहाड़ पर कश्ती जाकर ठहरी थी, उसकी ऊंचाई कितनी थी?

जवाबः— उस पहाड़ की ऊंचाई 40 हाथ थी। (सावी, हिस्सा 3, पेज 233, पारा 19)

सवालः— उस तूफ़ान के बाद हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम कितने साल तक ज़िन्दा रहे?

जवाबः— हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम तूफ़ान के बाद सही क़ौल के मुताबिक़ साठ साल ज़िन्दा रहे। (सावी, पेज 115) और कुछ ने 250 साल भी कहा है।

(सावी, पेज 233, पारा 19)

सवालः— हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के किस बेटे की नस्ल में, दुनिया के कौन-कौन से इलाक़ों के लोग हैं?

जवाबः— हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के तीन लड़के थे। हाम, साम, याफ़स। हाम की औलाद में हिन्द, सिन्ध और हब्शा के लोग हैं और साम की औलाद में अ़रब, रूम, फ़ारस के लोग हैं और याफ़स की औलाद में याजूज, माजूज, तुर्क, सालाब हैं। (बुस्तान-ए-अबुल्लैस)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ चीज़ें

सवालः— जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को नार-ए-नमरूद (नमरूद की आग) में डाला गया, उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ कितनी थी?

जवाबः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम उस वक़्त सोलह साल के थे और कुछ ने कहा है कि 26 साल के थे। (सावी, हिस्सा 3, पेज 12, पारा 17)

सवालः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को जिस आग में डाला गया, उसके लिए कितने दिनों तक लकड़ियाँ जमा की गई थीं और कितने दिनों तक दहकाया गया था?

जवाबः— एक महीने तक लकड़ियाँ जमा की गई थीं और सात दिन तक आग को दहकाया गया था। (सावी, पेज 82)

सवालः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आग में कितने दिन तक रहे?

जवाबः– सात दिन, कुछ ने चालीस दिन और कुछ ने पचास दिन कहा है।

(सावी, पेज 82)

सवालः– हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को आग में क्या लिबास पहनाया गया? किसने पहनाया? और कहाँ से आया था?

जवाबः– रेशमी क़मीज़ थी जो हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ने पहनाई थी और यह जन्नत का लिबास था। (सावी, हिस्सा 3, पेज 82)

सवालः– हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को आग में किस चीज़ पर बिठाकर डाला गया और वह आला किसने सिखाया था?

जवाबः– हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को आग में गोपिया में बिठाकर डाला गया और यह अ़मल शैतान ने सिखाया था, इसलिए कि जब नमरूद की क़ौम ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को एक मकान में बन्द कर दिया और फिर आग में डालने के लिए बाहर लाए तो उनकी समझ में यह बात न आ सकी कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को किस तरह आग में डाला जाए, क्योंकि आग की शिद्दत की वजह से आग के क़रीब आना दुश्वार था। उसी वक़्त शैतान आया और उसने उनको गोपिया बनाना सिखलाया। (सावी, पेज 82)

सवालः– उस मकान की ऊंचाई और चौड़ाई कितनी थी, जिसमें आग जला कर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को डाला गया?

जवाबः– ऊंचाई तीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ थी।

(हाशिया जलालैन, पेज 377)

सवालः– वह कौन से नबी हैं, जिन्होंने दो हिजरतें कीं, जबकि तमाम नबियों ने सिर्फ़ एक हिजरत की?

जवाबः– वह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हैं। पहली हिजरत आपने क़स्बा-ए-कूसा से की, जो इराक़ देश के शहर बाबिल का एक क़स्बा है कूफ़ा की तरफ़ से और दूसरी हिजरत कूफ़ा से शाम देश की तरफ़। (कश्शाफ़)

सवालः– हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से ईजाद होने वाली चीज़ें कौन-कौन सी हैं?

जवाबः– 1. सबसे पहले अल्लाहु अक्बर हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कहा।

(बरीक़तुल्मफ़ज़ान)

2. सबसे पहले जुमा के लिए ग़ुस्ल हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने किया।

(मुहाज़रा, पेज 58, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से, पेज 23)

3. सबसे पहले मिम्बर पर ख़ुत्बा हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने दिया।

(मुहाज़रा, पेज 143, बहवाला बग़ियतुज़-ज़मआन)

4. सबसे पहले कुल्ली व मिस्वाक हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने की और कुछ ने कहा कि सबसे पहले मिस्वाक करने वाले हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम हैं।

(क़ससुल अंबिया, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

5. सबसे पहले नाक में पानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने डाला।

(मुहाज़रा, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

6. सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने नाख़ून तराशे।

(मुहाज़रा, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

7. सबसे पहले मूंछें और

8. बग़ल के बाल हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने काटे।

(मुहाज़रा, पेज 58, बहवाला बग़ियतुज़-ज़मआन)

9. नबियों में सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की दाढ़ी सफ़ेद हुई।

(मुहाज़रा, पेज 58, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

10. सबसे पहले नाफ़ के नीचे के बाल हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने काटे।

(बग़ियतुज़-ज़मआन)

11. सबसे पहले मेहंदी का ख़िज़ाब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने इस्तेमाल किया।

(मुहाज़रा, पेज 9, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

12. नबियों में सबसे पहले हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने बिसूले से अपनी ख़त्ना की।

(क़ससुल अंबिया, पेज 68)

13. सबसे पहले पानी से इस्तिंजा हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने किया।

(मुहाज़रा, पेज 58, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

14. सबसे पहले मेहमान नवाज़ी और माल-ए-ग़नीमत अल्लाह के रास्ते में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने ख़र्च किया।

(कामिलुल अदी व मुहाज़रा, पेज 57, बग़ियतुज़-ज़मआन)

सवालः– किस नबी ने उम्मते मुहम्मदिया को सलाम कहलवाया?

जवाबः— जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मेराज को तशरीफ़ ले गए और रूख़्सत होने लगे तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उम्मते मुहम्मदिया को सलाम कहलवाया था। (मिश्कात, जिल्द 2, पेज 202)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का क़द कितना था?

जवाबः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का मुबारक क़द तेरह हाथ लम्बा था।

(हयात-ए-आदम, माख़ूज़ अज़ तबक़ात-ए-इब्ने साद)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की मुबारक उम्र कितने साल हुई?

जवाबः— एक सौ बीस साल। (हाशिया जलालैन, पेज 138, पारा:9)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा मोहतरमा और उनकी अहलिया का नाम क्या था?

जवाबः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा के नाम से मुताल्लिक़ चार क़ौल मिलते हैं। 1. महयाना बिन्ते यस्हर बिन लावी, 2. बाज़ख़्त, 3. बारख़ा, 4. यूहानज़। चौथा क़ौल सही है। (इतक़ान) और आपकी अहलिया का नाम कुछ ने सफ़ूरा और कुछ ने सफ़ूरिया और कुछ ने सफ़ूरह बतलाया है।

(हाशिया जलालैन, पेज 261, माख़ूज़ अज़ जुमल)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का मुक़ाबला जिन जादूगरों से हुआ था, उनकी तादाद क्या थी और वे किस चीज़ पर बैठे थे, उनके हाथों में क्या था?

जवाबः— जादूगरों की तादाद सत्तर हज़ार थी। हर जादूगर कुर्सी पर बैठा था और हर एक के हाथ में एक-एक रस्सी थी। (जलालैन, हि० 2, पेज 263, पारा 16)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के अ़सा का नाम क्या था?

जवाबः— हज़रत मुक़ातिल ने उसका नाम 'नबआ़' ज़िक्र किया है और हज़रत इब्ने अ़ब्बास ने 'माशा' कहा है। (इब्ने कसीर)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के पास यह अ़सा कहाँ से आया था

और यह किस पेड़ का था?

जवाब:– यह वह असा था, जिसको हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से लेकर आए थे। यह वास्ता दर वास्ता हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के पास पहुंच गया था और हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम ने बकरियाँ चराने के लिए हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इनायत फ़रमाया था और यह जन्नत के पेड़ रैहान की लकड़ी का बना हुआ था। (रूहुल मआनी, पेज 174) दूसरा क़ौल यह है कि यह जन्नत के पेड़ आस की लकड़ी का था। (हयात-ए-आदम)

सवाल:– उस असा की लम्बाई कितनी थी?

जवाब:– कुछ ने 10 हाथ और कुछ ने 12 हाथ बयान की है।

(रूहुल मआनी, पेज 174)

सवाल:– जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने यह असा जादूगरों के सामने डाला था, तो उसकी कैफ़ियत क्या थी?

जवाब:– वह साँप बल्कि एक बहुत बड़ा अज़दहा बन गया था। उसके नीचे का जबड़ा ज़मीन पर और ऊपर का जबड़ा फ़िरऔन के महल की मुंडेर पर रखा था। उस वक़्त उसके दोनों जबड़ों के दर्मियान चालीस हाथ का फ़ासला था। (हयातुल हैवान, अरबी एडीशन)

हाशिया जलालैन, पेज 138, पारा 9 पर 80 हाथ के फ़ासले का ज़िक्र है।

सवाल:– हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को उनकी वालिदा ने क़ुलज़ुम नदी में डालने से पहले कितने दिनों तक दूध पिलाया और नदी में किस दिन डाला?

जवाब:– क़ुलज़ुम नदी में डालने से पहले हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को उनकी माँ ने तीन महीने तक दूध पिलाया और जुमा के दिन दरिया में डाला।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 26)

सवाल:– हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब बनी इसराईल को मिस्र से लेकर चले तो रास्ता क्यों भूल गए थे?

जवाब:– इसमें एक क़ौल तो यह है कि जब अल्लाह ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को मिस्र से शाम देश जाने का हुक्म दिया तो यह भी फ़रमाया था कि तुम जाते वक़्त हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की लाश मुबारक को अपने साथ शाम देश ले जाना, मगर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को याद न रहा और लाश मुबारक साथ नहीं ली, जिसकी वजह से रास्ता भूल गए और दूसरा क़ौल

यह है कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बनी इसराईल को मिस्र से लेकर चले और रास्ता भूल गए तो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बनी इसराईल से कहा, क्या बात है? हम रास्ता क्यों भूल गए? तो बनी इसराईल के उ़लमा ने बताया कि वजह उसकी यह है कि जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब आया तो उन्होंने हमें यह वसिय्यत की थी कि जब तुम मिस्र से जाओ तो मेरी लाश भी निकाल लेना। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया, क्या तुमको मालूम है, हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र कहाँ है? तो उन्होंने कहा कि एक बुढ़िया के अ़लावा कोई नहीं जानता। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने उस बुढ़िया से मालूम किया कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र कहाँ है? तो उसने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र इस शर्त के साथ बतलाई कि आप जन्नत में मुझको अपने साथ रखें। हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा के हुक्म से यह शर्त मंज़ूर कर ली, तब उस बुढ़िया ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की लाश का पता दिया। (हाशिया जलालैन शरीफ़, पेज 382)

और तीसरा क़ौल यह है कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम बनी इसराईल को लेकर चले तो चाँद की रोशनी फीकी पड़ने लगी यहां तक कि अंधेरा हो गया जिसकी वजह से रास्ता न मिला, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने बनी इसराईल के बड़े लोगों को जमा किया और फ़रमाया कि क्या हुआ हम तो रास्ता भूल गए तो उन्होंने कहा कि असल में वजह यह है कि यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपनी वफ़ात के क़रीब हमको यह वसीयत की थी कि जब तुम मिस्र से जाने लगो तो मेरी लाश को भी ले लेना, जब तक लाश साथ न होगी, रास्ता नहीं मिलेगा। चुनांचे एक बुढ़िया ने आपकी क़ब्र इस शर्त पर बतलाई कि जन्नत में आप (हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम) के साथ रहूंगी। जब हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का जनाज़ा लेकर चले तो चाँद इस तरह निकल पड़ा जिस तरह सूरज निकल जाता है। (हाशिया जलालैन, पेज 382)

सवालः– जिस औ़रत ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र बतलाई, उसका नाम क्या है और वह कितने साल ज़िंदा रही?

जवाबः– उस औ़रत का नाम मरयम बिन्ते नामूसा है और यह सात सौ साल तक ज़िंदा रही। (हाशिया जलालैन, पेज 382)

सवालः– हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम और उनके ख़ादिम (सेवक) यूशा बिन

नून ने हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम के पास जाते वक़्त जो मछली साथ ली थी, उसकी लम्बाई-चौड़ाई कितनी थी?

जवाबः— उस मछली की लम्बाई एक ज़िराअ़ (हाथ) से ज़्यादा और चौड़ाई एक बालिश्त थी। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 383)

सवालः— उस मछली का हुलिया कैसा था?

जवाबः— उस मछली की एक आँख थी और आधा सर और दोनों जानिब में कांटे थे। उस मछली की नस्ल अब तक बाक़ी है। (हयातुल हैवान, पेज 383)

सवालः— हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम का असल नाम क्या है और उनको ख़िज़्र क्यों कहते हैं?

जवाबः— आपका असल नाम बल्या है और ख़िज़्र लक़ब इसलिए है कि जहां आप बैठ जाते तो ज़मीन सब्ज़ हो जाती थी, आप की कुन्नियत अबुल अ़ब्बास है। (सावी)

सवालः— जो बादशाह कश्ती छीन लिया करता था और उसके ख़ौफ़ से हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने मिस्कीनों की कश्ती में कमी पैदा कर दी थी, उस बादशाह का क्या नाम था?

जवाबः— उसका नाम जैसूर था, यह ग़स्सान का बादशाह था। (सावी, हिस्सा 3, पेज 23) और कुछ लोगों ने उसका नाम हदद बिन बदद ज़िक्र किया है। (बुख़ारी, हिस्सा 2, पेज 689) और कुछ ने जलन्दी बिन किरकिर ज़िक्र किया है। (जलालैन, पेज 250, पारा 12) और कुछ ने उसका नाम मफ़्वाद बिन जलन्द बिन सईद अज़्दी बयान किया है और यह उन्दलुस के जज़ीरे पर रहता था।

(रूहुल मआ़नी, हिस्सा 16, पेज 10)

सवालः— अल्लाह का फ़रमान **'हत्ता इज़ा लक़िया ग़ुलामन फ़-क़-त-लहू'** में हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने जिस ग़ुलाम को क़त्ल किया था, उसका नाम क्या है?

जवाबः— इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने उसका नाम जैसूर ज़िक्र किया है और कुछ ने हैसूर और साहिब-ए-रूहुल मआ़नी ने जंबतूर और साहिब-ए-फ़ुतूहात-ए-इलाहिया ने शमऊ़न बताया है।

सवालः— इर्शाद-ए-बारी तआ़ला **'फ़-व-ज-द फ़ीहा रजुलैनि यक़्तातिलानि'** से **'फ़-व-क-ज़हू मूसा फ़-क़ज़ा-अ़लैहि'** तक में इन झगड़ा करने वालों के नाम क्या-

क्या हैं?

जवाबः— इनमें एक इसराईली था, जिसका नाम कुछ ने हिज़क़ील (हाशिया जलालैन, पेज 528) और कुछ ने शमूक़न और कुछ ने समूआ ज़िक्र किया है। साहिब-ए-तफ़्सीरे मज़्हरी और साहिब-ए-फ़ुतूहात-ए-इलाहिया ने समूआ के बजाए समूआन ज़िक्र किया है और दूसरा क़िब्ती था जिसका नाम फ़लसयून था। (जलालैन, पेज 527) और जुमल में उसका नाम क़ाब और रूहुल मआनी में क़ानून ज़िक्र किया गया है।

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— इर्शाद-ए-बारी तआला 'व-ल-क़द् फ़तन्‌ना सुलैमा-न' में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का इम्तिहान किस वजह से लिया गया?

जवाबः— इम्तिहान की वजह यह पेश आई कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने समुन्दर के एक जज़ीरे के बादशाह से जंग की। उस जज़ीरे को फ़त्ह करके बादशाह की लड़की से शादी कर ली। उस लड़की का बाप (बादशाह) लड़ाई में मारा गया था। उसको जब अपना बाप याद आता था तो वह लड़की रोती थी। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने उसके बाप की शक्ल का मुजस्समा[1] (मूर्ति) जिन्नात से बनवा कर बीवी को दे दिया था। कुछ दिनों तक तो वह लड़की उस मुजस्समे को देखकर अपने दिल को तसल्ली देती रही फिर उसने उस मुजस्समे की इबादत शुरू कर दी जिसकी वजह से हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को इम्तिहान में डाला गया मगर तहक़ीक़ करने वाले कहते हैं कि आज़माइश की वजह वह है जो बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायत में है कि एक बार हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं आज रात अपनी नव्वे बीवियों पर और एक रिवायत में है कि सौ बीवियों पर चक्कर लगाऊंगा, यानी उनसे जिमाअ (हमबिस्तरी) करूंगा। इस जिमाअ से हर एक बीवी से एक लड़का पैदा होगा जो अल्लाह के रास्ते का मुजाहिद बनेगा। उनके साथी ने उनसे कहा कि इन्शाअल्लाह कह दो, मगर उन्होंने इन्शाअल्लाह नहीं कहा, जिसका नतीजा यह

1. हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की शरीअत में तस्वीरों और मुजस्समों का बनाना जाइज़ था, हमारी शरीअत में हराम है।

हुआ कि उनमें से सिर्फ़ एक बीवी हामिला हुई और उससे सिर्फ़ एक बच्चा पैदा हुआ, वह भी नातमाम।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस पर इर्शाद फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर वह इन्शाअल्लाह कह देते तो सारे बच्चे अल्लाह के रास्ते के मुजाहिद होते। (सावी, पेज 358, 359, हिस्सा 3)

सवालः– हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की इस ज़िक्र की गई बीवी का क्या नाम था? उसने मुजस्समे की इबादत कितने दिन की और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम कितने दिन आज़माइश में रहे?

जवाबः– उस बीवी का नाम जरादा था। चालीस दिन उसने इबादत की और चालीस ही दिन आज़माइश में रहे। (सावी, हिस्सा 3, पेज 358)

सवालः– हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम जिस औ़रत को अपनी अंगूठी देकर जाया करते थे, वह कौन थी और उसका नाम क्या था?

जवाबः– यह हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की उम्मे वलद थी, उसका नाम अमीना था। (सावी, हिस्सा 3, पेज 358 व जलालैन, हिस्सा 2, पेज 382)

सवालः– जिस जिन्न ने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की अंगूठी चुराई थी, उसका नाम क्या था और कितने दिन उसने हुकूमत की?

जवाबः– उस जिन्न का नाम सख़्र था (जिसका तर्जुमा चट्टान है), चूंकि यह भी बहुत बड़े जुस्से (जिस्म) वाला था, इसी वजह से उसका नाम सख़्र था और यह हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की सूरत पर था और उस जिन्न ने चालीस दिन तक हुकूमत की, क्योंकि चालीस दिन तक आपकी बीवी ने अपने बाप की तस्वीर की इबादत की थी। जब चालीस दिन हो गए तो यह जिन्न कुर्सी छोड़ कर भाग गया और अंगूठी दरिया में डाल दी। फिर उस अंगूठी को मछली ने निगल लिया। इसके बाद वह मछली हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के हाथ लग गई। आपने जब उसके पेट को चाक किया तो यह अंगूठी उसके पेट से निकली। (जलालैन, पेज 382)

सवालः– वह कौन आदमी है जिसने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को ख़बर दी थी कि आपके घर में अल्लाह के ग़ैर की पूजा हो रही है?

जवाबः– यह हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के वज़ीर थे, जिनका नाम आसिफ़ बिन बरख़िया था और यही वज़ीर बिलक़ीस के तख़्त को पलक झपकने

हुआ कि उनमें से सिर्फ़ एक बीवी हामिला हुई और उससे सिर्फ़ एक बच्चा पैदा हुआ, वह भी नातमाम।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इस पर इर्शाद फ़रमाया कि उस ज़ात की क़सम! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर वह इन्शाअल्लाह कह देते तो सारे बच्चे अल्लाह के रास्ते के मुजाहिद होते। (सावी, पेज 358, 359, हिस्सा 3)

सवालः— हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की इस ज़िक्र की गई बीवी का क्या नाम था? उसने मुजस्समे की इबादत कितने दिन की और हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम कितने दिन आज़माइश में रहे?

जवाबः— उस बीवी का नाम जरादा था। चालीस दिन उसने इबादत की और चालीस ही दिन आज़माइश में रहे। (सावी, हिस्सा 3, पेज 358)

सवालः— हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम जिस औरत को अपनी अंगूठी देकर जाया करते थे, वह कौन थी और उसका नाम क्या था?

जवाबः— यह हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की उम्मे वलद थी, उसका नाम अमीना था। (सावी, हिस्सा 3, पेज 358 व जलालैन, हिस्सा 2, पेज 382)

सवालः— जिस जिन्न ने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की अंगूठी चुराई थी, उसका नाम क्या था और कितने दिन उसने हुकूमत की?

जवाबः— उस जिन्न का नाम सख़्र था (जिसका तर्जुमा चट्टान है), चूंकि यह भी बहुत बड़े जुस्से (जिस्म) वाला था, इसी वजह से उसका नाम सख़्र था और यह हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की सूरत पर था और उस जिन्न ने चालीस दिन तक हुकूमत की, क्योंकि चालीस दिन तक आपकी बीवी ने अपने बाप की तस्वीर की इबादत की थी। जब चालीस दिन हो गए तो यह जिन्न कुर्सी छोड़ कर भाग गया और अंगूठी दरिया में डाल दी। फिर उस अंगूठी को मछली ने निगल लिया। इसके बाद वह मछली हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के हाथ लग गई। आपने जब उसके पेट को चाक किया तो यह अंगूठी उसके पेट से निकली। (जलालैन, पेज 382)

सवालः— वह कौन आदमी है जिसने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम को ख़बर दी थी कि आपके घर में अल्लाह के ग़ैर की पूजा हो रही है?

जवाबः— यह हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के वज़ीर थे, जिनका नाम आसिफ़ बिन बरख़िया था और यही वज़ीर बिलक़ीस के तख़्त को पलक झपकने

की मिक्दार से पहले ही ले आया था। (मज़हरी)

सवाल:— उस जिन्न का नाम क्या है जिसने कहा था कि "मैं आपकी मज्लिस ख़त्म होने से पहले ही बिलक़ीस के तख़्त को हाज़िर कर दूंगा।"

जवाब:— हज़रत वहब बिन मुनब्बह ने उसका नाम कोज़ा ज़िक्र किया है और कुछ ने सख़्रजिन और कुछ ने ज़कवान भी कहा है।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 32)

सवाल:— फ़र्शे सुलैमानी किस चीज़ का बना हुआ था?

जवाब:— फ़र्शे सुलैमानी सोने और रेशम का तैयार किया हुआ था। यह एक बहुत लम्बा चौड़ा फ़र्श बिछाया जाता था। इसके बीच में एक मिम्बर होता था जिस पर आप बैठते थे। (जुमल)

सवाल:— अहले मज्लिस चूंकि मुख़्तलिफ़ होते थे, इसलिए उनके बैठने की तर्तीब क्या होती थी?

जवाब:— फ़र्श के बीच में मिम्बर होता। जिसके इर्द-गिर्द सोने-चांदी की छः हज़ार कुर्सियां बिछाई जाती थीं, सोने की कुर्सियों पर अंबिया और चांदी की कुर्सियों पर उलमा बैठते, फिर आम इन्सान, फिर जिन्नात और परिन्दे आपके सर पर साया करते थे फिर हवा उस तख़्त को लेकर वहां जाती जहां हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम हवा को हुक्म फ़रमाते। (रूहुल मआनी, पेज 175, पारा 19)

सवाल:— सुलैमानी हुद-हुद कौन सा है और यमनी हुद-हुद कौन सा है? और उनके नाम क्या-क्या हैं?

जवाब:— सुलैमानी हुद-हुद वह है जो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम का इंजीनियर था, जो लश्कर के आगे रहता था पानी बतलाने के लिए, उस हुद हुद का नाम याफ़ूर था। (हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 392)

और यमनी हुद-हुद वह था कि जब सुलैमानी हुद-हुद बिलक़ीस के बाग़ में उतरा तो वहां उसकी मुलाक़ात एक हुद-हुद से हुई थी दोनों ने एक दूसरे से हालात मालूम किए थे। यह दूसरा हुद-हुद यमनी हुद-हुद था और उसका नाम अफ़ीर था। (सावी, पेज 192)

सवाल:— हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से गुफ़्तुगू करने वाली चियूंटी का नाम क्या था और उसने आपको क्या हदिया पेश किया था?

जवाबः— इस चियूंटी के नाम अलग-अलग ज़िक्र किए गए हैं। 1. ताख़िया, 2. जरमा। अल्लामा आलूसी यानी साहिब-ए-रूहुल मआनी और साहिब-ए-तफ़सीर-ए-मज़हरी ने ज़हहाक की रिवायत से नक़ल किया है कि इस चियूंटी का नाम ताहिया या जज़्मा था और कुछ ने मुन्ज़रा बताया है। (जलालैन)

और कुछ ने हज़्मा भी कहा है। (हयातुल हैवान)

और उस चियूंटी ने आपको एक बेर हदिए के तौर पर पेश किया था। (जुमल)

सवालः— जब यह चियूंटी हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो उसने आपकी शान में कोन से शेर पढ़े थे?

जवाबः— जो शेर उसने आपकी शान में पढ़े, वे नीचे लिखे जा रहे हैं:

الم ترنا نهدى الى الله ما لهٔ　　وان كان عنهٔ ذاغناً فهو قابلهٔ
لو كان يهدى للجليل بقدره　　لا قصر عنهٔ البحر يوماً وساحلهٔ
وما ذاک الامن كريم فعالهٔ　　والا فما فى ملكنا ما يشا كلهٔ
ولكننا نهدى الى من تحبهٔ　　فيرضى بها عنا ويشكر فاعلهٔ

अलम् त-र-ना नह्दी इलल्लाहि मा लहू
व इन का-न अन्हु ज़ागिनन फ हु-व क़ाबिलुहू
लौ का-न यह्दी लिल जलीलि बिक़दरिही
ला क़-स-र अन्हुल बह-रू यौमन व साहिलुहू
व मा ज़ा-क इल्ला मिन करीमिन फ़िआलहू
व इल्ला फ़मा फ़ी मुल्किना मा युशाकिलुहू
व ला किन्-नना नह्दी इला मन तुहिब्बुहू
फ यरज़ा बिहा अन्ना व यश्कुरू फ़ाज़िलुहू

सवालः— चियूंटी ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से क्या क्या सवाल किए?

जवाबः— हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से चियूंटी ने मालूम किया कि आपके अब्बा जान हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का नाम दाऊद (अलैहिस्सलाम) क्यों रखा गया? आपने कहा, मुझे मालूम नहीं। चियूंटी ने जवाब दिया कि (दावा-युदावी मुदावतन का तर्जुमा इलाज करना है) आपके वादिल मोहतरम ने अपने क़ल्ब का इलाज किया है। इसके बाद चियूंटी ने कहा, अच्छा, आपका नाम सुलैमान (अलैहिस्सलाम) क्यों रखा गया? तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम

बोले, मुझे मालूम नहीं। चियूंटी ने कहा कि सुलैमान का तर्जुमा है सलीम और सलामती वाले और आप सलीमुल क़ल्ब वस्सद्र (जिसका दिल और सीना ठीक हो) हैं, इस वजह से आपका नाम सुलैमान रखा गया।

(रूहुल मआनी, पेज 179)

सवालः— बाल सफ़ा पाउडर की ईजाद किसने की?

जवाबः— हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के ज़माने के शैतानों ने की, जिसका वाक़िआ यह पेश आया कि जब हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने बिलक़ीस (मलका-ए-सबा) से शादी करने का इरादा किया तो जिन्नात ने सोचा कि अगर यह बिलक़ीस से शादी कर लेंगे तो बिलक़ीस चूंकि जिन्निया की लड़की है, यह जिन्नात के रूमूज़ व असरार हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को बतला देगी, इस तरह हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम हमारे राज़ों से वाक़िफ़ हो जाया करेंगे, इसलिए बेहतर यह है कि शादी होने से पहले ही हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के दिल में बिलक़ीस की तरफ़ से नफ़रत पैदा कर देनी चाहिए तो जिन्नात में से कुछ ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम से कहा कि बिलक़ीस की पिंडलियों पर तो बाल हैं, जिस पर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने एक हौज़ तैयार कराया और उसके अन्दर पानी भरवा कर ऊपर शीशे का फ़र्श बिछवा दिया। जब बिलक़ीस आई तो रास्ता हौज़ के ऊपर को था। बिलक़ीस हौज़ के क़रीब आई तो सोचा कि शायद पानी का हौज़ है, ऊपर शीशे का फ़र्श उसको महसूस नहीं हुआ पानी में दाख़िल होने के इरादे से उसने अपनी शलवार ऊपर उठा ली, जिससे पिंडलियाँ खुल गईं। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम हौज़ के दूसरी तरफ़ तशरीफ़ रखते थे, तो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जब बिलक़ीस की पिंडलियों को देखा तो उन पर बाल नज़र आए। अल्-ग़रज़ हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने शादी तो कर ली, मगर पिंडलियों पर बाल ज़्यादा होने की वजह से नागवारी महसूस करते रहे, जिस पर उन्होंने इन्सानों से मालूम किया कि बालों को उड़ा देने वाली कोई चीज़ है? उन्होंने बतलाया कि उस्तरा है। जब बिलक़ीस को बाल साफ़ करने के लिए उस्तरा दिया गया तो उसने कहा कि मैंने आज तक अपने बदन पर लोहा नहीं लगाया। फिर हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जिन्नात से मालूम किया, उन्होंने ला-इल्मी का इज़्हार किया। फिर जिन्न शैतानों से मालूम किया, तो उन्होंने उसी वक़्त चूने वग़ैरह से बाल सफ़ा पावडर

तैयार करके दिया, वल्लाहु आलमु। (ख़ाज़िन व हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 35)

सवालः– बिलक़ीस के तख़्त की लम्बाई-चौड़ाई और ऊंचाई कितनी थी?

जवाबः– इसमें तीन क़ौल हैं:–

1. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि बिलक़ीस का तख़्त तीस हाथ लम्बा और तीस हाथ चौड़ा और तीस हाथ ऊंचा था।

2. हज़रत मुक़ातिल फ़रमाते हैं कि उसकी ऊंचाई अस्सी हाथ थी।

3. और कुछ लोगों ने कहा कि लम्बाई अस्सी हाथ और चौड़ाई चालीस हाथ और ऊंचाई तीस हाथ थी। (हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 33)

सवालः– वे कौन सी चीज़ें हैं जिनकी शुरूआत हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से हुई?

जवाबः– सबसे पहले बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई, रिवायत इब्ने अ़ब्बास के मुताबिक़।

(मुहाज़रतुल अवाइल, पेज 44, बग़ियतुज़ ज़मआन के हवाले से)

2. सबसे पहले हम्माम हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बनवाया। (शामी, हिस्सा 5, पेज 33, ज़ादुल मआ़द, हिस्सा 2, पेज 137, बग़ियतुज़ ज़मआन के हवाले से)

3. सबसे पहले समुन्दर से मोती हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने निकलवाए। (रूहुल बयान, हिस्सा 3, पेज 353, बग़ियतुज़ ज़मआन क हवाले से)

4. सबसे पहले कबूतर हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने पाला।

(क़ससुल अंबिया, पेज 213, बग़ियतुज़ ज़मआन के हवाले से)

5. सबसे पहले ज़म्बील हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बनवाया।

(मुहाज़रा, पेज 200, बग़ियतुज़ ज़मआन के हवाले से)

6. सबसे पहले तांबे की सनअ़त हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने की।

(मुहाज़रतुलअवाइल, पेज 200, बग़ियतुज़ ज़मआन क हवाले से)

○ ○ ○

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम और हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को बीमारी किस दिन लाहिक़ हुई?

जवाबः– हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम बुध के दिन बीमारी में मुब्तला हुए।

(मिश्कात, पेज 391)

सवालः– हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम इस बीमारी में कितने दिन मुब्तला रहे?

जवाबः– इसमें पाँच क़ौल हैं:

1. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में है कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम बीमारी में 18 साल रहे।

2. हज़रत वहब फ़रमाते हैं कि पूरे तीन साल रहे।

3. हज़रत कअ़ब फ़रमाते हैं कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम बीमारी में सात साल मुब्तला रहे।

4. सात साल सात माह तक बीमार रहे।

5. सात दिन सात घंटे बीमार रहे। (तफ़्सीर मज़हरी)

सवालः– हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने किस लक़ब से नवाज़ा?

जवाबः– ज़ुन्नून लक़ब से नवाज़ा, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः

'व ज़न्नूनि इज़ ज़-ह-ब-मुग़ाज़िबन'

"क्यूंकि 'नून' के मअ़ना मछली के हैं और 'ज़ा' के मअ़ना हैं वाला यानी मछली वाला और यह लक़ब मछली के पेट में रहने की वजह से दिया गया।

(हयातुल हैवान, पेज 983)

सवालः– हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम मछली के पेट में कितने दिनों तक रहे?

जवाबः– इस बारे में इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने कहा कि सात घंटे रहे, कुछ ने कहा कि तीन दिन रहे और कुछ ने कहा, सात दिन और कुछ ने चौदह दिन बयान किए हैं और इमाम सुहैली ने बयान किया कि हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम

चालीस दिन मछली के पेट में रहे। हज़रत इमाम अहमद ने किताबुज़्ज़ुहद में नक़ल किया है कि एक आदमी ने इमाम शाबी के सामने कहा कि हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम चालीस दिन तक मछली के पेट में रहे तो इमाम शाबी ने उसकी तर्दीद की और कहा कि हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम मछली के पेट में एक दिन से ज़्यादा नहीं ठहरे, इसलिए कि जब मछली ने हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम को निगला तो चाश्त का वक़्त था और जब निकाला तो सूरज गुरूब हो रहा था और हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने सूरज की रोशनी देखकर आयत **'ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन०'** पढ़ी थी।

(हयातुल हैवान, पेज 384)

हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम और हज़रत मरयम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम की अहलिया का नाम क्या है?

जवाबः— आपकी अहलिया का नाम इशाअ़ बिन्ते फ़ाक़ूद है।

(हाशिया जलालैन, सावी, हिस्सा 3, पेज 31)

सवालः— हज़रत मरयम अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र क़ुरआन पाक में कितनी जगह आया है?

जवाबः— 30 जगह आया है। (सावी, हिस्सा 3, पेज 30)

सवालः— हज़रत मरयम अ़लैहस्सलाम के माँ-बाप के नाम क्या क्या हैं?

जवाबः— वालिद का नाम इम्रान और वालिदा का नाम हन्ना है।

(सावी, हिस्सा 3, पेज 36)

हज़रत यह्या अ़लैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— वे कौन से अंबिया हैं, जिनको अल्लाह ने बचपन में ही नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाया?

जवाबः— दो हैं: हज़रत यह्या अ़लैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम।

हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

'या यह्या ख़ुज़िल किता-ब बि क़ुव्वतिन० व आतैना हुल हुक्म सबिय्या०'

"और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बारे में ख़ुद उनका क़ौल अल्लाह ने नक़ल किया है"। **'क़ाल इन्नी अ़ब्दुल्लाहि, आता नियल किता-ब व ज-अ़लनी नबिय्या०'**

(सावी, हिस्सा 3, पेज 23)

सवालः— हज़रत यह्या अ़लैहिस्सलाम का नाम यह्या क्यों रखा गया?

जवाबः— इसमें दो क़ौल हैं:—

1. उनकी वालिदा माजिदा अक़ीमा यानी बांझ हो चुकी थीं, उनके ज़रिए रहम-ए-मादर को हयात मिली।

2. इस वजह से कि उनके ज़रिए अल्लाह ने दिलों को ज़िंदा कर दिया था।

(हाशिया जलालैन, पेज 254)

सवालः— जिस वक़्त हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह ने आसमान पर उठाया, उस वक़्त उनकी उम्र कितनी थी?

जवाबः— इसमें दो क़ौल हैं। 1. तैंतीस साल के थे।

2. एक सौ बीस साल के थे।

(हाशिया जलालैन, पेज 53)

सवालः— हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम फिर दुनिया में कब तशरीफ़ लाएंगे, किस चीज़ के ज़रिए ज़मीन पर उतरेंगे और कहाँ उतरेंगे?

जवाबः— हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम क़ियामत के क़रीब आएंगे। दो फ़रिश्तों के कंधों पर हाथ रखे और दो रंगीन चादर ओढ़े हुए दमिश्क़ की जामा मस्जिद के मीनार-ए-बैज़ा पर उतरेंगे, जो मश्रिक़ की जानिब में है।

(हाशिया जलालैन, पेज 52, पारा 3, तिर्मिज़ी मुतर्जम, बहिश्ती ज़ेवर)

सवालः— आसमान से उतरने के बाद हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के औलाद भी होगी या नहीं?

जवाबः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम दुनिया में आएंगे और वह निकाह करेंगे जिससे उनके औलाद भी होगी।

(मिश्कात, हाशिया जलालैन, पेज 52, पारा 3)

सवालः— हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम दुनिया में आने के बाद कितने साल तक ज़िंदा रहेंगे और उनका मदफ़न (दफ़न होने की जगह) कहाँ होगा?

जवाबः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम दुनिया में आएंगे और 45 साल ज़िन्दा रहेंगे फिर मर जाएंगे और मेरे मक़बरे में दफ़न होंगे तो क़ियामत के दिन मैं और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम एक ही[1] क़ब्र से अबू बक्र व उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के दर्मियान उठेंगे। यह हदीस अ़ल्लामा इब्नुल जौज़ी ने अक़ाइदे नसफ़ी में भी ज़िक्र की है।

(मिश्कात, हिस्सा 2, पेज 480, हाशिया जलालैन, पेज 52)

सवालः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर जो दस्तरख़्वान नाज़िल हुआ था, उसमें क्या-क्या चीज़ें थीं?

जवाबः– उस दस्तरख़्वान में अलग-अलग चीज़ें थीं:–

एक भुनी हुई मछली थी, उसके सर के पास नमक रखा हुआ था और दुम के पास सिरका था और तरह-तरह की सब्ज़ियां थीं और पांच चपातियाँ थीं, जिनमें से एक पर घी, दूसरी पर ज़ैतून का तेल, तीसरी पर शहद, चौथी पर पनीर, पाँचवीं पर क़दीद यानी क़ीमा किया हुआ गोश्त था।

(हाशिया जलालैन, हिस्सा 1, पेज 111, पारा 7)

सवालः– उस दस्तरख़्वान में जो खाना था, वह जन्नत का खाना था या दुनिया का?

जवाबः– उसमें न तो जन्नत का खाना था और न दुनिया का, बल्कि अल्लाह ने इन दोनों के अ़लावा अपनी क़ुदरत से मुस्तक़िल तैयार करके भेजा था।

(हाशिया जलालैन, पेज 111)

सवालः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश किस मुक़ाम में हुई?

जवाबः– वादी-ए-बैत-ए-लहम में हुई जैसा कि इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से नक़ल किया गया है और यही क़ौल मशहूर है। (जुमल, हिस्सा 3, पेज 57)

सवालः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में जिन लोगों को ख़िनज़ीर बनाया गया, उनकी तादाद कितनी है और वे कितने दिन तक ज़िंदा रहे?

जवाबः– उनकी तादाद तीन सौ तीस थी और वे तीन दिन तक ज़िंदा रहे और कुछ ने कहा कि सात दिन तक और कुछ ने कहा कि चार दिन के बाद मर गए थे।

(हाशिया जलालैन, हिस्सा 1, पेज 111, पारा 7)

---

1. हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की क़ब्र से इतनी मिली हुई होगी कि ऐसा महसूस होगा, एक ही क़ब्र है। (हाशिया मिश्कात, हिस्सा 2, पेज 480)

सवालः— हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बत्न-ए-मादर (माँ का पेट) में कितने दिन ज़िंदा रहे?

जवाबः— कुछ ने कहा कि आठ महीने, कुछ ने छः महीने, कुछ ने कहा तीन घंटे, कुछ ने एक घंटा कहा और कुछ ने कहा आठ माह रहे, आख़िरी क़ौल ज़्यादा मज़बूत है। (हाशिया जलालैन, हिस्सा 2, पेज 255)

सवालः— हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बाद कौन सा बादशाह हुकूमत करेगा?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के दुनिया में आने के बाद जब इंतिक़ाल कर जाएंगे तो जहजाह बादशाह हुकूमत करेगा।

सवालः— इमाम मेहदी कितने साल ज़िंदा रहेंगे?

जवाबः— कुछ ने कहा कि 9 साल दुनिया में ज़िंदा रहेंगे और कुछ ने कहा कि चालीस साल। दोनों में मुताबक़त इस तरह मुम्किन है कि वह ज़माना ऐसा होगा जिसमें दिन बहुत लम्बा होगा। इस हिसाब से आजकल के चालीस साल और उस वक़्त के नौ साल हो जाएंगे और तिर्मिज़ी, हिस्सा 2, में पांच या सात या छः साल का तज़्किरा है।

मुतलक़ अंबिया से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— दुनिया में कुल कितने अंबिया तशरीफ़ लाए?

जवाबः— हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नबियों की तादाद के बारे में मालूम किया तो आपने इर्शाद फ़रमाया कि एक लाख चौबीस हज़ार। (शरहे अक़ाइद, पेज 101, मिश्कात, हिस्सा 2, पेज 511)

सवालः— दुनिया में रसूल कितने तशरीफ़ लाए?

जवाबः— रसूलों की तादाद के बारे में हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मालूम किया तो फ़रमाया कि दुनिया में कुल 313 रसूल तशरीफ़ लाए। (हाशिया शरह-ए-अक़ाइद, पेज 101)

सवालः— क़ुरआन में कितने नबियों का ज़िक्र है?

जवाबः— क़ुरआन में अल्लाह ने कुल 25 नबियों का ज़िक्र फ़रमाया है। (हाशिया जलालैन, पारा 10, पेज 396)

सवालः— दो रसूलों के दर्मियान कितने साल का फ़ासला है और कौन सा रसूल किसके बाद आया?

जवाबः— एक रसूल से दूसरे रसूल तक (अक्सर व बेशतर) एक हज़ार साल का फ़ासला होता था और कभी इस मिक्दार से कम व बेश फ़ासला भी होता था।

चुनांचे सबसे पहले हज़ारे में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए।

दूसरे हज़ारे में हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए।

तीसरे हज़ारे में हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए।

चौथे हज़ारे में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और पांचवें हज़ारे में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम आए।

छठे हज़ारे में हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम, सातवे में हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और आठवें हज़ारे में हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। (हयातुल हैवान, अ़जाइबुल मख़्लूक़ात, हिस्सा 2, पेज 64)

सवालः— उलुल अ़ज़्म अंबिया किराम कितने हैं?

जवाबः— पाँच हैं। 1. हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम। 2. हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम। 3. हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम। 4. हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम। 5. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। (हयातुल हैवान, पेज 79)

सवालः— किन-किन नबियों ने अल्लाह से बिला वास्ता गुफ़्तुगू की और कहाँ-कहाँ की?

जवाबः— वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तो शब-ए-मेराज में और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने तूर-ए-सीना पर। (सावी, हिस्सा 3, पेज 32)

सवालः— वे कौन कौन से नबी हैं जिनके लिए मकड़ी ने जाला ताना और किस जगह ताना?

जवाबः— एक तो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं जिनके लिए ग़ार-ए-सौर के दरवाज़े पर मकड़ी ने जाला तान दिया था, क्योंकि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हिजरत के इरादे से मक्के से निकल चुके थे और मक्का के कुफ़्फ़ार आपके क़त्ल के दरपे थे, तो उस ग़ार-ए-सौर में आकर आपने तीन दिन क़ियाम किया था। आपके साथ आपके साथी हज़रत सिद्दीक़-

ए-अकबर भी थे। कुफ़्फ़ार आपकी तलाश में निकले। ग़ार के दरवाज़े पर देखा कि मकड़ी ने जाला तान रखा है। वे लोग यह सोचकर वापस हो गए कि अगर ग़ार के अन्दर कोई शख़्स गया होता तो दरवाज़े पर जाला तना हुआ न होता और दूसरे हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम हैं, जब उनको जालूत ने क़त्ल करने का इरादा कर लिया तो दाऊद अ़लैहिस्सलाम एक ग़ार में जा छिपे थे। जब उस दुश्मन यानी जालूत को मालूम हुआ तो ग़ार पर तलाश करने गया, तो मकड़ी ने जाला तान दिया था जिसकी वजह से तलाश में नाकाम रहा।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 92 मय ज़्यादा)

सवाल:– वे कौन से अंबियां हैं जिन्होंने मुलाज़मत (मज़दूरी) की?

जवाब:– दो हैं। 1. हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जिन्होंने हज़तर शुएब अ़लैहिस्सलाम की मज़दूरी की, (10 साल तक उनकी बकरियाँ चराई)।

2. आंहज़रत नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जिन्होंने हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की मज़दूरी की।

(मुहाज़रतुल् अवाइल 330, बहवाला बाग़ियतुज़ ज़म्आन)

सवाल:– कितने अंबिया ऐसे हैं जो ज़िंदा हैं?

जवाब:– ऐसे चार अंबिया हैं, आसमान पर जो ज़िंदा हैं। वे हैं हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम, हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम और ज़मीन पर हैं, हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम और इलयास अ़लैहिस्सलाम।

(सावी, हिस्सा 3, पेज 41, हाशिया न० 7, शरह अक़ाइद, पेज 107)

सवाल:– पैदाइशी ख़त्ने वाले अंबिया-ए-किराम कितने हैं?

जवाब:– काब-ए-अहबार रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने रिवायत किया कि वे अंबिया 13 हैं। 1. हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम, 2. हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम, 3. हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम, 4. हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम, 5. हज़रत साम अ़लैहिस्सलाम, 6. हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम, 7. हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम, 8. हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, 9. हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम, 10. हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम, 11. हज़रत यहया अ़लैहिस्सलाम, 12. हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम, 13. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

और मुहम्मद बिन हबीब हाशिमी ने चौदह नक़ल किए हैं। 1. हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम, 2. हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम, 3. हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम, 4.

हज़रत हूद अलैहिस्सलाम, 5. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम, 6. हज़रत लूत अलैहिस्सलाम, 7. हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम, 8. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, 9. हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, 10. हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम, 11. हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम, 12. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, 13. हज़रत हन्ज़ला बिन अबू सफ़वान अलैहिस्सलाम, 14. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 79)

सवालः– आसमान पर ज़िंदा उठाए जाने वाले अंबिया-ए-किराम कितने हैं?

जवाबः– दो हैं, हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। (सावी)

शीर ख़्वारी (दूध पीने) की हालत में बात करने वाले बच्चे

सवालः– कितने बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने दूध पीने की हालत में बात की?

जवाबः– चार बच्चे हैं: 1. साहिब-ए-जुरैज यानी वह बच्चा जिसने हज़रत जुरैज रह० की इफ़्फ़त की गवाही दी और उनकी बराअत (बरी होना) पेश की, जिसका पस मंज़र यह है कि एक औरत के यहां ज़िनाकारी से बच्चा पैदा हुआ, जिसको उसने हज़रत जुरैज की तरफ़ मंसूब कर दिया। हज़रत जुरैज ने बच्चे की तरफ़ इशारा किया तो उसने गवाही दी कि मेरा बाप तो फ़लां चरवाहा है।

2. दूसरा वह बच्चा जिसने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की गवाही देकर ज़ुलेख़ा से उनकी बराअत की (छुटकारा दिलाया)।

3. तीसरा फ़िरऔन की लड़की की ख़ादिमा का बच्चा जिसने फ़िरऔन की लड़की को कुफ़्र से डराया था।

4. चौथे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 80)

फ़रिश्तों से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– फ़रिश्तों ने किस-किस को ग़ुस्ल दिया?

जवाबः– दो हज़रात को ग़ुस्ल दिया। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को, हज़रत हंज़ला बिन अबी आमिर सक़फ़ी को। (हिदाया, हिस्सा 1, बाबुश्शहीद, पेज 163)

सवालः– हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा सबसे पहले किसने किया, और सज्दा किस तर्तीब पर किया गया?

जवाबः– सबसे पहले हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने सज्दा किया फिर हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम ने फिर हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम ने फिर हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम ने फिर तमाम फ़रिश्तों ने। तर्तीब याद रखने के लिए 'ज-म-इ-इ' (ج-م-ا-ع) याद रखें। 'ज' से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम, 'म' से हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम, 'इ' से हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम, 'इ' से हज़रत इज़राईल अलैहिस्सलाम।

(बग़ियतुज़ ज़मआन, पेज 114, बहवाला किताबुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 383)

सवालः– हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम कौन से फ़रिश्ते हैं, कहाँ पर रहते हैं?

जवाबः– यह एक बड़े फ़रिश्ते हैं जो आसमान-ए-दुनिया पर रहते हैं, शबे क़द्र में आमाल का नुस्ख़ा उनके हवाले किया जाता है।

(रूहुल मआनी, हिस्सा 25, पेज 113)

सवालः– हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के घोड़े का नाम क्या है?

जवाबः– हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के घोड़े का नाम हैज़ूम है।

(कश्शाफ़, हिस्सा 3, पेज 84)

सवालः– जन्नत के दारोग़ा और जहन्नम के दारोग़ा के नाम क्या क्या हैं?

जवाबः– जन्नत के दारोग़ा का नाम रिज़्वान है। (ग़यासुल्लुग़ात फ़ारसी, पेज 221)

जहन्नम के दारोग़ा का नाम मालिक है, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है। (सूरः ज़ुख़रुफ़, 77)

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ الخ (سورۂ زخرف ۷۷)

सवालः– कौन सा फ़रिश्ता लोगों को हश्र के मैदान की तरफ़ बुलाएगा?

जवाबः– हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम बुलाएंगे। (सावी, हिस्सा 3, पेज 65)

सवालः– हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम महशर की तरफ़ किस चीज़ के ज़रिए बुलाएंगे?

जवाबः– हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम अपने मुँह में सूर को रखेंगे। जब उसमें फूंक मारेंगे तो एक आवाज़ निकलेगी जिसको सुनकर मुर्दे ज़िंदा हो जाएंगे

और क़ब्रों से निकल पड़ेंगे। (सावी, हिस्सा 3, पेज 65)

सवालः– हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम किस जगह खड़े होकर आवाज़ देंगे और क्या कहकर आवाज़ देंगे?

जवाबः– बैतुल मुक़द्दस की चट्टान पर खड़े होकर आवाज़ देंगे और यह कहेंगेः

ايتها العظام البالية والا وصال المتقطعة و اللحوم المتمزقة
ان الله يا مركن ان تجتمعن لفصل القضاء فيقبلون.

तर्जुमाः– "ऐ बोसीदा हड्डियो और अलग अलग हुए जोड़ो और बिखरे हुए गोश्तो अल्लाह तआ़ला तुमको हुक्म दे रहा है कि तुम फ़ैसले के लिए जमा हो जाओ तो वे लब्बैक कहेंगे और कुछ ने कहा कि निदा (आवाज़) देने वाले तो हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम होंगे और सूर में फूंक मारने वाले हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम होंगे। (सावी, हिस्सा 3, पेज 65)

सवालः– सूर क्या चीज़ है?

जवाबः– सूर नूर का बना हुआ एक सींग है जिसमें फूंक मारी जाएगी। तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आस की रिवायत में है कि एक आराबी नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िद्मत में हाज़िर हुआ और मालूम किया सूर क्या चीज़ है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, एक सींग है जिसमें फूंक मारी जाएगी। इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने हज़रत मुजाहिद से नक़्ल किया है। सूर बूक़ की तरह है बूक़ के मअ़्ना हैं नरसिंहा। (रूहुल मआ़नी, हिस्सा 20, पेज 30)

सवालः– ज़मीन वालों की तरह आसमान वालों (फ़रिश्तों) का भी क़िब्ला है या नहीं?

जवाबः– जिस तरह ज़मीन वालों का क़िब्ला कअ़्बा है, उसी तरह आसमान वालों का क़िब्ला अ़र्श है। (अजाइबुल मख़्लूक़ात व ग़राइबुल मौजूदात, पेज 41)

सवालः– सबसे पहले ख़ाना कअ़्बा का तवाफ़ किसने किया?

जवाबः– फ़रिश्तों ने किया। (तारीख़-ए-कामिल, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

सवालः– वे चीज़ें जिनकी शुरूआ़त फ़रिश्तों से हुई, कौन-कौन सी हैं?

जवाबः– 1. सबसे पहले आसमान में अज़ान हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम

ने पढ़ी। (मुहाज़रतुल अवाइल बहवाला ज़ुगियतुज़-ज़मुआन)

2. सबसे पहले सुब्हानल्लाह हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने कहा।

(स्हुल बयान, ज़ुगियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

3. सबसे पहले 'सुब्-हा-न रब्बियल-आला' हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम ने कहा। (मुहाज़रा, ज़ुगियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मुताल्लिक़ बातें

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— वह कौन से सहाबी हैं जिन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में इमामत कराई और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके मुक़्तदी बने?

जवाबः— वह सहाबी हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मरज़ुल वफ़ात शुरू हुआ तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इजाज़त से इमामत कराई। (नश्रुत्तीब)

सवालः— हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में कितनी नमाज़ें पढ़ाईं।

जवाबः— हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में 17 नमाज़ें पढ़ाईं। (नशरुत्तीब)

सवालः— वह कौन से सहाबी हैं जिनको अल्लाह ने अपना सलाम कहलवाया?

जवाबः— वह हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, जबकि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मज्लिस में इस हालत में हाज़िर हुए कि उनके बदन पर कुरते की जगह एक फटा हुआ कम्बल पड़ा हुआ था, जिसमें बटनों की जगह कांटे लगा रखे थे। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अबू बक्र का क्या हाल हो गया कि मालदारी के बावुजूद फ़क़ीराना लिबास में बैठे हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बक्र अपना तमाम माल मुझ पर

और मेरे रास्ते पर ख़र्च करके मुफ़्लिस हो गए हैं। हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने अबू बक्र को सलाम कहा है और पूछा है कि ऐ अबू बक्र! तू इस फ़क्र की हालत में मुझसे राज़ी है या नाराज़? सिद्दीक़-ए-अकबर ने जब यह सुना तो वज्द की कैफ़ियत तारी हो गई और मस्ताना हालत में बुलन्द आवाज़ में बार-बार यह कहने लगेः—

اَنَا عَنْ رَبِّیْ رَاضٍ. اَنَا عَنْ رَبِّیْ رَاضٍ

तर्जुमाः— "यानी मैं तो अपने रब से राज़ी हूँ।"

(तफ़्सीर-ए-अज़ीज़ी, पेज 205, पारा अम्म, सूरतुल लैल)

सवालः— हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब सिद्दीक़ किस वजह से पड़ा?

जवाबः— जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेराज से तश्रीफ़ लाए और अपनी फूफी उम्मे हानी से शब-ए-मेराज का क़िस्सा बयान किया तो उम्मे हानी ने लोगों के सामने बयान करने से मना किया। अल्ग़रज़ जब लोगों के सामने यह वाक़िआ आया तो कुफ़्फ़ार ने इन्कार किया मगर हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को जब मालूम हुआ तो फ़ौरन तस्दीक़ की और कहा कि अगर यह बात मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बयान करते हैं तो यह सही है। उसी वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब सिद्दीक़ रखा। (हाशिया शरह अक़ाइद, पेज 107)

सवालः— हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का ज़माना कितने साल रहा?

जवाबः— हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का ज़माना सवा दो साल का है। (तारीख़-ए-इस्लाम)

दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त दो साल तीन माह आठ दिन रही। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 71)

सवालः— वे चीज़ें, जिनकी शुरूआत हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई, कौन-कौन सी हैं?

जवाबः— 1. उम्मते मुहम्मदिया में सबसे पहले ख़लीफ़ा का लक़ब हज़रत

अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को अ़ता किया गया।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

2. सहाबा में से सबसे पहले और सबसे बड़े मुफ़्ती हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (मुहाज़रा बहवाला बग़ियतुज़-ज़मआन, पेज 134)

3. इस्लाम में सबसे पहले हज हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पेज 59, बग़ियतुज़-ज़मआन के हवाले से)

सवालः– हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का असल नाम क्या है?

जवाबः– सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का असल नाम अ़ब्दुल्लाह है।

(हाशिया शरहे अक़ाइद, पेज 107)

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– फ़ारूक़ किसका लक़ब है और क्यों?

जवाबः– एक यहूदी और मुनाफ़िक़ के दर्मियान किसी बात पर झगड़ा हुआ। मामला हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास लाया गया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यहूदी के हक़ में फ़ैसला सुना दिया। मुनाफ़िक़ ने वह फ़ैसला न माना और यहूदी को कहा कि उमर के पास चलो, वह फ़ैसला करेंगे। आख़िरकार दोनों हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। मामला उनके सामने रखा। यहूदी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फ़ैसला भी बतला दिया और कहा कि इसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के फ़ैसले को नहीं माना। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अन्दर घर में गए, तलवार उठा कर लाए और मुनाफ़िक़ की गरदन क़लम कर दी और कहा कि जो अल्लाह और उसके रसूल के फ़ैसले को नहीं मानता, उसका हमारे यहाँ यही अंजाम है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पता चला तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब फ़ारूक़ रखा, क्योंकि आपके इस काम से हक़ व बातिल में फ़र्क़ हो गया।

(तफ़्सीर-ए-ख़ाज़िन, हिस्सा 1, पेज 397)

सवालः– हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कितने साल ख़िलाफ़त की?

जवाबः– 1. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने साढ़े दस साल ख़िलाफ़त की।

(तारीख़-ए-इस्लाम)

2. मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त दस साल छः माह और पाँच रात हुई और कुछ उलमा ने 13 दिन कहा है। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 75)

सवालः– वे चीज़ें जिनकी शुरूआत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुई, कौन-कौन सी हैं?

जवाबः– 1. नमाज़ में सबसे पहले ज़ोर से बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पढ़ी।

2. सबसे पहले अमीरूल मोमिनीन के लक़ब से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को याद किया गया। (तारीख़-ए-इस्लाम)

3. हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में सबसे पहले अल्लाह की इबादत का ऐलानिया ऐलान किया।

4. सबसे पहले शराब पीने पर सज़ा का हुक्म जारी करने वाले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं।

5. इस्लाम में सन्न-ए-हिजरी जारी करने वाले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। (बग़ियतुज़-ज़मआन)

6. सबसे पहले घोड़ों की ज़कात वुसूल करने वाले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। (बग़ियतुज़-ज़मआन)

7. सबसे पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सद्क़े के रूपये को इस्लाम में ख़र्च करने से रोका। (बग़ियतुज़-ज़मआन, पेज 124)

8. सबसे पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उश्र (दसवां हिस्सा) लिया। (बग़ियतुज़-ज़मआन, पेज 125)

9. इस्लाम में सबसे पहले क़ाज़ी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। (बग़ियतुज़-ज़मआन)

10. सबसे पहले जिसने क़ाज़ी का वज़ीफ़ा बैतुलमाल से जारी किया, वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। (बग़ियतुज़-ज़मआन, पेज 134)

11. इस्लाम में सबसे पहले क़ाज़ी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने मुक़र्रर किए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पेज 97, बग़ियतुज़-ज़मआन, पेज 134 के हवाले से)

12. सबसे पहले मस्जिद में फ़र्श बिछाने का इन्तिज़ाम हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया। (बग़ियतुज़-ज़म्आन)

13. इस्लाम में सबसे पहले शहरों को आबाद करने वाले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 160)

14. इस्लाम में सबसे पहले शहरों के क़ाज़ी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुन्तख़ब किए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, बग़ियतुज़-ज़म्आन के हवाले से)

15. सबसे पहले रात में रइय्यत (अवाम) की पासबानी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने की। (बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 161)

16. सबसे पहले दुर्रे की ईजाद और कोड़े की सज़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दी। (बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 161)

17. सबसे पहले दफ़्तर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ायम कराए। (कामिल, हिस्सा 2, पेज 350, किताबुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 64, बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 161 के हवाले से

18. सबसे पहले मैदानों की पैमाइश हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कराई। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पेज 108, बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 161)

19. सबसे पहले लोगों को जनाज़े की नमाज़ में चार तक्बीरों पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जमा किया। (बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 120)

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– ज़ुन्-नूरैन किसका लक़ब है? और यह लक़ब किस वजह से पड़ा?

जवाबः– यह हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है, इसलिए कि उनके निकाह में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक के बाद एक दो बेटियाँ आईं। (हाशिया बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 161)

सवालः– नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में जुमा के लिए एक अज़ान होती थी, फिर अज़ान-ए-सानी (दूसरी) की शुरूआत किसके ज़माने में हुई और क्यों हुई?

जवाबः– हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने जुमे की दूसरी अज़ान की शुरूआत इस वजह से कराई कि लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के ऐतिबार से ज़्यादा हो गए थे और उनमें सुसती पैदा हो गई थी, जुमे की एहमियत की वजह से हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने

इज्तिहाद और सहाबा-ए-किराम के इत्तिफ़ाक़ से दूसरी अज़ान की शुरूआत कराई। (बुख़ारी, पेज 124)

सवालः– वे चीज़ें जिनकी शुरूआत हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई, कौन-कौन सी हैं?

जवाबः– 1. सबसे पहले मस्जिद में पर्दे लटकवाने वाले हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (मिरआतुल हरमैन, पेज 235, बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 122 के हवाले से)

2. हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सबसे पहले मुअज़्ज़िनों की तन्ख़्वा मुक़र्रर की। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पेज 137, बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 161 के हवाले से)

3. सबसे पहले पुलिस तैयार करने वाले हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पेज 127, ऊपर के हवाले से)

4. सबसे पहले चरागाहें खुदवाने वाले हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 161)

सवालः– हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त कितने साल तक रही?

जवाबः– इसमें तीन क़ौल हैं: 1. हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त बारह दिन कम बारह साल रही।

2. हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त का ज़माना ग्यारह साल, ग्यारह माह, 14 दिन है।

3. बारह साल है। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 78)

सवालः– हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद करने वाला कौन आदमी है?

जवाबः– कनाना बिन बशीर ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया। (तारीख़-ए-इस्लाम, पेज 414)

सवालः– हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़-ए-जनाज़ा किस सहाबी ने पढ़ाई?

जवाबः– हज़रत ज़ुबैर बिन मुतइम रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ाई। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 78)

हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— अबू तुराब किसकी कुन्नियत है? और यह कुन्नियत किसने रखी?

जवाबः— यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की कुन्नियत है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रखी। वाक़िआ यह पेश आया कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु एक बार मस्जिदे नबवी में नीचे ज़मीन पर ही लेट गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम किया तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया कि वह तो आज नाराज़ होकर चले गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद-ए-नबवी में तशरीफ़ ले गए, देखा कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु मिट्टी पर ही लेटे हुए हैं और पुश्त (पीठ) पर बहुत मिट्टी लगी हुई है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके पास आए और उनकी पुश्त पर हाथ मारा और मिट्टी झाड़ते हुए कहने लगेः—

'क़ुम या अबा तुराब! क़ुम या अबा तुराब!

यानी ऐ मिट्टी वाले, उठ! ऐ मिट्टी वाले, उठ! उसी वक़्त से आपकी कुन्नियत अबू तुराब हो गई। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 78)

सवालः— जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिजरत के इरादे से मक्के से निकले तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को घर पर क्यों छोड़ा?

जवाबः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को घर पर इसलिए छोड़ा था, ताकि जिन लोगों की अमानतें उनको नहीं पहुंचीं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु उनको अदा करके आ जाएं।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 79)

सवालः— हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कितने दिनों बाद हिजरत के इरादे से निकले?

जवाबः— तीन दिन के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु भी निकल गए थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ जाकर मिल गए थे।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 79)

सवालः— हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त कितने साल तक रही?

जवाबः— हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त चार साल नौ माह

और एक दिन रही। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 82)

सवालः— हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद करने वाला कौन आदमी है?

जवाबः— हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अब्दुर्रहमान इब्ने मुलजिम ने शहीद किया था। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 82)

सवालः— हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को कहाँ शहीद किया गया?

जवाबः— हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब ख़िलाफ़त का मंसब संभाला, तो चार महीने तक मदीना में रहे। इसके बाद आप कूफ़ा में चले गए थे, वहीं आपकी शहादत हुई। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 82)

सवालः— वे चीज़ें जिनकी शुरूआत हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई, कौन कौन सी हैं?

जवाबः— 1. सबसे पहले ख़लीफ़ा जिनके माँ-बाप हाशिमी हैं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 162)

2. सबसे पहले जेलख़ाना हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने बनवाया। (बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 162)

3. सबसे पहले शहर यमन का क़ाज़ी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को बनाकर भेजा। (बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 134)

मुख़्तलिफ़ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— वे चीज़ें जिनकी शुरूआत हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई, कौन-कौन सी हैं?

जवाबः— 1. सबसे पहले अज़ान के लिए मीनारा हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने बनवाया। (बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 114)

2. सबसे पहले हज्ज-ए-तमत्तोअ से हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने मना किया। (बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 130)

3. सबसे पहले सवार होकर रमी-ए-जमरात करने वाले हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 130)

सवालः— इस्लाम में सबसे पहले अज़ान पढ़ने वाले कौन हैं?

जवाबः— हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(मुहाज़रा, बग़ियतुज़-ज़मआन, पेज 113 के हवाले से)

सवालः— सबसे पहले कअ्बे पर ग़िलाफ़ किसने चढ़ाया?

जवाबः— सबसे पहले कअ्बे पर ग़िलाफ़ असद हिमयरी ने चढ़ाया, इसीलिए हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि असद हिमयरी को गाली मत दो, इसलिए कि उन्होंने सबसे पहले कअ्बे पर ग़िलाफ़ डाला है।

(बिदाया, पेज 165, बग़ियतुज़-ज़मआन, पेज 127 के हवाले से)

सवालः— मस्जिद-ए-नबवी में सबसे पहले चिराग़ रोशन करने वाले कौन से सहाबी हैं?

जवाबः— मस्जिद-ए-नबवी में सबसे पहले चिराग़ रोशन करने वाले हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (इब्ने माजा शरीफ़, पेज 56)

सवालः— वे कौन से सहाबी हैं, जिनकी शक्ल में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया करते थे?

जवाबः— वह सहाबी हज़रत दह्या कलबी रज़ियल्लाहु अन्हु हैं।

(नश्रुत्तीब, अस्माउर्रिजाल, मिश्कात, पेज 594)

सवालः— वह कौन से सहाबी हैं जिन्होंने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को उनकी असल शक्ल में देखा?

जवाबः— वह सहाबी हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (नश्रुत्तीब, पेज 179)

सवालः— इस्लाम में सबसे पहले शराब पीने पर सज़ा किसको दी गई?

जवाबः— इस्लाम में सबसे पहले शराब पीने पर सज़ा वहशी बिन हर्ब पर जारी हुई।

(बग़ियतुज़-ज़मआन, पेज 222)

सवालः— इस्लाम के सबसे पहले मुबल्लिग़ कौन हैं?

जवाबः— हज़रत मुसअ्ब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम के सबसे पहले मुबल्लिग़ कहलाए। (रिसाला अर-राइद, अरबी, पेज 12, जुमादल उख़रा 1411 हि०)

सवालः— इस्लाम में क़ुरैश के सामने सबसे पहले ज़ोर से क़ुरआन पढ़ने वाले कौन हैं?

जवाबः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं।

(रिसाला अर-राइद, अरबी, पेज 12, जुमादल उख़रा 1411 हि०)

सवालः— वह कौन से सहाबी हैं जिनका इंतिक़ाल सबसे बाद में हुआ?

जवाबः— वह सहाबी आमिर बिन वासिला रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं, जिनकी वफ़ात सन 100 हि० में हुई। (मिश्कात, नसई)

और दूसरा क़ौल यह है कि वह सहाबी जिनका इंतिक़ाल सबसे बाद में हुआ, हज़रत अनस रज़ि० हैं, जिनकी वफ़ात सन 91 हि० या 92 हि० या 93 हि० में हुई। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 612)

अस्हाब-ए-कह्फ़ से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— अस्हाब-ए-कह्फ़ (ग़ार वालों) के नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः— उनके नाम हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सही रिवायत में इस तरह नक़ल किए गए हैं— यमलीख़ा, मक्सलमीना, मरतूलस, सब्यूनस, दुरदूनस, कफ़ा शीतीतूस, मनतनवासीस। (रूहुल मआ़नी, हिस्सा 15, पेज 246)

सवालः— अस्हाब-ए-कह्फ़ के नामों के क्या-क्या फ़ायदे हैं?

जवाबः— हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से अस्हाब-ए-कह्फ़ के नामों के बहुत से फ़ायदे नक़ल किए गये हैं:—

1. अगर कहीं आग लग जाए तो इन नामों को एक परचे पर लिखकर आग में डाल दिया जाए, तो आग बुझ जाएगी।

2. अगर कोई बच्चा ज़्यादा रोता हो तो इन नामों को लिखकर उसके सर के नीचे रख दो, रोना बन्द हो जाएगा।

3. खेती की हिफ़ाज़त के लिए इन नामों का तावीज़ खेती के दर्मियान एक लकड़ी गाड़कर उसमें लटका दिया जाए।

4. अगर किसी को तीसरे दिन का बुख़ार (तिया) आता हो तो इनके नामों को लिखकर बाज़ू पर बांध ले तो बुख़ार दूर हो जाएगा।

5. अगर किसी हाकिम के पास (मुक़द्दमे वग़ैरह के सिलसिले में) जाना हो तो इन नामों का तावीज़ दाहिनी रान में बांधकर जाए तो इन्शाअल्लाह हाकिम का दिल नर्म हो जाएगा।

6. अगर औरत के बच्चा पैदा होने में परेशानी हो रही हो तो इन नामों को लिखकर बाईं रान में बांध देने से बच्चा आसानी से पैदा हो जाएगा।

7. माल व सवारी की हिफ़ाज़त के लिए।

8. दरियाई सफ़र में ग़र्क़ होने से बचने के लिए।

9. दुश्मन से महफ़ूज़ रहने के लिए इन नामों को अपने पास रखना फ़ायदेमंद है।

10. अगर किसी का लड़का भाग गया हो तो इन नामों को लिखकर धागे में बांधकर पेड़ पर लटका दिया जाए, इन्शाअल्लाह लड़का तीसरे दिन वापस हो जाएगा। (हाशिया जलालैन, पेज 243)

सवालः– अस्हाब-ए-कहफ़ किस नबी के ज़माने में हुए और किस नबी की शरीअ़त पर अ़मल करते थे?

जवाबः– अस्हाब-ए-कहफ़ हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के बाद हुए और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की शरीअ़त पर अ़मल करते थे। (सावी, हिस्सा 3, पेज 5)

सवालः– अस्हाब-ए-कहफ़ के शहर का नाम क्या है और वह किस मुल्क में है?

जवाबः– उनके शहर का नाम जाहिलियत के ज़माने में 'अफ़सोस' और अ़रब वाले उसको 'तरतोस' कहते थे और यह रूम के शहरों में से एक शहर था। (सावी, हिस्सा 3, पेज 5

सवालः– अस्हाब-ए-कहफ़ के बादशाह का नाम क्या है और जिस ग़ार में वे जाकर छिपे थे, उसका नाम क्या है?

जवाबः– बादशाह का नाम दक़यानूस है। (हाशिया बुख़ारी, हिस्सा 2, पेज 687)

और ग़ार का नाम कुछ ने बीजलूस और कुछ ने यन्जलूस बताया है। (सावी, हिस्सा 3, पेज 5)

सवालः– अस्हाब-ए-कहफ़ का वाक़िआ़ किस सन में पेश आया और यह वाक़िआ़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की विलादत से कितने साल पहले का है?

जवाबः– यह वाक़िआ़ सन 249 ई० में पेश आया, जिसमें 300 साल वे सोते रहे। बेदारी (उठना) 549 ई० में हुई और शम्सी हिसाब से आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की विलादत अन्दाज़न 570 ई० में हुई है, इसलिए अस्हाब-ए-कह्फ़ की बेदारी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की विलादत से 21 साल पहले हुई और हिजरत के बाद इस वाक़िए को अन्दाज़ा है कि 72 साल गुज़र चुके थे।

(हाशिया तफ़्सीर-ए-हक़्क़ानी, हिस्सा 15, पेज 71)

अल्क़ाब व अस्मा (लक़ब और नाम)

सवालः— सफ़ियुल्लाह और ख़लीफ़तुल्लाह किसका लक़ब है?

जवाबः— ये दोनों लक़ब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के हैं।

(मुहाज़रतुल अवालइ, पेज 116, बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 187 के हवाले से)

सवालः— ज़ू ज़बीहैन (दो ज़बीहों वाला) किसका लक़ब है?

जवाबः— यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लक़ब है।

(तारीख़-ए-इस्लाम, हिस्सा 1, पेज 86)

सवालः— हरमसुल हरामिस यानी हकीमुल हुकमा किसका लक़ब है?

जवाबः— यह हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम का लक़ब है।

(मुहाज़रा, पेज 126, बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 187 के हवाले से)

सवालः— ख़लीलुल्लाह किसका लक़ब है?

जवाबः— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़लीलुल्लाह के लक़ब से याद किया जाता है?

सवालः— ज़बीहुल्लाह किसका लक़ब है?

जवाबः— हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को ज़बीहुल्लाह के लक़ब से याद किया जाता है।

(बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 18)

सवालः— कलीमुल्लाह किसका लक़ब है?

जवाबः— यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का लक़ब है।

(बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 187)

सवालः— मसीहुल्लाह किसका लक़ब है?

जवाबः— हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का लक़ब है? (ऊपर का हवाला)

सवालः— मलिकुल मुलूकिल आदिला किसका लक़ब है?

जवाबः— यह हज़रत ज़ुलक़रनैन का लक़ब है। (बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 187)

सवालः– ज़ुलहिजरतैन किस नबी का लक़ब है और क्यों?

जवाबः– यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का लकब है, इसलिए कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने दो हिजरतें की हैं:

1. इराक़ से कूफ़ा की तरफ़, 2. कूफ़ा से शाम देश की तरफ़।

(तफ़्सीर-ए-कश्शाफ़, पारा 21, हिस्सा 3, पेज 451)

सवालः– रूहुल अमीन किसका लक़ब है?

जवाबः– यह हज़रज जिब्रील अलैहिस्सलाम का लक़ब है। जैसा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है: 'न-ज़-ल बिहिर्रूहुल अमीनु०' **तर्जुमाः** इसको अमानतदार फ़रिश्ता (जिब्रील अलैहिस्सलाम) लेकर आया है। (सूरः शुअ़रा, आयत 193)

सवालः– हाज़िमुल्लज़्ज़ात (लज़्ज़तों को मिटाने वाला) किसका लक़ब है?

जवाबः– यह हज़रत इज़्राईल अलैहिस्सलाम यानी मलकुल मौत का लक़ब है।

(ग़यासुल्लुग़ात, पेज 537)

सवालः– साहिबुज़-ज़मान किसका लक़ब है?

जवाबः– यह हज़रत इमाम मेहदी का लक़ब है। (ग़यासुल्लुग़ात, पेज 537)

सवालः– ख़ातिमुल मुहाजिरीन किसका लक़ब है?

जवाबः– हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है, इसलिए कि उन्होंने सबसे बाद में हिज्रत की। (कामिल इब्ने असीर, हिस्सा 2, पेज 92)

सवालः– 'अमीनु हाज़िहिल उम्मत' किसका लक़ब है?

जवाबः– 'अमीनु हाज़िहिल उम्मत' (इस उम्मत के अमीन) हज़रत अबू उबैद बिन जर्राह का लक़ब है। (अस्माउर्रिजाल, मिश्कात, पेज 608)

सवालः– ग़सील-ए-मलाइका (जिनको फ़रिश्तों ने नहलाया) किस सहाबी का लक़ब है?

जवाबः– हज़रत हन्ज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है, इसलिए कि हज़रत हन्ज़ला जब शहीद हो गए तो उनको फ़रिश्तों ने ग़ुस्ल दिया था।

(हिदाया अव्वल, बाबुश्शहीद)

सवालः– हज़रत हन्ज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु को फ़रिश्तों ने क्यों ग़ुस्ल दिया?

जवाबः– उनको फ़रिश्तों ने ग़ुस्ल इस वजह से दिया कि यह हालत-ए-जनाबत में थे शहीद-ए-मुतलक़ को चूंकि ग़ुस्ल नहीं दिया जाता अलबत्ता अगर

शहीद जुनबी (जिस पर ग़ुस्ल वाजिब हो) हो तो उसको ग़ुस्ल दिया जाता है, मगर हज़रत हन्ज़ला रज़ियल्लाहु अ़न्हु के जुनबी होने का इल्म सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को न था, इसलिए उनको फ़रिश्तों ने ग़ुस्ल दिया।

(तिर्मिज़ी, हिदाया, हिस्सा 1, बाबुश्शहीद, पेज 163)

सवालः— सैफ़ुल्लाह किसका लक़ब है? और यह लक़ब किसने रखा और क्यों?

जवाबः— सैफ़ुल्लाह (अल्लाह की तलवार) हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अ़न्हु का लक़ब है। (तिर्मिज़ी, अबवाबुल मनाक़िब, हिस्सा 2, पेज 224) जो हुज़ूर-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रखा, जबकि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद, जंग-ए-मूता में दुश्मनों के सामने तलवार लेकर डट गए थे, इस वास्ते आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनका लक़ब सैफ़ुल्लाह रख दिया।

(हाशिया बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 67, तारीख़-ए-इस्लाम 261)

सवालः— साहिबुस्सिर यानी रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के राज़दार कौन से सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं?

जवाबः— रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के राज़दार हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। (हयातुल हैवान, पेज 285)

सवालः— हिबरूल उम्मत किस सहाबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु का लक़ब है?

जवाबः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का लक़ब है।

(अस्माउर्रिजाल, मिश्कात)

सवालः— नाजिया किस सहाबी का लक़ब है, किसने रखा और क्यों?

जवाबः— यह हज़रत ज़क्वान का लक़ब है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस वक़्त रखा, जबकि उनको क़ुरैश से निजात मिली।

(अस्माउर्रिजाल, मिश्कात, पेज 620)

सवालः— ज़ुश्शहादतैन (दो शहादतों वाला) किसका लक़ब है, यह लक़ब किसने दिया और क्यों दिया?

जवाबः— यह लक़ब हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु का है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रखा, जिसका मुख़्तसर वाक़िआ़ यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक आराबी (स्वाद बिन हर्स मुहारबी) से एक घोड़ा (जिसका नाम अल-मुरतजिज़ था) ख़रीदा। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि

वजह यह है कि जब हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु मूता की लड़ाई में लड़ने लगे तो दुश्मन ने उनके दोनों बाज़ू काट दिए, फिर भी लड़ते रहे, आख़िरकार शहीद हो गए। उनके मुताल्लिक़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने जाफ़र को जन्नत में उड़ते हुए देखा और एक रिवायत में है कि अल्लाह ने उनके दो बाज़ूओं की जगह दो पर लगा दिए थे, जिनसे वे फ़रिश्तों के साथ जन्नत में उड़ते फिरते हैं और हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु को ज़ुल हिजरतैन भी कहा जाता है।

(हाशिया बुख़ारी, हिस्सा 2, पेज 161)

सवालः— सफ़ीना किस सहाबी का लक़ब है? यह लक़ब किसने रखा और किस वजह से?

जवाबः— एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लड़ाई में तशरीफ़ ले जा रहे थे। एक सहाबी थक गए थे, सामान का बोझ होने की वजह से और भी ज़्यादा थकन महसूस हो रही थी। हज़रत सफ़ीना ने उस साथी का सामान अपने ऊपर लाद लिया। उस वक़्त से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको यह लक़ब दिया कि तू सफ़ीना (कश्ती) है। (अस्माउर्रिजाल, मिश्कात, पेज 597)

सवालः— हज़रत सफ़ीना का असल नाम क्या है?

जवाबः— उनके नाम में चार क़ौल हैं: 1. रूमान, 2. तहमान, 3. मेहरान, 4. उमैर। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 5)

सवालः— हज़रत हाशिम यानी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के परदादा का असल नाम क्या है? और हाशिम नाम क्यों पड़ा?

जवाबः— हज़रत हाशिम का असल नाम अम्र अल उला है (उला ऊंची शान रखने की वजह से कहते हैं) और हाशिम नाम इस वजह से पड़ा कि एक बार अरब में ज़बरदस्त अकाल पड़ा, यहां तक कि लोग भूखे मरने लगे। जनाब हाशिम से उनकी तक्लीफ़ देखी न गई। अपना ज़ाती माल व दौलत लेकर शाम देश गए और वहां से आटे और रोटियों का बहुत सा ज़ख़ीरा ख़रीद कर ऊँटों पर लाद कर लाए। मक्का आकर बहुत से ऊंटों को ज़िब्ह करके गोश्त का शोरबा बनाया, फिर शोरबे में रोटी चूर कर सरीद बनाकर लोगों को खिलाया। तमाम लोगों ने ख़ूब सेर होकर खाया। उस वक़्त से यह हाशिम के लक़ब से पुकारे जाने लगे, क्योंकि हश्म के मअ्ना तोड़ने के हैं। उन्होंने भी रोटी तोड़कर

सालन में भिगो कर लोगों को खिलाई थीं, इस वजह से हाशिम (तोड़ने वाला) के लक़ब से मशहूर हो गए। (हबीबुस्सियर)

सवालः-- हज़रत हाशिम के बेटे अ़ब्दुल मुत्तिलब (यानी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दादा) का असल नाम क्या है और अ़ब्दुल मुत्तलिब नाम किस वजह से हुआ?

जवाबः-- हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब का असल नाम शैबतुल हम्द है, इसलिए कि जब यह पैदा हुए तो उनके सर के बाल सफ़ेद थे, इसलिए शैबतुल हम्द के नाम से जाने जाने लगे और यह तर्कीबी नाम इसलिए रखा गया ताकि लोग उनके करम व अख़्लाक़ की तारीफ़ करें, क्योंकि शैबा के मअ़्ना बूढ़ा और हम्द के मअ़्ना तारीफ़ के हैं और अ़ब्दुल मुत्तलिब नाम से जाने जाने की वजह यह है कि एक दिन मदीने में बच्चों के साथ निशाना लगाकर खेल रहे थे। इत्तिफ़ाक़ से एक राहगीर आराम करने की ग़रज़ से वहां आकर बैठ गया। उन बच्चों में से एक बच्चे का तीर निशाने पर जा लगा। इस राहगीर ने उस बच्चे को शाबाश देकर कहा, बेटा! तेरा क्या नाम है? बच्चे ने जवाब दिया, मेरा नाम 'शैबतुल हम्द' है। राहगीर ने कहा, तेरा बाप कौन है तो बच्चे ने कहा, हाशिम बिन अ़ब्दे मुनाफ़, यह राहगीर मक्के का रहने वाला था, मक्का आकर बच्चे का वाक़िआ़ हाशिम के भाई मुत्तलिब को सुनाया मुत्तलिब फ़ौरन ऊंटनी पर सवार होकर 'शैबतुल् हम्द' को मदीना से लेकर जब मक्का में वापस आए तो लोगों ने कहा, 'हाज़ा अ़ब्दुल मुत्तलिब' यानी यह लड़का मुत्तलिब का गुलाम है। मुत्तलिब ने कहा, नहीं, बल्कि यह तो मेरा भतीजा है, मगर लोगों ने मुत्तलिब के जवाब की कोई परवाह न की और उस बच्चे को अ़ब्दुल मुत्तलिब कहना शुरू कर दिया, जिससे अ़ब्दुल मुत्तलिब नाम से मशहूर हुए। (हबीबुस्सियर, हिस्सा 1, पेज 20)

अ़हदे नबी (नबी सल्ल. के ज़माने) के मुफ़्तियान-ए-किराम (फ़तवा देने वाले) और मुअज़्ज़िनीन (अज़ान देने वाले) वग़ैरह

सवालः-- वे लोग जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में फ़त्वा देते थे, कौन-कौन से हैं?

जवाबः-- वे सहाबा जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में फ़त्वा

देते थे 14 हैं:

1. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 2. हज़रत उ़मर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 3. हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 4. हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 5. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 6. हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 7. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 8. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 9. हज़रत अ़म्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 10. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 11. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 12. हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 13. हज़रत अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 14. हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 80)

सवालः– वे कौन-कौन लोग हैं जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास वही लिखने वाले थे?

जवाबः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जिन सहाबा से ख़ुदा की वही लिखवाई, वे 9 हैं: जिनमें सबसे पहले 1. हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु अ़न्हु से लिखवाई और अक्सर आख़िर तक 2. हज़रत ज़ैद बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से और 3. हज़रत मुआ़विया बिन अ़बी सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से लिखवाई और दूसरे छः लोग ये हैं: 4. हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 5. हज़रत उ़मर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 6. हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 7. हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 8. हज़रत हन्ज़ला बिन रबीअ़ अल्-असदी रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 9. हज़रत ख़ालिद बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अ़न्हु। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 79)

सवालः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में अज़ान देने वाले कितने थे और कहाँ-कहाँ देते थे?

जवाबः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में अज़ान देने वाले चार थे। 1. हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 2. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अ़न्हु, ये दोनों मदीने में अज़ान देते थे। 3. हज़रत सअ़्द अल-क़रत मस्जिद-ए-क़ुबा में अज़ान देते थे, 4. हज़रत अबू महज़ूरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु मक्के में अज़ान देते थे। (नज़्म्नीव, पेज 486)

सवालः– वे सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

के मुहाफ़िज़ों (हिफ़ाज़त करने वालों) में रहे, कौन-कौन हैं और किस-किस वक़्त रहे?

जवाबः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का पहरा जिन सहाबा ने दिया, वे पाँच हैं: 1. हज़रत सअ़्द बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 2. हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 3. हज़रत इबाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 4. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 5. हज़रत मुहम्मद बिन मस्लिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 79)

और हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने नश्रुत्तीब में चार गिनाए हैं।

1. हज़रत सअ़्द बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बद्र के दिन पहरा दिया,

2. हज़रत मुहम्मद बिन मस्लिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने उहुद के दिन,

3. हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ख़न्दक़ के दिन,

4. हज़रत इबाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कभी-कभी पहरा दिया। मगर जब यह आयत **'वल्लाहु यअ़्सिमु क मिनन्नासि'** यानी और अल्लाह तआ़ला आप की लोगों से हिफ़ाज़त फ़रमाएगा नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पहरा मौक़ूफ़ कर दिया था। (नश्रुत्तीब, पेज 195)

सवालः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़ुद्दाम (घर का ख़ास-ख़ास काम करने वाले) कौन-कौन थे?

जवाबः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के घर का ख़ास-ख़ास काम करने वाले 9 सहाबा थे:

1. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु— घर के अक्सर काम उन्हीं से मुताल्लिक़ थे।

2. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु— जूते और मिस्वाक की ख़िद्मत उनके सुपुर्द थी।

3. हज़रत उ़क़्बा बिन आ़मिर जुहनी रज़ियल्लाहु अ़न्हु— सफ़र में ख़च्चर के साथ रहते थे।

4. हज़रत अस्लह बिन शुरैक रज़ियल्लाह अ़न्हु— यह ऊंटनी के साथ रहते थे।

5. हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अ़न्हु— आमद व ख़र्च उनकी तहवील में रहता था।

वसल्लम तो घर पैसे लेने गए, इतने में दूसरे लोगों ने दाम लगा दिए। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर से वापस आए, तो यह देहाती हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़रीदने का इन्कार करने लगा। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उससे कहा कि तूने तो यह घोड़ा मुझको बेच दिया था, मैंने ख़रीद लिया था, तो उस देहाती ने कहा कि आपके पास इस बात पर कोई गवाह है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ख़ुज़ैमा को वाक़िआ बतलाया तो हज़रत ख़ुज़ैमा ने गवाही दी। बाद में हज़रत ख़ुज़ैमा से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मालूम किया, ऐ ख़ुज़ैमा! तू तो वहां मौजूद न था, फिर तूने कैसे गवाही दी? हज़रत ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मुझको यक़ीन है कि आप झूठा मामला नहीं कर सकते, इस वजह से मैंने गवाही दी, उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा था:— **'या ख़ुज़ै म तु इन्न-क ज़ुश्शहादतैन'** यानी

"ऐ ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हु! तुम्हारी अकेले की गवाही दो आदमियों के बराबर है।" (हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 155)

सवाल:— ज़ुल यदैन किसका लक़ब है? और उनका यह लक़ब क्यों पड़ा?

जवाब:— यह लक़ब हज़रत ख़िरबाक़ रज़ियल्लाहु अन्हु का है। या तो यह किनाया (इशारा) है सख़ावत से या हक़ीक़त में उनके हाथ लम्बे थे। (सुहैली)

और तीबी का कहना है, ज़ुलयदैन का असल नाम उमैर है, लक़ब ख़िरबाक़ है और कुन्नियत अबू मुहम्मद है।

सवाल:— 'मुतइमुत्तैर' किसका लक़ब है और क्यों?

जवाब:— मुतइमुत्तैर (परिंदों को खिलाने वाला) हज़रत अब्दुल मुत्तलिब का लक़ब है, इसलिए कि हज़रत अब्दुल मुत्तलिब मेहमान नवाज़ थे। उनके दस्तरख़्वान पर जो खाना बच जाता, उसको पहाड़ों की चोटियों पर डाल देते थे, जिसको परिंदे खा लिया करते थे। इस वास्ते 'मुतइमुत्तैर' उनका लक़ब हो गया। (रौज़तुस्सफ़ा)

सवाल:— ज़ुलजनाहैन किस सहाबी का लक़ब है? यह लक़ब किसने रखा और क्यों रखा?

जवाब:— यह जाफ़र तैयार रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब है। उनका यह लक़ब ज़ुल जनाहैन (दो बाज़ू वाला) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रखा, जिसकी

6. हज़रत सअ़्द रज़ियल्लाहु अ़न्हु और

7. हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु व

8. हज़रत ऐमन बिन उ़बैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु, इनसे मुताल्लिक़ वुज़ू और इस्तिन्जे की ख़िदमत थी। (नश्रुत्तीब, पेज 195)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में जो लोग वाजिबुल क़त्ल मुज्रिमों की गरदन मारते थे, व कौन हैं?

जवाबः— ये 6 सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम हैं:—

1. हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 2. हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 3. हज़रत मिक़्दाद बिन अ़म्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 4. हज़रत मुहम्मद बिन मस्लिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 5. हज़रत आ़सिम रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 6. हज़रत ज़ह्हाक बिन सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अ़न्हु। (नश्रुत्तीब, पेज 196)

हज़रात मुजद्दिदीन-ए-किराम रहमतुल्लाहि अ़लैहिम

सवालः— मुजद्दिदीन कब से शुरू हुए और दो मुजद्दिदों के दर्मियान कितना फ़ासला होता है? और हर दौर के मुजद्दिदीन कौन-कौन हैं?

जवाबः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के नुबुव्वत मिलने के वक़्त से हर सौ साल पर मुजद्दिद आता है, चुनांचेः—

पहली सदी के मुजद्दिद हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ताबई रहमतुल्लाहि अ़लैहि हैं।

दूसरी सदी के मुजद्दिद हज़रत इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि हैं।

तीसरी सदी के मुजद्दिद हज़रत अबुल अ़ब्बास अहमद बिन शुरैह रहमतुल्लाहि अ़लैहि हैं।

चौथी सदी के मुजद्दिद हज़रत अबू बक्र बिन ख़तीब बाक़लानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि हैं।

पाँचवीं सदी के मुजद्दिद हज़रत हुज्जतुल इस्लाम अबू हामिद ग़ज़ाली रहमतुल्लाहि अ़लैहि हैं।

छठी सदी के मुजद्दिद साहिब-ए-तफ़्सीर-ए-कबीर इमाम अबू अब्दुल्लाह राज़ी रहमतुल्लाहि अलैहि और हज़रत इमाम राफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि हैं।

सातवीं सदी के मुजद्दिद हज़रत इमाम इब्ने दक़ीक़ अल-ईद रहमतुल्लाहि अलैहि हैं।

आठवीं सदी के मुजद्दिद हज़रत इमाम बलक़ीनी व हाफ़िज़ ज़ैनुद्दीन रहमतुल्लाहि अलैहि हैं।

नवीं सदी के मुजद्दिद हज़रत इमाम जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैहि हैं।

दसवीं सदी के मुजद्दिद हज़रत इमाम शम्सुद्दीन बिन शहाबुद्दीन और हज़रत मुहद्दिस अली क़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि हैं।

ग्यारहवीं सदी के मुजद्दिद हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ सानी रहमतुल्लाहि अलैहि व इमाम इब्राहीम बिन हसन कुर्दी रहमतुल्लाहि अलैहि हैं।

बारहवीं सदी के मुजद्दिद हज़रत शाह वलियुल्लाह व शेख़ सालेह बिन मुहम्मद बिन नूह अल फ़लानी व सय्यिद मुर्तज़ा हुसैनी रहमतुल्लाहि अलैहि हैं।

तेरहवीं सदी के मुजद्दिद सय्यिद अहमद शहीद बरेलवी रह० व हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवी रहमतुल्लाहि अलैहि हैं।

चौधवीं सदी के मुजद्दिद हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० और हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि हैं।

(हयातुल हैवान, अजाइबुल मख़्लूक़ात व ग़राइबुल मौजूदात, हिस्सा 2, पेज 64,
औनुल माबूद, शरह अबू दाऊद, हिस्सा 1, पेज 18।)

हज़रात अइम्मा-ए-किराम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– शैख़ैन किस फ़न में किस का लक़ब है?

जवाबः– 1. सहाबा में अगर शैख़ैन बोला जाए तो हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मुराद होते हैं।

2. अगर इल्मे फ़िक़्ह में बोला जाए, तो इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि और इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि मुराद होते हैं।

3. अगर इल्म-ए-हदीस में बोला जाए, तो इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि

और इमाम मुस्लिम रहमतुल्लाहि अ़लैहि मुराद होते हैं।

4. अगर इल्म-ए-फ़लसफ़ा में बोला जाए तो अबू नस्र फ़ाराबी और शैख़ बू अ़ली सीना मुराद होते हैं। (मैबज़ी, पेज 22)

5. अगर इल्म-ए-मंतिक़ में बोला जाए, तब भी यही दोनों मुराद होते हैं। (मिरक़ात, पेज 4)

सवालः— इमाम आज़म, इमाम शाफ़ई, इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अ़लैहिम के असल नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः— 1. हज़रत इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अ़लैहि का असल नाम नोमान बिन साबित है, अबू हनीफ़ा कुन्नियत और आज़म लक़ब है। (अस्माउर्रिजाल, मिश्कात शरीफ़, पेज 624)

2. इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अ़लैहि का असल नाम मुहम्मद बिन इदरीस है। (अस्माउर्रिजाल, मिश्कात शरीफ़, पेज 625)

3. इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अ़लैहि का असल नाम मुहम्मद याक़ूब और अबू यूसुफ़ कुन्नियत है।

सवालः— इमामुल हरमैन से मुराद कौन हैं?

जवाबः— दरसी किताबों में जो इमामुल हरमैन का ज़िक्र आता है, ये दो शख़्स हैं: एक हनफ़ी मस्लक के, दूसरे शाफ़ई मस्लक के। हनफ़ी का नाम अबुल मुज़फ़्फ़र यूसुफ़, क़ाज़ी जरजानी है और शाफ़ई का नाम अब्दुल मलिक बिन अ़ब्दुल्लाह जुवैनी है, कुन्नियत अबुल मआ़ली है। (क़ुर्रतुल उयून, पेज 13, व हाशिया नवरास, पेज 31)

सवालः— मज़हब अहल-ए-सुन्नत वल जमाअ़त का बानी कौन है?

जवाबः— अबुल हसन अशअ़री रहमतुल्लाह अ़लैहि को मज़हब अहल-ए-सुन्नत वल जमाअ़त का बानी समझा जाता है। (शरह-ए-अक़ाइद, पेज 6)

सवालः— फ़िरक़ा-ए-मोतज़िला का बानी कौन है?

जवाबः— वासिल बिन अ़ता को फ़िरक़ा-ए-मोतज़िला का बानी समझा जाता है। (शरह-ए-अक़ाइद, पेज 5)

सवालः— वह कौन से मुहद्दिस हैं जिनसे दो अ़जीब काम ऐसे हुए जो आज तक किसी से न हुए।

जवाबः— वह हिशाम कलबी हैं जो ख़ुद फ़रमाते हैं कि मुझसे दो काम ऐसे

हुए जो किसी से न हुए।

1. एक यह कि मैंने सिर्फ़ तीन दिन में क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ किया।

(मलफ़ूज़ात-ए-फ़क़ीहुल उम्मत, हिस्सा 2, पेज 55)

2. दूसरा काम यह कि दाढ़ी एक मुश्त से ज़्यादा कटने के बजाए जड़ से कट गई।

(शामी, हिस्सा 5, पेज 261)

सवालः— इब्ने ख़ल्लेकान का असल नाम और उनको ख़ल्लेकान कहने की वजह क्या है?

जवाबः— असल नाम शमसुद्दीन है। उनका नाम इब्ने ख़ल्लेकान इस वजह से पड़ा कि असल में उनका तकिया-ए-कलाम 'कान' था, बात बात में 'कान' कहते थे। जब उनसे छोड़ने को कहा गया कि 'ख़ल्ले कान' यानी कान कहना छोड़ दो। यह इतना मशहूर हुआ कि उनका नाम पड़ गया।

(मलफ़ूज़ात-ए-फ़क़ीहुल उम्मत, हिस्सा 2, पेज 39)

मरने के बाद बात करने वाले हज़रात

सवालः— वे कौन-कौन हज़रात हैं, जिन्होंने मरने के बाद बात की है?

जवाबः— वे हज़रात चार हैं। 1. ज़करिया अलैहिस्सलाम के बेटे यह्या अलैहिस्सलाम हैं, जब लोगों ने उनको ज़िब्ह कर डाला।

2. हबीब बिन नज्जार हैं, जब लोगों ने उनको क़त्ल कर दिया तो उन्होंने कहा **'या लै-त क़ौमी यअ्लमून'** (ऐ काश! मेरी क़ौम मुझको जान लेती)

3. हज़रत जाफ़र तैयार रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, जिन्होंने कहा था, **'वला तह्स-बन्-नल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अमवातन बल् अह्या उन इन्द रब्बि हिम् युर्ज़क़ून०**। (जो अल्लाह के रास्ते में क़तल कर दिये गये हैं उन्हें मुर्दा मत समझो बल्कि वे अपने रब के पास ज़िन्दा हैं (और) उनको रिज़्क़ दिया जाता है)

4. हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के लड़के हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु थे, जिन्होंने कहा था **'व स-यअ्लमुल्लज़ी-न ज़-ल-मू अय्-य मुन्क़-ल बिंय्-यन्क़-लिबून०'** (और अनक़रीब ज़ालिम लोग जान लेंगे कि वे किस तरह बदलते हैं)

(हयातुल हैवान, पेज 80)

शैतान से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— शैख़ नज्दी किसका लक़ब है?

जवाबः— यह शैतान का लक़ब है। (करीमुल्लुग़ात फ़ारसी, पेज 101)

सवालः— सातों आसमानों पर शैतान के नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः— अ़ल्लामा समरक़न्दी ने कश्फ़ुल बयान में कअ़्ब-ए-अह्बार की रिवायत से नक़ल किया है कि शैतान को आसमान-ए-दुनिया (पहले आसमान) पर आ़बिद के नाम से पुकारा जाता था, दूसरे आसमान पर उसका नाम ज़ाहिद, तीसरे पर आ़रिफ़, चौथे पर वली, पाँचवें पर तक़ी, छठे पर ख़ाज़िन, सातवें पर अज़ाज़ील और लोह-ए-महफ़ूज़ में उसका नाम इब्लीस लिखा हुआ है।

(जुमल, हिस्सा 1, पेज 41)

सवालः— शैतान जन्नत का ख़ज़ानची कितने साल रहा?

जवाबः— हज़रत कअ़्ब-ए-अह्बार रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि शैतान जन्नत का ख़ज़ानची चालीस साल रहा। (सावी, हिस्सा 1, पेज 22)

सवालः— शैतान ने अ़र्श का तवाफ़ कितने साल तक किया?

जवाबः— चौदह हज़ार साल तक किया। (तफ़्सीर सावी, हिस्सा 1, पेज 22)

सवालः— फ़रिश्तों का उस्ताद कौन था? और कितने दिन तक रहा?

जवाबः— फ़रिश्तों का उस्ताद शैतान था, जिसको 'मुअ़ल्लिमुल मलाइका' के लक़ब से याद किया जाता था, जो फ़रिश्तों के साथ अस्सी हज़ार साल तक रहा, जिसमें बीस हज़ार साल तक फ़रिश्तों को वअ़्ज़ व नसीहत करता रहा और तीस हज़ार साल तक मलायका-ए-करूबीईन (अ़र्श को उठाने वाले फ़रिश्ते) का सरदार रहा और एक हज़ार साल तक रूहानिय्यीन फ़रिश्तों का सरदार रहा।

(जुमल, हिस्सा 2)

सवालः— शैतान के औलाद किस तरह होती है?

जवाबः— हज़रत मुजाहिद फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने इब्लीस की दाहिनी रान में ज़कर (पुरुष-लिंग) और बाईं रान में फ़रज (स्त्री-लिंग) बनाई है। शैतान दोनों रानों को मिलाकर जिमाअ़ (संभोग) करता है और हर दिन दस अंडे देता है और हर अंडे से सत्तर शैतान-पुरुष और सत्तर शैतान स्त्री पैदा होते हैं और वे (बच्चों की तरह) चूं-चूं करके उड़ जाते हैं। (सावी, हिस्सा 3, पेज 24, पारा 16-17)

सवालः– शैतान की औलाद कितनी है और उनके क्या-क्या नाम और क्या-क्या काम हैं?

जवाबः– शैतान की तमाम औलाद तो मालूम नहीं कितनी है, अलबत्ता कुछ औलाद का ज़िक्र किया जाता है। हज़रत मुजाहिद रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि शैतान की औलाद में से दो शैतान तो 'लाक़िस' और 'वलहान' नाम के हैं। इन दोनों का काम यह है कि ये तहारत (पाकी, वुज़ू) और नमाज़ में वस्वसा डालते हैं। तीसरा शैतान 'मुर्रा' है, जिसके साथ शैतान की कुन्नियत 'अबू मुर्रा' है, चौथा 'ज़लंबूर' है उसका काम यह है कि वह लोगों के लिए बाज़ारों को मुज़य्यन करता है और संवारता है, झूठी क़समें खिलवाता है और सामान की झूठी तारीफ़ कराता है। पाँचवां शैतान 'बतर' है, उसका काम यह है कि यह मुसीबत के वक़्त लोगों को आह व ज़ारी, मुँह पर तमांचे मारने और गिरेबानों को फाड़ने पर उभारता है, छठा शैतान 'आवर' है, उसका काम यह है कि लोगों को ज़िनाकारी पर उभारता है, यहां तक कि लोगों की शहवतों को भड़काने के लिए मर्दों के ज़कर और औरतों की फ़रज में फूंक मारकर उन में ख़्वाहिश पैदा करता है। छठा 'भतरूस' है। यह लोगों से झूठी ख़बरें (जिसके सर-पैर न हों) उड़वाता है, सातवां 'दासम' है। उसका काम यह है कि अगर कोई आदमी अपने घर में सलाम किए बग़ैर दाख़िल होता है तो यह भी उसके साथ दाख़िल हो जाता है और उसको गुस्सा दिलाता है, ताकि घर वालों से लड़ाई हो।

(सावी, हिस्सा 3, पेज 17)

दज्जाल से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– दज्जाल दुनिया में कितने दिनों तक ज़िंदा रहेगा?

जवाबः– दज्जाल चालीस दिन ज़मीन पर ठहरेगा मगर इन चालीस दिनों में तीन दिन तो ऐसे होंगे कि एक दिन एक साल के बराबर और एक दिन एक महीने के बराबर और एक दिन एक हफ़्ते के बराबर होगा और बाक़ी दिन दूसरे सब दिनों के बराबर होंगे।

(तिर्मिज़ी, हिस्सा 2, पेज 48, अब्वाबुल फ़ितन, बाबः -'फ़ित्नतिद-दज्जाल')

सवालः– वे जगहें कौन-कौन सी हैं, जहां दज्जाल दाख़िल न हो सकेगा और क्यों?

जवाबः– वे दो जगहें हैं। 1. मक्का 2. मदीना। इनमें दाख़िल न हो सकेगा, इसलिए कि अल्लाह तआला इन दोनों शहरों की फ़रिश्तों के ज़रिए हिफ़ाज़त कराएंगे, जब दज्जाल मक्का या मदीना की तरफ़ को बढ़ेगा, तो फ़रिश्ते उसका चेहरा दूसरी तरफ़ मोड़ देंगे। (तिर्मिज़ी, हिस्सा 2, पेज 48)

सवालः– दज्जाल की दोनों आँखों के दर्मियान क्या लिखा होगा?

जवाबः– इस बारे में तीन रिवायतें मिलती हैं:–

1. दज्जाल की पेशानी पर **'काफ़िर'** लिखा होगा।

(तिर्मिज़ी हिस्सा 2, पेज 47, मिश्कात हिस्सा 2, पज 465)

2. दज्जाल की पेशानी पर **"क-फ़-र"** लिखा होगा।(मिश्कात हिस्सा 2, पज 465)

3. उसकी दोनों आँखों के दर्मियान **"अल्-काफ़्-अल फ़ा-अर रा"** लिखा होगा। (लमआत में शेख़ ने ज़िक्र किया, हाशिया मिश्कात, हिस्सा 2, पेज 465, हाशिया तिर्मिज़ी, हिस्सा 2, पेज 47)

औरतों से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– वे काम जिनकी शुरूआत औरतों से हुई, कौन-कौन से हैं?

जवाबः– 1. सबसे पहले ऊन कात कर सूत हज़रत हव्वा ने तैयार किया।

(बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 204)

2. सबसे पहले सीने का काम औरतों में से हज़रत सारा ने किया।

(बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 204)

3. सबसे पहले पटका हज़रत हाजरा ने बांधा, जबकि वह हामिला हो गई थीं। (बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 204)

4. सबसे पहले ईमान लाने वाली औरत हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। (बग़ियतुज़-ज़मूआन, पेज 34)

5. सबसे पहले कान हज़रत हाजरा के बींधे-छेदे गए। (बग़ियतुज़-ज़मूआन)

6. औरतों में सबसे पहले हज़रत हाजरा की ख़तना हुई। (बग़ियतुज़-ज़मूआन)

7. औरतों में सबसे पहले हद्द-ए-क़ज़फ़ (तोहमत की सज़ा) हज़रत हमना बिन्ते जहश को लगाई गई। (तारीख़-ए-इस्लाम)

8. औरतों में सबसे पहले मुश्रिक को क़त्ल करने वाली आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी हज़रत सफ़िया हैं। (बग़ियतुल-जमआन, पेज 177)

सवालः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में औरतों को ग़ुस्ल देने वाली कौन थी?

जवाबः– नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में हज़रत उम्मे अतिय्या औरतों को ग़ुस्ल दिया करती थीं, जिनका लक़ब ग़स्साला (बहुत ज़्यादा ग़ुस्ल देने वाली) पड़ गया था, असल नाम 'नसीबा' था। (बुख़ारी, पेज 168)

सवालः– हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चचाज़ाद बहन उम्मे हानी बिन्ते अबी तालिब का असल नाम क्या था?

जवाबः– हज़रत उम्मे हानी का असल नाम फ़ाख़ता था।

(अस्माउर्रिजाल, मिश्काल, हिस्सा 1, पेज 623)

सवालः– ज़ुन्नताक़तैन किस सहाबिया का लक़ब है और यह लक़ब उनका क्यों पड़ा?

जवाबः– यह हज़रत अस्मा बिन्ते अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हा का लक़ब है, जिसका एक ख़ास वाक़िआ है:

हिजरत के ज़माने में जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु हिजरत के इरादे से मक्का से मदीना की तरफ़ रवाना हुए तो तीन दिन दुश्मनों के डर से ग़ार-ए-सौर में क़ियाम फ़रमाया। इन तीन दिनों में हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अपने बाप हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए खाने के वास्ते सत्तू लाया करती थीं, जिस दिन चलने लगे तो हज़रत अस्मा घर से सत्तू का थैला लाईं, मगर उसके लटकाने का तस्मा घर भूल आईं। जब यह थैला ऊंट के कजावे से लटकाना चाहा तो कोई तस्मा या डोरी (जिससे बांधा जा सके) उस वक़्त मौजूद न थी। हज़रत अस्मा ने फ़ौरन अपना नताक़ (कमर से बांधने वाली डोरी या कमरबन्द) निकाल कर आधा कमर से बांधा और आधा सत्तू के थैले को बांध दिया। इस बर-वक़्त और बर-महल तदबीर को देखकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत ख़ुश हुए और आपने अस्मा को ज़ुन्नताक़तैन कहा, यानी दो नताक़ों वाली। चुनांचे उसके बाद से अस्मा को ज़ुन्नताक़तैन के लक़ब से पुकारा जाने लगा। (तारीख़-ए-इस्लाम, पेज 136, व अस्माउर्रिजाल, मिश्काल)

सवालः– इस्लाम में ख़ुलअ़ व ज़िहार सबसे पहले किन-किन औरतों के साथ किया गया?

जवाबः– सबसे पहले ख़ुलअ़ साबित बिन कैस बिन शमास की बीवी से हुआ और ज़िहार औस बिन सामित ने अपनी बीवी ख़ौला बिन्ते सालबा से किया।

(बग़ियतुज़-ज़मआन)

सवालः– माँ के पेट में बच्चे के अन्दर रूह कितने दिनों में डाल दी जाती है?

जवाबः– माँ के पेट में बच्चे के अन्दर रूह चार महीने में डाल दी जाती है।

(सावी, हिस्सा 3, पेज 93)

दुनिया की उम्र

सवालः– दुनिया की मिक़्दार व उम्र कितनी है?

जवाबः– 1. दुनिया की उम्र मुख़्तलिफ़ ऐतिबार से शुमार की गई है। कुछ ने तो आसमानों के बुरूज बनने के बाद से शुमार की इसलिए उन्होंने कहा कि दुनिया की उम्र 12 हज़ार साल है।

2. कुछ ने सितारों के बनने के बाद का ऐतिबार करके कहा कि दुनिया की उम्र सात हज़ार साल है।

3. कुछ ने साल के दिनों की मिक़्दार के बाद से दुनिया की उम्र गिनी, इसलिए उन्होंने कहा कि दुनिया की उम्र तीन लाख साठ साल है।

(सावी, पेज 125, व हाशिया जलालैन, पेज 293)

किस दिन क्या चीज़ बनी?

सवालः– हफ़्ते के सातों दिनों में अल्लाह ने किस दिन कौन-सी चीज़ पैदा फ़रमाई?

जवाबः– मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह ने 'सनीचर' (हफ़्ता) के दिन ज़मीन पैदा फ़रमाई, 'इतवार' के दिन पहाड़ों को पैदा फ़रमाया, 'पीर' (सोमवार) के दिन दरख़्तों को पैदा किया और 'मंगल' के दिन मकरूहात को वुजूद बख़्शा और 'बुध' के दिन नूर को पैदा फ़रमाया, 'जुमेरात' के दिन दाब्बों (चौपायों) को पैदा किया और 'जुमे' के दिन

हज़रत आदम अलैहिस्सला को पैदा किया। (हयातुल हैवान, पेज 450)

सवालः— दुनिया में कितने मुल्क हैं?

जवाबः— दुनिया में कुल मुल्क दो सौ बत्तीस (232) हैं।

(फ़ैसल अख़्बार, पेज 4, माह-ए-रजब, सन 1411 हि०)

सवालः— दुनिया में कुल कितनी ज़बानें बोली जाती हैं?

जवाबः— पूरी दुनिया में कुल तीन हज़ार चौंसठ (3064) ज़बानें बोली जाती हैं।

(फ़ैसल अख़्बार, पेज 4, माह-ए-रजब सन 1411 हि०)

सवालः— कुल रू-ए-ज़मीन (धरती) का रक़बा (क्षेत्रफल) कितना है?

जवाबः— कुल रू-ए-ज़मीन का क्षेत्रफल तेरह करोड़ वर्ग मील है।

(आलमे सदसी माख़ूज़ अज़ जिहाद-ए-अफ़ग़ानिस्तान, पेज 120)

सवालः— अल्लाह ने ज़मीन को किस चीज़ पर बिछाया?

जवाबः— अल्लाह ने ज़मीन को एक मछली की पीठ पर बिछाया है। जिसका नाम यहमूत या लूतिया है। (हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 382)

सवालः— ज़मीन का फैलाव कितना है और किस हिस्से में कौन-सी मख़्लूक़ आबाद है?

जवाबः— कुल रू-ए-ज़मीन का फैलाव पाँच सौ साल की मसाफ़त (दूरी) के बराबर है जिनमें तीन सौ हिस्सों में पानी ही पानी है और एक सौ नब्बे हिस्सों में याजूज-माजूज आबाद हैं। अब बाक़ी रह गए दस हिस्से, जिनमें से सात हिस्सों में हब्शी लोग आबाद हैं और तीन हिस्सों में इनके अलावा बाक़ी मख़्लूक़ आबाद है। (सावी, पेज 27, हाशिया 7, जलालैन, हिस्सा 2, पेज 252, पारा 16)

सवालः— सद्दे स्कन्दरी, यानी वह दीवार जो ज़ुलक़रनैन ने बनवाई थी, उसकी लम्बाई-चौड़ाई कितनी है?

जवाबः— ज़ुलक़रनैन बादशाह ने जो दीवार तुर्क में बनवाई थी, उसकी लम्बाई सौ मील और चौड़ाई पचास मील है।

(हाशिया जलालैन पारा 15 व 16, पेज 252, सावी, हिस्सा 3, पेज 27)

उम्मतों से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— उम्मतें कितनी हैं और कहाँ कहाँ हैं?

जवाबः— अल्लाह ने एक हज़ार उम्मतें पैदा फ़रमाई हैं, जिनमें से छः सौ तो दरिया में रहती हैं और चार सौ खुश्की में (ज़मीन पर) रहती हैं।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 566)

सवालः— क़ियामत के दिन तमाम उम्मतों की कितनी सफ़ें होंगी और उनमें उम्मत-ए-मुहम्मदिया की कितनी सफ़ें होंगी?

जवाबः— जब लोगों को अल्लाह के दरबार में क़तार-दर-क़तार तलब किया जाएगा तो तमाम उम्मतों की एक सौ बीस सफ़ें होंगी, जिनमें अस्सी सफ़ें उम्मते मुहम्मदिया की होंगी और चालीस सफ़ें दूसरी उम्मतों की होंगी।

(सावी, हिस्सा 3, पेज 19)

सवालः— सबसे पहले जन्नत में कौन-सी उम्मत दाख़िल होगी?

जवाबः— उम्मत-ए-मुहम्मदिया। (तफ़्सीर-ए-इब्ने कसीर, हिस्सा 1, पेज 621, पारा 4)

सवालः— क़ियामत के दिन उम्मत-ए-मुहम्मदिया के जन्नत में दाख़िल होने के ऐतिबार से कितने फ़िरक़े होंगे?

जवाबः— जब उम्मत-ए-मुहम्मदिया का जन्नत में दाख़िल होने का नम्बर आएगा तो पहले तीन जमाअतें ऐसी दाख़िल होंगी। जिनमें एक फ़िरक़ा तो बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में दाख़िल होगा, दूसरा फ़िरक़ा वह होगा जिससे हिसाब-ए-यसीर (आसान हिसाब) लेकर जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा और तीसरा फ़िरक़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत के ज़रिए जन्नत में दाख़िल होगा। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 309)

सवालः— क़ियामत के दिन उम्मत-ए-मुहम्मदिया को किस लक़ब से पुकारा जाएगा?

जवाबः— उम्मत-ए-मुहम्मदिया को क़ियामत के दिन हम्मादून के लक़ब से पुकारा जाएगा। (मुहाज़रतुल अवाइल बहवाला बग़ियतुज़-ज़म्आन, पेज 13)

सवालः— इन्सानों की कितनी क़िस्में हैं और हिसाब व किताब कौन-सी क़िस्म से होगा?

जवाबः— तीन क़िस्में हैं: 1. पहली क़िस्म के लोग चौपाओं की तरह हैं

जिनको अल्लाह ने फ़रमाया, 'बल हुम अज़ल्लु सबीला'।

2. दूसरी क़िस्म के इन्सान वे हैं जिनके जिस्म तो इन्सानों की तरह हैं और रूह शैतानों की तरह हैं।

3. तीसरी क़िस्म के वे इन्सान हैं जो अल्लाह के नेक बन्दे हैं। ये लोग क़ियामत के दिन (जिस दिन किसी दूसरी चीज़ का साया न होगा) अल्लाह के अर्श के साए में होंगे। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 389)

सवालः— जिन्नात की कितनी क़िस्में हैं और हिसाब व किताब कौन-सी क़िस्म से होगा?

जवाबः— तीन क़िस्में हैं: 1. एक तो वे हैं जिनके पर (बाज़ू) हैं, जिनके ज़रिए वे हवा में उड़ते हैं।

2. जो साँपों की शक्ल में रहते हैं।

3. तीसरे वे जो इन्सानों की तरह हैं, उनसे ही हिसाब व किताब होगा।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 389)

पहले ज़माने में दिनों के नाम

सवालः— जाहिलियत के ज़माने में दिनों के नाम क्या-क्या थे?

जवाबः— जाहिलियत के ज़माने में 'बार' (सनीचर) को शबार, 'इतवार' को अव्वल, 'पीर' को अहवन, 'मंगल' को जबार, 'बुध' को दबार, 'जुमेरात' को मूनिस और 'जुमा' को अरूबा कहा करते थे। (बज़्लुल मजहूद व फ़त्हुल बारी, पेज 292)

सवालः— जुमा का नाम अरूबा से बदलकर जुमा किसने रखा?

जवाबः— कअ़ब बिन लुई ने अ़रूबा को जुमा के नाम के साथ मौसूम किया यानी नाम रखा। (बज़्ल, फ़त्हुल बारी, हिस्सा 2, पेज 292, हाशिया कंज़ुद-दकाइक़, पेज 43)

इस्लामी महीनों के नामों की वजह

सवालः— मुहर्रमुल हराम के नाम की वजह क्या है?

जवाबः— इस महीने का नाम मुहर्रमुल हराम इस वजह से रखा गया, चूंकि इस महीने में जाहिलियत के ज़माने में क़िताल करना हराम था।

(ग्यासुल्लुग़ात, पेज 445)

सवालः– "सफ़र" के महीने को सफ़र क्यों कहते हैं?

जवाबः– इसलिए कि यह माख़ूज़ है 'सिफ़र' से जिसका तर्जुमा है ख़ाली होना चूंकि जाहिलियत के ज़माने में मुहर्रम के महीने में क़िताल करना हराम था इसलिए लोग सफ़र के महीने में क़िताल के लिए निकल जाया करते थे और उन के घर ख़ाली पड़े रहते थे इस वजह से इस महीने का नाम सफ़र रख दिया गया। (ग़यासुल्लुग़ात, पेज 295)

या यह लिया गया है सुफ़र से, जिसका तर्जुमा है ज़र्दी। जब लोग इस महीने का नाम तै करने लगे तो इत्तिफ़ाक़ से पतझड़ का मौसम आ गया था, जिसमें पेड़ों के पत्ते पीले पड़ जाते हैं इसलिए इस महीने का नाम सफ़र रख दिया गया। (बहरूल जवाहर, कश्फ़ुल्लताइफ़, रिसाला नुजूम बहवाला ग़यासुल्लुग़ात, पेज 295)

सवालः– रबीउ़ल अव्वल को रबीउ़ल अव्वल क्यों कहते हैं?

जवाबः– इसलिए कि जब इस महीने का नाम रखने का नम्बर आया, तो यह महीना फ़स्ल-ए-रबीअ़ (यानी बहार के मौसम) के शुरू में वाक़े हुआ इस वजह से इस का नाम रबीउ़ल अव्वल रख दिया। (ग़यास, पेज 216)

सवालः– रबीउ़ल आख़िर का नाम रबीउ़ल आख़िर क्यों रखा गया?

जवाबः– जब इस महीने का लोग नाम रखने लगे तो यह महीना फ़स्ल-ए-रबीअ़ यानी मोसमे बहार के आख़िर में वाक़े हुआ। इस वजह से इसका नाम रबीउ़ल आख़िर रख दिया। (ग़यास, 216)

सवालः– जुमादल ऊला के नाम की वजह क्या है?

जवाबः– यह निकला है जुमूद से जिसके मअ़ना हैं जम जाना और जब इस महीने का नाम रखने का वक़्त आया तो यह महीना सर्दी के मौसम के शुरू में वाक़े हुआ, चूंकि सर्दी की वजह से हर चीज़ में जमूदियत आ जाती है, इसलिए इसका नाम जुमादल ऊला रख दिया गया। (ग़यासुल्लुग़ात, पेज 137)

सवालः– जुमादल उख़रा के नाम की वजह क्या है?

जवाबः– जुमादल उख़रा के नाम की वजह यह है कि जब इस महीने का नाम रखने का वक़्त आया तो यह महीना ऐसे मौसम के आख़िर में वाक़े हुआ जिसमें सर्दी की वजह से पानी जम जाता है, इस वजह से इसका नाम जुमादल उख़रा रख दिया।

(मनाज़िरूल इंशा मुंतख़ब, क़ामूस, बहरूल जवाहर, ग़यासुल्लुग़ात, पेज 137 के हवाले से)

सवालः— माह-ए-रजबुल मुरज्जब के नाम की वजह क्या है?

जवाबः— रजब लिया गया है तरजीब से, जिसके मअ्ना हैं ताज़ीम करना, चूंकि इस महीने को अ़रब के लोग शहरूल्लाह (अल्लाह का महीना) कहते थे और इसकी ताज़ीम करते थे, इस वजह से इसका नाम रजब रख दिया।

(ग़यासुल्लुग़ात, पेज 217)

सवालः— शाबान के नाम की वजह क्या है?

जवाबः— शाबान लिया गया है 'श इ-ब यश्अ़बु' से, जिसके मअ्ना हैं निकलना, ज़ाहिर होना, फूटना, चूंकि इस महीने में ख़ैर-ए-कसीर (अनगिनत भलाई) फूटती- फलती है और बन्दों की रोज़ी तक़्सीम होती है और तक़्दीरी काम अलग-अलग हो जाते हैं इस वजह से इस महीने का नाम शाबान रख दिया।

(ग़यासुल्लुग़ात, पेज 280)

सवालः— माह-ए-रमज़ानुल मुबारक के नाम की वजह क्या है?

जवाबः— रमज़ान लिया गया है "रम्ज़" से जिसके मअ्ना हैं जलना। चूंकि यह महीना भी गुनाहों को जला देता है या यह लिया गया है 'रम्ज़' यानी ज़मीन की गर्मी से पैरों का जलना। चूंकि रमज़ान का महीना भी नफ़्स की तक्लीफ़ और जलन की वजह है।

(ग़यासुल्लुग़ात, पेज 225)

सवालः— माह-ए-शव्वालुल मुकर्रम के नाम की वजह क्या है?

जवाबः— शव्वाल निकला है "शोल" से जिसके मअ्ना हैं बाहर निकलना, चूंकि इस महीने में अ़रब के लोग सैर व तफ़्रीह (घूमने-फिरने) के लिए घरों से बाहर निकल जाया करते थे।

(ग़यासुल्लुग़ात, पेज 287)

सवालः— ज़ीक़ादा के नाम की वजह क्या है?

जवाबः— "ज़ी" के मअ्ना हैं वाला और "क़ादा" के मअ्ना हैं बैठ जाना, चूंकि यह महीना अशहुर-ए-हुरूम (जिन महीनों का एहतिराम किया जाता है) में से है, अ़रब के लोग इस महीने में लड़ाई-झगड़े और क़िताल बंद करके बैठ जाते थे।

(ग़यासुल्लुग़ात, पेज 213)

सवालः— ज़िल हिज्जा के नाम की वजह क्या है?

जवाबः— या तो यह लिया गया है जीम की तश्दीद के साथ और "ह" के ज़बर के साथ (जैसे हज्ज) जिसके मअ्ना हैं एक बार हज करना, यानी जब एक बार हज्ज कर लिया तो उसको हज्ज वाला कहना दुरूस्त है या यह लिया

गया है हिज्ज से। हिज्ज के मअ़ना साल के हैं, चूंकि यह महीना साल के आख़िर में आता है, इस पर साल पूरा होता है, इस वजह से इसको ज़िल हिज्जा कहते हैं।

(ग़यासुल्लुग़ात, पेज 213)

काबा का बनाने वाला कौन है?

सवालः– काबा की तामीर कितनी बार हुई और किस-किसने कराई है?

जवाबः– बैतुल्लाह की तामीर दस बार हुई:

1. पहली बार तो फ़रिश्तों ने की। (हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से पहले)
2. दूसरी बार हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने तामीर की।
3. तीसरी बार हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद ने की।
4. चौथी बार हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने तामीर की।
5. पांचवीं बार अमालक़ा क़ौम ने की।
6. छठी बार क़बीला-ए-जुरहुम ने तामीर की।
7. सातवीं बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दादा क़ुसई बिन किलाब ने तामीर की।
8. आठवीं बार क़ुरैश ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नुबुव्वत मिलने से पहले तामीर की, जबकि आपकी उम्र 35 साल की थी और यह तामीर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को नुबुव्वत मिलने से पांच साल पहले हुई।
9. नवीं बार हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने तामीर की।
10. दसवीं बार हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी ने तामीर की।

(शिफ़ाउल ग़राम बिअख़बारिल बलदिल हराम, पेज 91)

और सीरते हलबिया में है कि काबा की तामीर सिर्फ़ तीन बार हुई:

1. हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने की।
2. क़ुरैश ने की और इन दोनों बुनियादों (बुनियादे इब्राहीम और बुनियादे क़ुरैश) के बीच सतरह सौ पचहत्तर (1775) साल का फ़ासला है।
3. तीसरी बार हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने तामीर कराई और इन दोनों तामीरों (क़ुरैश की तामीर और इब्ने ज़ुबैर की तामीर) के दर्मियान 82 साल का फ़ासला है और बहरहाल फ़रिश्तों का तामीर करना और

आदम अलैहिस्सलाम का तामीर करना, ये दोनों साबित नहीं हैं और क़बीला जुरहुम व क़ौम अमालक़ा और क़ुसई बिन किलाब इन तीनों ने काबा की सिर्फ़ मरम्मत कराई। नये सिरे से नहीं बनवाया और काबा की नए सिरे से तामीर सिर्फ़ दो बार हुई। एक बार तो क़ुरैश ने की, दूसरी बार अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने कराई। (हाशिया, बुख़ारी पेज 215)

सूर कितनी बार फूंका जाएगा?

सवालः– सूर में कितनी बार फूंक मारी जाएगी?

जवाबः– कुछ ने कहा है कि सूर में सिर्फ़ तीन बार फूंक मारी जाएगी।

1. पहली बार जब फूंक मारी जाएगी तो लोग घबरा जाएंगे।

2. दूसरी बार जब फूंक मारी जाएगी तो लोग अचानक मर जायेंगे।

3. तीसरी बार जब फूंक मारी जायेगी तो लोग क़ब्रों से उठकर अल्लाह के दरबार में पेश हो जाएंगे। इस तरह पहली फूंक घबराहट के लिए, दूसरी फूंक मौत के लिए और तीसरी फूंक अल्लाह के दरबार में जाने के लिए होगी।

(सावी, हिस्सा 3, पेज 92)

और दूसरा क़ौल यह है कि इब्न-ए-हज़्म ने कहा कि फूंके चार होंगी।

1. मारने की 2. ज़िन्दा करने की 3. घबराहट यानी बेहोशी की।

4. बेहोशी से होश में लाने की। इसी को हज़रत गंगोही, शैख़ ज़करिया और मुहद्दिस देहलवी ने इख़्तियार किया है।

मगर इब्ने हजर ने कहा है कि असल में फूंके दो ही होंगी मगर पहली फूंक का असर यह होगा कि ज़िन्दा मर जाएंगे और मुर्दों की रूहों पर ग़शी तारी हो जाएगी और दूसरी फूंक में मुर्दे ज़िन्दा हो जाएंगे और बेहोश होश में आ जाएंगे। वल्लाहु आलम (दर्स हज़रत शैख़ मौलाना मुहम्मद यूनुस मद्दज़िल्लुहू मुहद्दिस जामिया मज़ाहिर-ए-उलूम, सहारनपूर के हवाले से)

सवालः– एक फूंक से दूसरी फूंक तक कितना फ़ासला होगा?

जवाबः– चालीस साल का फ़ासला होगा।

(हाशिया जलालैन, हिस्सा 28, पेज 252, पारा 16)

जन्नत से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— सबसे पहले जन्नत में कौन सा नबी और कौन सी उम्मत दाख़िल होगी?

जवाबः— जन्नत में सबसे पहले मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और आपकी उम्मत दाख़िल होगी। (तफ़सीर इब्ने कसीर अरबी, हिस्सा 1, पेज 621, पारा 4)

सवालः— जन्नतियों का क़द कितना होगा?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत वालों का क़द साठ हाथ लम्बा होगा? (मुस्नद अहमद, हयात-ए-आदम, पेज 50 के हवाले से)

सवालः— वे कौन-कौन सी नहरें हैं जो जन्नत से निकल कर दुनिया में पाई जाती हैं?

जवाबः— इन नहरों के बारे में दो क़ौल हैं:

1. एक क़ौल के मुताबिक़ चार हैं:

❶ जैहून, ❷ सैहून, ❸ फ़ुरात, ❹ नील। (बुख़ारी व मुस्लिम)

2. दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के तरीक़े से शैख़ैन से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह ने जन्नत से दुनिया में पाँच नहरें जारी फ़रमाई हैं:

❶ सैहून, ❷ जैहून, ❸ दजला, ❹ फ़ुरात ❺ नील। (सावी, हिस्सा 3, पेज 114)

मुख़्तलिफ़ ईजादात

सवालः— घड़ी ईजाद करने वाला कौन है?

जवाबः— घड़ी की ईजाद ख़लीफ़ा हारून रशीद ने अपनी ख़िलाफ़त के दौर में कराई, जिसकी गवाही यूरोप के लोग देते हैं।

(आलात-ए-जदीदा के शरई अह्काम, पेज 123)

सवालः— छपाई की मशीन की ईजाद किसने की?

जवाबः— छपाई की मशीन का ईजाद करने वाला गोतमबर्ग है, मगर तारीख़ इस बात को बतलाती है कि छपाई की मशीन सबसे पहले उन्दुलुस में मुसलमानों ने बनाई, मगर इस्तिमाल की कमी और ज़माने के गुज़रने से वह मअ़दूम (ग़ायब) हो गई। (आलात-ए-जदीदा के शरई अह्काम, पेज 119)

सवाल:– 'फ़ोनोग्राफ़' कौन-सी ज़बान का लफ़्ज़ है और उसका तर्जुमा क्या है, इसका ईजाद करने वाला कौन है?

जवाब:– 'फ़ोनोग्राफ़' यूनानी लफ़्ज़ है, जिसका तर्जुमा है 'कातिबुस्सौत' (आवाज़ लिखने वाला) इसके ईजाद करने वाले के बारे में तारीख़ लिखने वालों ने इख़्तिलाफ़ किया है। कुछ ने इसका ईजाद करने वाला अमरीका का मशहूर फ़ाज़िल एडीसोन को बताया है और कुछ पुरानी तारीख़ों में मिलता है कि इस आले को बनाने वाला अफ़लातून है। दोनों में जोड़ इस तरह मुम्किन है कि पहला ईजाद करने वाला अफ़लातून को कहा जाए और दूसरा ईजाद करने वाला यानी तरक़्क़ी देना वाला अमरीका का मशहूर फ़ाज़िल एडीसोन हो।

(आलात-ए-जदीदा के शरई अह्काम, पेज 128)

सवाल:– तोपों और बारूद की ईजाद किस मुल्क ने की?

जवाब:– सबसे पहले तोपों और बारूद को बनाने वाले उन्दुलुस के लोग हैं।

(आलात-ए-जदीदा के शरई अहाकम, पेज 123)

जानवरों से मुताल्लिक़ बातें

सवाल:– वे जानवर कौन-कौन से हैं, जो जन्नत में जाएंगे?

जवाब:– ख़ालिद बिन मादान से रिवायत है कि कोई जानवर जन्नत में नहीं जाएगा, सिवाए अस्हाब-ए-कह्फ़ के कुत्ते और बलआम के हिमार (गधे) के और अ़ल्लामा आलूसी 'रूहुल मआनी' के मुसन्निफ़ (लेखक) ने कुछ किताबों में देखा है कि हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की ऊंटनी और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का दुम्बा भी जन्नत में जाएगा, और अच्छे-अच्छे जानवर भी जन्नत में जाएंगे, जैसे मोर, हिरन, बकरी वग़ैरह (रूहुल मआनी, हिस्सा 15, पेज 236)

और हाशिया जलालैन में है कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की चियूंटी भी जन्नत में जाएगी।

(पेज 318, पारा 19)

सवाल:– अल्लाह ने सबसे पहले किस जानवर को पैदा फ़रमाया, उसका नाम क्या है?

जवाब:– जानवरों में सबसे पहले मछली को पैदा फ़रमाया, जिसका नाम "लूतिया देहमूत" है।

(हयातुल हैवान, पेज 383)

सवालः— वे जानवर कौन-कौन से हैं जिनको हैज़ आता है?

जवाबः— तीन हैं। 1. अरनब (ख़रगोश), 2. बिज्जू और चमगादड़।

(हाशिया कंज़ुद्दकाइक़, पेज 13)

सवालः— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब आसमान से उतरे तो ज़मीन पर कौन-कौन से जानवर थे?

जवाबः— दो जानवर थे। 1. ख़ुश्की में टिड्डी और 2. तरी में मछली।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 267)

सवालः— जब शेर दहाड़ता है तो वह क्या कहता है?

जवाबः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नें सहाबा से मालूम किया कि क्या तुम जानते हो, शेर जब दहाड़ता है तो वह क्या कहता है? सहाबा ने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० ज़्यादा जानते हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि शेर जब दहाड़ता है तो वह यह कहता है:—

अल्लाहुम्-म ला तुसल्लित्-नी अला अहदिम् मिन अह्लिल मारूफ़

"ऐ अल्लाह! मुझको किसी नेक आदमी पर मुसल्लत मत कीजियो"

(हायतुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 9)

सवालः— मुर्ग़ और गधा किस वजह से बोलते हैं?

जवाबः— मुर्ग़ जब फ़रिश्तों को देखता है, उस वक़्त बोलता है और गधा जब शैतान को देखता है, उस वक़्त बोलता है। (हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 490)

सवालः— दुनिया में सबसे पहले कौन-सा जानवर बीमार हुआ?

जवाबः— वह शेर बीमार हुआ जो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती में था। (रूहुल मआनी, पेज 53-54, पारा 12)

सवालः— वे जानवर कौन-कौन से हैं जिनको क़त्ल करने से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना फ़रमाया है?

जवाबः— पाँच हैं। 1. हुद हुद, 2. चियूंटी, 3. शहद की मक्खी, 4. मेंढक, 5. सुर (एक परिंदा है)। (हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 648-649)

सवालः— जब दो घोड़ों की आपस में मुठभेड़ हो तो वे क्या कहते हैं?

जवाबः— वे यह कहते हैं:— **"सुब्बूहुन क़ुद्दूसुन रब्बुल मलाइकति वर्रूहि०"**।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 164)

सवालः– वह कौन सा जानवर है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आग में फूंक मार रहा था?

जवाबः– वह जानवर गिरगिट है जिसको पहले वार में मारने पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सौ नेकियों का वादा फ़रमाया है।

(हयातुल हैवान, पेज 648)

सवालः– वह जानवर कौन सा है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की आग को मुंह में पानी लाकर बुझा रहा था?

जवाबः– वह जानवर मेंढक है, इसलिए कि जब इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डाला गया तो मेंढक का गुज़र आग के पास से हुआ, तो यह मुँह में पानी लाया और आग को बुझाने लगा। इसी वजह से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसको मारने से मना फ़रमाया है। (हयातुल हैवान, पेज 648)

सवालः– वह कौन सा जानवर है जो बड़े-बड़े चलते जहाज़ों को रोक देता है और उसका नाम क्या है?

जवाबः– वह एक मछली है, जिसका नाम फ़ातूस है। वह चलते जहाज़ों को रोक देती है। (हयातुल हैवान, पेज 383)

सवालः– जानवर जब बोलते हैं तो वे क्या कहते हैं?

जवाबः– हर जानवर की बोली अलग-अलग है और जब भी कोई जानवर बोलता है, वह अक्सर व बेश्तर अल्लाह की तस्बीह करता है या वअ्ज़ व नसीहत की कोई बात कहता है। चुनांचे तीतर कहता है:– **'अर्रहमानु अ़लल अ़र्शिस्तवा'** (अल्लाह तआ़ला अर्श के मालिक हैं)। (रूहुल मआ़नी, हिस्सा 19, पेज 172)

फ़ाख़्ता कहती है:– **'या लैत्त जल ख़ल्क़ि लम युख़्लक़'** (ऐ काश! कि मख़्लूक़ पैदा ही न की जाती)। (रूहुल मआ़नी, हिस्सा 19, पारा 271)

मोर कहता है:– **'कमा तुदीनु तुदानु'** (जैसा करेगा, वैसा ही भरेगा)।

(रूहुल मआ़नी, हिस्सा 19, पेज 171)

गिध (करगस) कहता है:– **'यब-न आदम इश् मा इश्-त फ-इन्-न आख़ि-र-कल मौतु०'** (ऐ आदम के बेटे! जितना जीना है, जी ले, आख़िर तुझे मरना है)।

बाज़ कहता है:– **'फ़िल बुअ़दि मिनन्नासि उन्सुन'** (लोगों से दूर रहने में राहत है)। (रूहुल मआ़नी, हिस्सा 19, पेज 172)

संगख़ोरा कहता है:— '**मन स-क-त सलि-म**' (जो ख़ामोश रहा, उसने नजात पाई)। (रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 172)

मेंढ्क कहता है:— '**सुब्-हा-न रब्बियल क़ुद्दूस**' (पाक है मेरे परवरदिगार की ज़ात)। (रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 172)

तोता कहता है:— '**वैलुन् लिमनिद् दुनिया हम्मुहू**' (जिसने दुनिया का इरादा किया, वह हलाक हुआ)। (रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 172)

हुदी कहता है:— '**कुल्लु शैइन हालिकुन इल्ला वज्हहू**' (हर चीज़ हलाक होने वाली है सिवाए ख़ुदा-ए-अज़्-ज़ व जल्-ल की ज़ात के)।

(रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 171)

ख़त्ताफ़ कहता है जो अबाबील की तरह का एक परिंदा है:— '**क़द्दिमू ख़ैरन तजिदूहू**' (जिस भलाई का मौक़ा मयस्सर आ जाए, उसको कर गुज़रो)।

(रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 171)

मुर्ग़ कहता है:— '**उज़्कुरुल्लाह- या ग़ाफ़िलून**' ऐ ग़फ़्लत में (सोने वालो) रहने वालो! अल्लाह का ज़िक्र करो। (उसको याद करो)।

(रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 172)

शामा कहता है:— '**सुब्-हानल्लाहिल ख़ल्ला क़िद-दाइम**' (अल्लाह की ज़ात पाक है, जो पैदा करने वाला है, हमेशा रहने वाला है)।

(रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 171)

हुद हुद कहता है:— '**मल्ला यरहम ला युर्हम**' (जो रहम नहीं करता, उस पर रहम नहीं किया जाता)। (रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 171)

क़ुमरी बोलती है:— '**सुब्-हा-न रब्बियल आला**' (मेरे परवरदिगार की बड़ी पाक ज़ात है)।

तीतवा कहता है:— '**लिकुल्लि हय्यिन मय्यितुंव् व लिकुल्लि जदीदिन बालिन**' (हर जानदार को मरना है और हर नए को पुराना होना है)।

(रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 172)

ज़ोज़ोर (जो चिड़िया से बड़ा एक परिन्दा है) कहता है:— '**अल्लाहुम्-म इन्नी। अस् अलु-क क़ू-त यौमिम् बियौमिन या रज़्ज़ाक़ु**' (ऐ बहुत ज़्यादा रोज़ी देने वाले! मैं तुझसे सिर्फ़ एक दिन की रोज़ी का सवाल करता हूँ)।

(रूहुल मआनी, हिस्सा 19, पेज 171)

कुत्ते की उम्दा ख़स्लतें (आदतें)

सवालः– कुत्ते के अन्दर अल्लाह ने जो अच्छी आदतें वदीअ़त (पैदा) फ़रमाई हैं, वे कितनी और कौन-कौन सी हैं?

जवाबः– हज़रत हसन बसरी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि कुत्ते के अन्दर दस ख़स्लतें ऐसी हैं, जो हर मोमिन के अन्दर पाई जानी चाहिएं:

1. कुत्ता भूखा रहता है, जो सालिहीन (नेक लोगों) के आदाब में से है।

2. उसका कोई मकान ख़ास नहीं होता, जो तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) करने वालों की निशानियों में से है।

3. वह रात को बहुत कम सोता है जो मुहिब्बीन (अल्लाह से मुहब्बत रखने वालों) की सिफ़्तों में से है।

4. जब मरता है तो कोई मीरास (जायदाद) नहीं छोड़ता जो ज़ाहिदों की सिफ़्तों में से है।

5. वह अपने मालिक को कभी नहीं छोड़ता जो पक्के सच्चे मुरीदों की निशानियों में से है।

6. वह कम मर्तबे वाली जगह पर राज़ी हो जाता है जो तवाज़ो (विनम्रता) रखने वालों की निशानियों में से है।

7. जब कोई उसके मकान पर क़ब्ज़ा कर लेता है तो उसको उसी पर छोड़ देता है जो राज़ीन (यानी ख़ुदा से राज़ी-ख़ुशी रहने वालों) की निशानियों में से है।

8. अगर मकान का मालिक उसको मार दे और फिर बुलाए तो आ जाता है जो ख़ाशिईन (ख़ुशू-ख़ुज़ू करने वालों) की अ़लामतों में से है।

9. मालिक खाना खा रहा हो तो यह दूर बैठता है, जो मिस्कीनों की अ़लामतों में से है।

10. जब किसी मकान से कूच कर जाता है तो फिर उसकी तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता, जो महज़ूनीन की अ़लामतों में से है। (मख़्ज़न-ए-अख़्लाक़, पेज 163)

पहेलियाँ

हाफ़िज़ इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में मुहम्मद बिन हम्माद की सनद से

एक आदमी के ख़त का तज़्किरा किया, जो ख़त उसने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ लिखा था, जिसमें कुछ सवालों के जवाब तलब किए गए थे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन तमाम सवालों के जवाब दे दिए जो नीचे दिए जाते हैं:—

सवालः— वह कौन सी चीज़ है जिसमें न तो गोश्त है और न ख़ून है, फिर भी वह बात करती है?

जवाबः— वह दोज़ख़ है, इसलिए कि क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआला तमाम जन्नतियों को जन्नत में और जहन्नमियों को दोज़ख़ में डाल देंगे, उसके बाद न कोई जन्नत में जाएगा और न कोई दोज़ख़ में जाएगा तो अल्लाह तआला दोज़ख़ से मालूम करेंगे कि क्या तू भर गई तो दोज़ख़ जवाब में कहेगी, क्या और भी है?

सवालः— वह चीज़ कौन सी है, जिसमें न गोश्त है, न ख़ून है, इसके बावुजूद फिर भी दौड़ती है?

जवाबः— वह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा है जो कि फ़िरऔन के दरबार में जादूगरों के मुक़ाबले में दौड़ा था, हालांकि उसमें न गोश्त है, न ख़ून।

सवालः— वे दो चीज़ें कौन-कौन सी हैं जिनमें न गोश्त है न ख़ून, इसके बावुजूद बात करने पर जवाब देती हैं?

जवाबः— वे दो चीज़ें ज़मीन और आसमान हैं, जबकि अल्लाह तआला ने उनसे कहा था, आ जाओ तुम दोनों ख़ुशी से या ज़बरदस्ती तो उन्होंने कहा, हम ख़ुशी से ही आ गए।

सवालः— वह कौन-सी चीज़ है जिसमें न ख़ून है न गोश्त, इसके बावुजूद वह साँस लेती है?

जवाबः— वह सुबह है जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया **'वस्सुब्हि इज़ा तनफ़्फ़स'** (क़सम है सुबह की जबकि वह साँस लेवे)।

सवालः— वह कौन सा रसूल (क़ासिद) है जिसको अल्लाह ने भेजा हो, मगर वह न इन्सान है, न जिन्नों में से है और न फ़रिश्ता है?

जवाबः— वह कौआ है जिसके बारे में अल्लाह ने फ़रमायाः **'फ़ ब-अ-सल्लाहु ग़ुराबंय्यब्हसु फ़िल अर्ज़ि'** (सूरः माइदा:31) जिसने अपना भाई कौआ क़त्ल करने के बाद क़ाबील को दफ़न करना सिखाया फिर क़ाबील ने अपने भाई हाबील को

उसी तरह दफ़न कर दिया था।

सवालः– वह कौन सी जानदार चीज़ है जो मर गया (इन्सानों में से) और जानदार जानवर के ज़रिए उसको ज़िंदा किया गया?

जवाबः– वह गाय है जिसका ज़िक्र पारा 1 सूरः बक़रह में है, जिसका ख़ुलासा यह है कि बनी इस्राईल में एक आदमी का क़त्ल हो गया था। क़ातिल का इल्म न होने पर लोगों को परेशानी हुई तो अल्लाह ने उनसे कहा कि गाय ज़िब्ह करो और उसके एक हिस्से को उस मक़्तूल से छुआ दो। चुनांचे ऐसा ही किया गया तो वह शख़्स ज़िंदा हो गया और उसने अपने क़ातिल का नाम बतला दिया।

सवालः– वह कौन सा जानवर है जो न अंडे देता है और न उसको हैज़ आता है?

जवाबः– वह वतवात नामी एक जानवर है जिसको हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने ज़िंदा करके उड़ा दिया था। (हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज़ 425-426)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रूम के बादशाह ने हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में एक ख़त रवाना फ़रमाया, जिसमें कुछ सवालों के जवाब तलब किए गए थे। हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस ख़त को वापस कर दिया और लिख दिया कि मुझे इन सवालों के जवाब का इल्म नहीं। फिर शाह-ए-रूम ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में वह ख़त भेजा तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने सवालों के जवाब लिखकर भेज दिए जो नीचे दिए जा रहे हैं।

ख़त के सवालात व जवाबात

सवाल शाह-ए-रूमः– कलामों में सबसे अफ़ज़ल कलाम कौन सा है? उसके बाद किसका दर्जा है, तीसरे नम्बर पर कौन सा, चौथे और पाँचवें नम्बर पर कौन सा है?

जवाब हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुः– 1. अफ़ज़ल कलाम **ला इला-ह इल्लल्लाहु** है बशर्ते कि इख़्लास के साथ हो।

2. दूसरे नम्बर पर **सुब्-हानल्लाहि व बिहम्दिही**, यह मख़्लूक़ की दुआ है।

3. अल्हम्दु लिल्लाहि, यह शुक्र का कलिमा है।

4. इसके बाद अफ़ज़लियत अल्लाहु अक्बर को है।

5. पाँचवें नम्बर पर अफ़ज़लियत 'ला हौ-ल व ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाह' को है।

सवाल-शाह-ए-रूमः— मर्दों में अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा मुकर्रम कौन-कौन है?

जवाब-हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुः— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम हैं इसलिए कि अल्लाह ने उनको अपने हाथ से पैदा फ़रमाकर उनको तमाम चीज़ों के नाम सिखलाए।

सवाल-शाह-ए-रूमः— वे चीज़ें जिन्होंने माँ के पेट की मशक़्क़त को नहीं झेला, कौन-कौन सी हैं?

जवाब-हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुः— चार हैं; 1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, 2. हज़रत हव्वा, 3. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी, जिसको अल्लाह ने पत्थर से पैदा फ़रमाया था। 4. वह मेंढा जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बदले में ज़िब्ह किया गया था और कुछ ने कहा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का असा भी उन ही चीज़ों में से है।

सवाल-शाह-ए-रूमः— वह कौन सी क़ब्र है जो अपने साहब को लेकर चली?

जवाब-हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुः— वह हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की मछली है। जब आप दरिया में गिरे, मछली ने आपको निगला और लेकर चल दी।

सवाल-शाह-ए-रूमः— महबरह और क़ौस दोनों क्या-क्या चीज़ें हैं?

जवाब-हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुः— महबरह तो आसमान का दरवाज़ा है और क़ौस से मुराद ज़मीन के उस टुकड़े के लोग हैं जो हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के ज़माने में तूफ़ान से महफ़ूज़ रहे थे और ग़र्क़ नहीं हुए थे।

सवाल-शाह-ए-रूमः— वह कौन सी जगह है जहाँ सूरज सिर्फ़ एक बार उगा और वहाँ सूरज की धूप न तो कभी इससे पहले पड़ी और न कभी इसके बाद पड़ेगी?

जवाब-हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुः— यह वह जगह है जहाँ हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दरिया में अपना असा मारा था और उसमें बारह रास्ते हो

गए थे। इसके बाद वे रास्ते समुन्दर में तब्दील हो गए थे।

जब इन तमाम सवालों के जवाब शाह-ए-रूम के पास पहुंचे तो उसने कहा कि यह जवाब वही दे सकता है जिसने नबी के घर में परवरिश पाई हो।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 386)

हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम[1] और उल्लू का मुकालमा (गुफ़्तुगू)

सवाल-हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलामः– ऐ उल्लू! तू खेत की चीज़ (दाने) क्यों नहीं खाता?

जवाब-उल्लूः– इसलिए कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को इसी की वजह से जन्नत से निकाला गया।

सवाल-हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलामः– तू पानी क्यों नहीं पीता?

जवाब-उल्लूः– इसलिए कि इसमें हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम को ग़र्क़ किया गया।

सवाल-हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलामः– ऐ उल्लू! तू आबादी में क्यों नहीं रहता? जंगलों और खंडहरों में क्यों रहता है?

जवाब-उल्लूः– इसलिए कि वीरान जंगल अल्लाह की मीरास (जायदाद) में है जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया:

व कम् अह्लक्ना मिन क़रयतिम बतिरत मईश-त हा, फ़ तिल्-क मसा-किनु हुम लम तुस्कन मिम बअ् दिहिम इल्ला क़लीला, व कुन्ना नह्नुल वारिसीन०

(सूरः क़ससः58)

तर्जुमाः– "और कितनी ही बस्तियों को हमने हलाक कर दिया। उनकी ख़ुश ऐशी को ख़ाक में इस तरह मिलाया कि वे आबादियाँ ऐसी हो गईं कि उनमें कोई रहने वाला भी न रहा। (बिल्कुल खंडर बना दिया) अब उसके हम ही

1. अबू नुऐम ने हिलया में हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के तरीक़ से एक रिवायत नक़ल की है कि उल्लू ने हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम किया, हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जवाब में कहा, "व अलैकुमुस्सलाम या हाम्मा" और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने उल्लू से कुछ सवाल किए। उल्लू ने उनके जवाब दिए, जिनको दर्ज किया जाता है।

वारिस हैं। 'फ़दुन्या कुल्लुहा मीरासुल्लाह'। (पस तमाम दुनिया अल्लाह की मीरास है")।

सवाल-हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलामः– ऐ हाम्मा (उल्लू)! जब तू इन वीरान जंगलों में बैठता है तो तू क्या कहता है?

जवाब-उल्लूः– मैं यह कहता हूँ, ऐ इस बस्ती के रहने वालो! तुम्हारी ख़ुश-ऐशी कहाँ चली गई?

सवाल-हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलामः– जब तू इन वीरान खंडरों से गुज़रता है, तो क्या कहता है?

जवाब-उल्लूः– मैं कहता हूँ कि बनी आदम के लिए अफ़सोस का मुक़ाम है कि उन पर अज़ाब आ रहे हैं और वे इन अज़ाबों और मुसीबतों से ग़ाफ़िल होकर सोए हुए हैं।

सवाल-हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलामः– ऐ उल्लू! तू दिन में क्यों नहीं निकलता है? रात को ही क्यों निकलता है?

जवाब-उल्लूः– इसलिए कि आदम की औलाद एक दूसरे पर ज़ुल्म ढा रही है, इसलिए मैं दिन में बाहर नहीं निकलता।

सवाल-हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलामः– ऐ उल्लू! मुझको ख़बर दे कि जब तू बोलता है तो क्या कहता है?

जवाब-उल्लूः– मैं कहता हूँ कि 'ऐ ग़फ़लत में सोने वालो! आख़िरत के लिए कुछ तोशा तैयार कर लो और आख़िरत के सफ़र के लिए हर वक़्त तैयार रहो। पाक है नूर को पैदा करने वाले की ज़ात।

इन सवालों के बाद हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बनी आदम के लिए उल्लू से ज़्यादा नसीहत करने वाला और शफ़क़त करने वाला कोई परिन्दा नहीं है। (हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 387)

मुतफ़र्रिक़ बातें

सवालः– वे हज़रात कौन-कौन हैं जो हमल की मुद्दत से ज़्याद दिनों में पैदा हुए?

जवाबः– वे चार लोग हैंः

1. हज़रत सुफ़ियान बिन हय्यान चार साल में पैदा हुए।

2. मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हसन ज़ह्हाक बिन मुज़ाहिम जो सोलह महीने में पैदा हुए।

3. यहया बिन अ़ली बिन जाबिर बग़वी और

4. सुलैमान ज़ह्हाक ये दोनों दो-दो साल में पैदा हुए।

(मादनुल हक़ाइक़, बाब सुबूतुन्नेसब, पेज 344, हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 80)

सवालः— कितने बादशाहों ने पूरी दुनिया पर हुकूमत की है?

जवाबः— चार बादशाहों ने, जिनमें दो तो मुसलमान हैं और दो ग़ैर मुसलमान हैं। मुसलमानों में हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम और हज़रत ज़ुलक़रनैन हैं।

ग़ैर मुसलमानों में हैं बख़्ते नस्सर और नमरूद बिन किनआ़न।

(हाशिया जलालैन, पेज 40, पारा 16)

सवालः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सबसे ज़्यादा बद-बख़्त किन लोगों को फ़रमाया?

जवाबः— तीन लोगों को: 1. क़िदार बिन सालिफ़ को, जिसने हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की ऊँटनी को क़त्ल किया।

2. हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के लड़के क़ाबील को, जिसने अपने भाई हाबील को क़त्ल किया।

3. इब्ने मुलजिम को जिसने हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को क़त्ल किया।

(हयातुल हैवान, पेज 335)

सवालः— वे कौन-कौन से बादशाह हैं जिनका लक़ब नमरूद हुआ?

जवाबः— वे छः बादशाह हैं। 1. नमरूद बिन किनआ़न बिन हाम बिन नूह अ़लैहिस्सलाम और यह उन बादशाहों में से है जिन्होंने पूरी दुनिया पर हुकूमत की और यह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के ज़माने का नमरूद है।

2. नमरूद बिन कोश बिन किनआ़न बिन हाम बिन नूह अ़लैहिस्सलाम।

3. नमरूद बिन माश बिन किनआ़न बिन हाम बिन नूह अ़लैहिस्सलाम।

4. नमरूद बिन संजार बिन नमरूद बिन कोश बिन किनआ़न बिन हाम बिन नूह अ़लैहिस्सलाम।

5. नमरूद बिन सारूग़ बिन अरग़ू बिन मालिख़।

6. नमरूद बिन किनआन बिन मसास बिन नक़तन।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 80)

सवाल:— वह बादशाह जिनका लक़ब फ़िरऔन हुआ? कौन-कौन से हैं और किस-किस नबी के ज़माने में गुज़रे?

जवाब:— तीन बादशाह ऐसे हैं, जिनका लक़ब फ़िरऔन हुआ।

1. सिनान बिन अलू-अशअल बिन अलूवान बिन अमीद बिन अमूलीक़ और यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ज़माने का फ़िरऔन है।

2. रय्यान बिन वलीद, यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने का फ़िरऔन है।

3. वलीद बिन मुसअब। यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के ज़माने का फ़िरऔन है।

(हयातुल हैवान, हिस्सा 1, पेज 80)

सवाल:— सामरी का असल नाम क्या है और उसकी परवरिश किसने की और कैसे की?

जवाब:— उसका असल नाम मूसा बिन ज़फ़र है और क़बीला सामरा की तरफ़ निस्बत करके उसको सामरी कहा जाता है। उसकी परवरिश हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने की। उसकी वालिदा को बदकारी की वजह से हमल ठहर गया था। जब विलादत का वक़्त क़रीब आया तो उसकी वालिदा (अपने रिश्तेदारों के डर और फ़िरऔन के जल्लादों के डर से) पहाड़ में चली गई थी और वहाँ उस बच्चे को जन कर आ गई थी। अल्लाह ने उसकी रोज़ी का इंतिज़ाम इस तरह किया कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को मुक़र्रर फ़रमाया कि आप इस बच्चे की परवरिश करें, चुनांचे हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उसको अपनी तीन उंगलियाँ चटाते थे। एक उंगली से शहद और दूसरी से घी और तीसरी से दूध निकलता था।

(सावी, पेज 62)

सवाल:— हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने सामरी की परवरिश कब तक की?

जवाब:— तफ़्सीर लिखने वालों ने 'हत्ता न-श-अ' का लफ़्ज इस्तेमाल किया है, जिसके मअ्ना अहल-ए-लुग़त ने यह लिखे हैं कि बच्चे की इस हद तक परवरिश करना कि उसमें समझ-बूझ पैदा हो जाए। (रूहुल मआनी, पारा 16, पेज 244)

सवाल:— जब अल्लाह ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाकर फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करें तो

फ़रिश्ते कब तक सज्दे में पड़े रहे?

जवाबः– फ़रिश्ते ज़वाल के वक़्त से अस्र तक सज्दे में पड़े रहे। कुछ ने कहा है कि मुक़र्रब फ़रिश्ते सौ साल तक सज्दे में रहे और कुछ ने कहा कि पाँच सौ साल तक सज्दे में रहे। (जुमल व हाशिया जलालैन, पेज 8)

सवालः– बनी इस्राईल ने बछड़े की पूजा कितने दिनों तक की?

जवाबः– चालीस दिन तक। (हयातुल हैवान, हिस्सा 2, पेज 17)

सवालः– क्या इन्सान उसी जगह दफ़न होता है, जहाँ की मिट्टी से वह पैदा होता है?

जवाबः– एक रिवायत से यही मालूम होता है कि जहाँ इन्सान को मरने के बाद दफ़न होना होता है, वहीं की मिट्टी उसके ख़मीर में मिलाई जाती है, चुनांचे अब्द बिन हुमैद और इब्नुल मुन्ज़िर ने हज़रत अता ख़ुरासानी की रिवायत की तख़रीज फ़रमाई है कि फ़रिश्ता उस मुक़ाम पर जाता है, जहाँ उस आदमी को दफ़न होना है और वहाँ से मिट्टी लेता है, पस उसको नुत्फ़े पर बिखेर देता है, फिर मिट्टी और नुत्फ़े से बच्चे की पैदाइश होती है।

इस रिवायत से मालूम होता है इन्सान उसी जगह दफ़न होता है जहाँ की मिट्टी से वह पैदा होता है। इस पर तफ़्सीर लिखने वालों ने यह भी लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तख़्लीक़ जिस मिट्टी से हुई, वह कअ़बा की मिट्टी थी, मगर तूफ़ान-ए-नूह में वह मिट्टी उस मुक़ाम पर मुंतक़िल (बदलना) हो गई थी जहाँ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुबारक क़ब्र है। (अनुवारुद्दिरायात)

सवालः– अल्लाह ने जिस वक़्त ज़मीन को पानी पर बिछा दिया तो ये नहरें और चश्मे कहाँ से जारी हो गए?

जवाबः– असल में इसकी वजह यह है कि जब अल्लाह ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो अल्लाह ने ज़मीन की तरफ़ वही भेजी कि मैं तुझसे ऐसी मख़्लूक़ पैदा करने वाला हूँ जिनको, इताअ़त पर जन्नत और नाफ़रमानी पर जहन्नम मिलेगी तो ज़मीन ने जवाब में मालूम किया कि ऐ मेरे परवरदिगार! क्या तू मुझसे ऐसी मख़्लूक़ भी पैदा करेगा जो जहन्नम में जाएगी? अल्लाह ने फ़रमाया हाँ! तो ज़मीन रोने लगी और इतना रोई कि उसके रोने की वजह से चश्मे और नहरें जारी हो गई जो क़ियामत तक जारी

रहेंगी।

(हाशिया जलालैन, हिस्सा 2, पेज 611)

सवालः-- क़ियामत के दिन अल्लाह के दरबार में लोगों की पेशी कितनी बार होगी और किसलिए होगी?

जवाबः-- तीन बार। 1. पहली बार अल्लाह के दरबार में वे लोग पेश किए जाएंगे जो गुनाहगार, नाफ़रमान और अल्लाह के दुश्मन होंगे और वे यह चाहेंगे कि जिस तरह तुम दुनिया में झगड़ा करके अपनी बात मनवा लिया करते थे, इसी तरह वे लोग यह सोचकर अल्लाह से झगड़ा करेंगे कि हमको नजात मिल जाए।

2. दूसरी पेशी इसलिए होगी कि अल्लाह दुश्मनों के ख़िलाफ़ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम और दूसरे नबियों के सामने हुज्जत पूरी फ़रमा कर दुश्मनों को जहन्नम रसीद कर देंगे।

3. तीसरी पेशी ईमान वालों की होगी। यह पेशी बराए नाम होगी और अल्लाह जल्ल शानुहू तन्हाई में उन पर सिर्फ़ इतना इताब (ग़ुस्सा) फ़रमाएंगे कि उनको शर्म आ जाएगी। फिर उनसे राज़ी होकर मग़्फ़िरत करके जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे।

(दरसी तफ़्सीर, पेज 99)

सवालः-- वे आयतें जिनसे अह्काम व मसाइल निकाले जाते हैं, कितनी हैं?

जवाबः-- वे आयतें पाँच सौ हैं। इनके अलावा बाक़ी फ़ज़ाइल वग़ैरह की हैं।

(हाशिया उसूलुश्शासी, पेज 5)

सवालः-- जिन हदीसों से मसाइल निकाले जाते हैं उनकी तादाद क्या है?

जवाबः-- उन हदीसों की तादाद 5000 है। (हाशिया उसूलुश्शासी, पेज 5)

व आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन० रब्बना तक़ब्बल मिन्ना, इन्न-क अन्तस्समीउल अलीम० व तुब अलैना, इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्रहीम० वस्सलातु वस्सलामु अला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुहम्मदिंव्-व आलिही व सहबिही अज्मईन इला यौमिद्दीन बिरह्मति-क या अरहमर्राहिमीन०

फ़क़तः-- वस्सलाम

मुहम्मद ग़ुफ़रान केरानवी

ख़ादिम जामिआ अशरफ़ुल उलूम, गंगोह

माह जुमादल उख़रा 1412 हिजरी

ज़ख़ीरा -ए- मालूमात

(दूसरा हिस्सा)

लेखक
मौलाना मुहम्मद ग़ुफ़रान रशीदी कैरानवी

हिन्दी अनुवाद
मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
New Delhi - 110002

ज़ख़ीरा-ए-मालूमात (दूसरा हिस्सा)

लेखक

मौलाना मुहम्मद गुफ़रान रशीदी कैरानवी

हिन्दी अनुवाद

मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

बएहतिमाम

(अल-हाज) मुहम्मद नासिर ख़ान

Zakheera-e-Ma'lumaat (Part II)

Author:

Maulana Muhammad Ghufran Rashidi Kairanvi

Translated by:

Muhammad Aijaz Shadab Sharif Nagri

Edition: **2014** *Pages:* **100**

प्रकाशक

فرید بُکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

ज़रूरी तंबीह (चेतावनी)

ज़ख़ीरा-ए-मालूमात के तमाम हिस्सों में चूंकि बहुत सी रिवायतें तारीख़ी हैं और तारीख़ी रिवायतें सही सक़ीम (कमज़ोर) क़वी व ज़ईफ़, राजेह व मरजूह हर तरह की होती हैं इसलिए इस किताब में लिखी हुई हर बात और रिवायत का राजेह व क़वी होना ज़रूरी नहीं, पढ़ने वाले इसी हैसियत से इसको देखें, मुहद्दिसीन और मुहक़्क़िक़ीन के उसूल पर न परखें। (लेखक)

विषय-सूची

بسم الله الرحمن الرحيم

तक़रीज़ व कलिमाते दुआइय्या

अज़ आरिफ़ बिल्लाह हज़रत अक़्दस अलहाज

मौलाना मुफ़्ती मुज़फ़्फ़र हुसैन दामत बरकातुहुम

नाज़िम व मुतवल्ली मदरसा मज़ाहिरे उलूम (वक़्फ़) सहारनपुर, यू.पी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलिहिल करीम, अम्मा बाद!

जनाब मौलाना मुहम्मद गुफ़रान साहब रशीदी, मुदर्रिस मद्रसा अशरफुल उलूम रशीदी, गंगोह ज़िला सहारनपुर, जो एक फ़ाज़िल और जय्यिदुल इस्तेदाद शख़्स हैं, तहरीर व तालीफ़ का ज़ौक़ रखते हैं। उन्होंने क़ीमती और मुफ़ीद मालूमात को यकजा करके अवाम व ख़वास तक पहुंचाने का जो सिलसिला **"ज़ख़ीरा-ए-मालूमात"** के नाम से शुरू किया है यह लायक़े तहसीन है। इस सिलसिले की यह दूसरी क़िस्त क़ारिईन के पेशे नज़र है।

उन्होंने किताब में हवालाजात का एह्तिमाम किया है इसलिए किताब बिला शुब्हा मोतबरियत और इफ़ादियत की हामिल है। अदीमुल फ़ुरसती की बिना पर बन्दा ने इसको जस्ता-जस्ता देखा। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त किताब को नाफ़ेअ़ बनाए और मुअल्लिफ़ के लिए ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत।

आमीन!

अलअ़ब्द

मुज़फ़्फ़र हुसैन मज़ाहिरी

नाज़िम व मुतवल्ली, मद्रसा मज़ाहिरे उलूम (वक़्फ़), सहारनपुर

14 जुमादल उख़रा 1415 हि०

उन किताबों की फेहरिस्त जिनसे रुजू किया गया और फ़ायदा उठाया गया

1. मुस्लिम शरीफ़
2. तिर्मिज़ी शरीफ़
3. मिशकात शरीफ़
4. जलालैन शरीफ़
5. तफ़सीरे ख़ाज़िन
6. तफ़सीर रूहुल मआनी
7. तफ़सीर मवाहिबुर्रहमान
8. तफ़सीर जुमल
9. सावी
10. दरसी तफ़सीर
11. लुग़ातुल कुरआन
12. उमदतुलक़ारी शरह बुख़ारी
13. अलबिदायः वन्निहायः
14. अलकामिल फ़ित्तारीख़
15. कंजुलउम्माल
16. उसुदुल ग़ाबः
17. असहहुस्सियर
18. अत्तअव्वुज़ फ़िल इस्लाम
19. दलाइलुन्नुबुव्वत
20. मुस्नद अबी याला अलमूसली
21. फ़तावा महमूदिया
22. ग़ुनियतुत्तालिबीन
23. तफ़सीरे अज़ीज़ी
24. तफ़सीरे मज़हरी
25. ग़ायतुल औतार
26. तफ़सीर इब्ने कसीर
27. शरह अक़ाइद
28. अल-इतक़ान फ़ी उलूमिल कुरआन
29. नशरुत्तीब
30. तारीख़ हरमैन शरीफ़ैन
31. शरफ़ुल मुकालमा
32. तिर्मिज़ी शरीफ़ मुतर्जम
33. तारीख़े इस्लाम
34. ज़फ़रूल मुहस्सिलीन बिअह्वालिल मुसन्निफ़ीन
35. अनवारुहिरायात, मुअल्लिफ़ मौलाना मुहम्मद अनवर गंगोही
36. फ़त्हुलक़दीर लिश्शौकानी
37. औजज़ुस्सियर लिख़ैरिल बशर (सल्ल०)
38. इब्ने माजा शरीफ़
39. सय्यिदुल काइनात (सल्ल०)
40. तराशे

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अपनी बात

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अ़ल्लमना मालम नअ़्-लम वस्सलातु वस्सलामु अ़ला ख़ैरि ख़ैल्क़िही मुहम्म-दि-निल अकरमि व अ़ला आलिही व अस्हा-बिहिल्लज़ी-न हुम क़ादतुल उमम!

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَلَّمَنَا مَا لَمْ نَعْلَمْ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَیْرِ خَلْقِهٖ
مُحَمَّدِ نِ الْاَكْرَمِ وَعَلٰی اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الَّذِیْنَ هُمْ قَادَةُ الْاُمَمِ اَمَّا بَعْدُ!

अम्मा बाद!

ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस का शुक्र व एहसान है कि बन्दे की तालीफ़ ज़ख़ीरा-ए-मालूमात (पहला हिस्सा) अजीब व ग़रीब मालूमात पर मुश्तमिल होने की वजह से इन्तिहाई क़द्र की निगाहों से देखी गई और ख़ुदा का फ़ज़्ल है कि अवाम व ख़्वास दोनों में काफ़ी मक़बूल हुई, यहां तक कि साथ साथ दूसरे हिस्से की फ़रमाइश भी शुरू हो गई थी। ख़ुदा की तौफ़ीक़ और क़द्रदानों के हौसला दिलाने का नतीजा है कि नाचीज़ ने दूसरा हिस्सा तैयार करने की भी सआ़दत हासिल कर ली जो माशाअल्लाह पहले हिस्से की तरह नादिर और अहम ज़रूरी मालूमात लिए हुए है। बन्दे ने इन्तिहाई जांफ़शानी और कोशिश की है कि हर बात मुदल्लल हो और हवाले के साथ हो।

मेरी यह काविश सबसे पहले अल्लाह के फ़ज़्ल, दूसरे मेरे मुश्फ़िक़ असातिज़ा-ए-किराम की रहनुमाई व निगरानी की मरहूने मिन्नत है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से उम्मीद है कि वह पहले हिस्से की तरह इसको भी अपने बन्दों में मक़बूल बना कर मेरे लिए तोशा-ए-आख़िरत और ज़ख़ीरा-ए-दारे बाक़ी बनाएंगे। आमीन

पढ़ने वालों से दरख़्वास्त है कि किताब में जहां कहीं कोई लग़्ज़िश, सह्व (भूल) व निस्यान सामने आए तो मुत्तला फ़रमाकर इल्मी तआवुन फ़रमाएं और इन्दल्लाह माजूर हों।

तालिबे दुआ:

मुहम्मद गुफ़रान रशीदी कैरानवी गुफ़ि-र लहू

मदरसा जामिया अशरफुल उलूम रशीदी, गंगोह

ज़िला : सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वह्य से मुताल्लिक़ मालूमात

सवालः— अल्लाह तआला फ़रिश्ते को वह्य किस तरह करते थे?

जवाबः— अल्लाह तआला जब फ़रिश्ते को किसी नबी के पास वह्य लेकर भेजते तो उसको रूहानी तौर पर वह्य का इल्क़ा करते या वह फ़रिश्ता लौहे महफ़ूज़ से याद करके लाता और नबी को सुना देता।

(उम्दतुलक़ारी शरह अल-बुख़ारी अलमुसम्मा बिलऐनी पेज 174, भाग 2)

सवालः— क़ुरआन करीम जिस तर्तीब से लौहे महफ़ूज़ में है उसी तर्तीब पर नाज़िल हुआ या दूसरी तर्तीब पर?

जवाबः— हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि क़ुरआन करीम शबे क़द्र में इकट्ठा एक ही मर्तबा लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुनिया पर नाज़िल किया गया और वह मवाक़े नुजूम के मुताबिक़ था, यानी जिस तरह ब-इख़्तिलाफ़े वाक़िआत उसे नाज़िल किया जाना इरादा-ए-इलाही में था उसी के मुवाफ़िक़ नुज़ूल की तर्तीब थी, लौहे महफ़ूज़ में जिस तर्तीब से लिखा हुआ है उसी तर्तीब से नाज़िल नहीं हुआ। (अल-इतक़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन भाग-1, पेज 54)

सवालः— पिछले अंबिया जिनकी ज़बानें अरबी ज़बान के अलावा थीं उनके पास हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम किस ज़बान में वह्य लेकर आते थे?

जवाबः— अल्लाह तआला के यहां से हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम वह्य अरबी ज़बान में लेकर आते थे फिर हर नबी अपनी ज़बान में तर्जुमा करके क़ौम को बतलाता, क़ौम को समझाता और अह्कामे ख़ुदावन्दी की तब्लीग़ करता था।

(अल-इतक़ान, भाग-1, पेज 60)

आसमानी किताबों से मुतअल्लिक़ मालूमात

सवालः— आसमानी किताबों की तादाद क्या है?

जवाबः— हक़ तआलाः ने अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम पर एक सौ चार किताबें नाज़िल फ़रमाई हैं? जिनमें से सौ सहीफ़े और चार किताबें हैं।

(हाशिया शरह अ़क़ाइद कलां, पेज 101)

सवालः— वे अम्बिया और रसूल जिन पर आसमानी किताबें नाज़िल हुई हैं, कितने हैं और कौन-कौन हैं?

जवाबः— खुदावन्दे कुद्दूस ने कुल आठ नबियों और रसूलों पर किताबें नाज़िल कीं जिन के नाम तर्तीबवार ये हैं (1) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम (2) हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम (3) हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम (4) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम (5) हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम (6) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम (7) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम (8) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम। (हाशिया शरह अ़क़ाइद पेज 101)

सवालः— किस रसूल पर कितने सहीफ़े नाज़िल हुए?

जवाबः— जिन रसूलों पर सहीफ़े नाज़िल हुए उनकी तफ़सील यह है कि दस सहीफ़े हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम पर, पचास हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम पर, तीस हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम पर, दस हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर, तौरात हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर, ज़बूर हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर, इंजील हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर और क़ुरआन करीम हज़रत सय्यिदना मुहम्मद-ए-अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल हुआ (ऊपर का हवाला)

सवालः— सुहुफ़े इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम किस महीने की किस तारीख़ में नाज़िल हुए?

जवाबः— सुहुफ़े इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम रमज़ानुल मुबारक की पहली रात या पहले दिन में नाज़िल हुए। (उमदतुलक़ारी शरह बुख़ारी भाग-1,पेज 76)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को तौरात शरीफ़ किस माह की किस तारीख़ में अ़ता हुई?

जवाबः— तौरात शरीफ़ का नुज़ूल 6 रमज़ानुल मुबारक को हुआ (उमदतुलक़ारी

पेज 76, भाग-1, अलबिदायः वन्निहायः पेज 78, भाग 2) दूसरा क़ौल यह है कि तौरात का नुज़ूल दस ज़िलहिज्जा को हुआ। (हाशिया जलालैन पेज 141)

सवालः— तौरात की कितनी तख़्तियां थीं और किस चीज़ की थीं?

जवाबः— इब्ने अबी हातिम ने सईद बिन जुबैर के तरीक़ से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की यह रिवायत ब्यान की है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को तौरात शरीफ़ ज़बरजद की सात तख़्तियों में लिखी हुई अता हुई थी। (अल-इतक़ान पेज 57, भाग-1) दूसरा क़ौल यह है कि तौरात की कुल दस तख़्तियां थीं और वे तख़्तियाँ जन्नत के दरख़्त सिदरः (बेरी) की थीं और कुछ ने कहा ये तख़्तियां ज़मुर्रद (सब्ज़ रंग के पत्थर) की थीं। (हाशिया जलालैन, पेज 141)

सवालः— तौरात की तख़्तियों की लम्बाई कितनी थी और तौरात का एक जुज़ कितने साल में पढ़ा जाता था?

जवाबः— हर तख़्ती की लम्बाई बारह हाथ थी। (अल-इतक़ान पेज 57, भाग-1) और हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि दस हाथ लम्बाई थी और उसका एक जुज़ (हिस्सा) एक साल में पढ़ा जाता था और उसके अज्ज़ा (हिस्सों) को हज़रत मूसा, हज़रत उज़ैर और हज़रत ईसा अलैहिमुस्सलाम के अलावा किसी ने नहीं पढ़ा। (हाशिया जलालैन पेज 141)

सवालः— तौरात में सूरतें और आयतें कितनी-कितनी थीं?

जवाबः— तौरात में एक हज़ार सूरतें थीं और हर सूरः में एक-एक हज़ार आयतें थीं। (हाशिया जलालैन पेज 265)

सवालः— तौरात किस ज़बान में थी?

जवाबः— अल्लामा किरमानी फ़रमाते हैं कि तौरात इब्रानी ज़बान में थी। (उम्दतुलक़ारी पेज 58 भाग-1 व मुआलिमुत्तंज़ील, पेज 277 भाग-1) दूसरा क़ौल यह है कि तौरात सुरयानी ज़बान में थी। (अल-इतक़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन पेज 52 भाग-1)

सवालः— तौरात की शुरूआत और ख़ातमा क़ुरआन की किस-किस आयत पर हुआ था?

जवाबः— तौरात की शुरूआत सूरः अन-आम की शुरू की दस आयतें:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ (الآية)

अल्हम्दुलिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़स्समावाति वल अर्ज़ से हुई थी और ख़ातमा सूरः हूद की आख़िरी आयतः

فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ۝

फ़अ्-बुदहु व-त-वक्कल अ़लैहि वमा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन अ़म्मा तअ्मलून०

पर हुआ था। (अल-इतक़ान पेज 52 भाग-1 व तफ़सीर-ए-ख़ाज़िन पेज 377 भाग 2)

सवाल:— हमारे इस ज़माने में जो कहीं-कहीं तौरात शरीफ़ मौजूद है क्या यह असली तौरात है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर नाज़िल हुई या तहरीफ़शुदा यानी रद्द-व-बदल की हुई है?

जवाब:— वाज़ेह रहे कि मौजूदा तौरात असली तौरात नहीं है, बल्कि यह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के बाद तसनीफ़ हुई जिसमें कुछ मज़मून असली तौरात के भी याददाश्त के तौर पर दर्ज करके इसका नाम तौरात रख दिया गया है। क़तई तौर पर यह वह तौरात नहीं है जिसका कुरआने करीम में ज़िक्र मौजूद है। (लुग़ातुल कुरआन मुसन्नफ़ा अब्दुर्रशीद नोमानी पेज 207 भाग-2)

सवाल:— तौरात की वह कौन-सी आयत है जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के अलावा किसी और को अ़ता नहीं की गई?

जवाब:— तौरात की वह आयत यह है :—

اَللّٰهُمَّ لَا تُوْلِجِ الشَّيْطَانَ فِيْ قُلُوْبِنَا وَخَلِّصْنَا مِنْهُ مِنْ اَجْلِ اَنَّ لَكَ الْمَلَكُوْتَ
وَالْاَبَدَ وَالسُّلْطَانَ وَالْمُلْكَ وَالْحَمْدَ وَالْاَرْضَ وَالسَّمَآءَ وَالدَّهْرَ الدَّاهِرَ اَبَدًا
اَبَدًا اٰمِيْنَ اٰمِيْنَ (الاتقان ج۱ص۵۳)

अल्लाहुम्-म ला तूलिजिश्शैता न फ़ी कुलूबिना व ख़ल्लिस्ना मिन्हु मिन अज्लि अन्-न ल-कल-म-ल-कू-त वल अ-ब-द वस्सुल्ता-न वल मुल-क वल हम्-द वल अर्ज़ वस्समा-अ वद्दह् रद्दाहि-र अ-ब-दन अ-ब-दा। आमीन आमीन०

(अल-इतक़ान भाग-1, पेज 53)

सवाल:— ज़बूर कब और किस महीने की किस तारीख़ में नाज़िल हुई?

जवाब:— ज़बूर हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम पर सुहुफ़े इब्राहीम के पांच सौ साल बाद बारह या तेरह रमज़ानुल मुबारक को नाज़िल हुई।

(अलबिदाय: भाग-2, पेज 78, हाशिया शरह अक़ाइद पेज 101)

सवाल:— ज़बूर तौरात के कितने साल बाद नाज़िल हुई?

जवाब:— ज़बूर तौरात के चार सौ ब्यासी (482) साल बाद नाज़िल हुई।

(अल-बिदाय: वन-निहाय:, पेज 78, भाग-2)

सवाल:— ज़बूर किस ज़बान में नाज़िल हुई?

जवाब:— इस सिलसिले में साहिबे उमदतुलक़ारी ने पेज 35, भाग-1 पर यह नक़ल किया है कि कुरआन के अलावा तमाम किताबें इबरानी ज़बान में नाज़िल हुई थीं।

सवाल:— ज़बूर में कितनी सूरतें थीं?

जवाब:— इब्ने अबी हातिम ने क़तादा से रिवायत किया है कि हम लोग इस बात को कहा करते थे कि ज़बूर में एक सौ पचास सूरतें हैं जो सब की सब मवाइज़ और सना में हैं और इन सूरतों में हलाल व हराम, फ़राइज़ व हुदूद का कहीं ज़िक्र भी नहीं। (अल-इतक़ान, पेज 88, भाग-1)

सवाल:— अल्लाह के नबी हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम ज़बूर कितनी आवाज़ों में पढ़ते थे?

जवाब:— हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम सत्तर आवाज़ों में ज़बूर की तिलावत किया करते थे। (अल-बिदाय: वन-निहाय:, पेज 16, भाग 2)

सवाल:— इंजील हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर किस महीने की किस तारीख़ में नाज़िल हुई?

जवाब:— इंजील के मुतअ़ल्लिक़ मुख़्तलिफ़ क़ौल हैं। एक क़ौल यह है कि 4 रमज़ानुल मुबारक को नाज़िल हुई (हाशिया शरह अक़ाइद पेज 101) दूसरा क़ौल यह है कि 13 रमज़ान को इंजील का नुज़ूल हुआ (उमदतुलक़ारी शरह बुख़ारी, पेज 76, भाग-1) तीसरा क़ौल 12 रमज़ान का है और चौथा क़ौल यह है कि 18 रमज़ान को इंजील का नुज़ूल हुआ। (अल-बिदाय: वन-निहाय: पेज 78, भाग 2)

सवाल:— इंजील, ज़बूर के कितने साल बाद नाज़िल हुई?

जवाब:— इंजील, ज़बूर के एक हज़ार पचास साल बाद नाज़िल हुई।

(अल-बिदाय:, पेज 78, भाग 2)

सवाल:— इंजील किस ज़बान में नाज़िल हुई थी?

जवाब:— इंजील सुरयानी ज़बान में नाज़िल हुई थी। (मुआ़लिमुत्तंज़ील लिलबग़वी पेज 277, भाग-1) और एक क़ौल उमदतुलक़ारी पेज 53, भाग-1 के हवाले से गुज़र चुका है कि तमाम किताबें इब्रानी ज़बान में नाज़िल हुई थीं अलावा कुरआन करीम के।

सवालः— इंजील में सूरतें थीं या नहीं?

जवाबः— जी हां, इंजील में सूरतें थीं, जिनमें से एक सूरः का नाम सूरतुल अमसाल था। (अल-इतक़ान फ़ी उलूमिल कुरआन पेज 87, भाग-1)

सवालः— कुरआन करीम, इंजील के कितने साल बाद किस महीने की किस तारीख़ में नाज़िल हुआ?

जवाबः— कुरआन, इंजील के तीन सौ सठा साल या सात सौ साल बाद या पांच सौ साल बाद 24 रमज़ान में (जैसा कि हाशिया शरह अक़ाइद पेज 101 में लिखा है) या 25 रमज़ान में (जैसा कि बिदायः, पेज 78 भाग 2 में लिखा है) नाज़िल हुआ।

कुरआन का वह हिस्सा जो पहले नबियों अलैहिमुस्सलाम पर भी नाज़िल हुआ

सवालः— कुरआन का वह हिस्सा कौन-सा है जो पहले नबियों अलैहिमुस्सलाम पर भी नाज़िल हुआ है?

जवाबः— कुरआन का वह हिस्सा जो पहले नबियों अलैहिमुस्सलाम पर भी नाज़िल हुआ है, यह है—

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى

सब्बिहिस्-म रब्बिकलआला

जिस वक़्त नाज़िल हुई तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह पूरी सूरः हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के सहीफ़ों में भी नाज़िल हुई थी और इमाम हाकिम ने क़ासिम के तरीक़ से हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत किया है कि ख़ुदा ने अपने रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल की हुई किताब में से हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम पर नीचे लिखी आयतें नाज़िल की थीं।

اَلتَّائِبُوْنَ الْعَابِدُوْنَ الْحَامِدُوْنَ (مکمل آیت پارہ ۱۱)

(1) अत्ताइबूनल आबिदूनल हामिदू-न (पूरी आयत पारा 11)

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ (پارہ:۱۸) کے شروع سے فِیْهَا خٰلِدُوْنَ تک

(2) क़द अफ़्-ल-हलमूमिनू-न (पारा 18) के शुरू से "फ़ीहा ख़ालिदून" तक

اِنَّ الْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ (پارہ۲۲ مکمل آیت)

(3) इन्नलमुस्लिमी-न वल्मुस्लिमात

(पारा 22 मुकम्मल आयत) (4) सूरः मआरिज की ये आयतें

اَلَّذِیْنَ هُمْ عَلٰی صَلٰوتِهِمْ دَآئِمُوْنَ سے قَآئِمُوْنَ تک

"अल्लज़ी-न हुम अ़ला सलातिहिम दाइमू-न" से **"क़ाइमू-न"** *तक। (पारा, 29)*

ग़रज़ यह कि अल्लाह तआ़ला ने ये हिस्से हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत सय्यिदना मुहम्मद अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सिवा किसी को पूरे करके नहीं दिए और सूरः अन्‌आ़म की दस आयतें—

قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ (الایات)

क़ुल तआ़लौ अत्लु मा हर्र-म रब्बु-कुम (अल आयात)

तौरात में सबसे पहले नाज़िल हुई थीं और तौरात का इख़्तिताम सूरः हूद के ख़ातमे पर हुआ था। दूसरा क़ौल यह है कि तौरात का इख़्तिताम

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا سے وَکَبِّرْهُ تَکْبِیْرًا تک

'अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम यत्तख़िज़ वल-दन' (से) 'व कब्बिरहु तकबीरा' (तक) पर हुआ था। (अल-इतक़ान भाग-1, पेज— 52)

सवालः— कुरआन की वह कौन-सी आयत है जो तौरात में सात सौ आयात का दर्जा रखती है?

जवाबः— वह सूरः जुमा की शुरू की आयत—

یُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ .... الْعَزِیْزِ الْحَکِیْمِ۝

'युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति' से **'अल-अ़ज़ीज़िल हकीमि'** तक इसका मर्तबा तौरात में सात सौ आयतों के बराबर है। (अल-इतक़ान, भाग-1, पेज 53)

सवालः— कुरआन की वह कौन-सी आयत है जो हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्-सलाम के अलावा किसी दूसरे नबी पर नाज़िल नहीं हुई?

जवाब:— वह आयत بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ **'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'** है, जो हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के अलावा किसी दूसरे नबी पर नाज़िल नहीं हुई। (कंज़ुलउम्माल, भाग-1 पेज 556)

सवाल:— कुरआन की वे कौन-सी आयतें हैं जो हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर भी नाज़िल हुई?

जवाब:— इब्ने अबी हातिम ने मुहम्मद बिन काब अल-क़रज़ी से नक़ल किया। वह कहते हैं हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर नाज़िल होने वाली कुरआन पाक की ये तीन आयतें थीं:

وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِيْنَ○ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ○ يَعْلَمُوْنَ مَاتَفْعَلُوْنَ○

(1) **'व इन्-न अलैकुम ल-हाफ़िज़ीन○ किरामन कातिबीन○ यअ्-ल-मू-न मा तफ़्अलून'○**

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَاْنٍ (الآية)

(2) **वमा तकू-नु फ़ी शानिन** (अल-आयत)

اَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍ (الآية)

(3) **अ-फ़-मन हु-व क़ाइमुन अला कुल्लि नफ़्सिन** (आयत)

और मुहम्मद बिन काब के सिवा किसी और ने चौथी आयत **'वला तक़्-र-बुज़्ज़िना'** (अल आयत)

وَلَاتَقْرَبُوا الزِّنَا (الآية)

का भी इज़ाफ़ा किया है और इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास रज़ि० से भी रिवायत नक़ल की। वह ख़ुदा का फ़रमान—

لَوْ لَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ

लौ ला अंर्रआ बुरहा-न रब्बिही की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि यूसफ़ अलैहिस्सलाम ने उस वक़्त कुरआन करीम की उस आयत का मुशाहदा किया था, जिसने उनको इस बुरे काम में मुब्तला होने से महफ़ूज़ रखा और वह आयत उनके लिए दीवार की सतह पर नुमायां की गई थी। (अल-इतक़ान भाग-1, पेज 55)

सवाल:— कुरआन की वे सूरतें, जो कुरआन में भी हैं और पहली किताबों

में भी थीं, कौन-सी हैं?

जवाबः— (1) सूरः आले इमरानः इसका नाम तौरात में *तय्यिबः* था (2) सूरः कहफ़ जिसका नाम तौरात में अलआइलः था (3) सूरः क़मर जिसका नाम तौरात में *अलमुबय्यज़ः* था (अल-इतक़ान, भाग-1 पेज 72) (4) सूरः मुल्क जिसका नाम तौरात में सूरः अलमानिअः था। (कंज़ुलउम्माल, भाग-1, पेज 593)

सवालः— कुरआन करीम का वह हिस्सा जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पहले किसी नबी पर नाज़िल नहीं हुआ, कौन-सा है?

जवाबः— कुरआन हकीम का वह हिस्सा जो दूसरे किसी नबी पर नाज़िल नहीं हुआ, यह है (1) सूरः फ़ातिहा (2) आयतुलकुर्सी (3) सूरः बक़रः का आख़िरी रूकूअ़। ये तीनों हिस्से अ़र्श के ख़ज़ाने से नाज़िल हुए।

(अल-इतक़ान भाग-1, पेज 51)

कुरआन करीम की ख़ुसूसियतें आसमानी किताबों पर

सवालः— कुरआन करीम की दूसरी आसमानी किताबों पर क्या ख़ुसूसियत है?

जवाबः— वैसे तो ख़ुसूसियतें बहुत हैं मगर कुछ का इस मक़ाम पर ज़िक्र किया जाता है (1) कुरआन शरीफ़ ऐसी किताब है कि फ़साहत व बलाग़त में ऐसी कोई किताब नहीं जैसा कि अल्लाह का फ़रमान—

وَاِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ

व इन कुन्तुम फ़ी रैबिम मिम्मा नज़्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना फ़ातू बिसू-रतिम मिम् मिसलिही (पारा 1)

(2) कुरआन करीम का आसानी से हिफ़्ज़ (याद) हो जाना भी कुरआन की ख़ुसूसियत है, वरना इससे पहले आम तौर पर दूसरी आसमानी किताबों का हिफ़्ज़ किया जाना साबित नहीं। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है—

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ (پارہ ۲۷)

व-ल-क़द यस्सर्नलकुरआ-न लिज़्ज़िक्रि फ़हल मिम्मुद्दकिर।

'हमने कुरआन को याद करने के लिए आसान किया है, पस कोई है याद करने वाला?' (पारः 27) (3) कुरआन को हाथ लगाने के लिए वुज़ू ज़रूरी है, लेकिन दूसरी किताबों को छूने के लिए वुज़ू ज़रूरी नहीं जैसा कि अल्लाह का इर्शाद है:

لَا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ٥

ला यमस्सुहू इल्लल मुतह्-हरू-न०

'न छूएं कुरआन को मगर पाक लोग' (4) कुरआन का इन्कार करने वाला काफ़िर और किसी किताब का इन्कार कुफ़्र है। अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है: **'वमा यज्हदु बि आयातिना इल्लल् काफ़िरून०'** और नहीं इन्कार करते हैं हमारी आयतों का मगर काफ़िर लोग। **'वमा यज्हदु बि आयातिना इल्ला कुल्लु ख़त्तारिन कफ़ूर०'** और नहीं इन्कार करते हैं हमारी आयतों का मगर झूठे ना-शुक्रे लोग। कुरआन के अलावा मौजूदा आसमानी किताबों में से किसी का इन्कार कुफ़्र नहीं (क्योंकि ये अपनी असली हालत पर नहीं हैं, उनमें तहरीफ़ हो चुकी है और कुरआन पाक अपनी असली हालत पर है वह तहरीफ़ से पाक है। अल्लाह ने इसकी हिफ़ाज़त का वादा किया है इरशादे बारी तआ़ला है—

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ٥

'इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्नज़्ज़िक्-र व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून' (5) कुरआन पाक की तिलावत से पहले अऊज़ु बिल्लाह पढ़ना ज़रूरी है। दूसरी किताबों के लिए अऊज़ु पढ़ना ज़रूरी नहीं। चुनांचे रद्दुलमुहतार हाशियः दुर्रेमुख़्तार में लिखा है कि दूसरी किताबों के लिए अऊज़ु बिल्लाह पढ़ना ज़रूरी नहीं। अल्लाह का फ़रमान है:

فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ٥

'फ़इज़ा क़रअ्-तल-कुरआन-न फ़स्तइज़ बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' 'जब आप कुरआन पढ़ें तो शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह माँगए, (6) जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसका सुनना और सुनने के लिए ख़ामोश रहना ज़रूरी है और दूसरी किताबों के लिए ऐसा नहीं है। अल्लाह तआ़ला का इरशाद है—

وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا

व इज़ा क़ुरिअल कुरआनु फ़स्-तमिऊ लहू व अन्सितू।

'और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो उसको गौर से सुनो और ख़ामोश रहो।'

(हिदायतुत्तरतील, पेज 419)

मुवाफ़क़ाते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम व सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम व मलाइका अलैहिमुस्सलाम

(यानी क़ुरआन का वह हिस्सा जो नुज़ूल से पहले हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या आप के कुछ सहाबा या फ़रिश्तों की ज़बान पर जारी हुआ फिर बिल्कुल उसी तरह हक़ तआला की तरफ़ से नाज़िल हो गया)

सवालः— वह कौन-सी आयत है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बाने मुबारक पर जारी हुई फिर उसी तरह आसमान से नाज़िल हो गई?

जवाबः— वे दो आयतें हैं

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ع (الآية)

(1) **क़द जाअकुम बसाइरु मिर्रब्बिकुम** (अल-आयत)

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا (الآية)

(2) **अ-फ़-ग़ैरल्लाहि अबतग़ी ह-क-मन** (अल-आयत)

(अल-इतक़ान फ़ी उलूमिलक़ुरआन, भाग-1, पेज 47)

सवालः— वे कौन-सी आयतें हैं जो फ़रिश्तों की ज़बान पर जारी हुईं फिर उसी तरह नाज़िल हो गईं?

जवाबः— वे दो आयतें हैं

وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ ع

(1) *वमा न-त-नज़्ज़लु इल्ला बिअम्रि रब्बि-क*

यह हज़रत जिबरील (अ०) की ज़बान पर जारी हुई और उसी के मुवाफ़िक़ अल्लाह ने नाज़िल फ़रमा दी।

وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۝ وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ۝ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ۝

(2) वमा मिन्ना इल्ला लहू मक़ामुम्मालूम० व इन्ना ल-नह्नुस्साफ़्फ़ून० व इन्ना ल-नह्नुल मुसब्बिहून०

ये आयतें नुज़ूल से पहले फ़रिश्तों की ज़बान पर जारी हुईं, फिर उसी तरह अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हो गईं। (अल-इतक़ान पेज 47, भाग-1)

सवाल:— कुरआन हकीम का वह कौन-सा हिस्सा है जो कुछ सहाबा की ज़बान पर जारी हुआ या उन्होंने उसकी तमन्ना की और उसी के मुवाफ़िक़ हक़ तआला ने उसको नाज़िल फ़रमा दिया?

जवाब:— इस सिलसिले की ज़्यादातर हज़रत उमर रज़ि० की ज़बान पर जारी होने वाली आयतें हैं जिनको मुवाफ़क़ाते उमरी के नाम से मौसूम किया जाता है, चुनांचे कुछ चीज़ों में अल्लाह तआला ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मुवाफ़क़त की है—

(1) हज़रत उमर रज़ि० ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! अगर हम मक़ामे इब्राहीम को मुसल्ला (नमाज़ पढ़ने का मक़ाम) बनाते तो क्या अच्छा होता? उसी वक़्त आयत नाज़िल हुई 'वत्तख़िज़ू मिम्मक़ामि इब्राही-म मुसल्ला' (और तुम मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ पढ़ने की जगह बना लो)

(2) जब हज़रत उमर रज़ि० ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से गुज़ारिश की कि या रसूलल्लाह! आपके पास आपकी बीवियों के सामने नेक व बद हर तरह के लोग चले जाते हैं, इसलिए अगर आप उनको पर्दे का हुक्म देते तो अच्छा होता। पस आयते हिजाब (पर्दे के हुक्म की आयत) **'फ़स्अलूहुन्-न मिंव्-वराइ हिजाब'** नाज़िल हुई।

(3) जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तमाम बीवियां आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुताल्लिक़ ग़ैरत रखने में एक-सी हो गई थीं तो हज़रत उमर रज़ि० ने उनसे कहा—

عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ (الاٰية)

'असा रब्बुहू इन तल्ल-क़-कुन्-न अंय्-युब्दि-लहू अज़्वाजन ख़ैरम् मिनकुन्-न

तर्जुमा :— "अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुमको छोड़ दें तो उम्मीद है कि आपका खुदा आपको तुम्हारे बदले में तुम से अच्छी बीवियां दे

देगा" फिर इसी तरह कुरआन में नाज़िल हो गया।

(4) बद्र की लड़ाई के क़ैदियों के मुताल्लिक़ जो हज़रत उमर रज़ि० की राय थी, उसी तरीक़े से अल्लाह ने नाज़िल फ़रमा दिया था।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ○ (الآية)

(5) जब 'व ल-क़द् ख़-लक़्नल् इन्सा-न मिन सुला-लतिम् मिन् तीन' (अल-आयत) नाज़िल हुई तो हज़रत उमर रज़ि० की ज़बान पर उसको सुनकर बेसाख़्ता जारी हुआः

فَتَبَارَكَ اللّٰهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ ○

'फ़-त-बा-र-कल्लाहु अह-स-नुल् ख़ालिक़ीन' फिर ख़ुदा की तरफ़ से भी इसी तरह नाज़िल हो गया।

(6) एक यहूदी की हज़रत उमर रज़ि० से मुलाक़ात हुई। यहूदी कहने लगा कि बेशक वह जिबरील अलैहिस्सलाम, जिसका ज़िक्र तुम्हारा दोस्त (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) करता है वह हमारा दुश्मन है। हज़रत उमर रज़ि० ने उसका जवाब दिया—

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكَالَ فَإِنَّ اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكَافِرِيْنَ ○

'मन का-न अ़दुव्वल-लिल्लाहि व-मलाइ-क-तिही व रूसुलिही व जिब्री-ल व मीका-ल फ़इन्नल्ला-ह अ़दुव्वुल्लिल्काफ़िरीन'

तर्जुमाः— 'जो अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसके रसूलों और जिबरील व मीकाईल का दुश्मन है तो इसमें शक नहीं कि अल्लाह काफ़िरों का दुश्मन है'। जिस तरह यह आयत हज़रत उमर रज़ि० की ज़बान पर जारी हुई, ठीक उसी तरह अल्लाह ने भी नाज़िल फ़रमा दी। (अल-इतक़ान, भाग-1, पेज 89)

सवालः— हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० की ज़बान पर कौन-सी आयत जारी हुई जिसके मुवाफ़िक़ अल्लाह ने भी नाज़िल फ़रमा दी?

जवाबः— जब हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० पर मुनाफ़िक़ों ने बोहतान बांधा था और हज़रत मुआज़ रज़ि० ने हज़रत आइशा रज़ि० के मुताल्लिक़ यह बुरी बात सुनी थी तो उनकी ज़बान से निकला—

سُبْحَانَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ○

सुब्हा-न-क हाज़ा बुह्तानुन अज़ीम०

फिर इसी तरह खुदा की तरफ़ से यह आयत नाज़िल हो गई और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम में से दो सहाबी हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० और हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० ये दोनों जब किसी के बारे में ऐसी बुरी बात सुनते, तो कहते:

سُبْحَانَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ○

सुब्हा-न-क हाज़ा बुह्तानुन अज़ीम० फिर इसी तरह वह आयत अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर नाज़िल फ़रमाई।

(अल-इतक़ान फ़ी उलूमिलक़ुरआन, भाग-1, पेज 47)

सवालः– हज़रत मुस्अ़ब बिन उमैर रज़ि० की ज़बान पर वह कौन-सी आयत जारी हुई और कहां हुई जिसके मुवाफ़िक़ अल्लाह ने क़ुरआन में नाज़िल फ़रमाई?

जवाबः– उहुद की लड़ाई में इस्लाम का झंडा हज़रत मुस्अ़ब बिन उमैर रज़ि० के हाथों में था, लड़ते-लड़ते उनका दाहिना हाथ कट गया तो झंडा बाएं हाथ में थामा और कहने लगे:

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ط اَفَإِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ
انْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ ط

वमा मुहम्मदुन इल्ला रसूल, क़द ख़लत् मिन क़ब्लिहिर्रुसुल् अ-फ़-इम्मा-त औ क़ुति-लन्क़लब्तुम अ़ला आक़ाबिकुम

तर्जुमाः– 'और मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक रसूल हैं। उनसे पहले भी बहुत से रसूल गुज़र चुके हैं, फिर क्या अगर वह वफ़ात पा गए या क़त्ल कर दिए गए तो तुम लोग पुश्त फिरा कर भाग निकलोगे?' उसके बाद उनका दूसरा हाथ भी कट गया और वह शहीद हो गए। यह आयत इसी तरह इस वाक़िए के बाद नाज़िल हुई और

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ○

'इय्या-क नअ़्बुदु व इय्या-क नस्तईन' भी बन्दों की ज़बानों पर वारिद हुआ है।

(अल-इतक़ान फ़ी उलूमिलक़ुरआन, भाग-1, पेज 47)

क़ुरआन की सूरतों, आयतों के साथ फ़रिश्तों का उतरना

सवालः— वे सूरतें और आयतें कौन-कौन-सी हैं जिनके साथ फ़रिश्ते भी उतरे?

जवाबः— इस तरह की सूरतें और आयतें ये हैं (1) सूरः अन्आम[1] जिसको लेकर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे (2) सूरः अलफ़ातिहा इसको लेकर अस्सी हज़ार फ़रिश्ते उतरे (3) सूरः यूनुस इसको लेकर तीस हज़ार फ़रिश्ते नाज़िल हुए (4)

وَاسْئَلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَا

'वस्अल मन् अर्सल्ना मिन क़ब्लि-क मिर्रुसुलिना'

इसके साथ बीस हज़ार फ़रिश्ते उतरे (5) आयतुलकुर्सी, इसके साथ तीस हज़ार फ़रिश्ते आसमान से उतरे[2]। (अल-इतक़ान पेज 50 भाग-1) (6) सूरः अलकहफ़ इसको लेकर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उतरे। (कंज़ुलउम्माल, भाग-1, पृ० 578)

क़ुरआन की सूरतों की मक्की और मदनी तर्तीबे नुज़ूल

सवालः— क़ुरआन करीम क्या इसी तर्तीब पर नाज़िल हुआ था, जिस तर्तीब से तिलावत की जाती है?

जवाबः— क़ुरआन करीम जिस तर्तीब पर हमारे सामने मौजूद है इस तर्तीब पर नाज़िल नहीं हुआ था, बल्कि मक्का और मदीना में जिस तर्तीब से क़ुरआन नाज़िल हुआ उसकी तफ़सील यह हैः

---

1. सूरः अन्आम मक्का में रात के वक़्त इस तरह नाज़िल हुई कि 70 हज़ार फ़रिश्ते उसके इर्द-गिर्द तस्बीह (सुब्हानल्लाहिल अज़ीम) की आवाज़ बुलन्द करते हुए ज़मीन पर नाज़िल हुए।
2. और यह फ़रिश्तों का उतरना उन फ़रिश्तों के अलावा है जो हमेशा हज़रत जिब्रील (अलै०) के साथ आते थे। (अल इतक़ान पेज 50 व हाशिया इतक़ान उर्दू पेज 99)

मक्की तर्तीबे नुज़ूल

1. अल-अलक़
2. अल-क़लम
3. अल-मुज़्ज़म्मिल
4. अल-मुद्दस्सिर
5. अल-फ़ातिहा
6. अल-लहब
7. अत्-तक्वीर
8. अल-आला
9. अल-लैल
10. अल-फ़ज्र
11. अज़्ज़ुहा
12. अलम नशरह
13. अलअस्र
14. अल- आदियात
15. अल-कौसर
16. अत्तकासुर
17. अल-माऊन
18. अल-काफ़िरून
19. अल-फ़ील
20. अल-फ़लक़
21. अन्-नास
22. अल-इख़्लास
23. अन्-नज्म
24. अ-ब-स
25. अल-क़द्र
26. अश्शम्स
27. अल-बुरूज
28. अत्तीन
29. क़ुरैश
30. अल-क़ारिअ:
31. अल-क़ियाम:
32. अल-हु-म-ज़:
33. अल-मुरसलात
34. क़ाफ़
35. अल-ब-लद
36. अत्-तारिक़
37. अल-क़मर
38. साद
39. अल-आराफ़
40. अल-जिन्न
41. यासीन
42. अल-फ़ुरक़ान
43. फ़ातिर
44. मरयम
45. ताहा
46. अल-वाक़िअ:
47. अश्शुअ़रा
48. अन-नम्ल
49. अल-क़-सस
50. बनी इसराईल
51. यूनुस
52. हूद
53. यूसुफ़
54. अल-हिज्र
55. अल-अन्आम
56. अस्साफ़्फ़ात
57. लुक़मान
58. सबा
59. अज़्ज़ुमर
60. अलमोमिन
61. हामीम सज्दा
62. अश्शूरा
63. अज़्ज़ुख़रूफ़
64. अद्दुख़ान
65. अल-जासिय:
66. अल-अहक़ाफ़
67. अज़्ज़ारियात
68. अलग़ाशिय:
69. अल-कहफ़
70. अन्नहल
71. नूह
72. इब्राहीम
73. अल-अम्बिया
74. अलमोमिनून
75. अस्सज्द:
76. अत्तूर
77. अल-मुल्क
78. अल-हाक्क़:
79. अल-मआरिज
80. अन्-नबा
81. अन्नाज़िआत
82. अल-इन्फ़ितार
83. अल-इन्शिक़ाक़
84. अर्रूम
85. अल-अंकबूत
86. अल मु-तफ़्फ़िफ़ीन

मदनी तर्तीबे नुज़ूल

1. अल-बक़रः
2. अल-अन्फ़ाल
3. आले इमरान
4. अल-अहज़ाब
5. अल- मुम्तहिनः
6. अन्निसा
7. अज़-ज़िलज़ाल
8. अलहदीद
9. मुहम्मद
10. अर्रअ़्द
11. अर्रह्मान
12. अद्दह
13. अत्तलाक़
14. अल-बय्यिनः
15. अलहश्र
16. अन्नूर
17. अल-हज्ज
18. अल-मुनाफ़िक़ून
19. अल-मुजादिला
20. अल-हुजुरात
21. अत्तहरीम
22. अत्तग़ाबुन
23. अस्सफ़्फ़
24. अल-जुमुअः
25. अल-फ़त्ह
26. अल-माइदः
27. अत-तौबः
28. अन्नस्र

सवालः— कुरआन पाक की सातों मंज़िलें कौन-कौन सी सूरः से शुरू होती हैं?

जवाबः— पहली मंज़िल सूरः फ़ातिहा से, दूसरी सूरः माइदः से, तीसरी सूरः यूनुस से, चौथी बनी इसराईल से, पांचवीं सूरः शुअ़रा से, छठी सूरः साफ़्फ़ात से, सातवीं सूरः क़ाफ़ से।

कुरआन करीम की आयतों और हर्फ़ों की तादाद

सवालः— कुरआन करीम की आयतों की तादाद क्या है?

जवाबः— कुरआन करीम की आयतों की तादाद छः हज़ार पांच सौ (6500) है। (जुमल पेज 5 भाग-1) दूसरा क़ौल यह है कि छः हज़ार छः सौ सोलह (6616) आयतें हैं। (अल-इतक़ान, पेज 89 भाग-1) और अ़ल्लामा दानी ने उलमा का इजमाअ़ इस बात पर नक़ल किया है कि कुरआन की आयतों की तादाद छः हज़ार (6000) है, मगर फिर इस तादाद से ज़्यादती के मुताल्लिक़ उनमें आपस में इख़्तिलाफ़ हो गया है। कुछ लोगों ने कुछ ज़्यादती ही नहीं मानी और कुछ साहिबों ने दो सौ चार (204) आयतें ज़ाइद बताई हैं। (अल-इतक़ान, भाग-1 पेज 89)

सवालः— कुरआन करीम में कुल कितने हुरूफ़ हैं?

जवाबः— तबरानी ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से मरफ़ूअ़न रिवायत की है कि कुरआन के दस लाख सत्ताईस हज़ार (10,27,000) हुरूफ़ हैं। यह मिक़्दार

तमाम मंसूख़ आयतों को मिलाकर है।

(जुमल, भाग-1 पेज 5, अल-इतक़ान, भाग-1 पेज 93)

सवालः—पूरे क़ुरआन में हुरूफ़े तहज्जी में से किस हर्फ़ की कितनी तादाद ज़िक्र की गई है?

जवाबः— क़ुरआन करीम में कौन-सा हर्फ़ कितनी मिक़्दार में आया है इसकी तफ़्सील इमाम नसफ़ी ने तर्तीब के साथ अपनी किताब (मजमूउल उलूम व मतलउन्नुजूम) में अलग-अलग हरफ़न-हरफ़न ज़िक्र की है, जिसको नीचे लिखा जाता है। अलिफ़ क़ुरआन में अड़तालीस हज़ार सात सौ चालीस (48740) हैं, बा क़ुरआन करीम में ग्यारह हज़ार चार सौ बीस (11420) हैं, ता क़ुरआन में चौदह हज़ार चार सौ (14400) हैं, सा दस हज़ार चार सौ अस्सी (10480) हैं, जीम तीन हज़ार तीन सौ बाईस (3322) हैं, हा चार हज़ार एक सौ अड़तीस (4138) हैं, ख़ा दो हज़ार पांच सौ तीन (2503) हैं, दाल पांच हज़ार नौ सौ अट्ठानवे (5998) हैं, ज़ाल चार हज़ार नौ सौ चौंतीस (4934) हैं, रा दो हज़ार दो सौ छः (2206) हैं, ज़ा एक हज़ार छः सौ अस्सी (1680) हैं, सीन पांच हज़ार सात सौ निन्नानवे (5799) हैं, शीन दो हज़ार एक सौ पन्द्रह (2115) हैं, साद दो हज़ार सात सौ अस्सी (2780) हैं, ज़ाद एक हज़ार आठ सौ ब्यासी (1882) हैं, ता (ط) एक हज़ार दो सौ चार (1204) हैं, ज़ा (ظ) आठ सौ ब्यालीस (842) हैं, ऐन नौ हज़ार चार सौ सत्तर (9470) हैं, ग़ैन एक हज़ार दो सौ उन्तीस (1229) हैं, फ़ा नौ हज़ार आठ सौ तेरह (9813) हैं, क़ाफ़ आठ हज़ार निन्नानवे (8099) हैं, काफ़ आठ हज़ार बाईस (8022) हैं, लाम तैंतीस हज़ार नौ सौ बाईस (33922) हैं, मीम अट्ठाईस हज़ार नौ सौ बाईस (28922) हैं, नून सत्तर हज़ार (70000) हैं, वाव पच्चीस हज़ार पांच सौ छः (25506) हैं, हा छब्बीस हज़ार नौ सौ पच्चीस (26925) हैं, ला चौदह हज़ार सात सौ सात (14707) हैं, या पच्चीस हज़ार सात सौ सतरह (25717) हैं।

(अलफ़ुतूहातुल इलाहिया, भाग-1, पेज 5)

रात¹ में नाज़िल होने वाली आयतें

सवालः— वे सूरतें और आयतें कौन-कौन-सी हैं जो रात में नाज़िल हुई हैं?

जवाबः— रात में नाज़िल होने वाली सूरतें ये हैं (1) सूरः अनआम मक्का में रात के वक़्त नाज़िल हुई इस तरह पर कि सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके चारों तरफ़ तस्बीह (सुब्हानल्लाहिल अज़ीम) की आवाज़ बुलन्द करते आ रहे थे। वह सूरः पूरी एक ही बार में नाज़िल हुई। (2) सूरः मरयम का नुज़ूल भी रात को हुआ, हज़रत अबू मरयम ग़स्सानी से रिवायत है, वह कहते हैं कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि आज रात मेरे घर में एक लड़की पैदा हुई है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आज रात मुझ पर सूरः मरयम नाज़िल हुई, इसलिए इस लड़की का नाम मरयम रखो (अल-इतक़ान भाग-1, पेज 28) (3) सूरः अल-मुनाफ़िक़ून का नुज़ूल भी रात में हुआ है। (4) सूरः अल-मुरसलात का नुज़ूल भी रात के वक़्त हुआ है। (5, 6) कुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़ व कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास इन दोनों सूरतों का नुज़ूल भी रात के वक़्त हुआ है (अल-इतक़ान, भाग-1 पेज 29) (7) सूरः आले इमरान के आख़िरी हिस्से की निस्बत इब्ने हिब्बान ने अपनी सहीह में और इब्ने अल-मुन्ज़िर व इब्ने मर्दव्या और इब्ने अबिद्दुनिया ने किताबुत्तफ़क्कुर में उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत किया है कि हज़रत बिलाल रज़ि० नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास नमाज़-ए-फ़ज्र की अज़ान सुनाने आए। हज़रत बिलाल रज़ि० ने देखा अल्लाह के रसूल सल्ल० रो रहे हैं। हज़रत बिलाल रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आपके रोने की क्या वजह है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, क्यों न रोऊं, जबकि आज रात मुझ पर

إن في خلق السموت والأرض واختلاف الّيل والنهار لايت لأولي الألباب○

1. क़ुरआन करीम का अक्सर हिस्सा चूंकि दिन में नाज़िल हुआ है इसलिए उसको ब्यान करने की ज़रूरत नहीं है और रात में नाज़िल होने वाला हिस्सा कम है। इसलिए जुस्तजू के बाद जितनी आयतें व सूरतें रात में नाज़िल होने वाली मिल पाई हैं उनका यहां ज़िक्र कर दिया गया है।

इन्न-न फी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल-आयातिल लिउलिल अल्बाब' का नुज़ूल हुआ है। इसके बाद फ़रमाया, वदबख़्ती है उस शख़्स के लिए जो इस आयत को पढ़े, फिर भी ख़ालिक़ की कारीगरी में ग़ौर न करे। (अल-इतक़ान, भाग-1, पेज 28)

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ط

(8) 'वल्लाहु यअ्सिमु-क मिनन्नासि' के मुताल्लिक़ इमाम तिर्मिज़ी व हाकिम ने हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत की है किया आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाज़त के लिए सहावा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम रात में पहरा देते थे, जिस वक़्त यह आयत

وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ... الخ

वल्लाहु यअ्सिमु-क (अल-आयत) नाज़िल हुई, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ेमा से सर निकाल कर फ़रमाया, लोगो! तुम वापस जाओ, ख़ुदा ने ख़ुद मुझको अपनी हिफ़ाज़त में ले लिया है और तबरानी ने अस्मा बिन मालिक अल-ख़तमी से रिवायत की है, वह कहते हैं कि हम लोग रात के वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निगहबानी किया करते थे, जब यह आयत 'वल्लाहु यअ्सिमु-क मिनन्नास' नाज़िल हुई तो पहरा तोड़ दिया गया (अल-इतक़ान, भाग-1 पेज 28) (9) आयतुस्सलासः यानी

وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ط حَتّٰى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ الخ

'व अलस्सला-सतिल्लज़ी-न ख़ुल्लिफ़ू हत्ता इज़ा ज़ाक़त अलैहिमुलअर्ज़ु बिमा र-हुबत' (आख़िर तक) इस आयत की निस्बत सहीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) में हदीस काब बिन मालिक से मरवी है, उन्होंने कहा, ख़ुदा ने हमारी तौबा ऐसे वक़्त में नाज़िल फ़रमाई जबकि रात का पिछला तीसरा हिस्सा बाक़ी रह गया था, जिसकी कुछ तफ़सील यह है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लश्कर तबूक की लड़ाई के लिए रवाना हुआ तो काब बिन मालिक, मुरारह बिन रबीआ और हिलाल बिन उमैया, ये तीनों सवारी वाले थे, इसलिए इन तीनों ने यह सोचा कि सहाबा तो पैदल चल रहे हैं हमारे पास सवारी है, अगर हम कुछ ठहर कर भी चले तो उनके साथ मिल जाएंगे। मगर एक दिन गुज़रा, दो दिन गुज़रे, इसी तरह आज कल आज कल करते रहे और ये इस लड़ाई में शरीक न

हो सके। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब तबूक की लड़ाई से वापस तशरीफ़ लाए तो दूसरे जो सहाबा उज़्र की वजह से लड़ाई में शरीक न हो सके थे, उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में उज़्र पेश करके माफ़ी मांग ली, मगर जब ये तीनों आए तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम्हारा फ़ैसला उस वक़्त तक नहीं होगा जब तक अल्लाह के यहां से कोई हुक्म न आ जाए। आख़िरकार तमाम सहाबा ने उनसे बोलना बन्द कर दिया, फिर अल्लाह ने चालीस दिन के बाद उनकी तौबा का परवाना नाज़िल फ़रमाया। (अल-इतक़ान भाग-1, पेज 28) (10) आग़ाज़ सूरः अल्-हज्ज इसका नुज़ूल उस वक़्त हुआ कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम एक सफ़र में थे, नाज़िल होने के वक़्त कुछ लोग सो गए थे और कुछ लोग मुंतशिर हो चुके थे, फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन आयतों को ऊंची आवाज़ से पढ़ा (इब्ने मर्दवूया ने इमरान बिन हुसैन रज़ि० से रिवायत किया है अल-इतक़ान, भाग-1, पेज 28) (11) सूरः अल-अह्ज़ाब की वह आयत जो औरतों के बाहर निकलने की इजाज़त के बारे में उतरी है, क़ाज़ी जलालुद्दीन ने कहा है, वह आयतः

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ (الآية)

या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल लिअज़्वाजि-क व-बना ति-क (अल-आयत) है।

وَاسْأَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا (الآية)

(12) वस्अल मन अरसलना मिन क़ब्लि-क मिर्रुसुलिना (अल-आयत) का नुज़ूल इब्ने हबीब के क़ौल के मुताबिक़ मेराज की रात में हुआ (अल-इतक़ान, भाग-1, पेज 28) आग़ाज़ सूरः अल-फ़त्ह यानी इन्ना फ़-तह्ना ल-क फ़त्-हम मुबीना० रात के वक़्त नाज़िल हुई। (अल-इतक़ान, भाग-1 पेज 28)

जिन लोगों और चीज़ों के नाम, कुन्नियत और लक़ब क़ुरआन में ज़िक्र किए गए

सवालः— अल्लाह ने क़ुरआन के अन्दर कुल कितने अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम के नामों का ज़िक्र किया है?

जवाब— अल्लाह ने क़ुरआन में नबियों और रसूलों में से कुल पच्चीस के

नामों का ज़िक्र फ़रमाया है, जिनकी तफ़सील इस तरह है (1) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम, (2) हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम, (3) हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम, (4) हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, (5) हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम, (6) हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम, (7) हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम, (8) हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम, (9) हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम, (10) हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम, (11) हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम, (12) हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम, (13) हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, (14) हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम, (15) हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम, (16) हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम, (17) हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम, (18) हज़रत ज़ुलकिफ़्ल अ़लैहिस्सलाम, (19) हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम, (20) हज़रत यूनुस बिन मत्ता अ़लैहिस्सलाम, (21) हज़रत अलयसअ् अ़लैहिस्सलाम, (22) हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम, (23) हज़रत यह्या अ़लैहिस्सलाम, (24) हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम, (25) हज़रत सय्यिदुल अम्बिया मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम।

(अल-इतक़ान, भाग-1, पेज 175)

सवालः— क़ुरआन में फ़रिश्तों में से कितने फ़रिश्तों के नाम ज़िक्र किए गए हैं?

जवाबः— बारह फ़रिश्तों के नाम ज़िक्र किए गए हैं जिनकी तफ़सील यह है। (1) हज़रत जिबरील (2) मीकाईल (3) हारूत (4) मारूत (5) अर्राद (एक क़ौल की बिना पर एक फ़रिश्ते का नाम है) (6) बर्क़ (एक क़ौल की बिना पर यह भी एक फ़रिश्ते का नाम है) (7) मालिक जहन्नम के दारोग़ा का नाम है, (8) क़ईद (एक क़ौल की बिना पर यह भी एक फ़रिश्ते का नाम है) (9) सिजिल्ल (एक क़ौल की बिना पर यह भी एक फ़रिश्ते का नाम है) (10) ज़ुलक़रनैन (यह भी एक क़ौल में फ़रिश्ते का नाम है) (11) अर्रूह, यह भी एक क़ौल की बिना पर एक मख़सूस फ़रिश्ते का नाम है (12) अस्सकीना यह भी एक क़ौल की बिना पर एक फ़रिश्ते का नाम है। इस तरह क़ुरआन में ज़िक्र होने वाले फ़रिश्तों के नामों की तादाद बारह हो जाती है। (अल-इतक़ान, भाग-1, पेज 179-180)

सवालः— क़ुरआन करीम में सहाबा में से किस-किस के नामों का ज़िक्र हुआ है?

जवाबः— कुरआन में सिर्फ़ दो सहाबियों के नाम आए हैं, हज़रत ज़ैद बिन हारिसा का नाम जो इस आयत-ए-शरीफ़ः में है:

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا

फ़लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम्मिन्हा व त-रन ज़व्वज्-ना-कहा (अल-आयत- अह्ज़ाब 37) और दूसरे सहाबी हज़रत सिजिल्ल हैं, जिन का ज़िक्रः

يَوْمَ نَطْوِى السَّمَآءَ كَطَىِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ط

यौ-म नत्विस्समा-अ क-तय्यिस्सिजिल्लि लिलकुतुब में है। हज़रत सिजिल्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कातिबे वह्य थे, जैसा कि अबू दाऊद शरीफ़ पेज 407 भाग-2 में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में इसकी तसरीह हैः

اَلسِّجِلُّ كَاتِبٌ كَانَ لِلنَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

अस्सिजिल्लु कातिबुन का-न लिन्नबिय्यि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (सिजिल्ल के बारे में एक क़ौल पहले गुज़र चुका कि यह फ़रिश्ते का नाम है)

सवालः— कुरआन करीम में किसी सहाबी का नाम नहीं, चारों ख़लीफ़ों का नाम भी नहीं, तो फिर ज़ैद बिन हारिसा का नाम आने की क्या वजह है, इनकी क्या ख़ुसूसियत है?

जवाबः— वजह उसकी यह है कि ज़ैद बिन हारिसा जाहिलियत के ज़माने के ग़ुलामों में से थे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था और अपना लयपालक बेटा बना लिया था, लोग उनको आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ मंसूब करके ज़ैद बिन मुहम्मद कहा करते थे और उनको आप का फ़रज़न्दे हक़ीक़ी कहते थे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी शादी अपनी फूफी की लड़की हज़रत ज़ैनब से कर दी थी। जब उन दोनों (मियां-बीवी) में मुवाफ़क़त न हुई, तो ज़ैद ने ज़ैनब को तलाक़ दे दी। उसके बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत ज़ैनब की दिलदारी के लिए उनसे शादी करने पर तरद्दुद में थे। उधर कुफ़्फ़ार की तरफ़ से तान का अन्देशा था कि लोग ताना देंगे कि अपने बेटे की बीवी से शादी कर ली। आख़िरकार अल्लाह ने हुक्म नाज़िल फ़रमायाः

فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا

'फ़लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम मिन्हा व-त-रन ज़व्वज-ना-क-हा' कि जब ज़ैद ने ज़ैनब से अपनी हाजत पूरी कर ली (यानी उनको तलाक़ दे दी) तो हमने उनकी शादी आप से कर दी, इस पर कुफ़्फ़ार तान करने लगे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने बेटे की बीवी से शादी कर ली। अल्लाह ने आयत नाज़िल फ़रमाई—

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَا اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ

'मा का-न मुहम्मदुन अबा अ-ह-दिम् मिर्रिजालिकुम' कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, इसलिए ज़ैद के भी बाप नहीं हैं और ज़ैद उनके हक़ीक़ी बेटे नहीं हैं और हुक्म हो गया कि ज़ैद बिन हारिस को ज़ैद बिन मुहम्मद न कहा करो बल्कि ज़ैद बिन हारिसा कहा करो, उस वक़्त से उनको ज़ैद बिन हारिसा कहा जाने लगा, तो चूंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ मंसूब होने की शराफ़त व फ़ज़ीलत से यह महरूम कर दिए गए थे, अल्लाह ने उसके बदले में उनको दूसरी शराफ़त व फ़ज़ीलत से नवाज़ दिया कि उनका नाम क़ुरआन में ज़िक्र फ़रमा दिया।

(हिदायतुत्तर्तील लितिलावतित्तंज़ील, भाग-2, पेज 395)

सवालः— क़ुरआन पाक में अम्बिया व रसूलों के अलावा पहले मोमिन लोगों में से किस-किस के नाम आए हैं?

जवाबः— क़ुरआन में ऐसे छः लोगों के नाम आए हैं (1) हज़रत इमरान, यह हज़रत मरयम के वालिद थे, जिन का ज़िक्र

وَاِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرَانَ (الاية)

व इज़ क़ालतिम्रा-अतु इम्रा-न (अल-आयत) और

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِىْٓ اَحْصَنَتْ (الاية)

व मर-य-मब् न-त इमरा-नल्लती अह्सनत् (अल-आयत) में है (2) हज़रत तुब्बअ्, यह नेक लोगों में से थे जिनका ज़िक्र अल्लाह के क़ौल **'व क़ौमु तुब्बअ्'** में है (3) हज़रत लुक़मान, यह एक हब्शी ग़ुलाम थे जो बढ़ाई का काम करते थे, इब्ने अब्बास रज़ि० ने कहाः उनका ज़िक्र अल्लाह के क़ौल **व-ल-क़द् आतैना**

कुरूमा-नल हिक्म म-त' में है (4) हज़रत यूसुफ़, यह एक शख़्स का नाम है जिस का ज़िक्र सूरः मोमिन में–

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ (الاية)

'व-ल-कद् जाअकुम युसूफु मिन कब्लु (अल-आयत) में है।

(5) याकूब जिसका ज़िक्र सूरः मरयम के शुरू में है

يَرِثُنِىْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ

'य-रिसुनी व-य-रिसु मिन आलि याकूब', यह हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के अलावा किसी और शख़्स का नाम है (6) 'तक़ी' यह एक शख़्स का नाम है जो नेकी में मशहूर था जो शख़्स ज़्यादा नेक होता था उसको लोग कहते थे कि तू नेकी में तक़ी की तरह है उसका ज़िक्र आयत-ए-शरीफ़ः—

اِنِّىْٓ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ○

'इन्नी अऊज़ु बिर्रहमानि मिन-क इन कुन्-त तक़िय्या' में है।

(अलइतक़ान, भाग-2 पेज 180)

सवालः— कुरआन करीम में औरतों में से किन-किन औरतों के नाम आए हैं?

जवाबः— कुरआन करीम में औरतों में से सिर्फ़ हज़रत मरयम अलैहस्सलाम का नाम आया है। मगर इब्ने असाकिर ने कहा है कि अल्लाह के फ़रमान अ-तद् ऊ-न बअ्लन में बअ्ल एक औरत का नाम था जिसकी लोग इबादत किया करते थे, यानी देवी मानते थे। (अल-इतक़ान, भाग-2, पेज 181)

सवालः— कुरआन करीम में किसी औरत का नाम नहीं, मगर हज़रत मरयम का नाम जगह-जगह है, इसकी वजह क्या है?

जवाबः— वल्लाहु आलम। इसकी वजह यह है कि ज़ौजा का नाम लेना जाहिलियत के ज़माने में बुरा समझा जाता था, नसारा हज़रत मरयम को अल्लाह की बीवी कहते थे, अल्लाह ने नसारा के एतिक़ाद को बातिल करने के लिए जगह-जगह हज़रत मरयम का ज़िक्र फ़रमाया ताकि मालूम हो जाए कि मरयम अल्लाह की ज़ौजा नहीं, अगर होती तो अल्लाह तआला उनका नाम न लेता।

(हिदायतुत्तीन लितिनावलित्तंज़ील, भाग-2, पेज 395),

सवालः— कुरआन हकीम में किन-किन काफ़िरों के नाम ज़िक्र किए गए हैं?

जवाबः— कुरआन में जिन काफ़िरों के नाम आए हैं वे ये हैं :

(1) क़ारून, यह यसहर का भाई और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का चचाज़ाद भाई था।

(2) जालूत, यह एक बादशाह था जिसका ज़िक्र 'व-क़-त-ल दाऊदु जालू-त' में है।

(3) हामान, नमरूद का वज़ीर था।

(4) बुशरा, यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम वाले कुंवे पर आने वाला शख़्स था जिसने पुकारा 'या बुशरा हाज़ा ग़ुलाम'।

(5) आज़र, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम था और कुछ ने कहा तारिख़ नाम था और आज़र लक़ब था।

(6) अन्नसी, यह बनी कनाना के क़बीले में एक आदमी 'अन्नसी' नामी गुज़रा है जो मुहर्रम के महीने को सफ़र का महीना बना दिया करता था।

(अल-इतक़ान, भाग-2, पेज 181)

सवालः— कुरआन करीम में जिन्नों के नामों में से किस का नाम आया है?

जवाबः— कुरआन करीम में जिन्नों में से सिर्फ़ इबलीस का नाम आया है जो सब जिन्नों का जद्दे आला (पूर्वज) कहलाता है। (अल-इतक़ान, भाग-2, पेज 181)

सवालः— कुरआन करीम में कितने और किन-किन क़बीलों के नाम आए हैं?

जवाबः— कुरआन करीम में छः क़बीलों के नाम आए हैं (1) याजूज (2) माजूज (3) आद (4) समूद (5) मदयन (6) क़ुरैश। (अल-इतक़ान, भाग-2, पेज 181)

सवालः— कुरआन करीम में किन-किन बुतों के नाम आए हैं जो कि इन्सानों के नाम थे?

जवाबः— कुरआन करीम में जिन बुतों के नाम आए हैं वे ये हैं (1) वद्द (2) सुवाअ (3) यग़ूस (4) यऊक़ (5) नस्र। ये पांचों नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के असनाम (बुत) थे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि ये पांचों नूह अलैहिस्सलाम की क़ौम के नेक लोगों के नाम हैं, मगर जब ये लोग मर गए तो शैतान ने उन के दिलों में यह बात डाली कि वे उन लोगों की नशिस्तगाहों

(बैठने की जगहों) पर पत्थरों के निशान बना दें और उन पत्थरों का उन्हीं मुर्दा लोगों के नाम पर नाम रख दें और उन्हीं की तरफ़ उनकी निस्बत कर दें। तो उन लोगों ने ऐसा ही किया, लेकिन जब तक उन निशानों को जानने वाले लोग ज़िन्दा रहे, उस वक़्त तक तो उनको अज़मत की निगाह से देखते रहे, जब जानने वाले लोग इन्तिक़ाल कर गए और असल हक़ीक़त ओझल हो गई तो उनकी इबादत शुरू कर दी। यहां से पत्थरों की इबादत शुरू हो गई (6) **लात,** यह भी एक आदमी का नाम था जो हाजियों के लिए सत्तू घोला करता था (7) **मनात** (8) **उज़्ज़ा,** ये तीनों क़ुरैश के बुत हैं (9) **अर्रुज़्ज़,** यह भी एक क़ौल की बिना पर एक बुत का नाम है (10) **जिब्त** (11) **ताग़ूत,** ये दोनों भी बुतों के नाम हैं, मुश्रिक इनकी इबादत किया करते थे (12) **अर्रशाद,** जिसका ज़िक्र अल्लाह के इर्शाद—

وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝

'वमा अह्दीकुम इल्ला सबीलर्रशाद' में है। यह एक क़ौल की बिना पर फ़िरऔन के बुतों में से एक बुत था (13) **बाल,** यह इलयास अलैहिस्सलाम की क़ौम का बुत था (14) **आज़र** यह भी एक क़ौल की बिना पर एक बुत का नाम था।

(अल-इतक़ान, भाग-2, पेज 181)

सवालः— क़ुरआन करीम में किन-किन शहरों, गाँवों और जगहों के नाम ज़िक्र किए गए हैं?

जवाबः— क़ुरआन करीम में जिन जिन शहरों, गाँवों और जगहों के नाम आए हैं वे यह हैं। (1) **बक्का,** जो मक्का का नाम है (2) **मदीना** (3) **उहुद** (4) **हुनैन,** यह ताइफ़ के क़रीब गाँव है (5) **मिस्र** (6) **बाबिल** (7) **अल-ऐकः** शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम का शहर था (8) **अर्रक़ीम,** उस गांव का नाम है जहां से अस्हाबे कह्फ़ निकले थे (9) **हर्द,** एक गांव का नाम है। और क़ुरआन में जिन जगहों का ज़िक्र है वे ये हैं (10) **मशअ़रे हराम,** मुज़्दलफ़ा में एक पहाड़ है (11) **नक़्अ़,** अरफ़ात से मुज़्दलफ़ा के दर्मियान जगह का नाम है (12) **अह्क़ाफ़,** हज़्रे मौत और अम्मान के बीच में रेगिस्तानी पहाड़ का नाम है। इब्ने अबी हातिम ने इब्ने अब्बास से रिवायत किया है कि अह्क़ाफ़ मुल्के शाम के एक पहाड़ का नाम है (13) **तूरे सीना** वह पहाड़ है जिस पर से हज़रत

मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने पुकारा था (14) अलजूदी, यह अलजज़ीरा में एक पहाड़ है (15) तुवा, एक वादी का नाम है (16) अलकह्फ़, पहाड़ में तराशा हुआ घर है (17) अल् अरिम, इब्ने अबी हातिम ने हज़रत अता से रिवायत किया है कि अरिम एक वादी का नाम है (18) अस्सरीम, इब्ने जरीर ने सईद बिन जुबैर से नक़ल किया है यह मुल्के यमन में एक ज़मीन का नाम है (19) क़ाफ़, एक पहाड़ है जो ज़मीन के गिर्द मुहीत है (इसी का नाम कोहे क़ाफ़ भी है) अलजुरूज़, एक ज़मीन का नाम है (20) अत्तागियः, यह उस मक़ाम का नाम है जहां समूद की क़ौम को हलाक किया गया था।

(अल-इतक़ान फी उलूमिलकुरआन भाग-2, पेज 182)

सवालः— कुरआन हकीम में आख़िरत की जगहों में से किन-किन जगहों के नाम ज़िक्र किए गए हैं?

जवाबः— कुरआन हकीम में आख़िरत की जिन-जिन जगहों का ज़िक्र है वे ये हैं (1) फ़िरदौस, यह जन्नत की सबसे आला जगह है (2) इल्लीयून, कुछ लोगों ने कहा यह जन्नत की सबसे आला जगह है और कुछ ने कहा कि यह उस किताब का नाम है जिसमें दोनों जहान के नेक लोगों के आमाल तहरीर हैं (3) अल-कौसर, यह जन्नत की एक नहर का नाम है (4) सल सबील, (5) तसनीम, ये दोनों जन्नत के दो चश्मे हैं (6) सिज्जीन, यह कुफ़्फ़ार की रूहों की क़रारगाह का नाम है (7) सऊद, यह जहन्नम के एक पहाड़ का नाम है (8) गय्य (9) असाम (10) मौबिक़ (11) सईर (12) वैल (13) साइल (14) सुहक़, ये सातों जहन्नम की वादियां (नदियां) हैं, जिनमें जहन्नमियों की राद और पीप बहेगी (15) अल-फ़लक़, जहन्नम में एक कुंवा है (16) यहमूम, यह जहन्नम के स्याह धुवें का नाम है। (अल-इतक़ान, भाग-2, पेज 183)

सवालः— कुरआन में वे नाम कौन-कौन से हैं जो जगहों की जानिब मंसूब हैं?

जवाबः— कुरआन में जगहों की जानिब मंसूब नीचे लिखे नामों का ज़िक्र आया है, (1) अलउम्मी, यह उम्मुलकुरा (मक्का की वादी) की जानिब मंसूब है (2) अबक़री, यह अबक़र की जानिब मंसूब है जो जिन्नों की एक जगह का नाम है और हर नादिर चीज़ उसकी तरफ़ मंसूब की जाती है (3) अस्सामिरी, यह एक सरज़मीन की तरफ़ मंसूब है जिसका नाम सामरून और कुछ ने सामिरह

बतलाया है (4) अल-अरबी, यह अ़-र-बा की जानिब मंसूब था और यह हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के घर का सेहन (आंगन) था।

(अल-इतक़ान, भाग-2, पेज 183)

सवालः— अल्लाह तआ़ला ने कुरआन में किस-किस की कुन्नियत ज़िक्र फ़रमाई है?

जवाबः— अल्लाह ने कुरआन मजीद में सिवाए अबू लहब के और कोई कुन्नियत ज़िक्र नहीं फ़रमाई। अबू लहब का नाम अ़ब्दुलउ़ज़्ज़ा था और यह नाम कुरआन में इस वजह से नहीं आया क्योंकि यह शरअ़न हराम है।

(अल-इतक़ान, भाग-2, पेज 183)

सवालः— अल्लाह के कलाम में आने वाले अल्क़ाब कौन-कौन से हैं?

जवाबः— अल्लाह के कलाम में ये अलक़ाब आए हैं (1) इसराईल, यह हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम का लक़ब है जिसके माने अ़ब्दुल्लाह के हैं (2) अलमसीह, यह हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का लक़ब है (3) इदरीस, यह भी लक़ब है असल नाम उख़नूख़, था अल्लाह की किताब का दर्स ज़्यादा देने की वजह से इदरीस नाम पड़ गया (4) ज़ुलकिफ़्ल, यह हज़रत इलयास अ़लैहिस्सलाम का लक़ब है। दूसरा क़ौल यह है कि यह हज़रत यूशअ़ का लक़ब है। तीसरा क़ौल यह है कि यह हज़रत यसअ़् का लक़ब है, चौथा क़ौल यह है कि यह हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम का लक़ब है (5) नूह, यह भी लक़ब है आपका असल नाम अ़ब्दुल ग़फ़्फ़ार था। अपने नफ़्स पर बहुत ज़्यादा रोने की वजह से 'नूह' लक़ब पड़ गया। (6) ज़ुलक़रनैन भी लक़ब है असल नाम इस्कंदर था (7) फ़िरऔ़न लक़ब है असल नाम वलीद बिन मुस्अ़ब था और उसकी कुन्नियत अबुल अ़ब्बास थी (8) तुब्बअ़् लक़ब है असल नाम अस्अ़द बिन मुलकी करब था। यह यमन के बादशाहों का आम लक़ब था, जो भी यमन का बादशाह बनता। उसको तुब्बअ़् के लक़ब से पुकारा जाता था।

(अल-इतक़ान फी उलूमिलकुरआन, भाग-2, पेज 184)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुताल्लिक़ मालूमात

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश किस माह की किस तारीख़, किस दिन और किस घर में हुई?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 12 रबीउल अव्वल बरोज़ दोशंबा (पीर के दिन) दारे इब्ने यूसुफ़ में पैदा हुए और यह घर दारे इब्ने यूसुफ़ के नाम से मशहूर था। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, इब्ने कसीर, भाग-1, पेज 458)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वालिद-वालिदा, दादा-दादी और नाना-नानी के नाम क्या-क्या थे?

जवाबः— आपके वालिद का नाम अ़ब्दुल्लाह और वालिदा का नाम आमिना, दादा का नाम अ़ब्दुल मुत्तलिब, दादी का नाम फ़ातिमा बिन्ते अ़म्र बिन आइज़ और आपके नाना का नाम वहब और नानी का नाम बर्रह बिन्ते अ़ब्दुल उज़्ज़ा था। (असहहुस्सियर, पेज 3 व 5, अलबिदायः वन्निहायः)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कितनी फूफियां थीं और नाम क्या-क्या थे?

जवाबः— छः फूफियां थीं जिन के नाम ये थे (1) सफ़िय्या, (2) उम्मे हकीमुलबैज़ा, (3) आतिका, (4) उमैमा, (5) अरवा, (6) बर्रह (औजज़ुस्सियर लिख़ैरिल बशर पेज 6) और उनमें से सिर्फ़ सफ़िय्या मुसलमान हुईं।

(असहहुस्सियर, पेज 5)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़बान से सबसे पहले कौन-सा कलाम निकला?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुबारक ज़बान से सबसे पहले निकलने वाला कलाम यह है——

اَللّٰهُ اَكْبَرُ كَبِيْرًا وَّالْحَمْدُ لِلّٰهِ كَثِيْرًا وَّسُبْحَانَ اللّٰهِ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا (نشر الطیب ص ۲۳)

अल्लाहु अक्बरु कबीरंव् वल्हम्दु लिल्लाहि कसीरंव् व सुब्हानल्लाहि बुक्रतंव्-व असीला (नशरुत्तीब, पेज 23)

सवालः— उहुद की लड़ाई में जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक

दांत शहीद हो गए थे, उनसे जो ख़ून निकला था वह कहां गया था?

जवाबः— आंहज़रत सल्ल० के मुबारक दांत से जो ख़ून निकला था वह हज़रत मालिक इब्ने सनान ने पी लिया था, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो ऐसे शख़्स को देखना चाहे कि जिसके ख़ून में मेरा ख़ून मिल गया हो वह मालिक बिन सनान को देख ले।

(उसुदुलग़ाबा फ़ी मारिफ़तिस्सहाबा, भाग-4, पेज 281)

सवालः— वे कौन-से अम्बिया हैं जिनके दो नाम रखे गए?

जवाबः— हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के सिवा किसी नबी के दो नाम[1] नहीं रखे गए।

(अल-इतक़ान, भाग-2, पेज 349)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किस सवारी पर सवार होकर मेराज में तशरीफ़ ले गए थे उसका रंग कैसा था? क़द कितना था?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ेद रंग के बुराक़ पर सवार होकर मेराज में गए जो गधे से ज़रा ऊँचा और ख़च्चर से ज़रा नीचा था।

(मुस्लिम शरीफ़, भाग-1, पेज 91)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बुराक़ पर सवार होने लगे तो रकाब व लगाम किसने थामी थी?

जवाबः— हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने रकाब और मीकाईल अलैहिस्सलाम ने लगाम थामी थी।

(नशरुत्तीब, पेज 37)

सवालः— मेराज की रात में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नबियों की इमामत किस जगह कराई और कितनी रकूअतें पढ़ाई?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बैतुल मक़्दिस में तमाम नबियों को दो रकूअत नमाज़ पढ़ाई।

(मुस्लिम, भाग-1)

सवालः— आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इमामत के लिए किसने बढ़ाया और मुक़्तदी किस तर्तीब पर खड़े थे?

जवाबः— अम्बिया अलैहिमुस्सलाम जब सफ़ें दुरुस्त कर चुके तो खड़े हुए यह इन्तिज़ार कर रहे थे कि देखो कौन इमामत के लिए आगे बढ़ता है। हज़रत

1. मुहम्मद और अहमद सल्ल०। ईसा और मसीह अलैहिस्सलाम।

जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हाथ पकड़ कर इमामत के लिए आगे बढ़ा दिया (नशरुत्तीब पेज 44) और इस नमाज़ में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पुश्त के क़रीब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम खड़े थे, दायीं तरफ़ हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम खड़े थे; बायीं तरफ़ हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम फिर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम फिर तमाम नबी व रसूल अ़लैहिमुस्सलाम खड़े थे। (हाशिया जलालैन, पेज 408)

सवाल:— इस नमाज़ में रसूलों और नबियों की कितनी सफ़ें थीं?

जवाब:— कुल सात सफ़ें थीं, जिनमें से तीन में रुसूले उज़्ज़ाम (बड़े मर्तबे वाले रसूल) थे (हाशिया जलालैन, पेज 408) और चार सफ़ों में अम्बिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम थे। (हाशिया जलालैन, पेज 408)

सवाल:— हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से हज़रत मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तक कितना ज़माना गुज़रा?

जवाब:— गुज़रे ज़माने के मुताल्लिक़ अलग-अलग बातें कही गई हैं : (1) पांच सौ उन्हत्तर (569) साल का ज़माना हुआ (2) हज़रत अबू उस्मान हिन्दी कहते हैं गुज़रा ज़माना छः सौ साल (600) का हुआ (3) क़तादा ने कहा है कि पांच सौ साठ (560) साल का हुआ। (हाशिया जलालैन, पेज 97)

सवाल:— ग़ारे हिरा की लम्बाई-चौड़ाई कितनी थी?

जवाब:— लम्बाई चार गज़ और चौड़ाई दो गज़ थी।

सवाल:— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ज़हर किस ने कब और किस खाने में मिला कर दिया था और उसके कितने साल बाद आपकी वफ़ात हुई?

जवाब:— सलाम बिन मुश्कम की औरत ज़ैनब बिन्ते हारिस ने एक बकरी के गोश्त में ज़हर मिला कर ख़ैबर की लड़ाई के मौक़े पर आप सल्ल० के सामने पेश किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसमें से गोश्त मुंह में लिया मगर मालूम हो गया। कुछ रिवायात में है कि गोश्त ने कह दिया कि ज़हर मिला हुआ है, आपने उसको थूक दिया इस वाक़िए के तीन साल बाद आप सल्ल० का इन्तिक़ाल हो गया। (असहहुस्सियर, पेज 202)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुसूसियतें

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वे कौन-सी ख़ुसूसियतें हैं जो दुनिया में आने से पहले आपको अ़ता हुईं?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़ुसूसियतें तो बहुत हैं, उनमें से कुछ का ज़िक्र नीचे किया जाता है (1) आलमे अरवाह (रूहों की दुनिया) में सबसे पहले आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नूर पैदा होना (2) सबसे पहले आपको नुबुव्वत अ़ता होना (3) आपका मुबारक नाम अ़र्श पर लिखा हुआ होना (4) अह्दे अलस्तु में 'बला' कहकर सबसे पहले आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जवाब देना (5) ख़ल्क़े आलम से आपका मक़सूद होना (6) पहली किताबों में आपकी बशारत होना (नश्रुत्तीब, पेज 184)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वे ख़ुसूसियतें जो आपको दुनिया में आने के बाद अ़ता हुई, कौन-कौन-सी हैं?

जवाबः— कुछ ख़ुसूसियतों का ज़िक्र किया जाता हैः (1) पैदाइश के वक़्त आपके जिस्म-ए-अतहर (पाक जिस्म) का नजासत (गंदगी) से बिलकुल पाक व साफ़ होना, (2) जब आप पैदा हुए तो आपका सज्दे की हालत में शहादत की उंगली का आसमान की तरफ़ उठाए हुए होना, (3) पैदाइश के वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वालिदा मोहतरमा का एक ऐसे नूर को देखना, जिसकी रौशनी से किसरा के महल नज़र आ गए (4) गहवारा (पालने) में फ़रिश्तों का झोंका देना (5) गहवारा में बात करना (यह दूसरे नबियों की भी ख़ुसूसियत है) (6) गहवारा में फ़रिश्तों की तरफ़ उंगली से इशारा करना और चांद का आपकी तरफ़ माइल हो जाना (7) अपनी पुश्त की तरफ़ से इस तरह देख लेना जिस तरह सामने से देखते थे (8) खारे पानी में मुबारक लुआ़ब (पाक थूक) डालने से पानी का मीठा हो जाना (9) आपके पाक मुंह का लुआ़ब दूध पीते बच्चे के मुंह में डालने से उसको भूख न लगना और उसका दूध न मांगना (10) आपकी बग़ल में बालों का न होना, बग़ल का सफ़ेद और चमकदार होना, (11) आवाज़ का इतनी दूर तक पहुंच जाना कि दूसरों की आवाज़ आपकी आवाज़ के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचती थी (12) आँहज़रत सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम का इतनी दूरी से बात को सुन लेना कि दूसरे इतनी दूर से नहीं सुन सकते थे (13) तमाम उम्र जमाई का न आना (14) तमाम ज़िन्दगी ख़्वाब में एहतिलाम का न होना (15) आपके पसीने का मुश्क से ज़्यादा खुश्बूदार होना (16) आपके बोल व बराज़ (पेशाब-पाख़ाना) को ज़मीन का इस तरह निगल जाना कि उस जगह निशान तक बाक़ी न रहता था (17) धूप में चलते वक़्त आपके सर पर बादल का साया कर लेना (18) आप जब किसी पेड़ के नीचे बैठते तो उस पेड़ का आपकी तरफ़ झुक जाना (19) आपका साया ज़मीन पर न पड़ना (20) आपके कपड़ों पर मक्खी वग़ैरह का न बैठना (21) जब आप किसी जानवर पर सवार होते तो उस का पेशाब-पाख़ाना न करना (22) मेराज की सैर करना (23) अल्लाह के दीदार से मुशर्रफ़ होना (24) फ़रिश्तों का जिहाद के मैदान में इस्लामी फ़ौज के साथ शामिल होकर क़िताल करना और आपकी मदद करना (25) चांद के दो टुकड़े हो जाना (26) पूरी रु-ए-ज़मीन का आपके लिए मस्जिद बना देना (27) पूरी ज़िन्दगी आपका सतर नज़र न आना (28) सब मख़्लूक़ से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अफ़ज़ल होना (29) ग़नीमतों का आपके लिए हलाल होना (30) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हज़रत जिबरील अमीन को उनकी असली सूरत व शक्ल में देखना (31) सोने की हालत में आंखों का सो जाना और दिल का बेदार रहना (यह ख़ुसूसियत तमाम नबियों की भी है) तफ़सीर -ए-अज़ीज़ी, पेज 218, पारा 3, (32) कहानत का ख़त्म हो जाना (33) अज़ान व इक़ामत में नामे मुबारक का होना (34) ऐसी किताब अता होना जो हर तरह मोजिज़ (आजिज़ करने वाली) है, लफ़्ज़न भी, मानन भी, बदल ने से महफ़ूज़ रहने में भी, हिफ़्ज़ याद हो जाने में भी (35) सदक़े का हराम होना (36) अज़्वाजे मुतह्हरात यानी पाक बीवियों का उम्मत पर हमेशा के लिए हराम होना (37) आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की साहिबज़ादी हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से भी औलाद का नसब साबित होना (38) दूर तक आपका रोब दुश्मन पर पड़ना (39) आपको जवामिउलकलिम अता होना (40) तमाम ख़लाइक़ की तरफ़ मबऊस होना (41) आप पर नुबुव्वत ख़त्म होना (42) आपके मुत्तबईन (इताअत करने वालों) का सब नबियों के मुत्तबईन से ज़्यादा होना।

(नशरुत्तीब पेज 184)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की वे कौन-सी खुसूसियतें हैं जो आपको क़ियामत के दिन दी जाएंगी?

जवाबः— सारी खुसूसियतें तो जमा न हो सकीं लेकिन कुछ का यहां पर ज़िक्र किया जाता है (1) सबसे पहले आपका क़ब्र से बाहर निकलना (2) आपका सबसे पहले बेहोशी से होश में आना (3) आपका हश्र के मैदान में बुराक़ पर सवार होकर आना और एज़ाज़ के तौर पर सत्तर हज़ार फ़रिश्तों का आपके साथ होना (4) अ़र्श के दायीं जानिब कुर्सी पर आप का बैठना (5) आपको मक़ामे महमूद अ़ता होना (6) लिवाए हम्द (हम्द का झण्डा) आपके साथ होना (7) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और आपकी जुमला ज़ुर्रियात का आपके झंडे के नीचे होना (8) हर नबी का अपनी-अपनी उम्मतों के साथ आपके पीछे-पीछे होना (9) अल्लाह का दीदार सबसे पहले आपको नसीब होना (10) शफ़ाअ़ते उ़ज़्मा का आपके लिए मख़्सूस होना (11) पुलसिरात पर सबसे पहले आपका अपनी उम्मत को लेकर गुज़रना (12) सबसे पहले आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का जन्नत का दरवाज़ा खुलवाना।

(तफ़सीर-ए-अ़ज़ीज़ी पेज 218 पारः 30 व कंज़ुल उ़म्माल, भाग 11, पेज 403)

सवालः— वे क्या खुसूसियतें हैं जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बरकत से तमाम दूसरी उम्मतों के मुक़ाबले में ख़ास आपकी उम्मत को अ़ता हुई?

जवाबः— उम्मते मुहम्मदिया की खुसूसियतें नीचे लिखी जाती हैं :—

(1) ग़नीमतों का हलाल होना (2) तमाम रु-ए-ज़मीन पर नमाज़ का जायज़ होना (3) नमाज़ में उनकी सफ़ों का फ़रिश्तों के तरीक़े पर होना (4) जुमे के दिन का एक ख़ास इबादत के लिए तै होना (5) जुमा के दिन साअ़ते इजाबत का होना (यानी जुमा के दिन में एक ऐसी घड़ी का आना जिस में दुआएं कुबूल होती हैं) (6) रोज़ा के लिए सहरी की इजाज़त का होना (7) रमज़ान में शबे क़द्र का अ़ता होना (8) वसवसा-ए-ख़ता और निस्यान (यानी भूल-चूक) का गुनाह न होना (9) अहकामे शाक़्क़ः (यानी मुश्किल हुक्मों) का ख़त्म हो जाना (10) तस्वीर का नाजायज़ होना (11) इज्मा-ए-उम्मत का हुज्जत होना और उसमें गुमराही का शक न होना (12) इख़्तिलाफ़ फ़रई का रहमत होना (13) पहली उम्मतों-जैसे अ़ज़ाबों का न आना (14) उलमा से वह काम लेना जो अम्बिया

करते थे (15) क़ियामत तक अह्ले हक़ की जमाअ़त का मोअय्यद मिनल्लाह (यानी जिसे अल्लाह की ताईद हासिल हो) होकर पाया जाना (नशरुत्तीब पेज 185) (16) उम्मते मुहम्मदिया का दूसरे नबियों की उम्मतों पर गवाह बनना जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है लि-तकूनू शु-ह दा-अ अ़लन्नासि "ताकि तुम गवाह बनो लोगों पर (क़ियामत के दिन)।" (रूहुलमआ़नी पेज 5, भाग-2 पारः 2)

हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— जब ख़ुदावन्दे करीम ने आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश का मसला सामने रखा तो फ़रिश्तों ने वजह क्यों मालूम की थी?

जवाबः— बुज़ुर्ग फ़रिश्तों ने सवाल एतिराज़ के तौर पर नहीं किया, जैसा कि कुछ जाहिलों ने गुमान कर लिया है, बल्कि वजह यह थी कि ख़ुदावन्दे आ़लम फ़रिश्तों को बड़े-बड़े मामलों की ख़बर देते थे। फ़रिश्तों ने मक़्सदे ख़ुदावन्दी पर मुत्तला होने के साथ-साथ हिक्मत मालूम करने के लिए सवाल किया। फ़रिश्तों का मक़्सद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम में एब और कमी निकालना न था।

(अलबिदायः वन्निहायः भाग-1, पेज 70)

सवालः— जिन्नात हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश के कितने साल पहले से दुनिया में आबाद थे?

जवाबः— आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश से दो हज़ार साल पहले दुनिया में जिन्नात आबाद थे। जब उन्होंने नाहक़ क़त्ल व ग़ारतगरी शुरू की, तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रिश्तों का एक लश्कर भेजा जिन्होंने जिन्नात को तह व बाला करके पहाड़ों में फेंक दिया। (अलबिदायः वन्निहायः भाग-1, पेज 71)

सवालः— ख़ुदावन्दे करीम ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के लिए जो चार चीज़ें ख़ास की हैं। वे कौन-कौन-सी हैं?

जवाबः— वे चार चीज़ें ये हैं :— (1) अल्लाह तआ़ला ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को अपने हाथ से पैदा फ़रमाया, (2) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम में अपनी रूह फूंकी, (3) फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमाया कि आदम अ़लैहिस्सलाम को सज्दा करो (4) हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को तमाम चीज़ों के नामों की तफ़सील बताई। (अलबिदायः वन्निहायः, भाग-1, पेज 72)

सवालः— जब अल्लाह ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का मिट्टी का पुतला बना दिया तो यह मिट्टी का पुतला कितने साल तक रहा, यानी आदम के पुतले में कितने साल बाद रूह डाली गई?

जवाबः— चालीस साल तक यह पुतला मिट्टी का रहा फ़रिश्ते जब इस पुतले के पास से गुज़रते थे तो डरते थे और उनमें सबसे ज़्यादा इबलीस घबराता था (चूंकि यह मिट्टी का पुतला अन्दर से खोखला था और यह इतना सूख गया था कि जब इसमें चुटकी मारते तो ख़ूब गूंजदार आवाज़ पैदा होती थी)।(अलबिदायः भाग-1, पेज 86)

सवालः— अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पुतले में जब रूह फूंकी उस वक़्त पुतले की कैफ़ियत क्या हुई थी?

जवाबः— जब अल्लाह ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम में रूह फूंकने का इरादा फ़रमाया, फ़रिश्तों को हुक्म दिया कि जब मैं इसमें रूह डाल दूं तुम इसको सज्दा करना। जब रूह डालनी शुरू की और रूह सिर में पहुंची तो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को छींक आई, फ़रिश्तों ने कहा, ऐ आदम! कहिए *अलहम्दुलिल्लाह*। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने *अलहम्दुलिल्लाह* कहा। हज़रत आदम के जवाब में अल्लाह ने कहा *'र-हि-म-क रब्बु-क'* जब रूह आंखों में पहुंची तो नज़र जन्नत के फलों पर पड़ी। फिर जब रूह पेट में पहुंची तो खाने की तमन्ना हुई। जब रूह पैरों में पहुंची तो जन्नत के फलों की तरफ़ को बढ़े।

(अलबिदायः 86, भाग-1)

सवालः— अल्लाह ने जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया, तो किस के पास भेजा था?

जवाबः— ख़ुदावन्दे करीम ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों की एक जमाअत के पास भेजा। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जाकर उनको सलाम किया *'अस्सलामु अलैकुम'* फ़रिश्तों ने जवाब दिया *'वअलैकुमुस्सलाम'* अल्लाह ने फ़रमाया, यही तेरी औलाद का सलाम है। (अलबिदायः भाग-1, पेज 87)

सवाल— जिस वक़्त हज़रत आदम व हज़रत हव्वा अलैहिमस्सलाम जन्नत से निकाले गए तो शराफ़त का ताज किस ने उतारा था?

जवाबः— हज़रत जिबरील अलैहिस्सलाम ने आपके मुबारक सिर से शराफ़त का ताज उतारा था।

(अलबिदायः, भाग-1, पेज 79)

सवालः— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने जिस पेड़ का फल खाया था वह कौन-सा पेड़ था?

जवाबः— उस पेड़ के बारे में तफ़सीर लिखने वालों के चन्द क़ौल हैं (1) कुछ ने कहा अंगूर का पेड़ था (2) गन्दुम (गेहूं) का पेड़ था (3) कुछ ने कहा है कि खजूर का पेड़ था। (अलबिदायः वन्निहायः, भाग-1, पेज 74)

सवालः— जन्नत में हज़रत आदम (अ०) के सतर (बदन) पर कौन-सा लिबास था?

जवाबः— हज़रत वहब बिन मुनब्बः फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम के सतर पर नूर का लिबास पड़ा हुआ था।

(अलबिदायः, भाग-1, पेज 80)

सवालः— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से किस हाल में उतरे?

जवाबः— सईद बिन मैसरा हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम दोनों जन्नत से बिल्कुल नंगे उतरे थे, ज़मीन पर उतर कर जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को गर्मी लगी तो रोने बैठ गए और हज़रत हव्वा से कहने लगे। ऐ हव्वा! मुझको गर्मी सता रही है। उसके बाद हज़रत जिबरील अमीन तशरीफ़ लाए और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि यह रूई है इसको इस तरह कातो और बुनो। हज़रत आदम व हव्वा को हज़रत जिबरील ने कातना और बुनना सिखाया मगर इस हदीस को मुहद्दिसीन ने ग़रीब व मौज़ूआत में शुमार किया है और रावी सईद बिन मैसरा मुन्किरे हदीस हैं (यानी इस रावी की हदीस का एतिबार नहीं है।) (अलबिदायः पेज 80)

सवालः— हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम ने दुनिया में आने के बाद सबसे पहले किस चीज़ का लिबास बना कर पहना?

जवाबः— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने भेड़ के बालों को काता और उनको बुन कर अपने लिए जुब्बा और हज़रत हव्वा के लिए दिरा यानी लिफ़ाफ़ा अरबी क़मीस की तरह का और एक ओढ़नी तैयार की।

(अलबिदायः वन्निहायः पेज 92 भाग- 1)

सवालः— वे अल्फ़ाज़ जिनको कह कर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने तौबा की, कौन-से हैं और किस का वास्ता देकर दुआ की?

जवाबः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जब दुनिया में उतार दिए गए तो आपने मुहम्मद अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का वास्ता देकर दुआ मांगी। ख़ुदावन्दे तआ़ला ने मालूम किया ऐ आदम! तूने मेरे महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को कैसे पहचाना, हालांकि मैं ने उसको अभी तक पैदा भी नहीं किया है। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे परवरदिगार! जिस वक़्त तूने मुझको अपने हाथ से पैदा करके मेरे अन्दर रूह फूंकी, मैं ने सिर उठा कर देखा, अ़र्श के पायों पर लिखा हुआ था "*ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह*"। पस मैं ने समझ लिया था कि तूने अपने नाम के साथ इस नाम को इस वजह से मिलाया कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तुझको तमाम मख़्लूक़ात में सबसे ज़्यादा महबूब हैं। ख़ुदावन्दे आ़लम ने फ़रमाया, ऐ आदम! तूने सच कहा, मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुझको मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा महबूब हैं और जब तूने मेरे महबूब के वास्ते से सवाल की झोली फैलाई है तो मैं तेरी मग़्फ़िरत किए देता हूं। अगर मेरा महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम न होता तो मैं तुझ को भी पैदा न करता।

(अलबिदायः भाग-1, पेज 81)

हज़रत मुजाहिद रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह का फ़रमान *'फ़-त-लक़्क़ा आदमु मिर्रब्बिही कलिमातिन'* में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का जिन कलिमों के साथ दुआ़ मांगने का ज़िक्र है, वे कलिमे ये हैं—

اَللّٰهُمَّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَاغْفِرْلِىْ اِنَّكَ خَيْرُ الْغَافِرِيْنَ اَللّٰهُمَّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ رَبِّ اِنِّىْ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَارْحَمْنِىْ اِنَّكَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ اَللّٰهُمَّ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَتُبْ عَلَىَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ط

अल्लाहुम्-म ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क व बिहम्दि-क रब्बि इन्नी ज़-लम्तु नफ़्सी फ़ग़्-फ़िरली इन्-न-क ख़ैरुलग़ाफ़िरीन, अल्लाहुम्-म ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क व बिहम्दि-क रब्बि इन्नी ज़लमतु नफ़्सी फ़र्हम्नी इन्-न-क अरहमुर्राहिमीन। अल्लाहुम्-म ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हा-न-क व बिहम्दि-क ज़लम्तु नफ़्सी फ़-तुब अ़-लय्-य इन्-न-क अन्-तत्तव्वा- बुर्रहीम०

(तर्जुमा) ऐ ख़ुदावन्दा! तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तू पाक है और तेरे लिए हम्द है। ऐ अल्लाह! मैं ने अपने ऊपर ज़ुल्म किया है तू मेरी मग़्फ़िरत कर दे, तू बेहतर मग़्फ़िरत करने वाला है। ऐ अल्लाह! तेरे अलावा कोई इबादत के लायक़ नहीं तू पाक है और तेरे लिए हम्द है। ऐ ख़ुदा! मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, तू मुझ पर रहम फ़रमा, तू बेहतरीन रहम करने वाला है। ऐ अल्लाह! तेरे सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, तू पाक है और तेरे लिए हम्द है, मैंने अपने ऊपर ज़ुल्म किया, पस मुतवज्जेह हो जा तू मुझ पर! यक़ीनन तू बहुत ज़्यादा तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला है।

इमाम हाकिम ने अपनी मुस्तदरक में सईद बिन ज़ुबैर के तरीक़ से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल किया है:

قَالَ اٰدَمُ يَا رَبِّ اَلَمْ تَخْلُقْنِیْ بِيَدِكَ قِيْلَ لَهٗ بَلٰی وَنَفَخْتَ فِیَّ مِنْ رُّوْحِكَ قِيْلَ لَهٗ بَلٰی وَعَطَسْتُ فَقُلْتَ يَرْحَمُكَ اللّٰهُ وَسَبَقَتْ رَحْمَتُكَ غَضَبَكَ قِيْلَ لَهٗ بَلٰی وَكَتَبْتَ عَلَیَّ اَنْ اَعْمَلَ هٰذَا قِيْلَ لَهٗ بَلٰی قَالَ اَفَرَاَيْتَ اِنْ تُبْتُ هَلْ اَنْتَ رَاجِعِیْ اِلَی الْجَنَّةِ قَالَ نَعَمْ ط

क़ा-ल आदमु या रब्बि अलम् तख़्लुक़्नी बियदि-क क़ी-ल लहू बला व न-फ़ख़्-त फ़िय्-य मिर्रूहि-क क़ी-ल लहू बला व-अ-तस्तु फ़कुल-त यरहमुकल्लाहु व स-ब-क़त रह्मतु-क ग़-ज़-ब-क क़ी-ल लहू बला व-क-तब्-त अलय्-य अन अअ् म-ल हाज़ा क़ी-ल लहू बला क़ा-ल अ-फ़-र-ऐ-त इन तुब्तु हल अन्-त राजिई इलल् जन्नति क़ा-ल नअ़म।

(तर्जुमा) हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया ऐ परवरदिगार! क्या तूने मुझे अपने हाथ से पैदा नहीं किया? उनसे कहा गया कि 'हां'। (उन्होंने अर्ज़ किया) और आपने मेरे अन्दर अपनी रूह फूंकी? कहा गया कि 'हां' और (उन्होंने अर्ज़ किया) मुझे छींक आई तो आप ने फ़रमाया, अल्लाह तुझ पर रहम करे और आपकी रहमत आपके ग़ुस्सा पर ग़ालिब आ गई, कहा गया कि 'हां'। (उन्होंने कहा) और आपने मेरी तक़दीर में यह लिखा कि मैं इस ख़ता को करूं? जवाब दिया गया कि 'हां'। उन्होंने अर्ज़ किया, आप ज़रा मुझे बतलाइए, अगर मैं तौबा कर लूं तो आप मुझे फिर जन्नत में वापस फ़रमाएंगे? जवाब दिया गया कि 'हाँ'।

(अलबिदायः भाग-1, पेज 81)

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने दुनिया में आने के बाद सबसे पहले जो खाना खाया वह क्या था और कहां से आया था?

जवाबः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जब ज़मीन पर उतार दिए गए तो हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम गन्दुम के सात दाने लेकर आए। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया यह क्या है? हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम ने कहा ये उस पेड़ के दाने हैं जिससे आपको रोका गया था। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया, मैं इनका क्या करूंगा? जिबरील अमीन ने फ़रमाया इनको ज़मीन में बिखेर दो। आप ने ज़मीन में बिखेर दिए। ख़ुदावन्द तआ़ला ने हर दाने के बदले एक लाख दाने उगाए। हज़रत आदम ने उनको काटकर दाने निकाले, फिर साफ़ करके पीस कर उसको गूंध कर रोटी पका कर खाई। इसी को अल्लाह ने फ़रमायाः

فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى ۝

फ़ला युख़्रि-जन्-न कुमा मिनल् जन्नति फ़तश्क़ा (तर्जुमा) पस तुम को यह शैतान जन्नत से न निकाल दे पस तुम मशक़्क़त में पड़ जाओगे।

(अलबिदायः वन्निहायः भाग-1, पेज 92)

सवालः— जिस वक़्त क़ाबील ने अपने माजाए भाई हाबील को क़त्ल किया तो आदम अ़लैहिसस्लाम उस वक़्त कहां थे?

जवाबः— जब क़ाबील की शादी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने हाबील की बहन अक़लीम से कर दी तो क़ाबील ने (ख़ूबसूरत न होने की वजह से) अक़लीम से शादी करने से इन्कार कर दिया। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने उन दोनों भाईयों को क़ुरबानी का हुक्म देकर जब हज के लिए तशरीफ़ ले जाने का इरादा किया तो आसमान और पहाड़ों को अपनी औलाद की हिफ़ाज़त के लिए फ़रमाया कि मैं इनको तुम्हारी हिफ़ाज़त में देता हूं। उन्होंने अपनी हिफ़ाज़त में लेने से इन्कार कर दिया। क़ाबील के सामने जब बात आई, उसने कहा मैं इन सब की हिफ़ाज़त की ज़मानत लेता हूं। इसके बाद आप हज करने चल दिए। जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हज करने मक्का तशरीफ़ ले गए, उधर दोनों भाईयों ने क़ुरबानी बारगाहे ख़ुदावन्दी में पेश की। हाबील ने अच्छा फ़रबा मेंढा और क़ाबील ने खेत की बेकार-सी चीज़ क़ुरबानी में पेश की। आग आई और

हाबील के मेंढे को ख़ाकस्तर बना कर दरबारे खुदावन्दी में कुबूलियत के दर्जे को पहुंचा दिया। यह उस ज़माने में कुरबानी की कुबूलियत की पहचान होती थी। इस पर क़ाबील बहुत गुस्सा हुआ और कहा कि मैं तुझको क़त्ल करूंगा, वरना तू मेरी बहन लबूदा से शादी मत कर। हाबील ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला मुत्तक़ियों की कुरबानी क़ुबूल कर लेता है। और दूसरी रिवायत अबू जाफ़र बाक़र की इस तरह है कि जब हाबील की कुरबानी कुबूल हो गई तो क़ाबील ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को कहा कि अब्बा जान! आपने हाबील के लिए दुआ की, इसलिए उसकी कुरबानी कुबूल हुई, मेरे लिए दुआ नहीं की, इसलिए मेरी कुरबानी कुबूल नहीं हुई। (अलबिदाय: पेज 93, भाग-1) बहरहाल इस तफ़सील से मालूम हुआ कि हाबील के क़त्ल के वक़्त हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हज करने के लिए गए हुए थे।

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत हव्वा को मह्र में क्या दिया था?

जवाबः— इब्नुलजौज़ी ने अपनी किताब 'सलातुल अहज़ान' में ज़िक्र फ़रमाया कि जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत हव्वा से कुरबत करनी चाही तो उन्होंने मह्र तलब किया। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने दुआ की कि ऐ मेरे परवरदिगार! मैं इनको मह्र में क्या चीज़ दूँ? इरशाद हुआ कि आदम मेरे महबूब मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर बीस दफ़ा दरूद भेजो, तो आप ने ऐसा ही किया। (नशरुत्तीब, पेज 11)

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की ज़बान क्या थी?

जवाबः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की ज़बान सुरयानी थी, अ़ल्लामा किरमानी कहते हैं कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम सुरयानी ज़बान में गुफ़्तुगू करते थे और ऐसे ही उनकी औलाद अम्बिया में से सिवाए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के कि उनको अल्लाह ने इबरानी ज़बान सिखाई थी। कुछ ने कहा है कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की ज़बान जन्नत में अ़रबी थी, जब ज़मीन पर उतरे तो अल्लाह ने सुरयानी में तब्दील कर दी। तीसरा क़ौल यह है कि अल्लाह ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को तमाम ज़बानें सिखलाई थीं।

(ऐनी भाग-1, पेज 52)

सवालः— जिस वक़्त हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जन्नत में थे, आपकी

दाढ़ी कितनी लम्बी थी, वहां और किसी के भी दाढ़ी थी या नहीं?

जवाब:— जन्नत में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के अलावा किसी के दाढ़ी नहीं थी और आपकी दाढ़ी नाफ़ तक थी, दाढ़ी का रंग काला था।

(अलबिदाय: वन्निहाय: भाग-1, पेज 97)

सवाल:— जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात हुई तो चांद-सूरज कितने दिनों तक ग्रहण में रहे और मख़्लूक़ कितने दिन रोई?

जवाब:— हज़रत अता ख़ुरासानी फ़रमाते हैं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर सात दिन तक मख़्लूक़ रोती रही (अलबिदाय: वन्निहाय: भाग-1, पेज 99) और चांद-सूरज सात दिन तक ग्रहण में रहे। (अलबिदाय: भाग-1, पेज 98)

सवाल:— हज़रत हव्वा की वफ़ात हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात के कितने साल बाद हुई?

जवाब:— हज़रत हव्वा हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद सिर्फ़ एक साल ज़िन्दा रहीं। (अलकामिल फ़ित्तारीख़ भाग-1, पेज 52)

सवाल:— जन्नत में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की कुन्नियत क्या रखी जाएगी?

जवाब:— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की कुन्नियत दुनिया में तो अबुलबशर थी और जन्नत में आपकी कुन्नियत अबू मुहम्मद होगी, इस लिए कि जन्नत में हर जन्नती को उसके नाम के साथ पुकारा जाएगा, मगर हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अबू मुहम्मद के साथ पुकारा जाएगा[1]।

सवाल:— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब जन्नत से निकाल दिए गए तो कितने साल तक रोते रहे?

जवाब:— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम एक सौ अस्सी (180) साल तक रोते रहे। सत्तर (70) साल तक तो अक्ले शजर: (पेड़ के खाने) पर, सत्तर (70) साल तक अपनी ख़ताओं पर और चालीस (40) साल तक हाबील के क़त्ल पर रोते रहे। कुल 180 साल हो गए। (अलबिदाय: वन्निहाय: भाग-1, पेज 80)

सवाल:— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जब ज़मीन पर उतरे तो आपका क़द कितना लम्बा-चौड़ा था?

जवाब:— जब आदम अलैहिस्सलाम ज़मीन पर उतरे तो सर आसमान में

1. अल्लामा इब्ने अदी ने इस हदीस को ज़ईफ़ कहा है। (अल्-बिदाय: जिल्द 1, पेज 97)

लगा हुआ था और पैर ज़मीन पर थे। (अलकामिल, भाग-1, पेज 37)

फिर अल्लाह ने आपके क़द को छोटा कर दिया, यहां तक कि साठ हाथ का रह गया (अलबिदायः वन्निहायः पेज 88 भाग-1) और हज़रत आमद अ़लैहिस्सलाम की चौड़ाई सात हाथ थी। (अलबिदायः वन्निहायः पेज 88)

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम जन्नत से जो हजरे असवद (काला पत्थर) लेकर आए थे वह किस क़िस्म के पत्थर का टुकड़ा था?

जवाबः— वह याक़ूत की क़िस्म से था। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 39, भाग-1)

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हिन्दुस्तान में उतरे तो हज करने कैसे जाते और हिन्दुस्तान में रहते हुए कितने हज किए?

जवाबः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने हिन्दुस्तान से मक्का तक पैदल चल कर चालीस हज अदा किए। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, भाग-1, पेज 38)

सवालः— जिस वक़्त क़ाबील ने अपने भाई को क़त्ल किया उस वक़्त उन दोनों की उम्र क्या थी?

जवाबः— उस वक़्त क़ाबील की उम्र पच्चीस (25) साल और हाबील की उम्र 20 साल थी। (अलकामिल, भाग-1, पेज 44)

सवालः— जिस वक़्त हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश हुई हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की उम्र कितनी थी और हाबील के क़त्ल के कितने साल बाद पैदा हुए?

जवाबः— हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश के वक़्त हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की उम्र एक सौ बीस साल थी और हाबील की वफ़ात को पांच साल गुज़र चुके थे। (ऊपर का हवाला)

सवालः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से कौन-से लड़के तन्हा पैदा हुए?

जवाबः— जब क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया तो उसके बदले में अल्लाह ने हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम को पैदा किया और उनके साथ लड़की पैदा नहीं हुई, बल्कि वह तन्हा पैदा हुए, मगर दूसरा क़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा का है कि हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम जुड़वां पैदा हुए। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 47, भाग-1)

सवालः— हज़रत आदम के बेटों में से सबसे पहले आग की पूजा किसने की?

जवाबः— जब क़ाबील अपने भाई हाबील को क़त्ल करके हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से डर कर यमन की तरफ़ भाग गया, शैतान क़ाबील के पास आया और कहा हाबील की क़ुरबानी की क़ुबूलियत की वजह यह है कि वह आग की परस्तिश करता था तू भी ऐसा ही कर, तेरे लिए भी ऐसा ही हो जाएगा। तो क़ाबील ने इसी काम के लिए एक घर बनाया और आग की पूजा शुरू कर दी, क़ाबील सबसे पहला वह शख़्स है जिसने आग की पूजा की।

(अलकामिल फ़ित्तारीख़, इब्नुलअसीर, हिस्सा 1, पेज 56)

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के कितने साल बाद पैदा हुए?

जवाबः— आप हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के बाद दो हज़ार साल के ख़त्म पर पैदा हुए। (अल-इत्क़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन उर्दू, पेज 342, भाग-2)

सवालः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के वालिदैन (मां-बाप) का नाम क्या था?

जवाबः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम आज़र के बेटे थे और आज़र का नाम तारूह था। और तारूख़ भी ब्यान किया गया है। यह अहले किताब का क़ौल है और ऐसा भी मुम्किन है कि तारूह लक़ब हो और आज़र नाम हो। एक क़ौल यह भी है कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के वालिद के दो नाम थे (अलबिदायः पेज 142) और वालिदा का नाम उमीला था। दूसरा क़ौल यह है कि बूना बिन्ते करबना बिन करसी था। (अलबिदायः भाग-1, पेज 140)

सवालः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम कहां पैदा हुए? पैदाइश के वक़्त वालिद की उम्र क्या थी और आपका लक़ब क्या था?

जवाबः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम सही क़ौल के मुताबिक़ बाबिल में पैदा हुए। पैदाइश के वक़्त आपके वालिद की उम्र 75 साल थी और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का लक़ब अबुज़्ज़ैफ़ान था, (चूंकि आप बहुत मेहमान नवाज़ थे)। (अलबिदायः भाग-1, पेज 140)

सवालः— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने जिस वक़्त अल्लाह की मख़्लूक़ात में ग़ौर किया उस वक़्त उम्र क्या थी?

जवाबः— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त पन्द्रह साल थी।

(अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 95, भाग-1)

सवालः— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जिस वक़्त आग में डाले गए, तो आपने आग में दाख़िल होते वक़्त क्या दुआ पढ़ी थी?

जवाबः— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जिस वक़्त आग में डाला गया तो आपने यह दुआ पढ़ीः

حَسْبِيَ اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ فِى السَّمَآءِ وَاحِدٌ وَّاَنَا فِى
الْاَرْضِ وَاحِدٌ عَبْدُكَ

हस्बि-यल्लाहु व निअ़्मल-वकील, अल्लाहुम्-म अन्-त फ़िस्समा-इ वाहिदुन व अना फ़िलअर्ज़ि वाहिदुन अ़ब्दु-क।

(कंज़ुलउम्माल, पेज 484)

सवालः— जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी ख़त्ना की तो कितनी उम्र थी और आप उसके बाद कितने साल ज़िन्दा रहे?

जवाबः— आप उस वक़्त एक सौ बीस साल के थे और उसके बाद अस्सी साल ज़िन्दा रहे।

(कंज़ुलउम्माल, भाग-11, पेज 485)

सवालः— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कितनी औरतों से शादी की और उनमें किस से क्या औलाद हुई?

जवाबः— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पहले हज़रत सारा से शादी की। अभी तक उनसे कोई औलाद नहीं हुई थी कि हज़रत हाजरा निकाह में आईं। उनसे हज़रत इस्माइल अलैहिस्सलाम पैदा हुए। इसके बाद हज़रत सारा से भी हज़रत इस्हाक़ और हज़रत याक़ूब[1] पैदा हुए। उन दोनों बीवियों की वफ़ात के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने किनआ़नियों की लड़की क़तूरा बिन्ते यक़तन से शादी की। उनसे छः औलाद हुईं, जिनके नाम ये हैंः (1) नफ़शान (2) मरान (3) मदयान (4) मदन (5) तश्क़ (6) सरह और इमाम तबरी ने ये नाम इस तरह ज़िक्र किए हैं (1) यक़सान (2) ज़मरान (3) मदयान (4) यस्बिक़

1. एक क़ौल यह भी है कि हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम के बेटे हैं।

(5) सूह (6) बस्र। कतूरा की वफ़ात के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हजून बिन्ते ज़हीर से शादी की। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, भाग-1, पेज 123)

सवाल:— जिस वक़्त हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम पैदा हुए तो हज़रत इब्राहीम व हज़रत हाजरा की उम्र क्या-क्या थी?

जवाब:— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र एक सौ बीस साल थी और हज़रत हाजरा की उम्र सत्तर साल थी (अलकामिल फ़ित्तारीख़ पेज 102 भाग-1) दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम 86 साल के थे।

सवाल:— हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के कितने साल बाद पैदा हुए और कितनी उम्र में इन्तिक़ाल हुआ?

जवाब:— हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के तेरह साल बाद पैदा हुए (अलबिदायः पेज 153) दूसरा क़ौल चौदह साल का भी है (अल इतक़ान, पेज 343, भाग-2) हज़रत इस्हाक़ एक सौ अस्सी (180) साल ज़िन्दा रहकर इस दारेफ़ानी से रिहलत फ़रमा गए।

सवाल:— जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम व याक़ूब अलैहिस्सलाम की पैदाइश की बशारत मिली, तो हज़रत इब्राहीम व सारा की क्या-क्या उम्रें थीं?

जवाब:— उस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र एक सौ बीस साल थी और हज़रत सारा नव्वे साल की थीं।

(अलकामिल फ़ित्तारीख़, भाग-1, पेज 119)

सवाल:— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़बान कौन-सी थी?

जवाब:— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की असल ज़बान तो सुरयानी थी मगर जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अपने शहर से हिजरत के इरादे से निकल कर चले। उधर नमरूद को जब इत्तला मिली तो उसने अपने जासूस हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को पकड़ने के लिए भेज दिए। नमरूद के ये क़ासिद हज़रत इब्राहीम (अ०) के पास उस वक़्त पहुंचे कि आप दरिया को पार कर रहे थे। अब अगर उनके साथ मादरी ज़बान (सुरयानी) में गुफ़्तगू करते तो वे पकड़ लेते। अल्लाह तआला ने उसी वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की ज़बान सुरयानी से इबरानी में तब्दील कर दी।

(उम्दतुलक़ारी शरह बुख़ारी पेज 52, भाग-1)

सवालः— हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम व याक़ूब अलैहिस्सलाम की पैदाइश की ख़ुशख़बरी देने के लिए कौन-कौन से फ़रिश्ते आए थे?

जवाबः— हज़रत जिबरील व मीकाईल व इसराफ़ील तशरीफ़ लाए थे, इन्हीं तीनों फ़रिश्तों के ज़रिए लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम को हलाक किया गया।

(अलबिदायः वन्निहायः भाग-1, पेज 179)

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम व हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का मस्कन (रहने की जगह) कौन-सा शहर था?

जवाबः— हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम किन्आन में रहते थे।

(हाशिया जलालैन, पेज 190)

सवालः— हज़रत सूसुफ़ अलैहिस्सलाम को आपके भाईयों ने जिस कुएं में डाला वह किन्आन से कितनी दूर था?

जवाबः— यह कुआँ किन्आन यानी मंज़िले याक़ूब अलैहिस्सलाम से तीन मील के फ़ासले पर था। (हाशिया जलालैन, भाग- 13, पेज 190)

सवालः— यह कुआँ किस ने खुदवाया था, कब खुदवाया था और उसकी गहराई क्या थी?

जवाबः— यह कुआँ शद्दाद ने उस वक़्त खुदवाया था जब उर्दुन के शहरों को शद्दाद ने आबाद कराया और यह कुआं ऊपर से तंग नीचे से कुशादा था, जिसकी वजह से इसमें बिल्कुल अंधेरा रहता था और अल्लामा काशिफ़ी फ़रमाते हैं कि इस कुऐं की गहराई सत्तर (70) गज़ थी। (हाशिया जलालैन पेज 190)

सवालः— जिस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके भाईयों ने क़मीज़ निकाल कर कुएं में डाला, फिर कुएं में उनके पास क़मीज़ कहां से आई थी?

जवाबः— इसकी थोड़ी तफ़सील यह है कि जिस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को उनके भाईयों ने कुएं में डालने का इरादा किया। पहले उन्होंने

आपकी पिटाई की, फिर जब कुएं में लटकाने लगे तो कपड़े उतार दिए। हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने भाईयों से कहा **"या इख़्वताहु रूद्दू अ़लय्-य क़मीसी अतवारा बिही फ़ी हयाती व यकूनु कफ़नन बा-द ममाती"** (तर्जुमा) ऐ मेरे भाईयो! मेरा क़मीज़ मुझ को दे दो ताकि मैं अपनी ज़िन्दगी में इससे सतर छुपाए रखूं और मरने के बाद उसको अपना कफ़न बना लूं। मगर उन्होंने क़मीज़ नहीं दी और आपको बीच से रस्सी से बांध दिया और हाथ बांध कर कुएं में लटका दिया। जब आप कुएं की आधी गहराई को पहुंच गए तो रस्सी काट दी, ताकि आप गिर कर मर जाएं आप पानी पर गिरे। उस कुएं के किनारे में एक चट्टान थी आप उस पर खड़े हो गए। इससे पहले उस कुएं का पानी खारा था मगर जब आप गिरे तो शीरीं हो गया। उधर अल्लाह पाक ने हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि मेरे मुक़द्दस बन्दे यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को अपने मुबारक परों पर ले लो और उनके लिए जन्नत से खाना पीना ले जाओ और उनके बाज़ू पर तावीज़ की शक्ल में इब्राहीमी क़मीज़ बंधा हुआ है, वह खोल कर उनको पहना दो। यह जन्नत का वह क़मीज़ है जिस को हज़रत जिबरील व मीकाईल जन्नत से लेकर आये थे और नमरूद की आग में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को पहनाया था और यह पुश्त दर पुश्त हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम तक पहुंचा, जिसका आपने तावीज़ बना कर हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के बाज़ू पर बांध दिया था या गले में डाल दिया था।

(हाशिया जलालैन पेज 190 व तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान, पेज 136, भाग-4)

सवाल:— जिस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम कुएं में डाले गए तो उस वक़्त आपकी उम्र कितनी थी?

जवाब:— कुएं में डाले जाने के वक़्त आपकी उम्र कुछ ने 12 साल ब्यान की (अलइतक़ान पेज 343 भाग-2) और अलकामिल फ़ित्तारीख़ पेज 155 भाग-1, पर 17 साल का ज़िक्र है[1] और कुछ ने 18 साल ब्यान की है, हाशिया जलालैन पेज 190 और साहिबे तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान ने पेज 136 भाग-4 पर पहले क़ौल को सही कहा है।

सवाल:— हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम कुएं में कितने दिन रहे, निकालने वाले का नाम क्या था, वह कहां का था?

1. बिदाय:, भाग-1, पेज 220

जवाबः— हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मुसाफ़िरों ने तीसरे दिन निकाला। (अलकामिल फ़ित्तारीख़ पेज 140, भाग-1) अह्ले सियर (तारीख़ लिखने वालों) ने लिखा है कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को कुएं से निकालने वाला मालिक बिन दअ़र अलख़ज़ाई था और यह अरब का बदवी था।

(तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान, पेज 247 व पेज 248 व अलबिदायः पेज, 202, भाग-1)

सवालः— आपको भाइयों ने मुसाफ़िरों से कितनी क़ीमत पर बेचा?

जवाबः— हज़रत मुजाहिद फ़रमाते हैं कि आपको बाईस दिरहम में बेचा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि बीस दिरहम में बेचा और उन्होंने दो-दो दिरहम आपस में तक़सीम कर लिए। हज़रत इक्रमा और मुहम्मद बिन इस्हाक़ फ़रमाते हैं कि आपको चालीस दिरहम में बेचा।

(अलबिदायः पेज 202 तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान, पेज 248 व हाशिया जलालैन, पेज 190)

सवालः— हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को मिस्र के अज़ीज़ ने किस चीज़ के बदले ख़रीदा और मिस्र के अज़ीज़ का नाम क्या था?

जवाबः— मिस्र के बाज़ार में जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बोली लगाई गई और बोली एक भारी क़ीमत पर पहुंच गई तो मिस्र के अज़ीज़ के नाम बोली छोड़ दी गई। मिस्र के अज़ीज़ ने हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बराबर रेशम और मुश्क (क़ीमती ख़ुश्बू) और चांदी तौली। मिस्र के अज़ीज़ का नाम क़तफ़ीर या अतफ़ीर था।

(तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान, पेज 148 भाग-4, अलबिदायः, पेज 202 भाग-1)

सवालः— हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम क़ैदख़ाने में कितने दिन रहे?

जवाबः— इस सिलसिले में कुरआन ने *'बिज़-अ सिनीन'* का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है जिसकी तफ़सीर हज़रत क़तादा व मुजाहिद फ़रमाते हैं कि लफ़्ज़ *"बिज़-अ"* तीन से नौ तक के लिए बोला जाता है और हज़रत वह्ब फ़रमाते हैं कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम बीमारी में सात बरस रहे इसी तरह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम भी क़ैदख़ाने में सात बरस रहे और बुख़्ते नस्र का अज़ाब भी सात बरस रहा। (तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान, पेज 308, भाग-12)

सवालः— जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम क़ैदख़ाने से मिस्र के अज़ीज़ के सामने लाए गए, तो आपने किस ज़बान में गुफ़्तुगू की और मिस्र का अज़ीज़

कितनी ज़बानें जानता था?

जवाबः— जब हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम मिस्र के अज़ीज़ के दरबार में हाज़िर हुए तो उन्होंने बादशाह को अरबी ज़बान में सलाम पेश किया। बादशाह ने तअज्जुब से पूछा कि यह कौन-सी ज़बान है? आप ने फ़रमाया यह मेरे चचा हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की ज़बान है। उसके बाद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने इब्रानी ज़बान में बादशाह से गुफ़्तुगू की। मगर बादशाह उस ज़बान को भी नहीं जानता था, फिर तअज्जुब से मालूम किया कि यह कौन-सी ज़बान है? आपने फ़रमाया, यह मेरी मादरी ज़बान है! अजीब बात यह है कि बादशाह सत्तर (70) ज़बानों का माहिर व जानने वाला था जिस ज़बान में वह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से सवाल करता आप उसी ज़बान में उसकी बात का जवाब दे दिया करते थे। बादशाह को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के उन बेबाकाना व मुदब्बिराना जवाबों ने तअज्जुब में डाल दिया और वह यह कहने पर मजबूर हुआ कि इतनी छोटी उम्र का बच्चा और इतनी ज़बानों का माहिर!

(हाशिया जलालैन पेज 194)

सवालः— हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की क़मीज़ की ख़ुश्बू कितनी दूर से आ गई थी?

जवाबः— हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को उस क़मीज़ की ख़ुश्बू अस्सी मील के फ़ासले से आ गई थी (अलबिदायः वन्निहायः पेज 216 भाग-1, अलकामिल फ़ित्तारीख़ पेज 154 भाग-1) जो उस वक़्त आठ रोज़ की मसाफ़त (दूरी) का रास्ता था (अलबिदायः पेज 216) दूसरा क़ौल यह है कि तीस (30) मील की दूरी से उस क़मीज़ की ख़ुश्बू आ गई थी। (तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान, पेज 119)

सवालः— हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जिस वक़्त वज़ीर बनाए गए उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ क्या थी और हुकूमत का ज़माना कितने साल का है?

जवाबः— आपको तीस साल की उम्र में वज़ीर बनाया गया। (अलबिदायः पेज 210, अलकामिल पेज 155 भाग-1) और नव्वे साल हुकूमत की।

(हाशिया जलालैन शरीफ़, पेज 191 पारा 13)

सवालः— हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात अपने मां-बाप से कितने साल बाद हुई, उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की उम्र क्या थी?

जवाबः— इस बारे में मुख़्तलिफ़ अक़वाल मिलते हैं (1) अस्सी साल के बाद

मुलाक़ात हुई (2) तिरासी साल बाद। ये दोनों क़ौल हज़रत हसन बसरी रह० के हैं (3) क़तादा कहते हैं कि हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की मुलाक़ात मां-बाप से 35 साल बाद हुई (4) अहले किताब का कहना है कि जुदाई का ज़माना 40 साल का है (अलबिदायः पेज 217 भाग-1) और उस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की उम्र शरीफ़ एक सौ बीस साल की थी।

(तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान पेज 124 भाग-1, अलकामिल फ़ितारीख़, पेज 155 भाग-1)

सवालः— जब हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम से मुलाक़ात के लिए मिस्र की तरफ़ चले तो हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने अपने वालिदे मोहतरम का इस्तिक़्बाल कितने ख़ादिमों के साथ किया?

जवाबः— हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने चार हज़ार ख़ादिमों के साथ अपने मां-बाप का इस्तिक़बाल किया। (तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान पेज 124 भाग-4)

सवालः— हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम मिस्र में कितने साल रहे और आपकी कुल उम्र क्या हुई?

जवाबः— हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम मिस्र में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के पास चौबीस साल रहे, दूसरा क़ौल सतरह (17) साल का है (अलकामिल फ़ितारीख़, पेज 155, अलबिदायः पेज 220 भाग-1) हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की उम्र एक सौ साठ (160) साल हुई (मुवाहिबुर्रहमान पेज 136) दूसरा क़ौल यह है कि आप एक सौ सैंतालीस (147) साल ज़िन्दा रहे। (अल-इतक़ान पेज 343)

सवालः— हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम की ज़ुलैख़ा से कितनी औलाद हुई?

जवाबः— आपके ज़ुलैख़ा से दो लड़के पैदा हुए— अफ़रासीम और मंशा।

(अलबिदायः वन्निहायः पेज 210 भाग-1)

सवालः— हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात पर अहले मिस्र कितने दिनों तक रोए और आपको कितने दिनों के बाद दफ़न किया गया?

जवाबः— आपकी वफ़ात पर अहले मिस्र सत्तर (70) दिन तक रोते रहे और जब हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम का इन्तिक़ाल हो गया हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम ने (ग़म की तक्लीफ़ की वजह से) हकीमों, डॉक्टरों को बुलाया तो उन्होंने हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम के जनाज़े को दवाओं के ज़रिए चालीस दिन तक रोके रखा। चालीस दिन के बाद आपको मक़ामे हबरून, जो एक गढ़ा था, जिसको हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने ख़रीद कर खुदवाया था और

उसको खुदवाने में सात दिन लगे थे उस गढ़े में आपको दफ़न किया गया। यही आपके बाप, दादा परदादा यानी हज़रत इब्राहीम व इस्माईल व इस्हाक़ अलैहिमुस्सलाम का मदफ़न (दफ़न होने की जगह) था।

(अलबिदाय: भाग-1, पेज 120)

हज़रत सालेह व हज़रत शुऐब अलैहिमस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी को क़ौम ने किस दिन क़त्ल किया और उन पर कौन-कौन-सा अज़ाब आया?

जवाबः— क़ौम-ए-समूद (सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम) ने उस ऊंटनी को मंगल के दिन क़त्ल किया, सनीचर के दिन से उन पर अज़ाब आना शुरू हुआ। इस तरह कि पहले दिन उनके चेहरे पीले हो गए, दूसरे दिन लाल हो गए और तीसरे दिन काले हो गए, चौथे दिन एक चीख़ आई जिससे वे हलाक हो गए।

(हाशिया जलालैन, पेज 314 , अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 92, भाग-1)

सवालः— हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी को क़त्ल करने वाले का नाम क्या था?

जवाबः— उसका नाम क़दार बिन सालिफ़ था। (रूहुलमआनी, पेज 89, भाग-27)

सवालः— हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम में कितने दिन तब्लीग़ फ़रमाई और कुल उम्र शरीफ़ कितनी हुई और वफ़ात कहां पाई?

जवाबः— हज़रत वहब कहते हैं, हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम में चालीस साल रहे। दूसरा क़ौल यह है कि आप अपनी क़ौम में बीस साल तक मुक़ीम रह कर 58 साल की उम्र में मक्का में वफ़ात पाई। तीसरा क़ौल यह है कि आप दो सौ अस्सी (280) साल ज़िन्दा रहे।

(अलइतक़ान पेज 344, हाशिया जलालैन, पेज 314, अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 92)

सवालः— हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम का कौन-सा आदमी अज़ाब से महफ़ूज़ रहा और वह कहां का था?

जवाबः— हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम की क़ौम का एक आदमी अबू रिग़ाल नामी हरमे मक्का में था यह आदमी अज़ाब से महफ़ूज़ रहा।

(अलकामिल फ़ित्तारीख़ भाग-1, पेज 93)

सवालः— हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम की क़ौम पर क्या अज़ाब आया? क्यों आया? कितने दिनों तक रहा?

जवाबः— जब ये लोग अल्लाह की नाफ़रमानी पर हद से ज़्यादा आ गए तो अल्लाह ने उन पर गर्मी का अज़ाब भेजा, गोया कि जहन्नम के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा उन पर खोल दिया गया। जब ये लोग गर्मी से परेशान हो गए तो मकानों से बाहर भागने लगे। अल्लाह ने बदली की टुकड़ी भेजी जिस के नीचे ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। ये लोग एक के बाद एक सब इस बदली के नीचे आ गए तो अल्लाह ने उस बदली के अन्दर से आग के अंगारे उनके ऊपर बरसाए जिन्होंने उनको भून कर रख दिया और उनको तली हुई भुनी हुई टिड्डियों की तरह बना दिया। उन पर नाप और तौल में कमी करने की वजह से यह अज़ाब आया और सात दिन तक यह अज़ाब रहा। (हाशिया जलालैन, पेज 315)

हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम जिस वक़्त बीमार हुए उनकी उम्र क्या थी और बीमारी में कितने साल तक मुब्तला रहे?

जवाबः— अल्लामा सुद्दी का ब्यान है कि जिस वक़्त आप बीमारी में मुब्तला हुए उस वक़्त आपकी उम्र सत्तर बरस थी और हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम बीमारी में 18 साल रहे (अलबिदायः पेज 222)। दूसरा क़ौल यह है कि सात साल रहे। तीसरा क़ौल तेरह साल का है, चौथा क़ौल तीन साल का है।

(अलइतक़ान, भाग-1, पेज 346)

सवालः— हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को किस वजह से आज़माइश व इम्तिहान में डाला गया?

जवाबः— तफ़सीर लिखने वालों और तारीख़ लिखने वालों ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम की आज़माइश की मुख़्तलिफ़ वज्हें बयान की हैं, उनमें से एक वजह यह भी है कि हदीस में आया है कि इब्लीस ने फ़रिश्तों से बहुत ज़्यादा आपकी इबादत के मुताल्लिक़ सुना, आप ज़्यादा-से-ज़्यादा नमाज़ें अदा करने वाले और रोज़े रखने वाले थे और ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करते थे

इसलिए इब्लीस को हसद हुआ। उसने अल्लाह से सवाल किया कि ऐ अल्लाह! मुझको अपने महबूब बन्दे अय्यूब अलैहिस्सलाम के सारे माल पर क़ब्ज़ा दे दीजिए ताकि मैं तेरे बन्दे को उसके दीन के मुताल्लिक़ आज़माऊँ। ख़ुदावन्द तआला ने इब्लीस की इस दरख़्वास्त को मंज़ूर कर लिया। इब्लीस ने अपने सरकश लीडरों को बुला कर आपके तमाम माल व असबाब को हलाक कर डाला। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम अल्लाह की याद में इबादतख़ाना में मसरूफ़ थे। अल्लाह के बन्दे को जब मालूम हुआ तो आपने अल्लाह के ज़िक्र में कोई कमी न आने दी। सब्र व इस्तिक़लाल के पहाड़ बनकर अल्लाह की इबादत व बन्दगी में मसरूफ़ रहे। इब्लीस मायूस हो गया। फिर अल्लाह से सवाल किया, ऐ अल्लाह! मुझको अय्यूब अलैहिस्सलाम की औलाद पर भी क़ब्ज़ा दे दीजिए, चुनांचे इब्लीस को क़ब्ज़ा मिल गया। इब्लीस ने आपकी तमाम औलाद को हलाक कर डाला और बड़ा ख़ैरख़्वाह व ग़मख़्वार बनकर हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के पास पहुंचा और आपके सामने बड़े दर्द भरे अन्दाज़ में संजीदगी के साथ माल व औलाद की हलाकत का क़िस्सा ब्यान किया। बहरहाल हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम पर बशरी तक़ाज़े की बिना पर रिक़्क़त तारी हो गई और आप रोने लगे, सर पर मिट्टी डाल ली। बस इस पर इबलीस लईन बहुत ख़ुश हुआ। फ़ौरन ही हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को तनब्बुह हुआ। नदामत व शर्मसारी हुई और जनाबे बारी तआला में इस्तिग़फ़ार की। आपकी यह तौबा इब्लीस के अल्लाह के पास जाने से पहले ही क़ुबूल हो गई हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम माल और औलाद को देखने के लिए जाने के बजाए ख़ुदा की इबादत में फिर मसरूफ़ हो गए। अब इब्लीस ने अल्लाह तआला से दरख़्वास्त की, मुझको उनकी जान पर भी क़ब्ज़ा दे दीजिए। अल्लाह ने ज़बान व दिल और अक़्ल के सिवा तमाम बदन पर क़ब्ज़ा दे दिया। इन तीनों जौहरों का शैतान कुछ नहीं बिगाड़ सकता था, इब्लीस अल्लाह के इस मुजाहिद व साबिर बन्दे के पास आता है यह सब्र व इस्तिक़लाल का पैकर सज्दे में कायनात के रब से मुनाजात में मशग़ूल है। शैतान ने आपकी नाक में ऐसी फूंक मारी कि आपके मुबारक जिस्म में शोला भड़क उठा, जिससे आपका बदन फुदफुदा गया। बड़े-बड़े ज़ख़्म हो गए, कीड़े पड़ गए मगर अल्लाह के उस बन्दे का यह हाल कि अगर कोई कीड़ा बदन के ज़ख़्म से बाहर आ जाता या ज़ख़्म से नीचे गिर जाता तो आप उसको उठा कर ज़ख़्म में रख लेते और कहते कि अल्लाह ने तेरी रोज़ी मेरे

जिस्म में रखी है, आपके जिस्म में बड़े-बड़े शिगाफ़ (दराड़) पड़ गए थे जिस्म से गोश्त की बड़ी-बड़ी बोटियां की बोटियां कट-कटकर नीचे गिरने लगीं और आपके बदन में इतनी बदबू हो गई कि आपके कोई भी क़रीब नहीं जाता था। मगर आपकी वफ़ादार बीवी बराबर आपकी ख़िदमत करती थीं। शहर वालों ने आपको एक कूड़ी पर डाल दिया। आप कूड़ी पर शहर से बाहर 7 साल तक पड़े रहे मगर कभी अल्लाह से अपनी शिफ़ायाबी का सवाल तक न किया जबकि उस ज़माने में हज़रत अय्यूब से ज़्यादा मुकर्रम अल्लाह के नज़दीक कोई नहीं था।

दूसरा क़ौल यह है कि एक मर्तबा मुल्के शाम में क़हत पड़ा। फ़िरऔन ने हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम के पास अपना क़ासिद भेजकर कहलवाया कि आप हमारे यहां तशरीफ़ लाइए हम आपको बहुत कुछ देंगे, हमारे यहां आपकी बहुत क़द्र है, ग़रज़ यह कि आप अपने अह्ल व अ़याल (घरवालों) के साथ तशरीफ़ लाए। फ़िरऔन ने सबकी पेनशन जारी कर दी। इसके बाद हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम ने फ़िरऔन के पास आकर कहा कि ऐ फ़िरऔन! क्या तू डरता है इस बात से कि अगर अल्लाह तआ़ला नाराज़ हो जाए तो उसकी नाराज़गी की वजह से आसमान व ज़मीन के तमाम लोग नाराज़ हो जाएंगे और समुद्र व पहाड़ भी ग़ज़ब में आ जाएंगे? हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम भी हज़रत शुऐब अ़लैहिस्-सलाम की ये बातें सुन रहे थे, मगर ख़ामोश थे। हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की इस बात पर आप ने कोई जवाब हां या नहीं में नहीं दिया। जब हज़रत शुऐब व हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम फ़िरऔन की मज्लिस से उठ कर चले आए। अल्लाह ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम पर अपना पैग़ाम भेजा कि ऐ अय्यूब! क्या तू पेनशन बन्द होने के ख़ौफ़ से हक़ बात कहने से रुका रहा (अच्छा), फिर आज़माइश के लिए तैयार हो जा। हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! मैं यतीमों की परवरिश करता हूं, ग़रीबों को ठिकाना देता हूं, भूखों को खाना खिलाता हूं, बेवाओं की किफ़ालत करता हूं। इसके बाद एक बदली आई जिस में से तक़रीबन दस हज़ार आवाज़ों की कड़क सुनाई दे रही थी। हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम ने सिर पर मिट्टी डाल ली और या रब! या रब! करने लगे। अल्लाह ने जवाब दिया कि इम्तिहान के लिए तैयार हो जा। हज़रत अय्यूब अ़लैहिस्सलाम ने कहा, मेरे दीन का क्या होगा? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया मैं उसको आंच नहीं आने दूंगा। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 130 भाग-1)

सवालः— जब अल्लाह ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को बीमारी से शिफ़ा दे दी तो उसके बाद आप कितने साल ज़िन्दा रहे? कितनी औलाद हुई? और आपकी कुल उम्र कितनी हुई?

जवाबः— हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम बीमारी से शिफ़ायाबी के बाद सत्तर (70) साल ज़िन्दा रहे और बीमारी से ठीक होने के बाद अल्लाह ने आपको छब्बीस (26) बेटे इनायत फ़रमाए। इब्ने जरीर और उनके अलावा तारीख़ लिखने वाले उलमा का कहना है कि जिस वक़्त हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का इन्तिक़ाल हुआ, उस वक़्त आपकी उम्र 93 साल थी और कुछ ने 75 साल भी ब्यान की है। (अलकामिल फ़ित्तारीख़ 131, अलबिदायः वन्निहायः पेज 224 व 225, अल-इतक़ान, पेज 346 भाग-2)

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का नाम मूसा किसने रखा?

जवाबः— फ़िरऔन की अहलिया मोहतरमा हज़रत आसिया ने रखा, जिसकी कुछ तफ़सील यह है कि जब फ़िरऔन ख़ादिमों के साथ दरिया के किनारे घूम रहा था ये सब लोग पानी से दिल बहला रहे थे, अचानक हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ताबूत (छोटा-सा संदूक़) पानी की सतह पर लकड़ियों के दर्मियान बहता हुआ नज़र आया। उन्होंने उस संदूक़ को निकाल कर खोला तो उस में चांद-सा चेहरे वाला एक बच्चा लेटा हुआ था। हज़रत आसिया को कहा गया कि इस का नाम रख दो तो हज़रत आसिया ने आपका नाम इस मुनासबत से कि आप पानी और लकड़ियों के दरमियान बहते हुए आए थे मूसा रखा, इसलिए कि "मू" पानी के मानी में और "सा" क़िब्ती ज़बान में लकड़ी को कहते हैं।

(तफ़सीरे ख़ाज़िन, पेज 225)

सवालः— हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की वालिदा ने जब आपके ताबूत को दरिया-ए-नील में डाल दिया फिर कितने दिनों बाद आपकी सूरत देखी?

जवाबः— आपकी वालिदा ने आपकी सूरत तीन दिन बाद देखी। इसलिए कि यह ताबूत जब बहता हुआ फ़िरऔन के महल के क़रीब आया, फ़िरऔनियों ने उसको निकाल लिया और खोल कर देखा तो उसमें आप लेटे हुए थे। जब

दूध पिलाने की नौबत आई, आप ने किसी दूसरी औरत का दूध कुबूल नहीं किया। जब आपकी वालिदा आईं तो आपने उनका दूध पिया। यह फ़िराक़ (जुदाई) का ज़माना तीन दिन का था। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 173, भाग-1)

सवाल:— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की उम्र मदयन जाते वक़्त क्या थी? मदयन कितने दिनों में पहुंचे? रास्ते में क्या खाना खाया और मदयन कितने साल रहे?

जवाब:— हज़रत मूसा की उम्र उस वक़्त तीस साल थी, सात दिन में मदयन पहुंचे और रास्ते में हरी घास के अलावा कोई चीज़ खाने को मयस्सर न आई और दस साल मदयन में रहकर मिस्र तशरीफ़ लाए। (हाशिया जलालैन, पेज 328)

सवाल:— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने जब तूर पहाड़ पर अल्लाह तआ़ला से बात की तो आपके बदन पर क्या लिबास था और जूते किस जानवर की खाल के थे?

जवाब:— आपके बदन पर एक ऊन का जुब्बा था (अलकामिल, पेज 179 भाग-1) चादर टोपी और पाजामा, ये सब कपड़े भी ऊन के थे (कंज़ुलउम्माल, पृ० 509, भाग- 11) और आपके जूते मुर्दा गधे की खाल के थे।

(कंज़ुलउम्माल 509 भाग-11)

सवाल:— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर सबसे पहले ईमान लाने वाला कौन आदमी और किस क़ौम का था?

जवाब:— ख़रबील था जो फ़िरऔ़नियों में से ही था।

(अलकामिल फ़ित्तारीख़, भाग- 11, पेज 175)

सवाल:— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की लाठी की ख़ुसूसियतें क्या-क्या थीं?

जवाब:— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की लाठी की ख़ुसूसियतें नीचे लिखी जाती हैं :—

(1) जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम सफ़र में होते तो यह लाठी उनसे बात करते हुए चलती थी, (2) जब आपको भूख सताती और कोई चीज़ खाने को न होती तो अ़सा को ज़मीन पर मारते थे उससे एक दिन का खाना निकल जाता था। (3) जब प्यास लगती तो अ़सा को ज़मीन में गाड़ देते उससे पानी उबलना शुरू हो जाता था, जब उठा लेते थे तो ख़त्म हो जाता था, (4) जब फल खाने की ख़्वाहिश होती तो इस अ़सा को गाड़ देते यह पेड़ बन जाता, पत्ते लग जाते

और फल भी आ जाते (5) जब कुएं से पानी खींचने की नौबत आती तो यह असा डोल का काम देता और इतना लम्बा हो जाता जितनी उस कुएं में गहराई होती और उसमें दो शाखें थीं वे डोल की तरह बन जातीं (6) रात के वक़्त उसमें रौशनी पैदा हो जाती (7) जब कोई दुश्मन सामने पड़ता उससे खुद-ब-खुद लड़ कर उस पर यह असा ग़ालिब आ जाता। (हाशिया जलालैन, पेज 261)

सवालः— सामरी ने बछड़ा कितने दिनों में बनाकर तैयार किया था?

जवाबः— तीन दिन में बना कर तैयार किया था।

(अलकामिल फ़ित्तारीख़, भाग-1, पेज 189)

सवालः— हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जिस पत्थर पर असा मारा था, उस पत्थर की लम्बाई व चौड़ाई क्या थी?

जवाबः— उस पत्थर की लम्बाई व चौड़ाई एक-एक हाथ थी।

(हाशिया जलालैन, पेज 10)

सवालः— वादी-ए-तीह किस जगह थी और उसकी लम्बाई कितनी थी?

जवाबः— वादी-ए-तीह मुल्के शाम और मिस्र के दर्मियान में पड़ती थी, जिसकी लम्बाई नौ मील थी। (हाशिया जलालैन शरीफ़, पेज 10)

सवालः— वादी-ए-तीह में बनी इस्राईल क्या खाना खाते थे?

जवाबः— वादी-ए-तीह में अल्लाह ने बनी इस्राईल पर मन्न और सल्वा नाज़िल फ़रमाया था। *'मन्न'* यह तुरन्जबीन है जो बर्फ़ की तरह सफ़ेद और शहद की तरह मीठा होता था और *'सल्वा'* यह यमन की तरफ़ एक परिन्दा होता है, चिड़िया से बड़ा और कबूतर से छोटा। हमारे यहां हिन्दुस्तान में इसको लावा या बटेर कहते हैं, यह भुना हुआ आता था और कुछ ने कहा कि खुद भूनते थे।

(हाशिया जलालैन, पेज 10, भाग-1)

सवालः— मन्न व सल्वा किस दिन नहीं नाज़िल होता था?

जवाबः— शम्बा यानी सनीचर का दिन बनी इस्राईल का ख़ास इबादत का दिन था, उस दिन यह नहीं उतरता था। बनी इस्राईल जुमा के दिन दो दिन का तोशा जमा करके रख लिया करते थे इससे ज़्यादा दिन का जमा करके रखने की इजाज़त न थी। (ऊपर का हवाला)

सवालः— बनी इस्राईल ने जिस गाय को ज़बह किया था उसका नाम क्या था और मक़्तूल यानी जिसकी वजह से गाय ज़बह कराई गई थी उसका नाम

क्या था? उसको किसने क़त्ल किया था?

जवाबः— उस गांव का नाम *मुज़स्हबः* था और मक़्तूल का नाम आमील था जिसको उसके चचा के लड़कों ने, (दूसरा क़ौल यह है कि भाई के लड़कों ने मीरास हासिल करने की ग़रज़ से) क़त्ल कर दिया था।

(ख़ाज़िन, पेज 60, भाग-1 व हाशिया जलालैन, पेज 11)

सवालः— हज़रत हारून अलैहिस्सलाम हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से कितने साल बड़े थे?

जवाबः— तीन साल बड़े थे। (हाशिया जलालैन पेज 14)

सवालः— हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक कितने साल का फ़ासला है?

जवाबः— हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक एक हज़ार नौ सौ पिछत्तर (1975) साल का अर्सा गुज़रा है, दूसरा क़ौल यह है कि एक हज़ार सात सौ (1700) साल का ज़माना गुज़रा है।

(हाशिया जलालैन, पेज 51 व 97)

सवालः— हज़रत मूसा व हज़रत ईसा अलैहिमस्सलाम के दरमियान के अर्से में कितने अम्बिया तशरीफ़ लाए और किस नबी की शरीअत पर अमल करते थे?

जवाबः— हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तक जो ज़माना गुज़रा उसमें सत्तर (70) हज़ार अम्बिया आए। दूसरा क़ौल यह है कि चार हज़ार अम्बिया आए जो सबके सब शरीअते मूसविया (तौरात) पर अमल करते थे। (हाशिया जलालैन, पेज 13)

हज़रत दाऊद व हज़रत सुलैमान अलैहिमस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का हुलिया कैसा था?

जवाबः— आपका चेहरा सुर्ख़, सर के बाल सीधे और नर्म थे, रंग गोरा था, दाढ़ी लम्बी थी और दाढ़ी में किसी क़द्र ख़म व पेच (घुंघरालापन) पाया जाता था। आप अच्छी आदत और अच्छी आवाज़ वाले थे। (अलइतक़ान पेज 346 भाग-2)

सवाल:— हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम कितनी आवाज़ों में ज़बूर की तिलावत किया करते थे?

जवाब:— हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ज़बूर की तिलावत सत्तर (70) आवाज़ों में कर दिया करते थे। (अलबिदाय:, पेज 16, भाग-2)

सवाल:— हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की कितनी बीवियां थीं?

जवाब:— एक हज़ार बीवियां थीं। (अलबिदाय: वन्निहाय: पेज 15, भाग-2)

सवाल:— हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का इन्तिक़ाल किस दिन हुआ और आपके मरते वक़्त कितनी औलादें थीं?

जवाब:— हज़रत क़तादा ने हज़रत हसन रह० से नक़ल किया है कि आपका इन्तिक़ाल अचानक बुध के दिन हुआ। हज़रत इमाम सुद्दी व अबू मालिक और वह सईद बिन जुबैर से रिवायत करके कहते हैं कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का इन्तिक़ाल हफ़्ता (सनीचर) के रोज़[1] हुआ और आपकी वफ़ात के वक़्त आपकी औलाद में उन्नीस (19) लड़के थे।

(अलकामिल, पृ० 228, भाग-1, अलबिदाय: पेज 17, भाग-2)

सवाल:— हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के जनाज़े के साथ कितने उलमा थे?

जवाब:— आपके जनाज़े के साथ चालीस हज़ार राहिब उलमा थे।

(अलबिदाय: पेज 17, भाग-2)

सवाल:— हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की कुल उम्र कितनी हुई और हुकूमत कितने साल तक की?

जवाब:— आपकी कुल उम्र सौ साल हुई और आप ने चालीस साल हुकूमत की।

(अलबिदाय: पेज 16, भाग-2, अलकामिल, पेज 228 भाग-1)

सवाल:— हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम जब बादशाह बने उनकी उम्र क्या थी?

जवाब:— तेरह साल की उम्र में आप बादशाह बन गए थे।

(अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 229, भाग-1)

सवाल:— तख़्त पर बैठने के कितने साल बाद बैतुल मुक़द्दस की तामीर कराई?

---

1. एक तीसरा क़ौल यह है कि हज़रत क़तादा हज़रत हसन से रिवायत करते हैं कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम का इंतिक़ाल मंगल के दिन हुआ। (अल बिदाय: वन्निहाय: भाग-2, पेज 17)

जवाबः— बादशाह बनने के चार साल बाद बैतुल मुक़द्दस की तामीर का आग़ाज़ कराया। (अलइतक़ान पेज 346, भाग-2)

सवालः— जिस वक़्त हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने बिलक़ीस का तख़्त मंगाया आप कहां थे और बिलक़ीस का तख़्त कितनी दूरी पर था?

जवाबः— आप मुल्के शाम में बैतुलमुक़द्दस में थे और बिल्क़ीस का तख़्त मुल्के सबा में था और बैतुलमुक़द्दस से मुल्के सबा तक दो माह की मसाफ़त (दूरी) का फ़ासला था। (हाशिया जलालैन, पेज 320 ब-हवाला सावी)

सवालः— हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की कितनी बीवियां थीं?

जवाबः— आपकी एक हज़ार बीवियां थीं जिनमें से तीन सौ कुँवारियां और सात सौ बांदियां थीं। दूसरा क़ौल यह है कि तीन सौ बांदियां और सात सौ बीवियां थीं। तीसरा क़ौल यह है कि चार सौ औ़रतें और छः सौ बांदियां थीं

(अलकामिल, पेज 230 भाग-1, अलबिदायः पेज 29 भाग-2)

सवालः— आपकी वालिदा मोहतरमा का नाम क्या था?

जवाबः— हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की वालिदा का इस्मे गरामी "औरया" था। (अलबिदायः वन्निहायः पेज 15, भाग-2)

सवालः— हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की अंगूठी में क्या लिखा हुआ था?

जवाबः—इब्ने अ़साकिर ने हज़रत उबादा बिन सामित की रिवायत नक़ल की है कि हज़रत उबादा कहते हैं हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की अंगूठी में लिखा हुआ था *"अनल्लाहु ला इला-ह इल्ला अना मुहम्मदुन अब्दी व रसूली"*।

(कंज़ुलउम्माल, पृ० 498)

सवालः— हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की कुल उ़म्र क्या हुई और बादशाह कितने साल रहे?

जवाबः— हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की कुल उ़म्र 52 साल हुई, चालीस साल हुकूमत की। दूसरा क़ौल यह है कि हुकूमत बीस साल की।

(अलबिदायः पृ० 32, भाग- 2)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के अल्लाह तआला से कुछ सवाल

सवालः— हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से तूबा पेड़ के बारे में क्या-क्या सवाल किए?

जवाबः— हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से मालूम किया कि तूबा पेड़ क्या है? अल्लाह ने जवाब में फ़रमाया, इस पेड़ को मैंने अपने हाथ से लगाया। यह जन्नतियों के लिए है, इसकी जड़ मेरी ख़ुशनूदी है, और इसका पानी तस्नीम का है, इसकी ठंडक काफ़ूर की, इसका ज़ायक़ा ज़ंजबील (सोंठ) के-जैसा है और इसकी ख़ुश्बू मुश्क की ख़ुश्बू जैसी है, जिसने उसमें से एक घूंट पी लिया उसको कभी भी प्यास न लगेगी।(अलबिदायः वन्निहायः भाग 2 पेज 78, 79)

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने जब उस पेड़ की तारीफ़ व ख़ूबी सुनी तो दिल में उसका पानी पीने की तमन्ना हुई। अल्लाह तआला की जनाब में अर्ज़ किया मुझको इस पेड़ का पानी पिला दीजिए। अल्लाह ने फ़रमाया, मैंने इसका पानी तमाम नबियों और तमाम उम्मतों पर उस वक़्त तक हराम कर दिया है जब तक कि मेरा नबी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उसकी उम्मत न पी लें। और ऐ ईसा! मैंने तुझको अपनी तरफ़ उठाया है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से सवाल किया, ऐ अल्लाह! तूने मुझको अपनी तरफ़ क्यों उठाया है? जवाब मिला, मैंने तुझको इसलिए उठाया ताकि तुझको आख़िरी ज़माने में उतारूं और तू इस उम्मत की अजीब-अजीब चीज़ों को देखे और तू दज्जाल के क़त्ल पर तै किया हुआ है। इस पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! मुझको उस उम्मत के बारे में ख़बर दे दीजिए। अल्लाह ने फ़रमाया, यह मुहम्मद-ए-अरबी नबी-ए-आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत होगी। इस उम्मत के उलमा व हुकमा अम्बिया जैसे होंगे। वे मुझसे थोड़ी चीज़ पर राज़ी हो जाएंगे और मैं उनसे थोड़े अमल पर राज़ी हो जाऊंगा और मैं उनको *"ला इला-ह इल्लल्लाहु"* से जन्नत में दाख़िल कर दूंगा और अल्लाह ने फ़रमाया कि ऐ ईसा! जन्नत में सबसे ज़्यादा यही उम्मत होगी।

(अलबिदायः वन्निहायः भाग-1, पेज 79)

सवालः— हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों की तादाद और उनके

काम क्या थे?

जवाबः— आपके हवारियों की तादाद 12 थी। उनमें कुछ कपड़ा रंगने वाले थे, कुछ शिकारी, कुछ धोबी, कुछ मल्लाह थे।

(अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 317 भाग-1 व पेज 315, भाग-1)

सवालः— हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के मानने वालों को नसारा क्यों कहते हैं?

जवाबः— असल बात यह है कि जब आपकी वालिदा मोहतरमा आपको अपने मुल्क (क़ौम) में लेकर आईं, जिस गांव में रहना इख़्तियार किया उसका नाम नासिरः था। आपने वहां रहते हुए तीस साल की उम्र में बाक़ायदा तब्लीग़ शुरू की, आप नासिरः गांव के रहने वाले थे इसलिए गांव की तरफ़ निस्बत करते हुए आपकी जमाअत का नाम नसारा पड़ गया था।

(अलकामिल, पेज 314, भाग-1)

सवालः— हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारियों के नाम क्या थे और उनको हवारी क्यों कहा जाता है?

जवाबः— हवारी तादाद में तो 12 या 29 थे, मगर सब के नाम मालूम न हो सके। उनमें से कुछ के नाम ये थे, फ़ितरस, याक़ूबस, नहमस, अन्दरानीस, फ़ीलस, दरनाबूता, सरजस। लफ़्ज़-ए-हवारिय्यीन 'हौर' से लिया गया है, जिसके मायने ख़ालिस सफ़ेदी के आते हैं। सईद बिन जुबैर के कहने के मुताबिक़ वे लोग सफ़ेद कपड़े पहनते थे और मुक़ातिल के कहने के मुताबिक़ ये लोग धोबी थे, कपड़ों को सफ़ेद करते थे और क़तादा के कहने के मुताबिक़ उन लोगों के दिल साफ़ और पाकीज़ा थे। इसलिए उनको हवारी कहा जाता है।

(अनवारुद्दिरायात लिदफ़-इत्ताआ-रुज़ बैनल आयात मअ़ ज़मीमा पृ० 259 मुअल्लिफ़ उस्ताज़-ए-मोहतरम हज़रत मौलाना मुहम्मद अनवर साहब गंगोही मद्-द ज़िल्लहू, बहवाला इतक़ान व रूहुलमआनी)

मुख़्तलिफ़ नबियों अलैहिमुस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— वे कौन-से नबी हैं जिनके नाम पैदाइश से पहले रखे गए?

जवाबः— पांच नबियों के नाम पैदाइश से पहले रखे गए (1) नबी आख़िरुज़्ज़मां

मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, जैसा कि इरशादे बारी है:

مُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْ بَعْدِي اسْمُهٗ اَحْمَدُ

"मुबश्शिरम बिरसूलिंय्-यअ्ती मिम् बादिसमुहू अहमद"

(2) हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम जिनका ज़िक्र फ़रमाने खुदावन्दी :

يَا زَكَرِيَّا اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ اسْمُهٗ يَحْيٰى

"या ज़्-करिय्या इन्ना नुबश्शि-रु-क बिगुलामि निस्मुहू यह्या" में है।

(3) हज़रत मसीह यानी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जिनका ज़िक्र फ़रमाने बारी तआला:

بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيْحُ

"बि-कलि-मतिम मिन्हुस्मुहुलमसीहु" में है।

(4 व 5) हज़रत इस्हाक़ व हज़रत याक़ूब अलैहिमस्सलाम जिनका ज़िक्र फ़रमाने खुदावन्दी—

فَبَشَّرْنَاهَا بِاِسْحٰقَ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ

"फ़-बश्शर्नाहा बिइस्हा-क़ व मिंव्-वराइ इस्हा-क़ याक़ू-ब" में है

(अलइतक़ान, पेज 349, भाग- 2) उर्दू

सवालः— बनी इस्राईल के सबसे पहले और सबसे आख़िरी नबी कौन थे?

जवाबः— बनी इस्राईल के सबसे पहले नबी हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और आख़िरी नबी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम थे। (हाशिया जलालैन, पेज 51)

सवालः— अचानक मौत किन-किन नबियों की हुई?

जवाबः— इमाम सुद्दी रह० अबू मालिक से नक़ल करते हैं कि वह इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत करते हैं कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम यौमुस्सब्त (सनीचर के दिन) अचानक इन्तिक़ाल फ़रमा गए, दूसरा क़ौल मंगल का भी है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का इन्तिक़ाल भी अचानक हुआ और हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम की वफ़ात भी अचानक हुई।

(अलबिदायः वन्निहायः पेज 17, भाग-2)

सवालः— हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती किस पेड़ की थी, उसको कितने साल बाद काटा गया और तूफ़ाने नूह किस जगह नहीं आया?

जवाबः— मुहम्मद बिन इस्हाक सौरी से मंकूल है कि यह कश्ती साल के पेड़ या चीड़ के पेड़ की थी और यही तौरात में भी लिखा हुआ है और यह पेड़ सौ साल बाद काटा गया था। दूसरा कौल यह है कि यह पेड़ चालीस साल बाद काटा गया था और तूफ़ाने नूह दो जगह नहीं आया। 1. सिन्द, 2. हिन्द।

(अलबिदायः वन्निहायः पेज 110, भाग-1)

सवालः— हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र कहां है?

जवाबः— इब्ने जरीर और अज़रक़ी अ़ब्दुर्रहमान बिन साबित या उसके अलावा तांबिईन से मुरसलन नक़ल करते हुए कहते हैं कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र सही क़ौल के मुताबिक़ मस्जिदे हराम में है। दूसरा क़ौल यह है कि शहर बक़ाअ़ में है जिसको कर्के नूह से याद किया जाता है। वल्लाहु आलम।

(अलबिदायः वन्निहायः पेज 120 भाग-1)

सवालः— हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती में परिन्दों और चौपायों में सबसे पहले और सबसे बाद में कौन-कौन से जानवर दाख़िल हुए?

जवाबः— हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की कश्ती में सबसे पहले परिन्दों में से दुर्रह दाख़िल हुआ और चौपायों में से सबसे बाद में गधा दाख़िल हुआ।

(अलबिदायः ख़ुर्द, पेज 111, भाग-1)

सवालः— सबसे पहले बुतों की इबादत किस क़ौम ने की? उस क़ौम की तरफ़ किस को नबी बना कर भेजा गया था और उनके बुत कितने और कौन-कौन से थे?

जवाबः— सबसे पहले बुतों और पत्थरों की इबादत क़ौमे आ़द ने की, उनके तीन बुत थे (1) सदा (2) समूदा (3) हरा। यह क़ौम इन तीनों को पूजती थी। अल्लाह ने उनकी तरफ़ हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम को नबी बनाकर भेजा था, मगर उन्होंने अल्लाह के नबी की कोई बात न सुनी, आख़िरकार अल्लाह के अ़ज़ाब ने उनको हलाक कर दिया।

(अलबिदायः, पेज 121, भाग-1)

सवालः— हज़रत यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम में तब्लीग़ कितने दिनों तक की?

जवाबः— आप ने अपनी क़ौम में तैंतीस (33) साल तब्लीग़ फ़रमाई।

सवालः— हज़रत ज़करिया अ़लैहिस्सलाम को जिस वक़्त फ़रज़न्द की बशारत मिली उस वक़्त आपकी उम्र शरीफ़ क्या थी?

जवाबः— एक क़ौल यह है कि बानवे (92) साल थी, दूसरा क़ौल यह है कि निन्नानवे (99) साल थी, तीसरा क़ौल यह है कि एक सौ बीस (120) साल थी। (अल-इतक़ान, पेज 348, भाग-2)

सवालः— मिस्र वालों ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के ताबूत को दरिया-ए-नील में किस चीज़ में बन्द करके दफ़न किया था? और कहां दफ़न किया था?

जवाब— जिस वक़्त हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम इन्तिक़ाल फ़रमा गए तो मिस्र वालों ने आपके मदफ़न में झगड़ा किया। आख़िरकार इस बात पर सुलह ठहरी कि संग-ए-मरमर के संदूक़ में करके दरिया-ए-नील की बुलन्दी में दफ़न करें, इस तरह कि तमाम पानी आपके संदूक़ के ऊपर को होकर मिस्र तक पहुंचे, पस तमाम लोग इस तबर्रुक को बराबर इस्तेमाल करते रहें।

(तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान, पेज 136, भाग- 12)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने आपके संदूक़ को दरिया-ए-नील से कितने साल बाद निकलवाया?

जवाबः— चार सौ साल बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने आपके संदूक़ को वहां से निकाल कर उनके आबा व अजदाद (बाप-दादा) के क़रीब दफ़न किया।

(तफ़सीर मुवाहिबुर्रहमान, पेज 136, भाग-12)

फ़रिश्तों से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— क़ियामत में सबसे पहले हिसाब किससे होगा?

जवाबः— हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम से होगा।

(अल-इतक़ान, पेज 60, भाग-1)

सवालः— हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम का असल नाम क्या है? जिबरील किस ज़बान का लफ़्ज़ है और आपकी कुन्नियत क्या है?

जवाबः— असल नाम अ़ब्दुल्लाह है, इमाम सुहैली रह० ने फ़रमाया है कि जिबरील सुरयानी ज़बान का लफ़्ज़ है जिस के मायने अ़ब्दुर्रहमान या अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के हैं जैसा कि एक रिवायत हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की मरफ़ूअ़न व मौक़ूफ़न दोनों तरह मरवी है। ज़्यादा सही रिवायत मौक़ूफ़ है और एक क़ौल यह है कि हज़रत जिबरील अ़लैहिस्सलाम का नाम अ़ब्दुल जलील और कुन्नियत अबुल फ़तह है। (उम्दतुलक़ारी, पेज 72, भाग-1)

सवालः— हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम का असल नाम और कुन्नियत क्या है?

जवाबः— हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम का नाम अब्दुल ख़ालिक़ और कुन्नियत अबुल मुनाफ़िख़ है। (उम्दतुल क़ारी, पेज 72, भाग-1)

सवाल- हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास किस ज़माने में कितने अर्से तक आते रहे?

जवाब— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चालीस साल की उम्र में नुबुव्वत मिली इसके बाद तक़रीबन तीन साल तक वह्य नहीं आई, उस ज़माने में अल्लाह ने हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम को मुक़र्रर फ़रमाया था। उस ज़माने में हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कलिमा और कुछ सिखलाते थे मगर उनके ज़रिए से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कोई वह्य नाज़िल नहीं हुई।

(अल-इतक़ान फी उलूमिल क़ुरआन, पेज 60, भाग-1)

सवालः— हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम को उस ज़माने में मुवक्किल मुक़र्रर करने में हिकमत क्या थी?

जवाबः— हज़रत इब्ने असाकिर ने उसमें यह हिकमत ब्यान की है कि हज़रत इस्राफ़ील क़ियामत के दिन सूर में फूंक मारने पर और क़ियामत के क़ायम करने पर मुवक्किल हैं और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत ख़बर है क़ियामत के क़रीब होने और वह्य का सिलसिला ख़त्म होने की। इस वजह से हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम को मुक़र्रर फ़रमाया। (इतक़ान, पृ० 60, भाग-1)

सवालः— क़ियामत के दिन जो फ़रिश्ता ज़मीन को लपेटेगा, उसका नाम क्या है?

जवाबः— उस फ़रिश्ते का नाम रियाफ़ील है। (अल-इतक़ान, पेज 60, भाग-1)

सवालः— हज़रत मीकाईल का नाम और कुन्नियत क्या है?

जवाबः— हज़रत मीकाईल का मुबारक नाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़ है और कुन्नियत अबुलग़नाइम है। (उम्दतुल क़ारी, पेज 72, भाग-1)

सवालः— हज़रत इज़राईल (मौत का फ़रिश्ता) का असल नाम और कुन्नियत क्या है?

जवाबः— आपका असल नाम अ़ब्दुल जब्बार और कुन्नियत अबू यह्या है।

(ऐनी, शरह बुख़ारी, पेज 72, भाग-1)

सवालः— फ़रिश्तों की मस्जिद का नाम क्या है? और वह कौन-से आसमान पर है?

जवाबः— फ़रिश्तों की मस्जिद बैतुलमामूर है जो सातवें आसमान पर है।

(कंजुल उम्माल, पेज 498, भाग-11)

सवालः— उस मस्जिद यानी बैतुलमामूर में सबसे पहले कौन-सा फ़रिश्ता दाख़िल हुआ और उसमें हर दिन कितने फ़रिश्ते दाख़िल होते हैं?

जवाबः— उस मस्जिद में सबसे पहले दाख़िल होने वाला फ़रिश्ता हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम हैं और इस मस्जिद में हर दिन सत्तर हज़ार फ़रिश्ते दाख़िल होते हैं, फिर क़ियामत तक दोबारा उनका नम्बर नहीं आएगा, बैतुलमामूर की अ़ज़मत आसमान में बैतुल्लाह की तरह है और यह बिल्कुल बैतुल्लाह के मुक़ाबिल है। अगर कोई चीज़ बैतुलमामूर से गिराई जाए तो ठीक बैतुल्लाह पर आकर गिरेगी। (अलबिदायः वन्निहायः पेज 42, भाग-1)

सवालः— क्या फ़रिश्ते भी नमाज़ पढ़ते हैं और उनकी नमाज़ कैसी है?

जवाबः— एक मर्तबा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला सातवें आसमान पर है। सब फ़रिश्ते उसके लिए नमाज़ पढ़ते हैं। हज़रत उ़मर रज़ि० ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम! फ़रिश्तों की नमाज़ क्या है? उस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में कुछ न फ़रमाया। इसके बाद हज़रत जिबरील अमीन तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, ऐ अल्लाह के नबी! उ़मर रज़ि० ने आप से आसमान वालों की नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया है? आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हां। हज़रत जिबरील ने फ़रमाया, उ़मर रज़ि० को मेरी तरफ़ से सलाम कहो और उनको बतला दीजिए कि बेशक आसमाने दुनिया वाले (फ़रिश्ते) सज्दे की हालत में क़ियामत तक कहते रहेंगे, ***सुब्हा-न ज़िल्मुल्कि वल्मलकूति*** और दूसरे आसमान वाले (फ़रिश्ते) रुकूअ़ की हालत में हैं वे क़ियामत तक कहते रहेंगे ***सुब्हा-न ज़िल इ़ज़्ज़ति वल-ज-ब रूत,*** तीसरे आसमान वाले फ़रिश्ते क़ियामत तक क़ियाम की हालत में रहेंगे और कहते रहेंगे ***सुब्हानल हय्यिल्लज़ी ला-यमूतु*** और एक रिवायत में है कि जब से ज़मीन व

आसमान पैदा हुए, जो फ़रिश्ते क़ियाम की हालत में हैं वे क़ियामत तक इसी हालत में रहेंगे और जो रुकू में या सज्दे की हालत में हैं वे क़ियामत तक इसी हाल में इबादत करते रहेंगे और जब क़ियामत के दिन सर उठाएंगे तो कहेंगे:

مَا عَبَدْنَاكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ

"मा अ़बद्ना-क हक़्-क़ इबादति-क" ऐ अल्लाह जिस तरह तेरी इबादत का हक़ था हमने वह अदा नहीं किया।

(कंज़ुलउम्माल पेज 365 भाग-10 व पेज 369 भाग- 10)

हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० की विलादत किस सन में हुई?

जवाबः— आपकी विलादत आमुलफ़ील के तीन साल बाद सन 574 ई० में हुई। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 419, भाग-2)

सवालः— आपको ज़हर किस ने दिया था? आप मरज़ुल वफ़ात में कितने दिन बीमार रहे?

जवाबः— हज़रत सिद्दीक़े अकबर को एक यहूदी ने चावलों में ज़हर दिया था। कुछ ने कहा है कि हरीरः में ज़हर मिलाकर आपको खिला दिया था। कुछ ने कहा कि ज़हर देने वाली एक औरत थी जिस का नाम अलहसूद बतलाया गया है। इस वाक़िए के एक साल बाद आपका इन्तिक़ाल हुआ। कुछ ने कहा कि एक दिन आपने ठंडे पानी में गुस्ल किया, जिससे आपको बुख़ार आ गया और यह बुख़ार पंद्रह दिन रहा। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 419, भाग- 2)

सवालः— आपने बीमारी के ज़माने में इमामत के लिए किसको हुक्म दिया और इन्तिक़ाल किस सन् में किस माह की किस तारीख़ में हुआ? आपकी ज़बान से सबसे आख़िरी कलिमा कौन-सा निकला?

जवाबः— जब आपको बुख़ार पंद्रह दिन आया, तो उसकी वजह से कमज़ोरी इतनी आ गई कि आपने हज़रत उमर रज़ि० को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया। यह बीमारी इतनी बढ़ी कि आप जुमादल उख़्रा की 28 तारीख़ मंगल की रात सन 13 हि० में इस दारेफ़ानी से

تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ

'तवफ़्फ़नी मुस्लिमंव् व अलहिक़्नी बिस्सालिहीन' कहते हुए रुख़्सत हो गए।

(अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 418, 419 भाग-2)

सवालः— आपकी नमाज़े जनाज़ा किसने पढ़ाई और कहां पढ़ाई? किस तख़्त पर आपको उठाया गया? क़ब्र में कौन-कौन दाख़िल हुए थे?

जवाबः— हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० की नमाज़े जनाज़ा हज़रत उमर रज़ि० ने मस्जिदे नबवी में पढ़ाई। आपको (क़ब्र तक) उस तख़्त पर उठाया गया जिस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उठाया गया था और क़ब्र में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि० और हज़रत तलहा रज़ि० दाख़िल हुए। (अलकामिल फ़ित्तारीख़, पेज 419)

सवालः— हज़रत उमर रज़ि० की पैदाइश कब हुई, किस सन् और किस उम्र में इस्लाम क़ुबूल किया?

जवाबः— जिस साल अबरहा बादशाह ने बैतुल्लाह पर हमला किया और अल्लाह ने अबाबील परिन्दों के ज़रिए अपने घर की हिफ़ाज़त फ़रमाई। इस वाक़िए के तेरह साल बाद 584 ई० में आपकी पैदाइश हुई। आपने सन 6 नबवी को 27 साल की उम्र में इस्लाम क़ुबूल किया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पेज 109)

सवालः— जिस वक़्त हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम क़ुबूल किया तो मुसलमानों की तादाद कितनी पुहंच गई थी?

जवाबः— जब हज़रत उमर रज़ि० ने इस्लाम क़ुबूल किया तो चालीस मर्द और 23 औरतें इस्लाम ला चुकी थीं। दूसरा क़ौल यह है कि 39 मर्दों और 23 औरतों के बाद इस्लाम क़ुबूल किया। तीसरा क़ौल यह है कि 45 मर्दों और ग्यारह औरतों के बाद इस्लाम लाए। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पेज 109)

सवालः— हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० किस महीने, किस सन में ख़लीफ़ा बने?

जवाबः— हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० एक मुहर्रम सन 24 हि० को ख़लीफ़ा बनाए गए। (उम्दतुल क़ारी शरह बुख़ारी, पेज 5 भाग-3)

सवालः— हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० को किस ने शहीद किया और किस दिन शहीद किया था, जनाज़ा की नमाज़ किसने पढ़ाई? दफ़न किस जगह किया? कुल उम्र क्या हुई?

जवाबः— आप रज़ि० को असवदुत्तजीबी ने सन 35 हि० में जुमा के दिन शहीद किया। हज़रत हकीम बिन हिज़ाम ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। सनीचर की रात में जन्नतुल बक़ीअ् में दफ़न किया गया। आपकी कुल उम्र ब्यासी (82) साल हुई। (उम्दतुल क़ारी, पेज 5 भाग-3)

सवालः— हज़रत अ़ली रज़ि० का लक़ब कर्रार किसने रखा और क्यों रखा?

जवाबः— हज़रत अ़ली रज़ि० का कर्रार लक़ब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने रखा, क्योंकि कर्रार के मायने बार-बार हमला करने वाले के आते हैं और हज़रत अ़ली रज़ि० भी दुश्मन पर बार बार हमला करने वाले थे, इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने आपका लक़ब कर्रार रखा था।

(ग्यासुल्लुग़ात)

सवालः— हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को कर्रमल्लाहु वज्हहु कहने की क्या वजह है?

जवाबः— हज़रत अ़ली रज़ि० को कर्रमल्लाहु वज्हहु कहने की दो वजह ब्यान की गई हैं (1) हज़रत अ़ली को कर्रमल्लाहु वज्हहू इसलिए कहा जाता है कि उन्होंने कभी असनाम (बुतों) को सज्दा नहीं किया। अल्लाह ने आपकी पेशानी को बुतों के सामने झुकने से महफ़ूज़ रखा (इसलिए आपका मुबारक चेहरा मुकर्रम है) (2) दूसरी वजह यह है कि बनू उमैया में कुछ लोग हज़रत अ़ली रज़ि० को (कीना और दुश्मनी की वजह से) 'सव्वदल्लाहु वज्हहू' (अल्लाह आपके चेहरे को, (मआज़ल्लाह) स्याह करे) के अल्फ़ाज़ से पुकारते थे। उनके जवाब में अह्ले सुन्नत वल जमाअ़त ने कर्रमल्लाहु वज्हहू (अल्लाह आपके चेहरे को मुकर्रम व मुशर्रफ़ बनाए) कहना तै किया था। (तक़रीर तिर्मिज़ी मअ् शमाइल, पेज 125 अज़ हज़रत शैख़ुल इस्लाम मौलाना सय्यिद हुसैन अहमद साहिब मदनी रह०)

सवालः— हज़रत अ़ली रज़ि० ने ख़ैबर की लड़ाई में जो दर-ए-ख़ैबर (ख़ैबर का दरवाज़ा) उखाड़ कर फेंका था, उसका वज़न क्या था?

जवाबः— आठ सौ (800) मन था।

(अत्तअ़ब्बुज़ फ़िलइस्लाम, पेज 138 ब-हवाला मआ़रिज)

सवालः— हज़राते सहाबा ने पहली बार हब्शा की तरफ़ हिज्रत किस सन में की? ये कितने लोग थे और हब्शा में कितने दिनों तक रहे?

जवाबः— सहाबा ने सन 5 नबवी में बारह मर्द और चार औरतों के साथ

मुल्क-ए-हब्शा की तरफ़ हिजरत की। जब तीन महीने हब्शा में गुज़र गए तो उनको यह ख़बर मिली कि मक्का के सब लोग मुसलमान हो गए हैं; इसलिए ये लोग मक्का को रवाना हो गए मगर यह ख़बर ग़लत निकली। (सय्यिदुलकायनात)

सवालः— हब्शा की तरफ़ दूसरी हिजरत में कितने लोग थे?

जवाबः— दूसरी बार मुहाजिरीन का यह क़ाफ़िला तिरासी (83) मर्दों और उन्नीस (19) औरतों पर मुश्तमिल था। (ऊपर का हवाला)

सवालः— वे कौन-से सहाबी हैं जो सबसे पहले जन्नत का फल खाएंगे?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नत का फल सबसे पहले अबू दह्दाह रज़ि० खाएंगे।

(कंजुलउम्माल, पेज 756 भाग- 11 बहवाला दैलमी)

सवालः— वे कौन से सहाबी हैं जो सहाबा में सबसे पहले हौज़-ए-कौसर का पानी पिएंगे?

जवाबः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सबसे पहले मेरे हौज़ से सुहैब रूमी रज़ि० पानी पिएंगे।

(कंजुलउम्माल, पेज 756 भाग- 11 दैलमी के हवाले से)

सवालः— क़ियामत के दिन फ़रिश्ते सहाबा में से सबसे पहले किस से मुसाफ़ा करेंगे?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे पहले फ़रिश्ते अबुद्दर्दा रज़ि० से मुसाफ़ा करेंगे।

(कंजुलउम्माल, पेज 756 भाग- 11)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किस-किस सहाबी को "फ़िदा-क अबी व उम्मी" कहा था?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि० और हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० के अलावा किसी को "फ़िदा-क अबी व उम्मी" नहीं फ़रमाया। (इब्ने माजा, पेज 12)

सवालः— हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० किस वक़्त इस्लाम लाए और पहले किस मज़हब के पैरूकार थे और इस्लाम से पहले उनका नाम क्या था?

जवाबः— जिस वक़्त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना में

तशरीफ़ लाए, उस वक़्त हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० ने इस्लाम क़ुबूल किया (अस्माउर्रिजाल मिश्कात, पेज 597) और यह इस्लाम से पहले आतिश परस्त थे और उनका पहला नाम मावा बिन बूज़ख़्शां था। (हाशिया असख़ुल्सियर पेज 144)

सवालः— हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु की उम्र कुल कितनी हुई?

जवाबः— हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० की उम्र कुछ ने ढ़ाई सौ साल और कुछ ने तीन सौ पचास साल ब्यान की है मगर इन दोनों क़ौलों में पहला क़ौल ज़्यादा सही है। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात पेज 597) और हज़रत शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने यह भी लिखा है कि उन सहाबी ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़माना भी पाया है। (हाशिया अस्माउर्रिजाल, पेज 597)

सवालः— हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु का इन्तिक़ाल किस सन और किस शहर में हुआ?

जवाबः— आपका इन्तिक़ाल सन 35 हि० शहर मदाइन के अन्दर हुआ (अस्माउर्रिजाल मिशकात शरीफ़ पेज 597) और ख़िलाफ़ते उस्मानिया के आख़िर में हुआ। (उसदुलग़ाबा फ़ी तम्यीज़ी सिस्तहाबा, पेज 16 भाग- 3)

सवालः— इस्लाम में हिजरत के बाद मुहाजिरीन में सबसे पहले पैदा होने वाला बच्चा कौन-सा है?

जवाबः— हिजरत के बाद मुहाजिरीन में सबसे पहले पैदा होने वाला बच्चा हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हैं। (अलबिदायः वन्निहायः पेज 235 भाग- 3)

सवालः— अन्सार में हिजरत के बाद पैदा होने वाला सबसे पहला बच्चा कौन है?

जवाबः— हिजरत के बाद अन्सार में सबसे पहले हज़रत नोमान बिन बशीर पैदा हुए। (अलबिदायः पेज 230 भाग-3)

सवालः— हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के मुंह में सबसे पहले कौन-सी चीज़ गई?

जवाबः— उनके मुंह में सबसे पहले आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लुआबे दहन गया। (अलबिदायः पेज 230 भाग-3)

सवालः— हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर जब पैदा हुए तो सहाबा ने ज़ोर से तकबीर क्यों कही?

जवाबः— ज़ोर से तकबीर कहने की वजह यह पेश आई कि यहूद ने हज़रत अस्मा बिन्त-ए-अबी बक्र रज़ि० पर जादू करा दिया था और वह यह गुमान करते थे कि उसके बाद हज़रत अस्मा के कोई बच्चा न होगा, मगर अल्लाह ने यहूद के इस बातिल ख़्याल को तोड़ा, इसलिए सहाबा ने ज़ोर से तकबीर पढ़ी (जिस का मक़्सद यह था कि अल्लाह की बड़ी शान और बड़ी कुद्रत है कि जादू करने के बावुजूद भी वह बच्चा पैदा कर सकते हैं)। (अलबिदायः पेज 91)

सवालः— हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० को यहूद की किताबें पढ़ने को किसने कहा था और हज़रत ज़ैद ने कितने रोज़ में किताबें पढ़ ली थीं?

जवाबः— उनको आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि तुम यहूदियों की किताबें पढ़ो। आपने ये किताबें (कुतुबे यहूद) पंद्रह रोज़ में पढ़ ली थीं। (अलबिदायः पेज 91)

सवालः— हज़रत आमिर बिन फुहैरा कौन थे, उनको किस लड़ाई में किसने शहीद किया और किसने दफ़न किया?

जवाबः— यह सहाबी हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि० के वे गुलाम थे जो बकरियां चराते थे। यही वह आमिर हैं जो ग़ारे सौर में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को बकरियों का दूध पिलाते थे। यह बद्र की लड़ाई और उहुद की लड़ाई में शरीक हुए। बीरे मऊना की लड़ाई में उनको आ़मिर बिन तुफ़ैल ने शहीद किया और उनको फ़रिश्तों ने दफ़न किया। (हाशिया दलाइलुन नुबुव्वत, पेज 475 भाग-2)

सवालः— वे दस सहाबा जिन को आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जन्नत की बशारत दी, जिनको "अशरा मुबश्शरा" कहा जाता है वे कौन-कौन सहाबी हैं?

जवाबः— वे दस सहाबा ये हैं (1) हज़रत अबू बक्र रज़ि० (2) हज़रत उमर रज़ि० (3) हज़रत उस्मान रज़ि० (4) हज़रत अ़ली रज़ि० (5) हज़रत तलहा रज़ि० (6) हज़रत ज़ुबैर रज़ि० (7) हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० (8) हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० (9) हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन उमर रज़ि० (10) हज़रत अबू उबैदा बिन अलजर्राह रज़ि०। (मुस्नद अबूयाला अलमूसली, पेज 383 भाग-1)

सवालः— क़ियामत के दिन उलमा का इमाम किस सहाबी को बनाया जाएगा?

जवाबः— जब उलमा अपने रब के सामने हाज़िर होंगे तो हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० सबसे आगे होंगे। (कंज़ुल उम्माल, पेज 744)

सवालः— हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० की कुल उम्र कितनी हुई और उनका इन्तिक़ाल किस सन् में किस बीमारी में हुआ?

जवाबः— आपकी कुल उम्र 38 साल हुई। आपका इन्तिक़ाल 18 हि० में ताऊन की बीमारी में हुआ। (उसुदुलग़ाबा, पेज 197 भाग-5)

सवालः— हज़रत बिलाल रज़ि० हश्र के मैदान में किस सवारी पर सवार होकर आएंगे?

जवाबः— जन्नत की ऊंटनी पर अज़ान देते हुए आएंगे जो भी अज़ान सुनेगा वह हज़रत बिलाल की तस्दीक़ करेगा, यहां तक कि महशर भर जाएगा और जन्नत के लिबास के दो हुल्ले (दो जोड़े) लाए जाएंगे वह हज़रत बिलाल रज़ि० को पहनाये जाएंगे। सबसे पहले अज़ान देने वालों में हज़रत बिलाल रज़ि० को लिबास पहनाया जाएगा। (कंज़ुल उम्माल, पेज 499 भाग- 11)

सवालः— हज़रत फ़ातिमा रज़ि० क़ियामत के दिन (महशर के मैदान में) किस सवारी पर सवार होकर आएंगी?

जवाबः— हज़रत फ़ातिमा रज़ि० आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ऊंटनी अ़ज़बा पर सवार होकर आएंगी। (कंज़ुल उम्माल, पेज 499 भाग-11)

सवालः— हज़रत सफ़ीना जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के गुलाम थे, उनका असल नाम क्या था?

जवाबः— हज़रत सफ़ीना का असल नाम मेहरान था।

(कंज़ुल उम्माल, पेज 692 भाग-11)

चारों इमामों रह्मतुल्लाहि अ़लैहिम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अ़लैहि की पैदाइश व वफ़ात का सन क्या है और कहां दफ़न हुए हैं और आपके ज़माने में कितने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ज़िन्दा थे और कहां-कहां?

जवाबः— आप सन 80 हि० में कूफ़ा में पैदा हुए और वफ़ात 150 हि०

बग़दाद में हुई। आपकी क़ब्र मक़बरा ख़ैरज़ान में है। आपके ज़माने में चार सहाबा ज़िन्दा थे (1) हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० बसरा में, (2) अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा रज़ि० कूफ़ा में, (3) सह्ल बिन साद साइदी रज़ि० मदीना में, (4) अबू तुफ़ैल[1] आ़मिर बिन वासिला रज़ि० मक्का में। मगर आपकी इनमें से किसी से मुलाक़ात न हो सकी। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात, पेज 624)

सवालः— हज़रत इमाम मालिक रहमतुल्लाहि अ़लैहि की पैदाइश व वफ़ात का सन क्या है?

जवाबः— आपकी पैदाइश सन 95 हि० में हुई (अस्माउर्रिजाल, मिशकात पेज 624) कुछ ने सन् 90 हि० और कुछ ने 93 हि० और कुछ ने 94 हि० भी ब्यान किया है (अहवालुल मुसन्निफ़ीन पेज 77)। आपका इन्तिक़ाल मदीना में 199 हि० में हुआ। (अस्माउर्रिजाल मिश्कात, पेज 624)

सवालः— हज़रत इमाम शाफ़ई रह० की पैदाइश व वफ़ात का सन क्या है?

जवाबः— आप फ़िलिस्तीन में सन 150 हि० में, कुछ ने कहा अ़स्क़लान में और कुछ ने कहा यमन में उसी सन में और कुछ के क़ौल के मुताबिक़ उसी महीने में पैदा हुए जिसमें इमामे आज़म अबू हनीफ़ा का इन्तिक़ाल हुआ। अहले तवारीख़ के दर्मियान सन वाली रिवायत मशहूर है और आपका इन्तिक़ाल जुमा की रात के आख़िरी हिस्से में रजब के महीने के आख़िरी दिन सन 204 हि० मिस्र में हुआ। (अस्माउर्रिजाल, मिश्कात, पेज 626)

सवालः— हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० की पैदाइश व वफ़ात का सन क्या है?

जवाबः— आपकी विलादत बग़दाद में सन 164 हि० में हुई और वफ़ात सन 241 हि० में हुई। (ऊपर का हवाला)

हज़रात अइम्मा-ए-सिहाहे सित्ता से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— इमाम बुख़ारी की पैदाइश और वफ़ात का सन क्या है?

1. सबसे आख़िरी सहाबी हज़रत अबुतुफ़ैल आ़मिर बिन वासिला हैं, जिनका इंतिकाल सन् 102 हि० में मक्का में हुआ ('तराशे' मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी)

जवाबः— इमाम बुख़ारी (मुहम्मद बिन इस्माईल) 13 शव्वाल सन 194 हि० जुमा की नमाज़ के बाद बुख़ारा में पैदा हुए और वफ़ात सन 256 हि० शव्वाल के महीने में इशा की नमाज़ के बाद बासठ (62) साल की उम्र में हुई।

(अस्वालुलमुसन्निफ़ीन पेज 107)

सवालः— इमाम मुस्लिम की पैदाइश व वफ़ात का सन क्या है?

जवाबः— इमाम मुस्लिम की पैदाइश का सन मुहम्मद बिन सलाह ने सन 202 हि० ब्यान किया है और अबू अ़ब्दुल्लाह नीशापुरी ने 206 हि० नक़्ल किया है और यह दूसरा क़ौल ज़्यादा सही है। आप ख़ुरासान के मशहूर शहर नीशापुर में पैदा हुए। आपकी वफ़ात 25 रजब को सनीचर के दिन सन 261 हि० में हुई। आपको नीशापुर के बाहर नसीराबाद में दफ़न किया गया। (अस्वालुलमुसन्निफ़ीन)

सवालः— इमाम अबूदाऊद की पैदाइश व वफ़ात का सन क्या है?

जवाबः— आप शहर सीस्तान में सन् 202 हि० में पैदा हुए। 73 साल ज़िन्दा रहकर 16 शव्वाल को जुमा के दिन सन 275 हि० में इस दारेफ़ानी को छोड़ चले। (अस्वालुलमुसन्निफ़ीन, सन 129)

सवालः— इमाम तिर्मिज़ी, इमाम इब्ने माजा व इमाम नसाई की पैदाइश व वफ़ात का सन क्या है?

जवाबः— इमाम तिर्मिज़ी की पैदाइश का सन 209 हि० है और आपका इन्तिक़ाल मक़ाम-ए-तिर्मिज़ में 13 रजब को दोशंबा (पीर) की रात सन 279 हि० में हुआ। दूसरा क़ौल सन 275 हि० का भी है। (इस क़ौल को समुआनी ने ज़िक्र किया है) मगर पहला क़ौल ज़्यादा सही है (अस्वालुल मुसन्निफ़ीन, पृ० 147) और इमाम इब्ने माजा सन 209 हि० व सन 824 ई० यानी ख़लीफ़ा[1] मोतमिद बिल्लाह के ज़माने में पैदा हुए और आपका इन्तिक़ाल 21 रमज़ान को दोशंबा (पीर के दिन) सन 272 हि० में हुआ और इमाम नसाई की पैदाइश का सन 215 हि० है, दूसरा क़ौल 230 हि० का है (अह्वालुल मुसन्निफ़ीन पेज 147)। आपकी वफ़ात 13 सफ़र सन 303 हि० में हुई। मक्का में आपको सफ़ा व मरवा के बीच में दफ़न किया गया। एक रिवायत आपकी वफ़ात के मुताल्लिक़ यह भी है कि मक्का मुअ़ज़्ज़मा जाते हुए रास्ते में शहर रमला के मक़ाम पर (जो

1. इमाम नसाई के अलावा तमाम सिहाह-ए-सित्ता के इमामों की वफ़ात ख़लीफ़ा मोतमिद बिल्लाह अब्बासी के ज़माने में हुई। (अह्वालुल मुसन्निफ़ीन, पेज 140)

फ़िलिस्तीन में है) इन्तिक़ाल हुआ। फिर आपकी लाश को मक्का लाया गया।

सवालः— इमाम तहावी (रह०) की पैदाइश व वफ़ात का सन क्या है?

जवाबः— आपके पैदाइश के सन में बहुत ज़्यादा इख़्तिलाफ़ है। मुअर्रिख़ इब्ने ख़ल्लकान ने आपकी पैदाइश सन् 238 हि० ब्यान की है। हाफ़िज़ इब्ने असाकिर इब्ने यूनुस की रिवायत के मुताबिक़ ब्यान करते हैं कि इमाम तहावी की पैदाइश सन 239 हि० में हुई। अल्लामा ज़हबी ने दूसरे क़ौल को सही क़रार दिया है, मगर अल्लामा ऐनी फ़रमाते हैं कि इमाम तहावी की पैदाइश सन 229 हि० में हुई, यही दुरुस्त मालूम होता है। अबू सईद बिन यूनुस का ब्यान है कि इमाम तहावी ने फ़रमाया कि मेरी पैदाइश सन 229 हि० रबीउ़ल अव्वल की दस तारीख़ को सनीचर की रात में हुई और वफ़ात ज़ीक़ादा की चांद रात जुमरात की रात सन 321 हि० में हुई। आपकी क़ब्र शरीफ़ क़राफ़ा में है।

(अस्वालुल मुसन्निफ़ीन, पेज 164)

पिछले दौर के बादशाहों के अलक़ाब

सवालः— पहले ज़माने में किस मुल्क के बादशाह का क्या लक़ब होता था?

जवाबः— पूरी दुनिया का तो इल्म नहीं, कुछ को नीचे लिखा जाता है :

(1) फ़ारस के बादशाह का लक़ब किसरा होता था। (2) तुर्क (तुर्किस्तान) के बादशाह का लक़ब ख़ाक़ान होता था। (3) मुल्क-ए-हब्शा के बादशाह को नजाशी के लक़ब से याद किया जाता था। (4) क़िब्तियों के बादशाह का लक़ब फ़िरऔन होता था (5) मिस्र के बादशाह का लक़ब अज़ीज़ और फ़िरऔन भी होता था (6) हिम्यर के बादशाह का लक़ब तुब्बअ होता था, (7) हिन्दुस्तान के बादशाह का लक़ब घम्मी होता था, (8) चीन के बादशाह का लक़ब फ़ग़फ़ूर होता था, (9) ज़ंजियों (हब्शियों) के बादशाह का लक़ब ग़ानः होता था (10) यूनान के बादशाह का लक़ब बितलमियू होता था, (11) यहूदियों के बादशाह का लक़ब क़ीतून या मातेह होता था, (12) बरबर, जो मग़रिबी अफ़्रीक़ा की एक क़ौम है, उनके बादशाह का लक़ब जालूत होता था, (13) साबिआ (नसारा का एक फ़िर्क़ा है) के बादशाह का लक़ब नमरूद होता था, (14) यमन के बादशाह का लक़ब तबअ़न होता था, (15) फ़रग़ाना के बादशाह का लक़ब

अख़शीद होता था, (16) अरब के बादशाह का लक़ब अजम से पहले नोमान होता था, (17) अफ़्रीका के बादशाह का लक़ब हब्रजीर होता था, (18) ख़ल्लात के बादशाह का लक़ब शहरमान और संदफ़ूर होता था, (19) सक़ालिबा के बादशाह का लक़ब माजिदा होता था, (20) अलअस्मन के बादशाह का लक़ब तक़फ़ूर होता था, (21) अलहज़्ज़र के बादशाह का लक़ब तबील होता था, (22) अन्नौबा के बादशाह का लक़ब काबिल होता था, (23) अलाजात के बादशाह का लक़ब ख़ुदावन्द कार होता था, (24) अशरुश्ना के बादशाह का लक़ब अफ़शीन होता था, (25) ख़्वारिज़्म के बादशाह का लक़ब ख़्वारिज़्म शाह होता था, (26) जुरजान के बादशाह का लक़ब सूल होता था, (27) आज़र बाईजान के बादशाह का लक़ब असबहीन होता था, (28) तब्रिस्तान के बादशाह का लक़ब सालार होता था, (उमदतुल क़ारी शरह बुख़ारी, पेज 79 भाग-1) और उम्दतुल क़ारी पेज 80 भाग-1 पर यह है कि इराक़ के बादशाह का लक़ब किसरा और मुल्के शाम के बादशाह का लक़ब क़ैसर होता था।

नुबुव्वत का झूठा दावा करने वाले

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद जिन लोगों ने नुबुव्वत का झूठा दावा किया है वे कौन-कौन थे?

जवाबः— ऐसे लोग हम को सिर्फ़ अठारह (18) मिले हैं जिनको तर्तीब के साथ लिखा जाता है। (1) अस्वद अंसी ने नुबुव्वत का दावा किया। यह सन्आ (यमन) में गुज़रा है उसको फ़ीरोज़ दैलमी ने क़त्ल किया था। (2) मुसैलमा कज़्ज़ाब-यमामा में गुज़रा है जिसको हज़रत वहशी बिन हर्ब ने क़त्ल किया था। (3) तुलैहा असदी ने भी नुबुव्वत का दावा किया था। यह एक काहिन था, बनी इसराईल के कुछ क़बीले उस पर ईमान लाए मगर बाद में यह हज़रत उमर रज़ि० के हाथ पर बैत होकर मुसलमान हुआ (4) सजाह बिन्ते हारिस (जो क़बीला बनी तग़लब से थी) ने नुबुव्वत का दावा किया था और उसने अपनी क़ौम पर पांच वक़्त की नमाज़ों को बाक़ी रखा था। (तारीख़े इस्लाम, पेज 273) उसने मुसैलमा कज़्ज़ाब से शादी कर ली थी। सजाह निकाह के बाद मुसैलमा के पास तीन दिन रही। जब अपनी क़ौम में आई तो क़ौम ने निकाह के मह्र के बारे में मालूम किया और कहा कि बग़ैर मह्र के तो निकाह नहीं होता। इस पर सजाह

मुसैलमा के पास गई तो मुसैलमा ने कहा कि मैंने तेरे महर में तेरी जमाअ़त के लिए दो नमाज़ें यानी इशा व फ़ज्र माफ़ कर दी हैं। (तारीख़े इस्लाम पेज 274) मगर यह औरत बाद में हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ि० के ज़माने में मुसलमान हो गई थी। (5) मुख़्तार सक़फ़ी ने भी नुबुव्वत का दावा किया था और यह अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के ज़माने में गुज़रा है (6) मुतनब्बी शायर ने भी नुबुव्वत का दावा किया था मगर बाद में ताइब हुआ। (7) बहबूद ने भी नुबुव्वत का दावा किया था, यह ख़लीफ़ा मोतमिद बिल्लाह के ज़माने में गुज़रा है (8) अकरवैह अलक़िरमिती यह मुकतफ़ी बिल्लाह के ज़माने में गुज़रा है, उसने हजरे अस्वद भी चुरा लिया था (9) नवाह नहावन्द में भी एक शख़्स ने नुबुव्वत का दावा किया था (10) मुल्के यमन में एक शख़्स गुज़रा है जिसने अपना नाम *'ला'* रखा था और वह यह कहता था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मेरे मुताल्लिक़ बशारत दी है कि **"ला नबिय्य बादी"** यानी "ला" मेरे बाद नबी होगा (11) एक और औरत ने नुबुव्वत का दावा किया था जो कहती थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने **"ला नबिय्य"** ही तो फ़रमाया है **"ला नबिय्य-त बादी"** तो नहीं फ़रमाया यानी यह हदीस मर्दों के हक़ में है, औरतों के हक़ में नहीं है। आपके बाद औरत नबिय्या हो सकती है। (12) एक यहूदी ने बैतुल मक़्दिस में मसीह होने का दावा किया था मगर जब उसको गिरफ़्तार करके पिटाई की गई तो ताइब होकर मुसलमान हो गया था (13) इस्हाक़ अख़रस बसरा में गुज़रा है। उस पर बसरा और उमान के लोग ईमान लाए थे (14) फ़ारस बिन यह्या साबाती ने भी नुबुव्वत का दावा किया था जो मिस्र के शहर तनीस में गुज़रा है (15) एक बकरी चराने वाले (गडरया) ने भी नुबुव्वत का दावा किया था, असल में यह जादूगर था जो हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की तरह एक अ़सा रखता था और जादू के ज़रिए लाठी का अज़दहा बना देता था (16) अ़ब्दुल्लाह बिन मैमून ने ख़लीफ़ा मामून के ज़माने में नुबुव्वत का दावा किया था। मामून ने उसको क़ैद में बन्द करा दिया, यह क़ैद ही के अन्दर मर गया था (17) ग़ाज़ानी साहिर ने भी नुबुव्वत का दावा किया था (18) मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादयानी ने 1400 हि० के शुरू में नुबुव्वत का दावा किया था, जिसकी पैरवी करने वाले आज भी लोगों को माल व दौलत का लालच देकर गुमराह कर रहे हैं। (तिर्मिज़ी शरीफ़ मुतर्जम, पेज 840 अज़ मौलाना बदीउज़्ज़माँ)

मुतफ़र्रिक़ बातें

सवालः— रेडियो का ईजाद करने वाला कौन है?

जवाबः— रेडियो का ईजाद करने वाला मारकोनी है।

(फ़तावा महमूदिया पेज 88 भाग-1)

सवालः— कम्युनिज़्म (कम्युनिस्ट) पार्टी का अ़क़ीदा क्या है और उसका मूजिद (बानी) कौन है?

जवाबः— यह पार्टी ख़ुदा का इंकार करती है और इसका अक़ीदा यह है कि इन्सानों को मज़हब से लड़ाया जाए। इस मज़हब के मूजिद (ईजाद करने वाले) मार्कस और लेनेन हैं जो दोनों यहूदी हैं। (फ़तावा महमूदिया, पेज 104 भाग-1)

सवालः— क्या शैतान किसी नबी की शक्ल में आ सकता है?

जवाबः— कोई शैतान किसी नबी की शक्ल में नहीं आ सकता।

(फ़तावा महमूदिया, पेज 106 भाग-1)

सवालः— रात को आसमान पर जो सफ़ेदी रास्ते की शक्ल में सीधी नज़र आती है यह क्या है? लोगों का कहना है कि यह पुलसिरात है।

जवाबः— इसको पुलसिरात कहना ग़लत है बल्कि इस जगह से क़ियामत के दिन आसमान फटेगा। (फ़तावा महमूदिया पेज 13 भाग-1)

सवालः— मुज्तहिदीन तो बहुत हुए हैं, फिर चार इमामों ही की क्यों तक़लीद की जाती है? सहाबा की क्यों नहीं की जाती, जबकि उनके फ़ज़ाइल बहुत हैं?

जवाबः— सहाबा किराम यक़ीनन चारों इमाम से बहुत अफ़्ज़ल व बरतर हैं मगर सहाबा के दौर में उलूम की तदवीन (जमा करना) नहीं हुई थी। चारों इमामों ने उलूम को मुदव्वन (जमा) कर दिया। इस तफ़सील के साथ सहाबा में से किसी सहाबी का मज़हब मुदव्वन नहीं हुआ और न ताबेईन व तबअ़ ताबेईन में हुआ। हदीसों का जितना ज़ख़ीरा है वह सब इन चारों के पास मौजूद था। यह तो हो सकता है कि एक को मालूम हो दूसरे को न हो मगर यह नहीं हो सकता कि चारों ही न जानते हों (फ़तावा महमूदिया, पेज 384 भाग-1)

सवालः— फिर चार इमामों में यह क्यों ज़रूरी है कि उन चारों में से सिर्फ़ एक ही की पैरवी कर सकता है, दूसरे की नहीं?

जवाबः— कुरूने ऊला (सहाबा के दौर) में ख़ैर का ग़लबा था। नफ़सानी ख़्वाहिशों का आम तौर से दीन में दख़ल न था, जो शख़्स अपने जिस बड़े से कोई दीन का मसअला मालूम करता चाहे उसकी तबीयत के ख़िलाफ़ पड़ता मगर उस पर अमल करता था। आज कल ऐसा नहीं, बल्कि आसानी व रुख़्सत की तलाश रहती है। (फ़तावा महमूदिया, पेज 385 भाग- 1)

सवालः— शद्दाद की कुल उम्र क्या हुई?

जवाबः— शद्दाद की कुल उम्र नौ सौ (900) साल हुई। (सावी, पेज 317 भाग-4)

सवालः— शद्दाद ने जिस जन्नत की तामीर कराई थी उसकी तामीर कितने दिनों में हुई थी?

जवाबः— यह बाग़ और जन्नत जो शद्दाद ने बनवाई थी उसकी तामीर तीन साल में पूरी हुई थी। (सावी, पेज 317 भाग-1)

सवालः— तालूत बादशाह किस नबी के ज़माने में हुआ? उसने क्या ग़लती की और उसकी तौबा कैसे कुबूल हुई?

जवाबः— तालूत हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में मुसलमानों का बादशाह था, उसको हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम से हसद हो गया था और उनको क़त्ल कर देने के दरपे हो गया था। उलमा ने उसको इस काम से मना किया मगर जो आ़लिम उसको मना करता यह उसको भी क़त्ल कर देता। बहुत से उलमा को उसने क़त्ल कर दिया फिर उसको तनब्बुह हुआ तो यह जंगलों में जाकर बेतहाशा रोता। एक आ़बिदा औरत उसको हज़रत यूशअ़ अ़लैहिस्सलाम की क़ब्र पर ले गई। अल्लाह के हुक्म से वह ज़िन्दा हुए और तालूत से फ़रमाया कि तू अपने बेटों के साथ अल्लाह के रास्ते में जिहाद में शहीद हो जाए तो तेरी तौबा कुबूल होगी। उसने ऐसा ही किया। (अलबिदाय:)

सवालः— नमरूद बादशाह ने कितने साल हुकूमत की? और मच्छर उसकी नाक के नथुने में कितने साल तक घुसा रहा?

जवाबः— नमरूद ने चार सौ (400) साल तक हुकूमत की और चार सौ (400) साल तक मच्छर उसकी नाक में घुसा रहा। (अलबिदाय: भाग-1 पेज 148-149)

सवालः— नमरूद ने हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम से मुनाज़रा व मुजादला किस दिन किया?

जवाबः— इमाम सुद्दी ने ज़िक्र किया है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के साथ नमरूद का मुहाज्जा व मुनाज़रा व मुबाहसा (बहस) उस दिन हुआ जिस दिन हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आग से निकले। (अलबिदायः पेज 149 भाग-1)

सवालः— क़ारून हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का रिश्ते में क्या लगता था? तौरात में उसका नाम क्या था?

जवाबः— यह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के चचा का लड़का था उसका नाम तौरात में हसीन (ख़ूबसूरत) होने की वजह से अन्नूर था।

(अलबिदायः वन्निहायः पेज 309 भाग-1)

सवालः— क़ारून के ख़ज़ाने की कुंजियां कितने ख़च्चरों पर लादी जाती थीं?

जवाबः— क़ारून को अल्लाह ने इतना ख़ज़ाना दिया था कि ख़ज़ानों की कुंजियां सत्तर ख़च्चरों पर लादी जाती थीं। (अलबिदायः पेज 309, भाग-1)

सवालः— मस्जिदे नबवी की मेहराब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में नहीं थी। यह मेहराब बाद में किसके ज़माने में किसने तैयार कराई थी?

जवाबः— हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रात खुलफ़ा-ए-राशिदीन रज़ि० के ज़माने में मस्जिदे नबवी की महराब नहीं थी। यह मेहराब सबसे पहले वलीद के ज़माने में हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बनवाई थी।

(तारीख़े हरमैन शरीफ़ैन, पेज 83 खुलासतुलवफ़ा के हवाले से, पेज 272)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए खुतबा देने के लिए मिम्बर किसने बनवाया और किस पेड़ की लकड़ी का था?

जवाबः— इसमें कई क़ौल हैं (1) हज़रत तमीम दारी रज़ि० ने बनवाया (रवाहु अबूदाऊद) (2) क़बीसा मख़ज़ूमी ने बनवाया जो एक औरत का गुलाम था। (3) हज़रत अब्बास रज़ि० के गुलाम ने जिसका नाम सब्बाह या किलाब था। (4) सईद बिन आस के गुलाम ने, जिसका नाम बाक़ौल था। (5) एक अंसारिया औरत के गुलाम ने जिसका नाम मीना था (6) हज़रत सहल का ब्यान है कि मैं मदीना के एक बढ़ई को जंगल लेकर गया उसने झाऊ के पेड़ की लकड़ी काट कर उससे मिम्बर तैयार किया। उस बढ़ई का नाम कुछ ने मैमून बताया है।

(तारीख़े हरमैन, पेज 97)

सवालः— सातों आसमान किस-किस चीज़ के बने हुए हैं?

जवाबः— पहला आसमान ठहरे हुए पानी का है, दूसरा आसमान सफ़ेद मोती का, तीसरा आसमान लोहे का, चौथा आसमान तांबे का, पांचवां आसमान चांदी का है, छठा आसमान सोने का और सातवां आसमान सफ़ेद ज़मर्रुद (पन्ने) का बना हुआ है। (रूहुलमआनी, पेज 6, भाग- 30)

आख़िरत से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— मुर्दा तो बेजान होता है, फिर उससे क़ब्र में सवाल व जवाब किस तरह हो सकते हैं?

जवाबः— इन्सान के जिस्म से जो रूह निकाली जाती है सवाल व जवाब के वक़्त वह रूह मुर्दा शख़्स के जिस्म में डाल दी जाती है जिससे वह जान वाला होकर जवाब देता है।

(शरफुल मुकालमा पेज 11 : मौलाना मसीहुल्लाह ख़ान साहिब नव्वरल्लाहु मरक़दः)

सवालः— हम देखते हैं कि मुर्दा चन्द दिनों के अन्दर क़ब्र में रेज़ा-रेज़ा हो जाता है, निशान तक बाक़ी नहीं रहता फिर उसको वहां राहत व तकलीफ़ अज़ाब व सवाब क्या मालूम होगा?

जवाबः— दुनिया व आख़िरत के दर्मियान एक और आलम है जहां पर दुनिया की सब चीज़ों के जिस्म मौजूद हैं उस आलम को आलमे मिसाल भी कहते हैं और आलमे बरज़ख़ भी। जिस वक़्त फ़रिश्ता रूह निकाल कर ले जाता है तो उस जिस्म में वह रूह डाल दी जाती है, फिर अगर मुर्दा को दफ़न किया गया है तो वही रूह क़ब्र के अन्दर उस जिस्म में डाल कर सवाल व जवाब किया जाता है और उस जिस्म के क़ब्र में मौजूद होने तक तकलीफ़ व राहत पहुंचती है और अगर मुर्दा क़ब्र में दफ़न न किया जाए बल्कि जला दिया जाए या कोई दरिन्दा भेड़िया वग़ैरह खा जाये तो सवाल व जवाब रूह को उस आलमे मिसाल वाले जिस्म में डाल कर किया जाता है और उसी जिस्म को आराम व तकलीफ़ पहुंचती रहती है। इसी तरह मुर्दा जब क़ब्र में रेज़ा-रेज़ा हो जाता है तो फिर उसी आलमे मिसाल के जिस्म में रूह को तकलीफ़ व आराम मिलता है। क़ियामत तक उसी जिस्म के साथ राहत व तकलीफ़ मुताल्लिक़ रहेगी, फिर बाद क़ियामत इस दुनियावी जिस्म को अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से मौजूद कर

देंगे और क़ियामत के बाद से हमेशा-हमेशा तक इसी जिस्म-ए-दुनियावी को दोज़ख़ की तकलीफ़ और जन्नत का सुकून नसीब होता रहेगा।

(शरफ़ुलमुकालमा पेज 12)

सवाल:— मुर्दा को दफ़न क्यों किया जाता है, हिन्दुओं की तरह जलाया क्यों नहीं जाता?

जवाब:— इन्सान की असल मिट्टी है क्योंकि मिट्टी से इन्सान पैदा हुआ है तो मिट्टी इन्सान की माँ हुई। और इन्सान के लिए दो चीज़ें हैं एक जिस्म और एक रूह, रूह से इन्सान बढ़ता और परवरिश पाता है तो रूह इन्सान की मुरब्बी और परवरिश करने वाली हुई। जिस तरह कि बाप बच्चे की परवरिश और तर्बियत करता है तो रूह बाप हुई और मिट्टी मां और क़ायदा है कि जब बाप सफ़र करता है तो बच्चे को मां के सुपुर्द कर के जाता है न कि बावरचन के, यानी आग इन्सान के लिए बावरचन है क्योंकि आग पकाने का काम करती है (जिस तरह बावरचन खाना पकाने का काम करती है) लिहाज़ा जब रूह ने सफ़र किया तो जिस्म को उसकी मां यानी मिट्टी के सुपुर्द किया गया, न कि बावरचन, यानी आग के। इसलिए मुर्दा को दफ़न किया जाता है हिन्दुओं की तरह जलाया नहीं जाता (शरफ़ूल मुकालमा, पेज 12) फिर जलाना सख़्त बेरहमी की बात भी तो है कि अपने हाथों अपने भाई को तकलीफ़ पहुंचाई जाती है। यह तो एक क़िस्म की दरिन्दगी है और जलाना बेहयाई भी है कि जिस चीज़ को वह ज़िन्दगी में छुपाता था अब जिस वक़्त उसको जलाया जाएगा तो पहले कफ़न जलेगा जिससे वह मुर्दा नंगा रह जाएगा जिसको सब लोग देखेंगे और अगर औरत होगी तो उसकी किस क़द्र बेइज़्ज़ती होगी, हयादार क़ौम तो कभी ऐसे अमल को पसन्द न करेगी कि अपने बाप भाई बहन की हया की चीज़ों को उसके मरने के बाद देखे और जलाना अक़्ल के लिहाज़ से भी दुरुस्त नहीं, क्योंकि जलाने से बदबू हवा में फैल कर मुख़्तलिफ़ बीमारियां फैलाती है और दफ़न करने से तो अन्दर-ही-अन्दर फूल फट कर मुर्दा मिट्टी में मिल जाता है और मिट्टी अंदर ही अंदर सब जज़्ब कर लेती है। (शरफ़ूल मुकालमा, पेज 13)

सवाल:— आप ने कहा है कि जलाने से तकलीफ़ होगी सो जब उसमें रूह नहीं तो तकलीफ़ किस तरह होगी?

जवाब:— जब एक अर्से तक किसी से ताल्लुक़ रहता है तो उसको तकलीफ़

व आराम में देखकर रंज व ख़ुशी होती है, अगर एक दोस्त को आराम में देखो तो ख़ुशी होती है, तक्लीफ़ में देखो तो रंज होता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी का कपड़ा लेकर जलाया जाए तो उस कपड़े वाले को उस कपड़े को जलता हुआ देखकर तकलीफ़ होती है, हालांकि वह कपड़ा उसके जिस्म से अलग है जिस्म पर नहीं लग रहा। इसी तरह रूह एक अर्से तक जिस्म में रही है तो जिस्म को रूह से ताल्लुक़ है और आलमे अरवाह में मौजूद है तो जिस वक़्त जिस्म को जलाया जाएगा रूह को तकलीफ़ होगी। (ऊपर का हवाला)

सवालः— अल्लाह का जो फ़रमान है **'व हुमि-लतिल अर्ज़ु वल जिबालु'** कि ज़मीनों और पहाड़ों को उठाया जाएगा उनको कौन उठाएगा और कब?

जवाबः— इसमें तीन क़ौल हैं (1) फ़रिश्ते उठाएंगे (2) हवाएं उठाएंगी (3) अल्लाह की क़ुदरत उठाएगी और यह मामला क़ब्रों से निकल जाने के बाद होगा। (दरसी तफ़्सीर, माख़ूज़ अज़ जुमल)

सवालः— हश्र का मैदान कहां क़ायम किया जाएगा?

जवाबः— मुल्के शाम में हश्र का मैदान क़ायम होगा।

(मिशकात शरीफ़, पेज 472 भाग-2)

सवालः— क़ियामत के दिन जन्नती लोग जन्नत में किस रास्ते से जाएंगे?

जवाबः— अल्लाह तआला जहन्नम पर पुल बिछाएंगे, उस पर से गुज़र कर जन्नती लोग जन्नत में जाएंगे। (गुनियतुत्तालिबीन)

सवालः— अल्लाह तआला जहन्नम पर कितने पुल बिछाएंगे?

जवाबः— अल्लाह तआला जहन्नम पर सात पुल बिछाएंगे, जिनको पुलसिरात कहेंगे। (गुनियतुत्तालिबीन)

सवालः— क़ियामत के दिन लोगों की ज़बान कौन-सी होगी?

जवाबः— जन्नत में दाख़िल होने से पहले सबकी ज़बान सुरयानी होगी और जब जन्नत में चले जाएंगे तो तमाम जन्नत वालों की ज़बान अरबी होगी।

(तफ़सीर इब्ने कसीर, पेज 347 पारा-3)

सवालः— जब लोग जन्नत में जाएंगे तो उनकी उम्र क्या होगी?

जवाबः— जन्नत में जाने के बाद सब की उम्र तैंतीस (33) साल की होगी। दूसरा क़ौल यह है कि औरतें 17 या 18 साल की और मर्द 33 साल के होंगे।

सवालः— जब लोग क़ब्रों से उठेंगे और जन्नत में जाने तक बहुत साल गुज़र जाएंगे फिर जन्नत वालों में मर्दों की 33 साल और औरतों की 17 या 18 साल उम्र क्यों होगी?

जवाब— मतलब यह है कि जिस तरह 33 साल के नौजवानों में भरपूर ताक़त ओर फुर्ती होती है इसी तरह जन्नत वालों के बदन कुव्वत व कमाल के एतिबार से ऐसे मालूम होंगे जिस तरह 33 साल का नौजवान होता है। और 17 या 18 साल का मतलब यह है कि जिस तरह औरत के आज़ा सतरह या अठारह साल की उम्र में होते हैं, ऐसे ही जन्नती औरतों के आज़ा होंगे, इस वास्ते कि औरत का हुस्न व जमाल इतनी ही उम्र में मुकम्मल होता है।

(तफ़सीरे अज़ीज़ी, पारा 30)

सवालः— मुश्रिकीन व कुफ़्फ़ार की छोटी नाबालिग़ औलादें आख़िरत में किस जगह रहेंगी?

जवाबः— मुश्रिकीन की नाबालिग़ औलाद सही क़ौल के मुताबिक़ जन्नत में जाएगी और ये जन्नत वालों के ख़ादिम होंगे।

(तफ़सीरे मज़हरी, पेज 262, भाग- 12 पारा 27)

सवालः— जन्नत में रात भी होगी या नहीं?

जवाबः— हज़रत हकीम तिर्मिज़ी ने अपनी किताब नवादिरुलउसूल में हज़रत अबान के तरीक़ से अबू क़लाबा और हज़रत हसन से नक़ल किया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स ने आकर यही सवाल किया कि जन्नत में क्या रात भी होगी? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन सहाबी से मालूम किया कि तेरे दिल में यह सवाल किस वजह से आया? उन्होंने अर्ज़ किया अल्लाह के फ़रमान **"व-लहुम रिज़्क़ुहुम फ़ीहा बुकरतौं व अशिय्या"** से पता चलता है। इसलिए कि इस आयत में अल्लाह ने फ़रमाया कि जन्नत वालों को जन्नत में सुबह व शाम रिज़्क़ मिलेगा। इसलिए मैं कहता हूं कि रात तो सुबह व शाम से ही होगी। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब में इरशाद फ़रमाया कि जन्नत में रात नहीं होगी, बल्कि वहां तो रौशनी ही रौशनी होगी। और जन्नतियों के पास उन औक़ात में जिनमें वे दुनिया में नमाज़ें अदा किया करते थे अजीब व ग़रीब चीज़ें पेश होती रहेंगी और फ़रिश्ते उन वक़्तों में जन्नतियों पर सलाम भेजते रहेंगे। (रूहुल मआनी)

सवालः— फिर जन्नत वाले आराम व ग़ैर आराम के वक़्तों को कैसे पहचानेंगे?

जवाबः— एक रिवायत में आया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जन्नत वाले रात (आराम के वक़्त) की मिक़्दार को पर्दों के लटक जाने और दरवाज़ों के बन्द हो जाने से पहचान लेंगे यानी जब आराम करने का वक़्त आएगा तो पर्दे ख़ुद-ब-ख़ुद लटक जाया करेंगे और दरवाज़े ख़ुद-ब-ख़ुद बन्द हो जाया करेंगे। ऐसे ही जब सैर व तफ़रीह का वक़्त आएगा तो पर्दे ख़ुद उठ जाया करेंगे और दरवाज़े ख़ुद-ब-ख़ुद खुल जाया करेंगे।

(रूहुलमआनी पेज 112 भाग-16 व हाशिया जलालैन पेज 258)

सवालः— जन्नत में कौन-कौन सी इबादतें बाक़ी रहेंगी यानी जो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर आज तक होती चली आई हैं?

जवाबः— हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर रहती दुनिया तक जितनी भी इबादतें हैं उनमें से जन्नत में ईमान और निकाह के अलावा कोई इबादत बाक़ी नहीं रहेगी।

(ग़ायतुलऔतार)

सवालः— जन्नत के दर्जे कितने हैं और एक दर्जे से दूसरे दर्जे तक कितना फ़ासला है?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया जितने कुरआन करीम के हुरूफ़ हैं उतने ही जन्नत के दर्जे हैं और एक दर्जे से दूसरे दर्जे तक इतना फ़ासला है जितना आसमान व ज़मीन के दर्मियान है।

(जुमल, पेज 5 भाग-1)

सवालः— जन्नत में मोमिनों के सीनों में कुरआन में से कितना हिस्सा बाक़ी रहेगा?

जवाबः— नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जन्नत में जन्नत वालों के सीनों से दो सूरतों यानी सूरः ताहा और सूरः यासीन के अलावा तमाम कुरआन उठा लिया जाएगा। इन दोनों सूरतों की वे तिलावत करते रहेंगे।

(रूहुलमआनी, पेज 157 भाग-16)

सवालः— जन्नत में सबसे आख़िर में जाने वाले का क्या वाक़िआ है?

जवाबः— हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं यक़ीनन उस शख़्स को जानता हूं जो जहन्नम से निकल कर जन्नत में सबसे आख़िर में

जाएगा। उसका हाल यह होगा कि उसको जब जहन्नम से निकाल दिया जाएगा वह सुरीन के बल चल कर अपने परवरदिगार से अ़र्ज़ करेगा, ऐ अल्लाह! सब लोगों ने अपना-अपना ठिकाना जन्नत में पा लिया है यानी हर शख़्स अपने बंगले में पहुंच गया है। अल्लाह उसको फ़रमाएंगे तू जन्नत में दाख़िल हो जा। वह शख़्स जन्नत की तरफ़ को जाएगा ताकि जन्नत में दाख़िल हो जाये (पस वह जन्नत को भरी हुई पाएगा) हर जन्नती अपने ठिकाने पर जा पहुंचा होगा। वह शख़्स जन्नत के दरवाज़े से लौट जाएगा और कहेगा, ऐ मेरे अल्लाह! (वहां तो लोगों ने सारे बंगले पुर कर दिए) हर शख़्स अपनी मंज़िल में जा पहुंचा। अब अल्लाह तआ़ला उसको फ़रमाएंगे, क्या तू उसको दुनिया वाला ज़माना तसव्वुर कर रहा है जिसमें तू ज़िन्दगी गुज़ार कर आया है? वह कहेगा (जी हां) उसको अल्लाह फ़रमाएंगे तू तमन्ना कर। पस वह तमन्ना करेगा। अल्लाह तआ़ला उसको फ़रमाएंगे, तेरे लिए वही है जो तूने तमन्ना की है और तेरे लिए दुनिया के दस हिस्से से ज़्यादा है। अब वह बन्दा अल्लाह से कहेगा, ऐ मेरे रब! तू मेरे साथ मज़ाक़ कर रहा है हालांकि तू तो बादशाह है। रावी कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जब यह बात फ़रमाई तो आपको हँसी आ गई यहां तक कि आपके दन्दाने मुबारक ज़ाहिर हो गए।

(तिर्मिज़ी शरीफ़ पेज 87 भाग-2 अब्वाब सिफ़तुलजन्न:)

وَاللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم و علمہٗ اتم واحکم

واخر دعوانا ان الحمد للہ رب العلمین۔

वल्लाहु सुब्हानहू व तआ़ला आलमु व इल्मुहू अतम्-मु व अस्कमु
व आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।

—अहक़रुल इबाद

मुहम्मद गुफ़रान रशीदी कैरानवी

मुदर्रिस, जामिया अशरफ़ुल उलूम रशीदी, गंगोह

ज़िला: सहारनपुर

□ □ □

ज़ख़ीरा
-ए-
मालूमात

(तीसरा हिस्सा)

लेखक
मौलाना मुहम्मद गुफ़रान रशीदी कैरानवी

हिन्दी अनुवाद
मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताबः

ज़ख़ीरा-ए-मालूमात

(तीसरा हिस्सा)

लेखकः

मौलाना मुहम्मद गुफ़रान रशीदी कैरानवी

हिन्दी अनुवादः

मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

बा एहतिमामः

फ़िरोज़ ख़ान

प्रकाशकः

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

Zakheera-e-Ma'lumaat (Part III)

By: Maulana Muhammad Ghufran Rashidi Kairanvi

Pages: 104 Edition: 2014 Size: 23x36/16

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

विषय-सूची

तक़रीज़

आरिफ़ बिल्लाह फ़क़ीहुल इस्लाम हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुज़फ़्फ़र हुसैन साहब मद्द ज़िल्लहू

नाज़िम व मुतवल्ली, जामिआ मज़ाहिरे उ़लूम (वक़्फ़) सहारनपुर, यू.पी.

हामिदों-व मुसल्लियन-पेशे नज़र मजमूआ 'ज़ख़ीरा-ए-मालूमात' का तीसरा हिस्सा मुफ़ीद मालूमात पर मुश्तमिल अ़ज़ीज़ मौलवी मुहम्मद ग़ुफ़रान सल्लमहुल्लाहु व आफ़ाहु की सई व काविश का नतीजा है। इससे पहले दो हिस्से नज़्रे क़ारिईन होकर दादे तह्सीन हासिल कर चुके हैं। अ़ज़ीज़ मौसूफ़ फ़ाज़िल नौजवान तद्रीस व तालीफ़ (पढ़ने-लिखने) का ज़ौक़ रखने वाले जामिआ अशरफ़ुल उ़लूम, गंगोह के मुअ़ल्लिम हैं।

मैंने यह मजमूआ लफ़्ज़-लफ़्ज़ करके तो नहीं, अलबत्ता कुछ जगहों से देखा, मुफ़ीद पाया, तलबा-ए-अ़ज़ीज़ के लिए तोहफ़ा है। मआख़ज़ व मराजेअ़ ख़ुद मुअल्लिफ़ ने लिख दिए हैं, ज़रूरत पड़ने पर उनकी तरफ़ रुजूअ़ किया जा सकता है। मैं दिल से दुआ़गो हूं कि अल्लाह तआ़ला अ़ज़ीज़ मोसूफ़ की कोशिश को कामयाब फ़रमाए और दोनों जहाँ की तरक़्क़ियों से नवाज़े; मज़ीद इन्हिमाक व इश्तिग़ाल फ़ित्तद्रीस वल मुताला की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाए। आमीन

अल-अ़ब्द

मुज़फ़्फ़र हुसैन मज़ाहिरी

10 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1418 हिजरी

तक़रीज़

उस्ताज़ुल असातिज़ा हज़रत अल-हाज मौलाना क़ारी शरीफ़ अहमद साहब मद्दज़िल्लहू बानी व मोहतमिम जामिआ अशरफ़ुलउलूम रशीदी, गंगोह, सहारनपुर

बिस्मिही सुब्हानहू व तआला

माशाअल्लाह ज़ख़ीरा-ए-मालूमात इस्म बामुसम्मा है। दीनी मालूमात का शौक़ रखने वालों के लिए बेहतरीन तोहफ़ा है, जिसके मुताले से बहुत-सी क़ीमती बातों पर इत्तिला होती है। अल्लाह पाक इसको बेहद क़ुबूल फ़रमाए और मुअल्लिफ़ सल्लमहू को ज़ाइद से ज़ाइद दीने मतीन की ख़िदमत के लिए क़ुबूल फ़रमाए। (फ़क़त)

अह्क़र
शरीफ़ अहमद
मोहतमिम, जामिआ अशरफ़ुल उलूम रशीदी, गंगोह

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अस्मा-ए-ख़ुदावन्दी

सवाल-अल्लाह तआला के कुल कितने नाम हैं? कौन-सी आसमानी किताब में कितने नामों का ज़िक्र है?

जवाब-शैख़ इब्ने कसीर ने लिखा है कि 'तफ़सीरे कबीर' में कुछ बुज़ुर्गों से नक़ल किया गया है कि अल्लाह तआला के कुल छः हज़ार नाम हैं। एक हज़ार क़ुरआन पाक में हैं, एक हज़ार सुन्नते सहीहा में, एक हज़ार तौरात में, एक हज़ार ज़बूर में, एक हज़ार इंजील में और एक हज़ार लौह-ए-महफ़ूज़ में लिखे हुए हैं। (तफ़सीरे मवाहिबुर्रहमान, हिस्सा 1, पृ0 19)

दूसरा क़ौल तफ़सीर उस्तराबादी में मज़्कूर है कि ख़ुदावन्द-ए-करीम के कुल चार हज़ार नाम हैं। एक हज़ार तो ऐसे हैं जिनका इल्म अल्लाह के अ़लावा किसी को नहीं है, एक हज़ार को फ़रिश्तों के अ़लावा कोई नहीं जानता, एक हज़ार लौह-ए-महफ़ूज़ में दर्ज हैं, अब बाक़ी रहे एक हज़ार। इनमें से तीन सौ तौरात में मज़्कूर हैं, तीन सौ इंजील में और तीन सौ ज़बूर में, बाक़ी बचे सौ। इनमें से निन्नानवें तो ज़ाहिर हैं और एक मख़्फ़ी है, वही इस्मे आज़म है जिसको अंबिया और रसूलों के अ़लावा कोई नहीं जानता।

लौह-ए-महफ़ूज़ से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-लौह-ए-महफ़ूज़ किस चीज़ का बना हुआ है और उसकी लम्बाई-चौड़ाई कितनी है?

जवाब-हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि लौह-ए-महफ़ूज़ सफ़ेद मोती का बना हुआ है और उसकी लम्बाई ज़मीन से लेकर आसमान तक और चौड़ाई मश्रिक़ से लेकर मग़्रिब तक है। (हाशिया जलालैन, पृ0 496)

सवाल-लौह-ए-महफ़ूज़ के बीच में क्या लिखा हुआ है?

जवाब-लौह-ए-महफ़ूज़ के बीच में लिखा हुआ है-

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ دِيْنُهُ الْاِسْلَامُ مُحَمَّدٌ عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ وَصَدَّقَ بِوَعِيْدِهٖ وَاتَّبَعَ رُسُلَهٗ اَدْخَلَهُ الْجَنَّةَ

तर्जुमाः 'अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह तन्हा है। उसका (पसन्दीदा) दीन इस्लाम है। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके बन्दे और उसके रसूल हैं। जो शख़्स अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल पर ईमान लाया और उसकी वईद की तस्दीक़ की और उसके रसूलों की पैरवी की, तो अल्लाह उसको जन्नत में दाख़िल करेगा। (हाशिया जलालैन शरीफ़, पृ० 496)

सवाल-लौह-ए-महफ़ूज़ के दोनों तरफ़ैन (किनारे) और जिल्द किस चीज़ की है?

जवाब-दोनों तरफ़ैन (किनारे) मोती और याक़ूत के बने हुए हैं और जिल्द सुर्ख़ याक़ूत की है। (ऊपर वाला हवाला)

सवाल-लौह-ए-महफ़ूज़ का कलम किस चीज़ का है और कलाम किसका है?

जवाब-लौह-ए-महफ़ूज का कलम नूर का है और उसका कलाम भी नूर का है, जो उससे बंधा हुआ है। (ऊपर वाला हवाला)

आसमानों से मुतअल्लिक़ बातें

सवाल-सातों आसमानों के नाम क्या क्या हैं और कौन-सा आसमान किस चीज़ का बना हुआ है?

जवाब-इस सवाल के जवाब के मुतअल्लिक़ एक क़ौल तो हिस्सा दोम में लिखा जा चुका है। दूसरा क़ौल यहां ज़िक्र किया जाता है। अल्लाह तआला ने सातों आसमानों के अलग-अलग नाम रखे हैं और अलग-अलग चीज़ों से उनको बनाया है, चुनांचे-

1. पहले आसमान का नाम रक़ीअ़ है, जो ज़मुर्रद-ए-सब्ज़ से बनाया गया है।
2. दूसरे आसमान का नाम अरफ़लून है जो सफ़ेद चांदी से तैयार किया गया है।
3. तीसरे आसमान का नाम क़ीदूम है, जो सुर्ख़ याक़ूत से बनाया गया है।
4. चौथे आसमान का नाम माऊन है जो दुर्रा-ए-अब्यज़ से बनाया गया है।

5. पांचवें आसमान का नाम दबक़ा है जो सुर्ख़ सोने से तैयार किया गया है।
6. छठे आसमान का नाम वफ़ना है जो ज़र्द याक़ूत से तैयार किया गया है और
7. सातवें आसमान का नाम अरूबा है जो चमकने वाले नूर से बनाया गया है।

(रूहुलब्यान, हिस्सा 1, पृ0 91)

बैतुल मामूर से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-बैतुल-मामूर कौन से आसमान पर है और किस चीज़ से बनाया गया है?

जवाब-बैतुल-मामूर चौथे आसमान पर फ़रिश्तों की इबादतगाह है, जो ज़मुर्रद या याक़ूत से बनाई गई है। (तफ़सीरे हुसैनी, हिस्सा 1, पृ0 540, पारा 13)

दूसरा क़ौल यह है कि सुर्ख़ याक़ूत का बना हुआ एक घर है जिसकी लम्बाई ज़मीन से लेकर आसमान तक है।

(शिफ़ाउलग़िराम बि अख़बारिल ब ल दिल हराम, हिस्सा 1 पृ0 149)

सवाल-इसको बैतुल-मामूर क्यों कहते हैं?

जवाब-मामूर के मानी आबाद के हैं, चूंकि यह फ़रिश्तों की ज़ियारत से हर वक़्त आबाद रहता है, इसलिए इसको बैतुल-मामूर कहते हैं।

(तफ़सीरे हुसैनी, हिस्सा 1, पृ0 540, पारा 13)

सवाल-बैतुल-मामूर किस नबी के लिए ज़मीन पर उतारा गया और किस नबी के ज़माने में उठाया गया?

जवाब-जिस वक़्त अल्लाह ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम[1] को ज़मीन पर उतार दिया, तो हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह से दरख़्वास्त की कि ऐ अल्लाह! मैं तेरे इस नूर को महसूस कर रहा हूं जिसमें इबादत की

---

1. हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने चालीस हज हिन्दुस्तान से पैदल चल कर किए हैं, जब भी हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हज के लिए तशरीफ़ ले जाते तो फ़रिश्ते चालीस मील से इस्तिक़्बाल के लिए खड़े हो जाया करते थे (रूहुलमआनी, भाग 1, पृ0 384)

जाती है, तो अल्लाह ने बैतुल मामूर को बैतुल्लाह की ऐन जेहत यानी बैतुल्लाह की बुनियादों पर उतारा। ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को उसका तवाफ़ करने का हुक्म दिया और बैतुल-मामूर हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में आसमान पर उठा लिया गया था।

(शिफ़ाउल ग़िराम बि अख़्बारिल ब ल दिल हराम, हिस्सा 1, पृ0 149)

बैतुल्लाह से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-जब बैतुल्लाह आसमान से ज़मीन पर उतारा गया, तो उसमें कितने दरवाज़े थे?

जवाब-अल्लाह तआ़ला ने जब बैतुल्लाह को आसमान से उतारा तो उसमें दो दरवाज़े थे-एक मश्रिक़ की तरफ़ और एक मग़रिब की तरफ़।

(रूहुलमआ़नी, हिस्सा 1, पृ0 384)

सवाल-तामीरे इब्राहीमी के वक़्त बैतुल्लाह की लम्बाई-चौड़ाई कितनी थी और कितने अरकान थे? किस रुक्न के दर्मियान कितनी दूरी थी?

जवाब-लम्बाई नौ हाथ और चौड़ाई (रुक्ने यमानी से लेकर रुक्ने शामी तक) बत्तीस (32) हाथ थी और रुक्ने शामी के पास हजरे अस्वद नसब (खड़ा) किया गया था और रुक्ने शामी व ग़रबी के दर्मियान बाईस हाथ की दूरी छोड़ी थी। हजरे अस्वद और रुक्ने यमानी के दर्मियान बीस हाथ का फ़ासला छोड़ा था। और ज़मीन पर एक दरवाज़ा बनाया था, जिसके अन्दर की तरफ़ एक गढ़ा था और दो रुक्न बनाए थे। फिर जब क़ुरैश ने तामीर की तो चार रुक्न बनाए थे और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह को मुदव्वर यानी गोल तामीर किया था। (शिफ़ाउलग़िराम वि अख़्बारिल ब ल दिल हराम, हिस्सा 1, पृ0 150)

और रुक्न-ए-ग़रबी व यमानी के दर्मियान 31 हाथ का फ़ासला था।

सवाल-तामीरे इब्राहीमी किन-किन पहाड़ों के पत्थरों से हुई और क्यों?

जवाब-हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने बैतुल्लाह को पांच पहाड़ों के पत्थरों से तामीर किया:

1. हिरा पहाड़ के पत्थरों से।

2. तूरे सीना के पत्थरों से जो फ़िलिस्तीन में शहर सीना के जंगल का एक मशहूर पहाड़ है, जिसको तूरे सीनीन भी कहते हैं।
3. तूरे ज़ैतून से जो बैतुल-मुक़द्दस में है।
4. तूरे लेबनान के पत्थरों से।
5. जबले जूदी के पत्थरों से।

इन पांच पहाड़ों के पत्थरों से तामीर में हिक्मत यह है कि इसमें पांच वक़्त की नमाज़ अदा होनी थी। दूसरी वजह यह है कि अरकाने इस्लाम पांच हैं।

(शिफ़ाउलग़िराम, हिस्सा 1, पृ० 115-116)

सवाल-बैतुल्लाह के अत्राफ़ को हरम क्यों कहते हैं?
जवाब-इसकी अलग-अलग वज्हें हैं:

1. यह कि जिस वक़्त हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ज़मीन पर उतरे और उनको अपने नफ़्स पर शैतान का ख़ौफ़ हुआ (बशरी तक़ाज़े की वजह से) तो अल्लाह से इस्तिआज़ा यानी पनाह चाहने लगे, अल्लाह ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की हिफ़ाज़त के लिए फ़रिश्तों को भेज दिया। वे मक्का के चारों तरफ़ फैल गए और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की हिफ़ाज़त करने लगे उस वक़्त फ़रिश्तों ने जहां तक घेराव डाला, वहां तक ख़ुदावन्दे क़ुद्दूस ने हरम बना दिया।

2. दूसरी वजह यह है कि जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने हजरे अस्वद को बैतुल्लाह में नसब किया (गाड़ा) तो हजरे अस्वद से एक नूर यानी रौशनी नमूदार हुई, जिससे बैतुल्लाह के अतराफ़े अरबअ़ (चारों दिशाएं) रौशन हो गए, तो जहां तक हजरे अस्वद से निकलने वाले नूर की रौशनी फैल गई, वहां तक हरम बना दिया गया।

3. तीसरी वजह यह है कि ख़ुदावन्दे तआ़ला ने जब ज़मीन व आसमान को कहा कि *'इतिया तौअ़न औ करहन'* (आ जाओ तुम ख़ुशी-ख़ुशी या ज़बरदस्ती) तो ज़मीन व आसमान ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि 'अतैना

ताइईन' हम तो अल्लाह के मुतीअ़ (इताअतगुज़ार) बनकर आ गए। अल्लाह के इस मक़ूले (बात) का ज़मीन में से सिर्फ़ हरम की ज़मीन ने जवाब दिया, इसलिए उस जगह को हरमे मोहतरम व मुक़द्दस बना दिया गया। (शिफ़ाउलग़िराम बि अख़्बारिल ब ल दिल हराम, हिस्सा 1 पृ0 85)

सवाल-क़िबला सिर्फ़ मस्जिदे हराम है या पूरा हरम शरीफ़ क़िबला है?

जवाब-इस सिलसिले में उलमा का इख़्तिलाफ़ है। बाद के उलमा फ़रमाते हैं कि सिर्फ़ बैतुल्लाह (काबा) ही क़िबला है। कुछ ने कहा है कि मस्जिदे हराम क़िबला है। तीसरा क़ौल यह है कि पूरा हरम क़िबला है। इन तीनों क़ौलों में ततबीक़ शरहुस्सुन्नः में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की रिवायत से हो जाती है कि बैतुल्लाह (काबा की हद) मस्जिदे हराम वालों के लिए क़िबला है, और मस्जिदे हराम अह्ले हरम के लिए क़िबला है और पूरा हरम मशरिक़-मग़रिब वालों के लिए क़िबला है। (हाशिया जलालैन, पृ0 21)

पिछली शरीअ़तों से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-तौरात व इंजील में उश्र का क्या हुक्म था, कितने साल में कितनी बार देना पड़ता था?

जवाब-तौरात में उश्र यानी माल का दसवां हिस्सा जो मुक़र्रर किया गया था, वह तीन साल में सिर्फ़ एक बार देना वाजिब था और इंजील में उश्र का हुक्म तो ज़रूर था, मगर किसी मुद्दत और ज़माना की हद न थी।

(सीरतुन्नबी सल्ल0 हिस्सा 5, पृ0 215)

सवाल-मूसवी शरीअ़त में ज़कात की मिक़्दार क्या थी और किन-किन लोगों पर फ़र्ज़ थी?

जवाब-तौरात की इबारतों से यह मालूम होता है कि बनी इस्राईल में ज़कात की मिक़्दार पैदावार का दसवां हिस्सा था और यह हर क़िस्म की पैदावार पर था और नक़दी में आधा मिस्क़ाल, जो अमीर व ग़रीब सब पर यक्सां फ़र्ज़ था। (सीरतुन्नबी, हिस्सा 5 पृ0 216)

सवाल-मूसवी शरीअ़त में ज़कात की कितनी क़िस्में थीं और उसके क्या-क्या मसारिफ़ थे?

जवाब-हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शरीअत में तीन किस्म की ज़कात थीः

1. एक, आधा मिस्काल सोना-चांदी, यह रक़म जमाअत के खेमे या फिर बैतुल-मुक़द्दस की तामीर व मरम्मत और क़ुरबानी के तिलाई व नुक़रई ज़ुरूफ़ व सामान के बनाने में ख़र्च की जाती थी।

2. दूसरी, ख़ैरात यह थी कि खेत काटने के वक़्त और फल तोड़ने के वक़्त हुक्म था कि कहीं गोशों और कोनों में दाने और फल छोड़ दिए जाएं और यह मुसाफ़िरों का हिस्सा होता था।

3. तीसरी, ख़ैरात यह थी कि हर तीसरे साल के बाद पैदावार और जानवरों का दसवां हिस्सा ख़ुदा के नाम पर निकाला जाता था, जिसके मसारिफ़ ये थे कि ख़ैरात करने वाला ख़ुद मअ् अह्ल व अयाल बैतुल-मुक़द्दस में जाकर जश्न मनाए, खाए और खिलाए और लावी ख़ानदान में[1] जो मौरूसी काहिन और ख़ाना-ए-ख़ुदा के ख़िदमतगार हैं, उनको नाम-ब-नाम तक़्सीम किया जाए। (इसके बदले में ये लोग ख़ानदानी विरासत से महरूम रखे जाते थे।) इसके बाद जो बच जाता तो बैतुल मुक़द्दस के ख़ज़ाने में जमा कर दिया जाता था कि उससे मुसाफ़िरों, यतीमों और बेवाओं को खाना खिलाया जाए।

(सीरतुन्नबी, हिस्सा 5 पृ० 228)

सवाल-यहूदी लोग रोज़ा कितने घंटे का रखते थे और इफ़्तार व सह्र किस तरह करते थे?

जवाब-यहूदी लोग चौबीस घंटे का रोज़ा रखते थे, गोया उनके यहां दिन-रात दोनों को मिलाकर एक रोज़ा होता था और उनकी शरीअत में यह था कि रोज़ा खोलने के बाद एक बार जो खा लेते थे, तो खा लेते, इसके बाद फिर नहीं खा सकते थे, यानी उसी वक़्त से दूसरा रोज़ा शुरू हो जाया करता था। (सीरतुन्नबी, 5/304)

सवाल-इस्लाम में रोज़े के बाब में कितनी तब्दीलियां हुईं?

1. लावी हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बेटों में से एक बेटे का नाम है।

जवाब-तीन तब्दीलियां हुईं:

1. अह्ले अरब में यह दस्तूर था कि रोज़ा खोलने के बाद सोने से पहले जो खा लेते, खा लेते। सो जाने के बाद खाना नाजायज़ था।

2. शुरू में इस्लाम में भी ऐसा ही था। एक बार की बात है कि रमज़ान का महीना था, एक सहाबी के घर में खाना तैयार नहीं हुआ था। उनकी बीवी को खाना गर्म करके लाने में देर हो गई। वह इंतिज़ार करके सो गए। अह्लिया खाना लेकर आई तो शौहर को सोता पाया। यह सहाबी खाना न खा सके। दूसरे दिन रोज़ा रखा तो उनको ग़शी आ गई। इस पर यह आयत उतरी-

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ

'खाओ और पीयो, यहां तक कि ज़ाहिर हो जाए तुम्हारे लिए सफ़ेद धागा काले धागे से, यानी रात की सफ़ेदी और रात की स्याही में इम्तियाज़ हो जाए। यह सहरी का वक़्त है, इस वक़्त तक खा सकते हैं।'

(सीरतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

3. तीसरी तब्दीली यह हुई कि शुरू में रमज़ान की रातों में अपनी औरत से जिमाअ् (हमबिस्तरी) करने की इजाज़त न थी, बाद में इजाज़त दे दी गई। (रफ़ीउश्शान, पृ० 99)

नबियों अलैहिमुस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-एक नबी से दूसरे नबी तक कितना अ़र्सा यानी ज़माना गुज़रा है?

जवाब-तमाम के बारे में तो मालूम नहीं, अलबत्ता कुछ के बारे में ज़िक्र किया जाता है-

1. हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के दर्मियान बाईस सौ साल का ज़माना गुज़रा।

2. हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के दर्मियान

ग्यारह सौ तैंतालिस साल का ज़माना गुज़रा।

3. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के दर्मियान पांच सौ पचहत्तर साल का अ़र्सा गुज़रा।

4. हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम व हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के दर्मियान पांच सौ उनासी साल का फ़ासला हुआ। दूसरा क़ौल यह है कि सिर्फ़ एक सौ उनासी साल का फ़ासला रहा। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के दर्मियान छः सौ साल का वक़्फ़ा हुआ। दूसरी रिवायत इस सिलसिले में यह है कि हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम का तूफ़ान हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के बारह सौ साल बाद आया और एक क़ौल बारह सौ छप्पन का भी है और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के ग्यारह सौ ब्यालीस साल बाद तशरीफ़ लाए। दूसरा क़ौल यह है कि तूफ़ाने नूह से वफ़ाते इब्राहीम तक एक हज़ार बीस साल का ज़माना गुज़रा और हज़रत इब्राहीम व मूसा अ़लैहिमस्सलाम के दर्मियान पांच सौ पैंसठ साल का अ़र्सा गुज़रा और हज़रत मूसा और हज़रत दाऊद अ़लैहिमस्सलाम के दर्मियान पांच सौ उनहत्तर साल का ज़माना गुज़रा। हज़रत दाऊद और हज़रत ईसा अ़लैहिमस्सलाम के दर्मियान छः सौ साल का ज़माना गुज़रा। (तारीख़े तबरी, पृ० 634,635, तलक़ीअ़-ए-फ़ुहूम अह्लुल असर फ़ी उ़यूनित्तारीख़ वस्सियर, पृ० 4)

सवाल-सुरयानी अंबिया कौन-कौन से हुए?

जवाब-हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक बार मुझसे इर्शाद फ़रमायाः

ऐ अबूज़र! चार अंबिया सुरयानी हुएः

1. हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम। 2. हज़रत शीस अ़लैहिस्सलाम। 3. हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम। 4. हज़रत अख़नूख़ अ़लैहिस्सलाम यानी हज़रत इदरीस अ़लैहिस्सलाम। (तारीख़ुल उमम वल मुलूक, हिस्सा 1, पृ० 116)

सवाल-कौन-से नबी ऐसे हुए जिन्होंने शादी नहीं की?

जवाब-दो नबी, एक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, दूसरे हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम। (सीरतुल मुस्तफ़ा सल्ल., 3/353)

सवाल-अल्लाह तआला ने हफ़्ते के सात दिनों में किन-किन नबियों को करामत बख़्शी?

जवाब-ख़ुदावन्द-ए-करीम ने हफ़्ते के सातों दिनों में सात नबियों को करामत बख़्शी:

- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को सनीचर का दिन मरहमत फ़रमाया।
- हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए इतवार का दिन।
- हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए पीर का दिन।
- हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लिए मंगल का दिन।
- हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के लिए बुध का दिन मुकर्रम बनाया।
- हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के लिए जुमेरात का दिन।
- हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए जुमा के दिन को मुकर्रम (ईद यानी ख़ुशी का दिन) बनाया और उस दिन से अपको और आपकी उम्मत को ज़ीनत बख़्शी। (किताबुस्सबइय्यात फ़ी मवाइज़िल बिर्रिय्यात अला हाशियतिल मजालिसिस्सुन्नियाः फ़िल कलामि अलल अरबइनिन्नवविय्याः, पृ0 4)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुतअल्लिक़ बातें

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने कितनी शादियां कीं? किस-किस बीवी से कितनी और कौन-कौन सी औलाद हुई?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा अब्दुल मुत्तलिब ने पांच औरतों से शादी की:

1. फ़ातिमा बिन्त-ए-अम्र बिन आइज़-इनसे आठ औलाद पैदा हुई 1. हज़रत अब्दुल्लाह, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वालिद

2. अबूतालिब। 3. ज़ुबैर। 4. उम्मुल हकीम बैज़ा। 5. आ़तिका। 6. उमैमा। 7. अरवा। 8. बर्रा।

2. दूसरी शादी हाला बिन्त-ए-उहैब से की। इनसे चार औलादें हुई: 1. हमज़ा। 2. मुक़व्वम। 3. ख़जिल। 4. सफ़िया।

3. तीसरी शादी नतीला बिन्त-ए-जनाब से की थी। इनसे दो लड़के हुए: 1. हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु। 2. ज़रार।

4. चौथी शादी समुरा बिन्त-ए-जुन्दुब से की। इनसे सिर्फ़ एक लड़का हारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब पैदा हुआ।

5. पांचवीं शादी लुबना बिन्त-ए-हाजिर से की। इनसे अबूलहब पैदा हुआ।
(सीरत इब्ने हिशाम व तलक़ीह-ए-फ़ुहूम अह्लुल अस्र फ़ी उ़यूनित्तारीख़ वस्सियर, पृ० 5)

सवाल–आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मोहतरम वालिद का इन्तिक़ाल कहां और कितनी उम्र में हुआ?

जवाब–जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम वालिदा के बत्न (पेट) मुबारक में थे, तो हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह को मदीना भेजा, ताकि वहां से खजूरें इकट्ठी करके लाएं। चुनांचे हज़रत अ़ब्दुल्लाह मदीना गए, उस वक़्त हज़रत अ़ब्दुल्लाह 25 साल के थे, मदीना ही में हज़रत अ़ब्दुल्लाह का इन्तिक़ाल हो गया। (औजज़ुस्सियर, पृ० 4, असहहुस्सियर, पृ० 5)

सवाल–आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा का कहां इन्तिक़ाल हुआ और उस वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ क्या थी?

जवाब–उ़लमा-ए-सियर ने ब्यान किया है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ 6 साल को पहुंची तो आपकी वालिदा मदीना गईं। वहां से लौटते हुए मक़ामे अब्वा (जो मदीना और मक्का के दर्मियान एक मक़ाम है) में पहुंच कर वालिदा माजिदा का इन्तिक़ाल हो गया। अब्वा मक़ाम से आपको लेकर उम्मे ऐमन आईं। यह भी मदीना साथ गई थीं।
(औजज़ुस्सियर, लिख़ैरिल बशर, असहहुस्सियर, पृ० 7)

सवाल–आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वज़ीर आसमान व ज़मीन में

कौन-कौन हैं?

जवाब-आसमान में हज़रत जिब्रील व मीकाईल अलैहिमस्सलाम वज़ीर हैं और ज़मीन पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा हैं। (तारीख़ुल ख़ु ल फ़ा, पृ0 50)

सवाल-क़ुरआन पाक में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कितने नामों का तज़्किरा आया है?

जवाब-अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सात नामों का ज़िक्र फ़रमाया है- 1. मुहम्मद, 2. ताहा, 3. यासीन, 4. अल मुज़्ज़म्मिल, 5. अल मुद्दस्सिर, 6. अहमद, 7. अब्दुल्लाह। (हाशिया जलालैन, पृ0 368, पारा 22 व तफ़सीर रूहुल ब्यान, हिस्सा 9, पृ0 365)

सवाल-मोजिज़ा-ए-शक़्क़ुल क़मर यानी चांद के दो टुकड़े होना और मोजिज़ा-ए-रद्दे शम्स यानी सूरज का वापस लौटना कब पेश आया?

जवाब-मोजिज़ा-ए-शक़्क़ुल क़मर मदीना आने से तक़रीबन पांच साल पहले मक्के में और मोजिज़ा-ए-रद्दे शम्स हिजरत के बाद सन् 07 हिजरी में ग़ज़्वा-ए-ख़ैबर से वापसी पर मक़ामे सहबा में पेश आया। (सीरतुल मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, हिस्सा 1, पृ0 236; व हिस्सा 1, पृ0 239)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाल काटने वाले सहाबी कौन थे?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाल काटने वाले सहाबी अबू हिन्द मौला फरवा बिन अम्र ब्याज़ी थे। (तारीख़ुल उमम वल मुलूक हिस्सा 2, पृ0 400)

सवाल-हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के वक़्त मलकुल मौत (इज़राईल अलै.) के साथ दूसरे फ़रिश्ते कौन-कौन थे?

जवाब-हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के वक़्त मलकुलमौत के साथ दो बड़े फ़रिश्ते और थे, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम जो सत्तर हज़ार और दूसरी रिवायत में एक लाख फ़रिश्तों पर हाकिम हैं, जिनमें का हर फ़रिश्ता हज़ार या एक लाख फ़रिश्तों पर हाकिम है। (मदारिजुन्नुबुव्वः, हिस्स 3, पृ0 24)

सवाल-हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने कितनी उम्र में वफ़ात पाई और आप सल्ल. की उस वक़्त उम्र क्या थी?

जवाब-हज़रत अब्दुल मुत्तलिब ने एक सौ दस साल की उम्र में वफ़ात पाई और उस वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ आठ साल दो माह दस दिन थी। (अर्रहीक़ुल मख़्तूम, 88)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शानों के दर्मियान मुहरे नुबुव्वत कब लगाई गई?

जवाब-रिवायतों से मालूम होता है कि मुहरे नुबुव्वत पैदाइश के वक़्त से ही थी और बनी इस्राईल के उलमा आपको इसी निशानी से पहचानते थे और दूसरा क़ौल यह है कि मुहरे नुबुव्वत शक़्क़े सद्र[1] के बाद लगाई गई, मगर पहला क़ौल ज़्यादा सही है। (सीरतुल मुस्तफ़ा सल्ल., 1/84)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शाम देश का पहला सफ़र कितनी उम्र में, किसके साथ किया, किस जगह किस राहिब से मुलाक़ात हुई?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ जब बारह साल को पहुंची तो आप सल्ल. अपने चचा अबू तालिब के साथ मुल्के शाम तिजारत के सफ़र के लिए तशरीफ़ ले गए। जब शहर बसरा के क़रीब मक़ामे तैमा में पहुंचे, वहां एक नसरानी आलिम जिरजीस नामी बुहैरा[2] राहिब ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुलाक़ात की और चचा को मश्वरा दिया कि नबी आख़िरुज़्ज़मां

---

1. जिन रिवायतों में शक़्क़े सद्र के बाद मुहर लगाए जाने का ज़िक्र है, अजब नहीं उन रिवायतों में पैदाइश के वक़्त वाली मुहरे नुबुव्वत की तज्दीद और इआदा हो, इस तरह से तमाम रिवायतों में ततबीक़ व मुवाफ़क़त हो जाती है और शक़्क़े सद्र के बाद मुहरे नुबुव्वत के लगाए जाने की वजह यह भी बयान की गई है कि जब किसी चीज़ की हिफ़ाज़त मक़सूद होती है, तो उसको मुहर लगाकर सील बन्द कर देते हैं, ताकि जो चीज़ उसमें रखी है, वह निकलने न पाए, साथ ही जिस तरह शक़्क़े सद्र से क़ल्ब का अन्दरूनी हिस्सा हज़्ज़े शैतानी से पाक कर दिया, इसी तरह दोनों शानों (मोंढों) के दर्मियान क़ल्ब के मुक़ाबिल बाईं जानिब एक मुहर लगा दी। ताकि क़ल्ब शैतानी वस्वसों और बाहरी हमलों से महफ़ूज़ हो जाए इसलिए कि शैतान उसी जगह से वस्वसे डालता है। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 1, पृ० 84)
2. बुहैरा राहिब तौहीद को मानने वाला था, मुश्रिक व बुतपरस्त न था। कुछ रिवायतों में जो बुहैरा की तरफ़ से लात व उज़्ज़ा की क़सम खिलाना आया है, सो वह इम्तिहान के तौर पर है। (हाशिया सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 1, पृ० 88)

सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मक्का वापस कर दिया जाए, वरना मुल्क-ए-शाम में उनको नुक़सान पहुंचने का अंदेशा है। (सीरत इब्ने हिशाम, पृ० 61, औजज़ुस्सियर लिख़ैरिल बशर, पृ० 6, उ़यूननुल असर, पृ 41)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को मक्का वापस होते वक़्त बुहैरा राहिब ने क्या तोहफ़ा दिया?

जवाब-बुहैरा राहिब जिरजीस ने नाश्ते के लिए रोटी और ज़ैतून का रौग़न ख़िदमत में पेश किया। आपने उसको साथ लिया।

(ख़साइसे-ए-कुबरा, हिस्सा 1, पृ० 84)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मुल्क-ए-शाम का दूसरा सफ़र कितनी उम्र में किसके साथ किया और किस राहिब से मुलाक़ात हुई?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मुबारक उ़म्र जब पच्चीस साल को पहुंच गई और आपकी अमानत व दियानत की शोहरत इतनी हो गई कि अह्ले अ़रब आपको अमीन के लक़ब से पुकारने लगे। हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने आपके पास पैग़ाम भेजा कि आप मेरा सामान लेकर मुल्क-ए-शाम जाएं, मैं आपको दूसरों से ज़्यादा नफ़ा दूंगी। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने चचा की माली हालत की कमज़ोरी की वजह से इस पैग़ाम को क़ुबूल कर लिया। आपके साथ इस सफ़र में ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के ग़ुलाम मैसरा भी थे। जब शहर बसरा पहुंचे तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम एक पेड़ के साए में बैठ गए। वहां एक राहिब नस्तूरा नामी रहता था। उसकी नज़र जब आप पर पड़ी तो उसकी ज़बान से बेसाख़्ता निकला, यही तो नबी अख़िरुज़्ज़मां (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हैं।

(सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा,1 पृ० 111)

सवाल-हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने आपको निकाह का पैग़ाम कब दिया?

जवाब-मुल्क-ए-शाम के सफ़र से लौटने के दो माह पच्चीस दिन बाद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पैग़ाम दिया। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चचा जान के मश्वरे से क़ुबूल फ़रमा लिया। (ऊपर का हवाला)

सवाल-बनी हाशिम का बाईकाट किस सन् में हुआ, कितनी मुद्दत तक रहा। अहदनामा किसने लिखा और उसका अंजाम क्या हुआ?

जवाब-सन् 07 नबवी में क़ुरैश के तमाम क़बीलों ने मुत्तफ़क़ा तौर पर समझौता लिखा कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम, बनू हाशिम और उनके हामियों से यकलख़्त तअ़ल्लुक़ात क़ता व ख़त्म कर दिए जाएं और यह अहदनामा मंसूर बिन इक्रिमा ने लिखा। उसी वक़्त अल्लाह ने उसको यह सज़ा दी कि उसका हाथ हमेशा के लिए किताबत से बेकार हो गया और शिबे अबी तालिब में सिवाए अबू लहब के तमाम बनू हाशिम ने लगातार तीन साल इसी हिसार (घिराव) में सख़्त तकलीफ़ों और परेशानियों के साथ गुज़ारे। (तारीख़ुल उमम वल मुलूक)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नुबुव्वत मिलने से पहले किस नबी की शरीअ़त पर अ़मल करते थे?

जवाब-हनफ़ी फ़ुक़हा के नज़दीक मुख़्तार क़ौल यह है कि आपको कश्फ़े सादिक़ और इलहामे सही से जो बात ज़ाहिर और मुंकशिफ़ होती कि यह मामला हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम या किसी और नबी की शरीअ़त से है, उसके मुताबिक़ अ़मल करते थे जैसा कि कुछ रिवायतों में बजाए 'फ़-य-त-हन्नसु' के 'फ़-य-त-हन्नफ़ु' का लफ़्ज़ आया है जिसके मानी यह हैं कि इब्राहीम हनीफ़ के तरीक़े पर चलते थे। यह लफ़्ज़ इसकी ताईद करता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मिल्लते हनफ़िया के मुताबिक़ अपने कश्फ़ व इलहाम से अ़मल करते थे। (सीरतुल मुस्तफ़ा हिस्सा 1, पृ० 133, कज़ा फ़ी दुर्रिल मुख़्तार, पृ० 163)

सवाल-सबसे पहला वह कलाम जो जिब्रील अ़लैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर लेकर नाज़िल हुए, वह क्या था?

जवाब-वह कलाम जो हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर सबसे पहले लाए, वह यह था

استعيذ بالله السميع العليم من الشيطان الرجيم، بسم الله الرحمن الرحيم

'अस्तईज़ु बिल्लाहिस्समीइल अ़लीम मिनश्शैतानिर्रजीम० बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

(तफ़सीर मवाहिबुर्रहमान, हिस्सा 1, पृ० 19, पारा 1)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ारे हिरा में कितने दिन रहते?

जवाब-इब्ने इस्हाक़ कहते हैं कि मुझसे इब्ने वहब बिन कैसान मौला आले ज़ुबैर ने ब्यान किया, उन्होंने कहा, मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से सुना है, वह कह रहे थे उबैदुल्लाह बिन उ़मैर बिन क़तादा लैसी को कि ऐ उ़बैद! ब्यान कीजिए। हमसे हज़रत उ़बैद ने ब्यान किया कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर लोगों से हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वह्य के शुरू के हालात ब्यान कर रहे थे और मैं उनकी मज्लिस में हाज़िर था। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़ारे हिरा में तहन्नुस यानी अल्लाह की मख़्लूक़ में तदब्बुर व तफ़क्कुर करते। (यही उस वक़्त की इबादत थी) एक माह तक उस ग़ार में क़ियाम कर लिया करते थे। उस वक़्त में मिस्कीनों में से अगर कोई आपके पास आता तो जो वक़्त पर मयस्सर होता, उसको खिलाते थे। जब आपकी यह एक माह की मुद्दत ख़त्म हो जाती तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लौटते वक़्त पहले ख़ाना काबा में हाज़िर होकर तवाफ़ करते, सात चक्कर या जितना अल्लाह चाहता तवाफ़ करते इसके बाद घर तशरीफ़ लाते।

सवाल-क़ुरैश ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ दारुन्नदवा में जो ख़ुफ़िया मीटिंग की थी, उसमें कौन-कौन शरीक थे?

जवाब-दारुन्नदवा की जिस मीटिंग में क़ुरैश ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़त्ल का ख़ुफ़िया मश्वरा किया, उसमें अकसर रिवायतों के मुताबिक़ पांच आदमी थे, जिनके नाम ये हैं-

1. उ़त्बा, 2. शैबा, 3. अबू जह्ल, 4.अबुल बख़्तरी, 5. आ़स बिन वाइल। दूसरा क़ौल अ़ल्लामा सालबी का बारह आदमियों का है।

(किताबुस्सबईयात फ़ी मवाइज़िल बिर्रिय्यात अ़ला हाशियति मजालिसिस्सुन्नियः पृ० 15)

सवाल-ताइफ़ का सफ़र किस सन् में पेश आया, दूसरा कौन साथ था? ताइफ़[1] में कितने दिन ठहरे?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम माह-ए-शव्वाल सन् 10 नबवी अवाख़िर या अवाइल मई 619 ईसवी में ताइफ़ (तब्लीग़ के लिए) तशरीफ़ ले गए। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु साथ थे। ताइफ़ में दस दिन

1. ताइफ़ शहर मक्का से साठ मील के फ़ासले पर है। (अर-रहीक़ुल मख़्तूम, पृ० 199)

(अर-रहीकुल मख़्तूम, पृ० 199)

कियाम किया।

सवाल-हिजरत के वक्त जिन लोगों ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मकान का घेराव किया था, वे कौन-कौन थे?

जवाब-उन काफ़िरों की तादाद बारह थी, जिनके नाम नीचे लिखे जाते हैं-

1. अबू जह्ल, 2. हकम बिन आस, 3. उक़्बा बिन अबी मुईत 4. नज़ बिन हारिस, 5. उमैया बिन खलफ़, 6. बिन ऐतला, 7. ज़म्आ बिन मस्ऊद, 8. तईमा, 9. अबू लह्ब, 10. उबई बिन खलफ़, 11. बन्नीह, 12. मुनब्बह। ये आखिरी दोनों हज्जाज के बेटे थे।

(सीरतुल मुस्तफ़ा, पृ० 360, बहवाला तबक़ात इब्ने साद, पृ० 154)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने जिस सवारी पर हिजरत की थी, उसका नाम क्या था और वह किससे और कितने में खरीदी थी?

जवाब-मशहूर मुअर्रिख़ अ़ल्लामा वाकिदी फ़रमाते हैं कि इस सवारी का नाम क़ुस्वा था। मुहम्मद बिन इस्हाक़ कहते हैं उसका नाम जिद्आ था।

(ज़ुरक़ानी, हिस्सा 1, पृ० 327)

और उस ऊंटनी की क़ीमत चार सौ दिरहम थी। चूँकि हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने दोनों ऊंटनियों को आठ सो दिरहम में खरीदा था।

अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी फ़रमाते हैं, सही क़ौल यह है कि ख़रीदने की वजह यह थी कि हिजरत अ़ज़ीमुश्शान इबादत है जिसको हक़ सुब्हानहू व तआ़ला ने ईमान के बाद ज़िक्र फ़रमाया। इसलिए आप इस अ़ज़ीम इबादत में किसी को शरीक नहीं करना चाहते थे कि खुदा की राह में हिजरत सिर्फ़ अपनी ही जान व माल से हो। यही वजह है कि सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने क़ीमत न लेने पर बहुत इसरार किया, मगर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इतने इसरार के बावुजूद क़ीमत अदा की।

(सीरतुल मुस्तफ़ा, पृ० 36)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का से हिजरते मदीना के लिए किस महीने की किस तारीख़ में रवाना हुए?

जवाब-उक़्बा-ए-सानिया की बैअ़त के तक़रीबन तीन माह बाद पहली रबीउल अव्वल को आप मक्का मुकर्रमा से रवाना हुए।

हज़रत हाकिम फ़रमाते हैं कि मुतवातिरा हदीसों से यह साबित होता है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम दोशंबा (सोमवार) के दिन मक्का से निकले और दोशंबा के दिन ही मदीना मुनव्वरा पहुंच गए, लेकिन मूसा ख़्वारज़मी फ़रमाते हैं कि आप मक्का से जुमेरात को निकले। हाफ़िज़ अ़स्क़लानी फ़रमाते हैं, सही क़ौल यह कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का से पंजशंबा (जुमेरात) को निकले, तीन दिन ग़ार में रहे, दोशंबा को ग़ार से निकल कर मदीना मुनव्वरा रवाना हुए। दूसरे उ़लमा-ए-सियर के नज़दीक आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पंजशंबा 27 सफ़र को हिजरत के लिए मक्का से निकले, तीन रात ग़ार-ए-सौर में रहकर पहली रबीउ़ल अव्वल को दोशंबा के दिन, दोपहर के वक़्त आप क़ुबा में तशरीफ़ लाए। अ़ल्लामा इब्ने हज़्म और अ़ल्लामा मुग़लताई ने इसी क़ौल को इख़्तियार किया। (सीरतुल मुस्तफ़ा, 387)

सवाल-हिजरत फ़रमाते वक़्त आपके साथ कौन था? क़ुरैश ने आपको पकड़ कर लाने का क्या इनाम तय किया था?

जवाब-मक्का से आपके साथ सिर्फ़ सिद्दीक़े अकबर रज़ि. थे। तीन दिन ग़ारे सौर में क़ियाम किया। तीन दिन के बाद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़रैक़ित दोइली (जो रास्ता दिखाने के लिए उजरत पर मुक़र्रर किया गया था) वादे के मुताबिक़ सुबह को दो ऊंटनियां लेकर ग़ार पर हाज़िर हुआ। एक ऊंटनी पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सवार हुए, दूसरी पर सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु सवार हुए। सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने ख़िदमत के लिए अपने गुलाम आ़मिर बिन फ़ुहैरा को साथ लिया। आ़मिर सिद्दीक़े अकबर के पीछे सवार हुआ और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़रैक़ित सबसे आगे अपनी ऊंटनी पर एक ग़ैर-मारूफ़ रास्ते से लेकर चला। (ज़ुरक़ानी, हिस्सा 1, पृ० 34)

और हज़रत शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि एक ऊंटनी पर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सवार हुए, अपने पीछे सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को सवार किया, दूसरी ऊंटनी पर अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र और आ़मिर बिन फ़ुहैरा सवार हुए। (मदारिजुन्नुबुव्वः, हिस्सा 2, पृ० 85)

मगर सही क़ौल पहला ही है, इसलिए कि हाफ़िज़ अ़स्क़लानी ने फ़त्हुल बारी

में इस बात को साफ़ किया है कि सफ़र में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ सिवाए आमिर बिन फ़ुहैरा के कोई और रास्ते का साथी न था और तीसरे ऊंट पर अब्दुल्लाह बिन उरैकित सवार हुए और आम शाहराह (आम रास्ता) को छोड़कर एक ग़ैर मशहूर रास्ता इख़्तियार किया और साहिबे मुस्तदरक हाकिम ने हिस्सा 3, पृ0 6 पर यह लिखा है कि क़ुरैश ने यह ऐलान किया कि जो मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को पकड़ कर लाएगा, उसको सौ ऊंट इनाम में दिए जाएंगे।

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पकड़ने के लिए जो काफ़िर चले, उनमें आप तक कौन पहुंचा और उसका क्या अंजाम हुआ?

जवाब-सुराक़ा बिन मालिक बिन जोशम ब्यान करते हैं कि मैं अपनी मज्लिस में बैठा था कि एक आदमी ने आकर ब्यान किया कि मैंने कुछ लोगों को साहिल के रास्ते से जाते हुए देखा है। मेरा ग़ालिब गुमान है कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके साथी हैं। सुराक़ा कहते हैं कि मैंने दिल में समझ लिया कि बेशक यह वही हैं, लेकिन उसको यह कहकर टाल दिया कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके साथी नहीं हैं, बल्कि दूसरे होंगे, ऐसा न हो कि यह शख़्स या दूसरा कोई सुनकर क़ुरैश का इनाम हासिल करे ले।

इसके थोड़ी देर बाद मैं मज्लिस से उठा और बांदी से कहा कि घोड़े को फ़्लां टीले के नीचे ले जाकर खड़ा करे और मैं अपना नेज़ा लेकर घर के पीछे की तरफ़ से निकला और घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ दरया के किनारे की तरफ़ को चला, यहां तक कि मैंने आपको पा लिया। जब उनके क़रीब पहुंचा तो सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझको देखा और घबरा कर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हम तो पकड़े गए। यह आदमी हमारी तलाश में आ रहा है। आपने फ़रमाया, हरगिज़ नहीं-

لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا

'तू ग़म न कर, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है।'

(सीरतुल मुस्तफ़ा हिस्सा 1, पृ0 393)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुराक़ा के लिए क्या बद्-दुआ

की और उसका घोड़ा कितना ज़मीन में धंसा?

जवाब-बुख़ारी की रिवायत में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सुराक़ा के लिए यह बद्-दुआ़ की 'अल्लाहुम्-म इस्रअ़हू' (ऐ अल्लाह! इसको पछाड़ दे) और एक रिवायत में है कि आपने फ़रमाया 'अल्लाहुम्-म इक्फ़िना बिमा शिअ्-त' (ऐ अल्लाह! हम को तू किफ़ायत फ़रमा, जितना तू चाहे) फ़ौरन सुराक़ा का घोड़ा घुटनों तक, दूसरी रिवायत में है कि पेट तक ज़मीन में धंस गया। सुराक़ा ने अ़र्ज़ किया, यक़ीनन, तुम दोनों ने मेरे लिए बद्-दुआ़ की है। आप दोनों हज़रात मेरे लिए अल्लाह से दुआ़ कीजिए, मैं अ़हद करता हूं कि जो आदमी आपको तलाश करता हुआ मिलेगा उसको वापस कर दूंगा। आपने दुआ़ फ़रमा दी। उसी वक़्त उसका घोड़ा ज़मीन ने छोड़ दिया।

सुराक़ा ने कहा, मैं समझ गया कि अल्लाह आपको ज़रूर ग़लबा देगा और आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क़ुरैश के सौ ऊंटों के इनाम की ख़बर देकर वापस हुआ।[1]

(सीरतुल मुस्तफ़ा हिस्सा 1, पृ0 395)

सवाल-सुराक़ा को अम्न तहरीर किसने किस चीज़ पर लिख कर दी?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से आ़मिर बिन फ़ुहैरा ने एक चमड़े के टुकड़े पर माफ़ी नामा लिखकर सुराक़ा को दिया। यह उसको लेकर रवाना हुआ, जो रास्ते में मिलता, उसको यह कहकर वापस कर देता कि आगे जाने की ज़रूरत नहीं, मैं देखकर आया हूं।

(बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पृ 510)

सवाल-बुरैदा अस्लमी की आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कब मुलाक़ात हुई, उसके साथ कितने लोग थे और आपस में क्या सवालात व जवाबात हुए?

जवाब-सुराक़ा के चले जाने के बाद बुरैदा ने मय सत्तर सवारों के आपसे मुलाक़ात की। यह भी चूंकि क़ुरैश के सौ ऊंट इनाम के हासिल करने की नीयत से आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तलाश में निकला था। जब बुरैदा

1. जब सुराक़ा वापस होने लगा तो आपने सुराक़ा को पेशीनगोई दी कि सुराक़ा तेरा क्या हाल होगा, जबकि तू किसरा के कंगन पहनेगा, चुनांचे यह पेशीनगोई अ़हदे फ़ारूक़ी में मुकम्मल हुई।

(सीरते मुस्तफ़ा)

का क़ाफ़िला आप के क़रीब पहुंचा, तो आप ने बुरैदा से पूछा, तुम कौन हो? जवाब मिला, बुरैदा हूं।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबूबक्र रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हू की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया-

يَا اَبَا بَكْرٍ بَرَدَ اَمْرُنَا وَصَلُحَ

'ऐ अबूबक्र! हमारा मामला ठंडा और दुरुस्त हो गया।' फिर आपने मालूम किया, तू किस क़बीले से है? बुरैदा ने कहा, *'मिन असलम'* (क़बीला असलम से हूं।) आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, अबूबक्र! हम सलामत रहे। फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मालूम किया, क़बीला असलम की किस शाख़ से हो? बुरैदा ने जवाब दिया, *'मिन बनी सह्म'* (बनू सह्म से) आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, *'ख़-र-ज सह्मु-क'* (तेरा हिस्सा निकल आया) यानी ऐ बुरैदा! तुझको ईमान की दौलत से नवाज़ा जाएगा। बुरैदा ने कहा, आप कौन हैं? आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया-

انا محمد بن عبد الله رسول الله

'अना मुहम्मदुब्नु अ़ब्दुल्लाहि रसूलुल्लाहि' (कि मैं मुहम्मद, अ़ब्दुल्लाह का बेटा, अल्लाह का रसूल हूं) इतना सुनते ही बुरैदा अपने सत्तर साथियों के साथ मुसलमान हो गया। (सीरतुल मुस्तफ़ा हिस्सा 1, पृ० 396)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ुबा में किसके घर क़ियाम किया? सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हू किस के मकान में ठहरे और क़ुबा मदीना से कितनी दूरी पर है?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बनी अ़म्र बिन औ़फ़ के ख़ानदान के सरदार कुलसूम बिन हदम के मकान पर क़ियाम फ़रमाया और सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ख़ुबैब बिन इसाफ़ के मकान पर ठहरे। (सीरत इब्ने हिशाम, हिस्सा 1, पृ० 174) मदीना से तीन मील की दूरी पर एक आबादी है, जिसका नाम क़ुबा है। (हाशिया तिर्मिज़ी, हिस्सा 1, पृ० 73)

सवाल-हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु कितने दिन बाद मक्का से रवाना होकर आपसे किस जगह आकर मिले?

जवाब-हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रवानगी के तीन दिन बाद लोगों की अमानत पहुंचा कर मदीना को हिजरत के लिए रवाना हुए और क़ुबा में कुलसूम बिन हदम के मकान पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ क़ियाम फ़रमाया। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 1, पृ० 397, सीरत इब्ने हिशाम, हिस्सा 1, पृ० 174 के हवाले से)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मदीना में दाख़िल होते वक़्त झंडे का मश्वरा किसने दिया और आपने वह झंडा किस कपड़े का बनवा कर किसको दिया?

जवाब-जब बुरैदा अस्लमी ने मअ् अपने साथियों के इस्लाम क़ुबूल किया तो बुरैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपसे अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! मदीना में दाख़िल होते वक़्त आपके सामने एक झंडा होना चाहिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना अमामा उतार कर और नेज़े में बांध कर बुरैदा को दिया। जिस वक़्त मदीना में दाख़िल हुए तो बुरैदा झंडा लिए हुए आपके सामने चल रहे थे।

(बैहक़ी फ़िद्दलाइल, इब्ने अब्दुल बर्र फ़िल इस्तीआब)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊंटनी किस जगह ठहरी और आप किसके मकान में ठहरे?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मदीना में दाख़िल हुए तो मदीना के लोगों में से हर आदमी की दिली तमन्ना यह थी कि नबी आख़िरुज़्ज़मां दो जहां के सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे घर क़ियाम करें, लेकिन आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऊंटनी अल्लाह की तरफ़ से मामूर (हुक्म दी गई) है। जहां यह रुकेगी, वहां ठहरूंगा। चुनांचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ऊंटनी की महार छोड़ दी। आख़िरकार ऊंटनी मुहल्ला बनी नज्जार (जिसमें आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ननिहाली रिश्तेदारी थी) में अपने आप उस जगह रुक गई जहां इस वक़्त मस्जिदे नबवी का दरवाज़ा है, मगर आप नाक़ा (ऊंटनी) से न उतरे। कुछ देर बाद नाक़ा अपने आप उठी और हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि॰ के मकान के दरवाज़े पर बैठी।

अभी आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सवारी से न उतरे थे कि ऊंटनी यहां से उठकर पहली जगह आकर बैठी और अपनी गरदन ज़मीन पर डाल दी। इस बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम नाक़ा से उतरे और हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु आपका सामान उठाकर अपने घर ले गए। आप अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मकान में ठहरे।

(सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 1, पृ0 407-408)

सवाल-हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु जिस मकान में रहते थे, वह किसने किसके लिए बनवाया था?

जवाब-हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु जिस मकान में रहते थे, यह मकान तुब्बअ़् (यमन के बादशाह) ने नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्ल॰ के लिए बनवाया था, जिसका असल वाक़िया यह है कि जब तुब्बअ़् शाहे यमन (यानी यमन देश के बादशाह) का गुज़र मदीना मुनव्वरा की ज़मीन पर से हुआ तो बादशाह के साथ चार सौ तौरात के उ़लमा भी थे। इन सब उ़लमा ने बादशाह से दरख़्वास्त की कि हमको इस ज़मीन में रह जाने की इजाज़त दे दी जाए बादशाह ने इसकी वजह मालूम की। उ़लमा ने जवाब में कहा कि हम अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के सहीफ़ों में यह लिखा हुआ पाते हैं कि अख़ीर ज़माने में एक नबी पैदा होंगे जिनका नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) होगा और यह सरज़मीन उनका दारुल हिजरत होगी। बादशाह ने इन सबको क़ियाम की इजाज़त दे दी और हर एक के लिए अलग-अलग मकान तैयार कराया, सबके निकाह कराए, हर एक को बहुत-सा माल दिया और एक ख़ास मकान नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए तैयार कराया कि जब नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यहां हिजरत फ़रमा कर आएं तो इस मकान में क़ियाम करें और आपके नाम एक ख़त तहरीर किया, जिसका मज़मून यह था-

شهدتُ على احمدَ انّهٗ   رَسُوْلٌ من اللّٰه بارئ النَسَم
فلو مُدّ عُمری الی عمرهٖ   لكنتُ وَزيرًا لَهٗ وابن عم
وجاهدتُ بالسيف اعداءهٗ   وَفَرَّجْتُ عن صَدرِهٖ كُلَّ غَمّ

'मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद मुज्तबा, अह्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अल्लाह के रसूले बरहक़ हैं। अगर मैं उस वक़्त तक ज़िंदा रहा तो मैं

उनका ज़रूर मददगार रहूंगा।'

'मैं उनके दुश्मनों से तलवार के ज़रीए जिहाद करूंगा और उनके दिल से हर ग़म को दूर करूंगा'

तुब्बअ् शाहे यमन ने इस ख़त पर मुहर सब्त की और एक आ़लिम के सुपुर्द किया कि अगर तुम उस नबी आख़िरुज़्ज़मां का ज़माना पाओ तो उनकी ख़िदमत में मेरा यह अ़रीज़ा पेश कर देना, वरना अपनी औलाद को यह ख़त सुपुर्द करके वसीयत कर देना जो मैं तुमको कर रहा हूं। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि. उसी आ़लिम की औलाद में से हैं और यह मकान भी वही मकान था, जिसको यमन के बादशाह ने सिर्फ़ इसी ग़रज़ से तामीर कराया था कि जब नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हिजरत करके आएं, तो इस मकान में उतरें और बाक़ी अंसार उन चार सौ उ़लमा की औलाद में से हैं। चुनांचे ख़ुदा के हुक्म से ऊंटनी उसी मकान के दरवाज़े पर जाकर ठहरी, जो तुब्बअ् ने पहले ही से आप के लिए तैयार कराया था।

शैख़ ज़ैनुद्दीन मराग़ी फ़रमाते हैं कि अगर यह कह दिया जाए कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मदीना मुनव्वरा में अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मकान पर नहीं उतरे, बल्कि अपने मकान पर उतरे, तो बेजा न होगा, इसलिए कि यह मकान असल में आप ही के लिए तैयार कराया गया था। अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ियाम तो उस मकान में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तशरीफ़ लाने के इन्तिज़ार में था, चुनांचे रिवायत में आता है कि अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने वह अ़रीज़ा तुब्बअ् 'की तरफ़ से ख़िदमते अक़्दस में पेश कर दिया था। वल्लाहु सुब्हानहू तआ़ला आलमु व इल्मुहू अतम्मु व अह्कमु। (सीरतुल मुस्तफ़ा, रौज़ुल अन्फ़ हिस्सा 1, पृ० 24 रूहुल ब्यान, हिस्सा 8, पृ० 421)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मकान में कितने दिन क़ियाम किया?

जवाब-अ़ल्लामा वाक़दी फ़रमाते हैं कि सात महीना क़ियाम किया। दूसरा क़ौल कम का भी है। (अल-बिदायः वन्निहायः, हिस्सा 3, पृ० 214)

सवाल-मदीना ठहरने के दौरान आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास यहूदियों के उ़लमा में से सबसे पहले कौन आया?

जवाब-इब्ने आइज़ उर्वा बिन ज़ुबैर के हवाले से रिवायत करते हैं कि यहूदियों के उलमा में सबसे पहले आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में यासिर बिन अख़तब यानी हुयइ बिन अख़तब का भाई हाज़िर हुआ और अल्लाह का कलाम सुनकर वापस हो गया, तो अपनी कौम को कहा कि मेरा कहना मानो, तहक़ीक़ कि यह वही नबी आख़िरुज़्ज़मां हैं, जिनका हमें इन्तिज़ार है, अब हम पर ज़रूरी है कि उन पर ईमान लाएं, मगर कौम ने मुख़ालफ़त की, उसका कहा न माना। (फ़त्हुलबारी, हिस्सा 3, पृ० 213)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मदीना के यहूदियों से समझौता

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना के यहूदियों से समझौता कब, क्यों और कितने क़बीलों से किन-किन शर्तों के साथ किया?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना की हिजरत के पांच माह बाद मदीना के यहूदियों के शर (बुराई) से बचने के लिए तीन क़बीलों- 1. बनी कैनक़ाअ़, 2. बनू नज़ीर, 3. बनू क़ुरैज़ा के साथ कुछ शर्तों पर मुश्तमिल एक समझौता किया जिसको नीचे लिखा जाता है-

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यह तहरीरी अ़हदनामा है मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की तरफ़ से क़ुरैश और यसरिब के मुसलमानों और मदीना के यहूदियों के दर्मियान, जो मुसलमानों के ताबेअ़ हों और उनके साथ इलहाक़ (शामिल होना) चाहें। हर फ़रीक़ अपने-अपने मज़हब पर क़ायम रह कर नीचे की बातों का पाबन्द होगा-

1. क़िसास और ख़ून बहा के जो तरीक़े पुराने ज़माने से चले आ रहे हैं, वे अ़द्ल व इंसाफ़ के साथ बदस्तूर क़ायम रहेंगे।
2. हर गिरोह को अ़द्ल व इंसाफ़ के साथ अपनी जमाअ़त का फ़िद्या देना होगा, यानी जिस क़बीले का जो आदमी क़ैद होगा, उसको छुड़ाने के लिए फ़िद्ये की रक़म उसी क़बीले के ज़िम्मे होगी।
3. ज़ुल्म व उ़दवान (दुश्मनी) और फ़साद के मुक़ाबले में सब मुत्तफ़िक़ रहेंगे, इस बारे में किसी की रिआ़यत न की जाएगी, गरचे वह किसी का बेटा

ही हो।

4. कोई मुसलमान किसी मुसलमान को किसी काफ़िर के मुक़ाबले में क़त्ल का मजाज़ न होगा और न किसी मुसलमान के मुक़ाबले में किसी काफ़िर की किसी क़िस्म की मदद की जाएगी

5. एक मामूली मुसलमान को पनाह देने का वही हक़ होगा, जैसा कि एक बड़े रुत्बे के मुसलमान को होता है।

6. जो यहूदी मुसलमानों के ताबेअ् होकर रहेंगे, उनकी हिफ़ाज़त मुसलमानों के ज़िम्मे होगी। उन पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म न होगा और न उनके मुक़ाबले में उनके किसी दुश्मन की मदद की जाएगी।

7. किसी काफ़िर या मुश्रिक को यह हक़ न होगा कि मुसलमानों के मुक़ाबले में क़ुरैश के किसी जान या माल को पनाह दे सके या क़ुरैश और मुसलमानों के दर्मियान रुकावट बन सके।

8. जंग के वक़्त यहूद को मुसलमानों का साथ जान व माल से देना होगा और मुसलमानों के ख़िलाफ़ मदद की इजाज़त न होगी।

9. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का कोई दुश्मन मदीना पर हमला करे तो यहूदियों पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मदद लाज़िम होगी।

10. जो क़बीले इस अ़स्द व हल्फ़ में शरीक हैं, अगर कोई क़बीला इस अ़स्द व हल्फ़ से आलहदगी इख़्तियार करना चाहे तो बग़ैर नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की इजाज़त के अलाहदगी इख़्तियार करने का मजाज़ न होगा।

11. किसी फ़ित्ना परदाज़ को ठिकाना देने की इजाज़त न होगी और जो किसी बिदअ़ती की मदद करेगा या उसको ठिकाना देगा, तो उस पर अल्लाह की लानत व ग़ज़ब और क़ियामत तक उसका कोई अ़मल मक़बूल न होगा।

12. जो किसी मुसलमान को क़त्ल करे और गवाही मौजूद हो, तो उस का

क़िसास लिया जाएगा, मगर यह कि मक़्तूल का वली दियत यानी उसके बदले माल लेने पर राज़ी हो जाए या माफ़ कर दे।

13. जब कोई झगड़ा या आपसी इख़्तिलाफ़ पेश आवे, तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ रुजू किया जाएगा।

(अल-बिदायः वन्निहायः, हिस्सा 3, पृ० 224-225)

मस्जिदे नबवी शरीफ़ की तामीर

सवाल-जिस जगह मस्जिदे नबवी तामीर हुई, वह किसकी जगह थी? किसने कितने में किससे ख़रीद कर वक़्फ़ की थी?

जवाब-जब नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मक्का से हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए, तो जिस जगह पहली बार आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ऊंटनी बैठी थी, वह जगह दो यतीम बच्चों यानी हज़रत सह्ल और हज़रत सुहैल की थी। उन्होंने इसका मिरबद यानी खजूर सुखाने की जगह बना रखा था। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन दोनों बच्चों और इनके चचा को बुलवाया। उनसे इस जगह के ख़रीदने के बारे में बात-चीत की। उन्होंने क़ीमत लेकर देने से इंकार किया और कहा कि हम अल्लाह के सिवा किसी से इसका बदल नहीं चाहते, मगर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बग़ैर क़ीमत लेने से इंकार कर दिया। आख़िर कार हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से उस जगह की क़ीमत दस दीनार अदा कर दी। उसमें जो खजूर के पेड़ थे, उनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कटवा दिया और मुश्रिकों की क़ब्रों को खुदवा कर हमवार करा के उस जगह एक मस्जिद तामीर कराई, जिसको मस्जिदे नबवी के नाम से मौसूम किया जाता है। (फ़त्हुलबारी, हिस्सा 7, पृ० 192)

और कुछ रिवायतों में है कि असुअ़द बिन ज़ुरारह ने उन दोनों लड़कों को उस जगह के बदले में बनी ब्याज़ा में कुछ पेड़ दिए और एक रिवायत में है कि हज़रत मुआ़ज़ बिन अफ़रा ने इन बच्चों को राज़ी कर लिया था और बलाज़ुरी

में है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्म से जो दस दीनार दिए थे, यह उस जगह की क़ीमत थी जो मस्जिद के बराबर में सहल व सुहैल की ज़मीन थी और कुछ रिवायतों में है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरादा मस्जिद नबवी की तामीर का हुआ, तो आपने बनी नज्जार से कहा कि अपना यह बाग़ क़ीमत लेकर हमें दे दो। उन्होंने कहा कि हम क़ीमत नहीं चाहते। आपने बिला क़ीमत लेने से इन्कार कर दिया और दस दीनार उसकी क़ीमत अदा की।

(असहहुस्सियर, पृ0 548)

असल में उस जगह का ज़िक्र रिवायतों में मुख़्तलिफ़ तरह से आया है, किसी रिवायत में खंडहर यानी यह जगह वीरान थी, इसमें ज़मीन वाले खजूरें सुखाते थे। हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से मालूम होता है कि इसमें खजूर के पेड़ और मुश्रिकों की क़ब्रें थीं। दोनों का मिलान इस तरह मुम्किन है कि इस ज़मीन के कई हिस्से थे, कुछ हिस्सा वीरान था, जिस को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़रीदा था, जिसकी क़ीमत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दस दीनार अदा की थी और कुछ के बदले हज़रत अस्अद बिन ज़ुरारा ने बनी ब्याज़ा के दरख़्त दिए और कुछ हिस्से के लिए हज़रत मुआज़ बिन अफ़रा ने उनको राज़ी कर लिया था। वल्लाहु तआला आलमु व इल्मुहू अतम्मु।

सवाल-मस्जिदे नबवी की लम्बाई-चौड़ाई कितनी थी, बुनियाद कितनी गहरी थी और दरवाज़े कितने छोड़े गए थे?

जवाब-ज़ैद बिन हारिसा की रिवायत के मुताबिक़ मस्जिदे नबवी की लंबाई सौ ज़िराअ् (हाथ) और चौड़ाई भी उसके क़रीब थी।

दूसरी रिवायत ख़ारिजा बिन साबित की है कि लम्बाई सत्तर हाथ और चौड़ाई साठ ज़िराअ् या कुछ ज़्यादा थी और बुनियाद तीन ज़िराअ् के क़रीब गहरी थी।

तीसरा क़ौल इमाम मालिक के शागिर्द मुहम्मद बिन यह्या का है कि मस्जिदे नबवी मश्रिक़ और मग़्रिब में 63 गज़ थी और उत्तर और दक्खिन में चौवन गज़ और दो तिहाई गज़ थी। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 1, पृ0 428)

और सुतून खजूर के पेड़ों के थे और साया के लिए खजूर के तने थे।

(असहहुस्सियर, पृ0 548)

और तीन दरवाज़े छोड़े गए थे, एक क़िब्ले की दीवार की तरफ़, दूसरा मग़रिब की तरफ़, जिसका नाम अब बाबुर्रहमतः है, तीसरा दरवाज़ा वह, जिससे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तश्रीफ़ लाते थे, जिसको अब बाब-ए-जिब्रील के नाम से याद किया जाता है। (सीरतुल मुस्तफ़ा हिस्सा 1, पृ० 428)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी की तामीर किस-किस सन् में कितनी बार कराई और तौसीअ़ के वक़्त किसने किसकी ज़मीन ख़रीद कर दी?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी ज़िंदगी में मस्जिदे नबवी की तामीर दो बार कराई। एक बार तो हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के मकान में क़ियाम के दौरान पहली हिजरी में कराई। दूसरी बार सन् 07 हिजरी में।

और मोजम तब्रानी में है कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी को बढ़ाने का इरादा किया, तो मस्जिद के मुत्तसिल एक अंसारी की ज़मीन थी, उनको फ़रमाया कि यह जगह जन्नत के एक महल के बदले हमको बेच दो, लेकिन वह अपनी ग़रीबी, नादारी और तंगहाली और बड़ा परिवार वाला होने की वजह से मुफ़्त न दे सके, इसलिए हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु यह जगह दस हज़ार दिरहम के बदले में ख़रीद कर ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ करने लगे कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! ज़मीन का जो टुकड़ा आप उस अंसारी से जन्नत के महल के बदले में ख़रीदना चाहते थे, वह मुझ नाचीज़ से ख़रीद लीजिए। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ज़मीन का वह टुकड़ा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से जन्नत के एक महल के बदले में ख़रीद कर मस्जिदे नबवी में शामिल फ़रमा लिया था।

(सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 1, पृ० 428)

सवाल-मस्जिदे नबवी का संगे बुनियाद किन लोगों ने रखा?

जवाब-अ़ल्लामा समहूदी ने अ़ल्लामा अक़शहरी से नक़्ल किया है कि एक रिवायत में इस तरह आया है कि हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम हुज़ूरे अक़्दस

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अल्लाह तआला आपको हुक्म फ़रमाते हैं कि आप एक घर (मस्जिद) तामीर करें और उसकी इमारत को बुलन्द बनाएं, पत्थर और गारे से उसकी तामीर करें। हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ जिब्रील! इसको कितना बुलन्द बनाऊं? उन्होंने कहा, सात हाथ। (और एक कौल पांच हाथ का है) जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी तामीर शुरू फ़रमाई तो पत्थरों के लाने का हुक्म दिया और सबसे पहले आपने एक पत्थर लेकर उसको अपने मुबारक हाथ से रखा, फिर हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया। वह एक पत्थर लाए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पत्थर के बराबर में उन्होंने वह पत्थर रखा। फिर आपने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्म दिया। उन्होंने इसी तरह एक पत्थर रखा, फिर इसी तरह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने, फिर इसी तरह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने। बैहक़ी और अबू याला की भी रिवायत में इसी तरह है, इसमें यह भी इज़ाफ़ा है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके बाद इर्शाद फ़रमाया कि ये लोग मेरे बाद ख़ुलफ़ा होंगे।

(अल-मन्हलुल अज़्बुल मौरूद, शरह सुनने अबी दाऊद हिस्सा 4, पृ० 58)

आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलामों का ज़िक्र

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मवाली यानी ग़ुलाम कौन-कौन थे, उनके नाम क्या क्या थे और पहले कौन किसकी ग़ुलामी में था?

जवबा-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ग़ुलामों के नामों में से जितने मिल सके हैं, वे लिखे जाते हैं-:

1. हज़रत ज़ैद बिन हारिसा।
2. हज़रत उसामा बिन ज़ैद।
3. हज़रत सौबान, इनको आपने आज़ाद कर दिया था और यह आपके साथ ही रहे। हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने (सन् 54 हिजरी) में इनकी वफ़ात हुई।

4. हज़रत शकरान, यह हब्शा के रहने वाले थे। इनका नाम सालेह बिन अदी था। कुछ लोगों ने इनको फ़ारसी नस्ल का बताया है और नाम सालेह बिन हौल बिन महबूज़ ज़िक्र किया है और यह आपके ग़ुलाम बनने से पहले हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ के ग़ुलाम थे। उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में उनको हिबा के तौर पर पेश किया था।

5. हज़रत रुवैफ़अ़, जिनकी कुन्नियत अबू राफ़ेअ़ थी, उनका असल नाम असलम था, कुछ ने इब्राहीम बतलाया है, यह असल में हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ग़ुलाम थे। हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इनको हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए हिबा कर दिया था, आपने फिर उनको आज़ाद कर दिया था और कुछ ने कहा है कि यह पहले सईद बिन आ़स की ग़ुलामी में थे।

6. हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु, इनकी कुन्नियत अबू अ़ब्दुल्लाह थी। यह इस्बहान के गांवों में से किसी गांव के थे।

7. हज़रत सफ़ीना, इनका नाम कुछ ने मेहरान और कुछ ने रबाह और कुछ ने सबिया बिन मारक़िया बतलाया है। असल में यह हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के ग़ुलाम थे। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने उनको इस शर्त पर आज़ाद कर दिया था कि तुम पूरी ज़िंदगी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत करते रहोगे।

8. अनसा, जिनकी कुन्नियत अबू मसरूह, कुछ ने अबू मुसरह ब्यान की है, यह फ़ारसी नस्ल के थे। इनकी वालिदा हब्शा की थीं। इनके वालिद का नाम फ़ारसी में करदवी बिन अशरबीदा बिन अदूहर बिन मेहरादर बिन कनह-कान था।

9. अबू कब्शा, जिनका नाम सुलैम था, उनकी पैदाइश मक्का में हुई, कुछ ने कहा, अर्ज़े दौस में हुई। इनको आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था। इनका इन्तिक़ाल सन् 13 हिजरी में हज़रत उमर रज़ि. की ख़िलाफ़त के पहले दिन हुआ।

10. अबू मुवैहिबा, इनकी पैदाइश मुज़ैना में हुई। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इनको भी ख़रीद कर आज़ाद कर दिया था।

11. रबाह अल-अस्वद, यह आपके पास इजाज़त लेकर दाख़िल होते थे।

12. हज़रत फ़ज़ालह।

13. मिदअ़म, यह रफ़ाआ बिन ज़ैद जुज़ामी के ग़ुलाम थे। रफ़ुआ ने मिदअ़म को आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए हिबा कर दिया था।

14. अबू ज़मीरा, यह भी फ़ारसी नस्ल के थे। यह कुश्तासब बादशाह के बेटे थे, इनका नाम 'वाह' था और यह किसी लड़ाई में तक़सीम के वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हिस्से में आए थे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इनको आज़ाद कर दिया था और इनको वसीयत के तौर पर एक ख़त लिखकर दिया था और यह अबू हुसैन बिन ज़मीरा के दादा थे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह ख़त उनके ख़ानदान वालों के पास पुश्त दर पुश्त रहा। उनके पोते हुसैन जब ख़लीफ़ा मेहदी के पास पहुंचे तो उनके पास आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का यह ख़त मौजूद था, ख़लीफ़ा मेहदी ने यह ख़त उनसे लिया, आंखों से लगाया और उन को तीन सौ दिरहम अ़ता किए।

15. मब्रान, यह ख़स्सी थे, जिनका नाम माबूर था। यह शाह-ए-मुक़ौक़िस ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हदिया किया था। इनके साथ दो बांदियां भी थीं-एक मारिया, जो अपने लिए रख ली थी और उनकी बहन सीरीन, जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत हस्सान बिन साबित को अ़ता कर दी थी।

(तबरी हिस्सा 2, पृ० 419, 420, 421)

हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत हव्वा का क्या मह्र अदा किया?

जवाब-अ़ल्लामा इब्नुल जौज़ी ने अपनी किताब 'सलातुल अह्ज़ान' में ज़िक्र किया है कि जब हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत हव्वा से क़ुरबत करना चाही, तो अल्लाह ने कहा, ऐ आदम! हव्वा तेरे लिए उस वक़्त तक हलाल नहीं, जब तक कि तुम उसका मह्र अदा न करो।

दूसरी रिवायत में है कि हव्वा ने मह्र तलब किया। हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदावन्द-ए-क़ुद्दूस से मालूम किया, या अल्लाह क्या मह्र अदा करूं? तो अल्लाह ने फ़रमाया कि मेरे महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर बीस बार दरूद शरीफ़ पढ़ो, आपने ऐसा ही किया।

(हाशिया शरहे वक़ाया, बाबुल मह्र, हिस्सा 2, पृ 30)

सवाल-हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का पुतला यानी जिस्म का ढांचा कहाँ किस जगह बनाया गया और वहां कितने दिनों तक पड़ा रहा?

जवाब-जब अल्लाह ने हज़रत इज़राईल अ़लैहिस्सलाम (म-ल-कुल मौत) को हुक्म दिया कि ज़मीन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों से मिट्टी लाकर उसका ख़मीर बनाए, फिर तीने लाज़िब यानी चिकनी मिट्टी और ह म इम्मस्नून बनाकर उसको सुखा कर सलसाल यानी इतना सुखा दिया जाए कि हाथ मारने से बजने लगे, गूंजदार आवाज़ पैदा होने लगे, तब सूरत बना कर मक्का के रास्ते में रख दे, उन फ़रिश्तों को दिखलाने के लिए जो ज़मीन से आसमान पर जाते हैं। चुनांचे उस जगह चालीस साल रखा रहा।(शरह तफ़सीरे बैज़ावी शेख़ज़ादा, हिस्सा 1, पृ0 254)

और हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मंक़ूल है कि हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का जस्दे अतहर तीने लाज़िब की शक्ल में चालीस साल पड़ा रहा, फिर ह म इम् मस्नून यानी सड़े हुए गारे व कीचड़ की शक्ल में चालीस साल रहा, फिर जब एक सौ बीस साल गुज़र गए तो रूह फूंक दी गई।

(हाशिया जलालैन, पारा 29, पृ0 483)

दूसरा क़ौल इस तरह है कि जब अल्लाह ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम का पुतला (जिस्म का ढांचा) तैयार कर दिया, तो यह ख़ाकी पुतला चालीस साल

तक मक्का और ताइफ़ के दर्मियान बत्ने नोमान (वादी-ए-नोमान) में पड़ा रहा, ताकि उसमें इंसानी सूरत की इस्तेदाद पैदा हो जाए, फिर अल्लाह ने जन्नत में मुन्तकिल कर दिया, वहां सूरत बनाई।

(ऊपर का हवाला)

सवाल-हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का नाम क़ुरआन में कितनी जगह किन-किन आयतों में आया है?

जवाब-क़ुरआन करीम में हज़रत आदम अलैहिस्सलाम का नाम पच्चीस आयतों में आया है-

सूरः बक़रः में आयत 31, 33, 34, 35, 37 में आया है।

सूरः आले इमरान में आयत 33, में एक ही जगह आया है।

सूरः आराफ़ में आयत 11, 19, 26, 27, 31, 35, 172, में आया है।

सूरः इस्रा में आयत 61, व 70 में दो जगह आया है।

सूरः कहफ़ में आयत 50 में एक जगह आया है।

सूरः मरयम में आयत 58 में एक जगह आया है।

सूरः ताहा में आयत 115, 116, 117, 120, और 121 में आया है।

सूरः यासीन में आयत 60 में एक ही जगह आया है।

(क स सुल क़ुरआन 1/119)

सवाल-हज़रत आदम अलैहिस्सलाम मरज़ुल वफ़ात में कितने दिन मुब्तला रहे?

जवाब-हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ग्यारह दिन बीमार रहकर इस दारे फ़ानी से रेहलत फ़रमा गए। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन)

(तारीख़े तबरी, हिस्सा 1, पृ० 107)

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से मुतअल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की वालिदा जिस पहाड़ के ग़ार में उनको जन कर आई थीं, आप वहां कितने दिन रहे?

जवाब-आप उस ग़ार में पन्द्रह महीने रहे। (तारीख़े तबरी, हिस्सा 1, पृ० 164)

सवाल-हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को नारे नमरूद में जलाने का मश्वरा

किसने दिया था और उसका अंजाम क्या हुआ?

जवाब-उस शख़्स का नाम हीज़न था, जिसका अंजाम यह हुआ कि अल्लाह ने उसको ज़मीन में धंसा दिया और क़ियामत तक धंसता ही चला जाएगा। (तबरी, हिस्सा 1, पृ० 170)

सवाल-जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम नारे नमरूद से सही सालिम बाहर निकल आए तो नमरूद ने कितने जानवर ज़बह कराए थे?

जवाब-नमरूद ने अल्लाह के नाम पर चार हज़ार गाए क़ुरबान की थीं। हज़रत इब्राहीम ने नमरूद से कह दिया था कि तुझ को कुफ़्र की हालत में क़ुरबानी करने का फ़ायदा न होगा। (तबरी, हिस्सा 1, पृ० 170)

सवाल-हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के कितने साल बाद हुई और तूफ़ाने नूह के कितने अ़र्से के बाद पैदा हुए?

जवाब-हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के तीन हज़ार तीन सौ सैंतीस साल बाद पैदा हुए और तूफ़ाने नूह के बारह सौ तिरेसठ साल बाद और दूसरा क़ौल है कि एक हज़ार उनासी (1079) साल बाद पैदा हुए। (तारीख़ुल उमम वल मुलूक, हिस्सा 1, पृ० 146)

सवाल-हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत सारा से कितनी उम्र में शादी की और हज़रत सारा किसकी बेटी थीं?

जवाब-सैंतीस साल की उम्र में सारा से शादी की और सारा हर्रान के बादशाह की लड़की थीं। (तबरी हिस्सा 1, पृ० 118 व हिस्सा 1, पृ० 171)

दूसरा क़ौल अ़ल्लामा सुहैली ने लिखा है कि सारा हारान बिन नाख़ूर की बेटी थीं, जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के चचा थे। (तारीख़ इब्न ख़ल्दून हिस्सा 1, पृ 78)

सवाल-हज़रत हाजरा किसकी बेटी थीं?

जवाब-हज़रत हाजरा बादशाहे मिस्र रक़्यून की बेटी थीं। रक़्यून इबरानी ज़बान का लफ़्ज़ है। (हाशिया तारीख़ इब्ने ख़ल्दून, हिस्सा 1, पृ० 78)

सवाल-इस्माईल अ़लैहिस्सलाम का मज़बह (ज़बह करने की जगह) बैतुल्लाह से कितनी दूरी पर था और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के मुबारक बदन पर उस वक़्त किस रंग की क़मीज़ थी?

जवाब-मज़बह यानी जिस जगह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम को ज़बह करने के लिए लिटाया, वह जगह बैतुल्लाह से दो मील के फ़ासले पर थी और हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम उस वक़्त सफ़ेद रंग की क़मीज़ पहने हुए थे। (तबरी हिस्सा 1, पृ० 174, 175)

सवाल-हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम के हुल्क़ूम पर छुरी क्यों नहीं चली, मेंढा कहां से आया था? उस पर किस रंग की ऊन थी?

जवाब-वल्लाहु आलमु! छुरी चलाते वक़्त रांग का टुकड़ा छुरी और गले के दर्मियान रोक बन गया था, वह मेंढा जन्नत का था जिस पर लाल रंग की ऊन थी। (तबरी हिस्सा 1, पृ० 195)

सवाल-हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश के वक़्त हज़रत सारा की उम्र क्या थी? हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कितनी उम्र में वफ़ात पाई और किस जगह दफ़न हुए?

जवाब-हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश के वक़्त हज़रत सारा की उम्र नव्वे साल की थी और हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने दो सौ या एक सौ पचहत्तर साल की उम्र में वफ़ात पाई और मक़्बरा जेरून में मदफ़ून हुए।

(तबरी, हिस्सा 1, पृ० 225, हिस्सा 1, पृ० 175 व तारीख़ इब्ने खल्दून, हिस्सा 1, पृ० 91)

सवाल-हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की कुल उम्र कितनी हुई और किस जगह दफ़न हुए?

जवाब-हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की कुल उम्र एक सौ तीस साल हुई। दूसरा क़ौल एक सो सैंतीस साल का है, उनको मज़रआ़ जेरून में हज़रत हाजरा की क़ब्र के पास दफ़न किया गया। (तारीख़ इब्ने खल्दून, हिस्सा 1, पृ० 92 व हिस्सा 1, पृ० 93 तबरी पृ० 208)

सवाल-हज़रत हाजरा की ख़त्ना किसने की?

जवाब-हज़रत सारा ने की, जिसका असल वाक़िया यह पेश आया था, हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जब हज़रत सारा ने देखा कि हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की वालिदा हज़रत हाजरा से हज़रत इब्राहीम मुहब्बत करने लगे हैं तो सारा के दिल में शदीद ग़ैरत पैदा हुई, यहां तक कि वह क़सम खा बैठीं कि हाजरा के आज़ा में से कोई उज़्व ज़रूर काटूंगी। यह इत्तिला जब हाजरा को पहुंची तो उन्होंने ज़िरह (लोहे का लिबास) पहननी शुरू कर

दी, जिसके दामन तवील रखे और ऐसा इसलिए किया ताकि चलते हुए दामन की रगड़ से क़दमों के निशान ज़मीन पर बाक़ी न रहें, फिर सारा उनके आने-जाने को पहचान न सके। जब इसका पता हज़रत इब्राहीम को चला तो आपने सारा से कहा कि क्या तू यह बात पसन्द करती है कि तू अपने को अल्लाह के फ़ैसल पर राज़ी कर ले और हाजरा का ख़्याल छोड़ दे? सारा ने कहा, मेरी क़सम का क्या होगा, तो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने उसकी तर्कीब यह बतलाई कि तुम हाजरा के पोशीदा जिस्म के ऊपर का गोश्त (जो मुस्तक़िल बदन का एक टुकड़ा है) काट दो। (इसका काट देना औ़रत के लिए लज़्ज़त हासिल करने वाला होता है) और औ़रतों में यह सुन्नत जारी भी हो जाएगी और क़सम भी पूरी हो जाएगी। सारा इस बात पर राज़ी हो गईं और उसको काट दिया, उस वक़्त से औ़रतों में यह तरीक़ा जारी हो गया यानी अरब में औ़रतों की ख़त्ना का रिवाज हो गया। इस्लाम में औ़रतों की ख़त्ना को मर्दों की ख़त्ना की तरह ज़रूरी क़रार नहीं दिया गया। (लताइफ़े इल्मिया तर्जुमा किताबुल अज़्किया, 27 तफ़्सीरे मज़्हरी 6/319)

सवाल-वह कौन-सी औ़रत है जिसने सबसे पहले ज़िरह पहनी?

जवाब-हज़रत हाजरा हैं। उन्होंने हज़रत सारा के पहचानने के ख़ौफ़ से पहनी।

(ऊपर का हवाला)

हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-वह पहाड़ कौन-सा है जिस पर हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह से दीदारे ख़ुदावन्दी की दरख़्वास्त की थी?

जवाब-कुछ तफ़सीर लिखने वालों का कहना है कि वह सेना पहाड़ था, जिसको तूरे सेना से याद किया जाता है। दूसरा क़ौल यह है कि उस पहाड़ का नाम ज़ुबैर था और वह मदयन के पहाड़ों में सबसे बड़ा पहाड़ था।

(तफ़सीरे बग़वी, हिस्सा 2, पृ0 196)

सवाल-जिस पहाड़ पर अल्लाह ने तजल्ली फ़रमाई, उसके कितने टुकड़े हो गए थे और कहां-कहां जाकर गिरे थे?

जवाब-कुछ तफ़सीरों में लिखा है कि जब अल्लाह ने तूरे सेना या ज़ुबैर पहाड़

पर तजल्ली फ़रमाई तो उस पहाड़ के छः टुकड़े हो गए थे। तीन मक्का में जाकर गिरे और तीन मदीना में। जो टुकड़े मक्का में जाकर गिरे, वे ये हैं- 1. जबले सौर, 2. जबले सबीर, 3. जबले हिरा और मदीना वाले ये हैं- 4. जबले उहुद, 5. जबले वदक़ान, 6. जबले रिज़्वी। इनके मुस्तक़िल पहाड़ बन गए।

(अल-मजालिसुस्सुन्नियाः फ़िल कलामि अलल अरबईनिन्नवविय्याः हिस्सा 1, पृ० 126)

सवाल-कोहे तूर पर हमकलामी के वक़्त मूसा अलैहिस्सलाम के साथ दूसरा कौन था?

जवाब-हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम थे, मगर जिब्रील अलैहिस्सलाम ने हमकलामी के दौरान जो बातें हुईं, वे नहीं सुनीं। (तफ़सीरे बग़वी, हिस्सा 2, पृ० 196)

सवाल-तौरात की तख़्तियों में कितना वज़न था, कितने साल में एक तख़्ती पढ़ी जाती थी और उस वक़्त उनको कौन पढ़ता था?

जवाब-तौरात की तख़्तियों में इतना वज़न था, जिसको सत्तर ऊंट उठा सकें और तौरात की तख़्तियों की शक्ल में अज्ज़ा बने हुए थे। एक तख़्ती यानी एक जुज़ एक साल में पढ़ा जाता था और हज़रत मूसा, हज़रत यूशअ़, हज़रत उज़ैर और हज़रत ईसा इन चारों के अलावा कोई उनकी तिलावत न करता था। (तफ़्सीरे बग़वी, हिस्सा 2, पृ० 199)

सवाल-फ़िरऔन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के मुक़ाबले के लिए कितने बच्चों को कहां जादू सीखने के लिए भेजा था और सिखाने वाला कौन था?

जवाब-हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से मुक़ाबले के लिए फ़िरऔन ने जहां जादूगरों को इकट्ठा किया, वहां बनी इस्राईल के सत्तर या बहत्तर बच्चों को (जिनमें दो क़िब्ती भी थे) नैनवा मक़ाम पर भेजा था। नैनवा के रहने वाले दो मजूसी उनको जादू सिखाते थे। तफ़सीर लिखने वालों ने इन बच्चों की तादाद में इख़्तिलाफ़ किया कि:-

1. बच्चे बारह हज़ार थे।
2. इमाम सुद्दी फ़रमाते हैं कि बच्चे तीस हज़ार के क़रीब थे।
3. इक्रिमा फ़रमाते हैं कि सत्तर हज़ार थे।
4. मुहम्मद बिन मुन्कदिर फ़रमाते हैं कि उन बच्चों की तादाद अस्सी

हज़ार थी। (तफ़सीरे बग़वी, हिस्सा 2, पृ0 187)

सवाल-जादूरों के सरदार का नाम क्या था?

जवाब-हज़रत मुक़ातिल फ़रमाते हैं कि जादूगरों के सरदार का नाम शमूऊन था और इब्ने जुरैज कहते हैं कि उसका नाम यूहन्ना था।

(तफ़सीर बग़वी हिस्सा 2, पृ0 187)

सवाल-हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के मुक़ाबले के लिए फ़िरऔन ने कितने जादूगरों को जमा किया और उनमें पेश-पेश कौन था?

जवाब-जादूगरों की तादाद पन्द्रह हज़ार थी। उनमें आगे-आगे यानी इन सब के सरदार चार थे- 1. साबूर, 2. आदूर, 3. हतूत, 4. शमूऊन। यही इन सब का बड़ा था जब उन्होंने अल्लाह की दलील को देखा तो पहले ये चारों जादूगर सज्दे में गिरे, फिर सबके सब सज्दे में गिर गए और सब के सब ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के हाथ पर इस्लाम क़ुबूल किया।

(तारीख़ुल उमम वल मुलूक, हिस्सा 1, पृ0 287)

सवाल-हज़रत मूसा और हज़रत हारून अ़लैहिमस्सलाम की वफ़ात कहां हुई और उनकी वफ़ात के कितने दिनों बाद किस नबी के हाथ पर मुल्क-ए-शाम फ़तह हुआ?

जवाब-जम्हूर उ़लमा फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम की वफ़ात वादी-ए-तीह में हो गई थी। उनकी वफ़ात के तीन माह बाद हज़रत यूशअ़ अ़लैहिस्सलाम के हाथ पर मुल्क-ए-शाम फ़तह हुआ।

(तफ़्सीरे बैज़ावी पृ0 76)

सवाल-फ़िरऔन किसको पूजता था?

जवाब-हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि फ़िरऔन गाय की इबादत करता था, इसी वजह से सामरी ने बछड़ा बनाया था। (बग़वी, 2/189)

सवाल-फ़िरऔन ने कितने साल हुकूमत की और उसकी उ़म्र कुल कितनी हुई?

जवाब-फ़िरऔन ने चार सौ (400) साल हुकूमत की और कुल उ़म्र छः सौ बीस साल हुई।

(मआ़लिमुत्तंज़ील हिस्सा 2, पृ0 190)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम और सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हुन्न से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-जिस वक़्त हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस्लाम लाए तो उस वक़्त उनके पास कितना माल था और वह माल कहां ख़र्च किया?

जवाब-इब्ने असाकिर ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और उ़र्वा के तरीक़ से रिवायत ब्यान की है कि बेशक अबूबक्र जिस वक़्त ईमान लाए, उनके पास चालीस हज़ार दीनार थे। दूसरी रिवायत में चालीस हज़ार दिरहम थे, जो सब के सब अल्लाह, उसके रसूल और मुसलमानों पर ख़र्च कर दिए, यहां तक कि जिस वक़्त हिजरत की तो पांच हज़ार दिरहम भी आपके पास बाक़ी नहीं थे। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, पृ० 39, अ़रबी)

सवाल-हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जिन ग़ुलामों को आज़ाद कराया, उनके नाम क्या हैं?

जवाब-उन ग़ुलामों में से हम को सिर्फ़ नौ के नाम मिल पाए हैं, जिनको नीचे लिखा जाता है-

1. हज़रत बिलाल को जो उमैया बिन ख़लफ़ के ग़ुलाम थे, दस औक़िया चांदी और एक चादर के बदले आज़ादी हासिल कराई।

(तारीख़ुल ख़ु ल फ़ा, अ़रबी, पृ० 48)

2. अबू फ़ुकैहा, 3. आ़मिर बिन फ़ुहैरा, 4. ज़नीरा 5. नह्दिया 6. नह्दिया की बेटी, 7. लुबैना, 8. मूलिया 9. उम्मे उ़बैस।

(सीरतुल मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम, हिस्सा 1, पृ० 232)

सवाल-उम्मते मुहम्मदिया में सबसे पहले जन्नत में कौन जाएगा?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी उम्मत में से जन्नत में सबसे पहले अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु जाएंगे।

(तारीख़ुल ख़ु ल फ़ा, पृ० 53)

सवाल-हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु का लक़ब ज़ुन्नूरैन रखने की वजह क्या है?

जवाब-हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु को ज़ुन्नूरैन (दो नूर वाले) इस

वजह से कहते हैं कि उनके निकाह में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो बेटियां, हज़रत रुकैया और उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हुमा एक के बाद एक आईं और हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर आज तक हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के अलावा कोई आदमी ऐसा नहीं गुज़रा, जिसके निकाह में किसी नबी की दो बेटियां ब्याही हों। यह शरफ़ सिर्फ़ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को मिला और यह लकब 'ज़ुन्नूरैन' ऐसा है कि मला-ए-आला में भी आपको इसी लकब से पुकारा जाता था।

(तारीख़ुल ख़ु ल फ़ा, पृ० 149)

सवाल-वह सहाबी कौन-से हैं जिन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सबसे पहले इस्लामी तरीक़े पर सलाम किया?

जवाब-वह सहाबी हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं जिनका क़िस्सा मुस्लिम शरीफ़ में इस तरह ब्यान किया गया है, ख़ुद हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु ब्यान करते हैं कि मुझसे मेरे भाई ने ब्यान किया कि ऐ अबूज़र! मैंने मक्का में एक ऐसे शख़्स से मुलाक़ात की, जो तुम जैसा था और लोग उसको बद-दीन कहते थे। हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं मक्का आया। मैंने एक शख़्स को देखा कि उनका नाम ले रहा है। मैंने पूछा, वह बद-दीन कहां है? वह मुझको देखकर चिल्ला उठा और मुझको बद-दीन, बद-दीन कहने लगा। लोगों ने मुझको पत्थरों से इस क़दर मारा कि मेरा तमाम बदन ख़ून से भर गया। मैं काबा और उसके पर्दों के दर्मियान छुप गया और वहीं काबा के परदे में पन्द्रह दिन और रात छुप कर गुज़ारे। मेरे पास आबे ज़मज़म के अलावा कोई दूसरी चीज़ खाने को न थी। उस दौरान जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ाना-ए-काबा में दाख़िल हुए, यहां मेरी इन दोनों से मुलाक़ात हुई। ख़ुदा की क़सम! मैं पहला वह अकेला शख़्स हूं, जिसने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस्लामी तरीक़े पर सलाम किया, यानी यह कहा, 'अस्सलामु अलैकुम या रसूलल्लाह!' आपने जवाब में 'व अलैकुमस्सलाम' कहा।

(हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पृ० 311)

सवाल-वे कौन-से सहाबी हैं, जिनमें हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम जैसी तवाज़ोअ़ पाई जाती थी?

जवाब-वह हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। चुनांचे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जिसको यह बात खुश करे कि वह ऐसे शख़्स को देखे जिसमें हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम जैसी तवाज़ोअ़ पाई जाती है, उसको चाहिए कि वह अबूज़र को देख ले। (कंज़ुल उम्माल हिस्सा 11, पृ0 666)

सवाल-हज़रत अबूज़र रज़ियल्लहु अ़न्हु का इन्तिकाल किस सन् में किस जगह हुआ और नमाज़े जनाज़ा किस ने पढ़ाई?

जवाब-हज़रत अबूज़र का इन्तिकाल ज़िलहिज्जा के महीने सन् 32 हिज्री में ख़िलाफ़त-ए-उसमानिया में मक़ामे रब्ज़ा में हुआ, हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कुछ लोगों के साथ नमाज़ पढ़ कर उसी जगह दफ़्न कर दिया। (सवानेह अबूज़र रज़ि.)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु के बारे में क्या पेशीनगोई फरमाई थी?

जवाब-हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु खुद ब्यान करते हैं कि एक लड़ाई में मैं अकेला पीछे रह गया था। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उस वक़्त फरमाया, अबूज़र! अकेला तन्हा ही चलता है, अकेला ही मरेगा! मुसलमानों की एक जमाअ़त आएगी, वह अबूज़र को दफ़न करेगी और अकेला ही क़ियामत में उठेगा। चुनांचे ऐसा ही हुआ। हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु को हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने मक़ाम-ए-रब्ज़ा (जो मदीना के करीब जंगल में एक जगह है) में रहने के लिए छोड़ दिया था, जब उनके इन्तिकाल का वक़्त करीब आया तो उनकी अहलिया रोने लगीं। अबूज़र ने रोने की वजह पूछी। अहलिया ने बताया कि मैं औरत ज़ात हूं, आपके कफ़न-दफ़न का इन्तिज़ाम कैसे हो सकेगा, तो अबूज़र ने अहलिया को पेशीनगोई सुनाई और कहा कि जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए तो रास्ते पर खड़ी हो जाना, मुसलमानों का एक काफ़िला आएगा, उनको मेरे इन्तिक़ाल की ख़बर देना। चुनांचे ऐसा ही हुआ। (सवानेह अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

सवाल-मक्का में रहते हुए सबसे पहले मक्का के क़ुरैश के सामने बुलंद आवाज़ से क़ुरआन पाक हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़लावा किसने पढ़ा?

जवाब-हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़लावा सबसे पहले मक्का के क़ुरैश के सामने बुलन्द आवाज़ से क़ुरआन पाक हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पढ़ा। (तबरी, हिस्सा 2, पृ0 73)

सवाल-मक्का से मदीना की तरफ़ सबसे आख़िर में हिजरत करने वाले

सहाबी कौन हैं?

जवाब-सबसे आख़िर में मक्का से मदीना हिजरत करके जाने वाले सहाबी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जह्श हैं। यह नाबीना सहाबी थे। अपनी अह्लिया के साथ उन्होंने हिजरत की थी। उनकी अह्लिया फ़ारिआ़ बिन्ते अबू सुफ़ियान थी और वालिदा उमैया बिन्ते अ़ब्दुल मुत्तलिब थीं। उनकी कुन्नियत अबू मुहम्मद थी।

(हयातुस्सहाबा, हिस्सा 2, पृ० 381 हिस्सा 2, पृ० 382)

दूसरा क़ौल यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया था, "इन्न-क ख़ातमुल मुहाजिरीन फ़िल हिजरति व अना ख़ातमुन्नबिय्यीन फ़िन्नुबुव्वति" यानी ऐ अ़ब्बास! बेशक तू हिजरत करने वालों में से सबसे आख़िरी मुहाजिर है। (उन्होंने[1] फ़त्हे मक्का के वक़्त हिजरत की थी) और मैं नबियों में सबसे आख़िरी नबी हूं।'

(कंज़ुल उ़म्माल, हिस्सा 2, पृ० 699)

सवाल-मालदारों में सबसे पहले उम्मते मुहम्मदिया में कौन जन्नत में दाख़िल होगा?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जन्नत में मालदारों में सबसे पहले अ़ब्दुल्लाह बिन औ़फ़ दाख़िल होंगे।

(कंज़ुल उ़म्माल, हिस्सा 11, पृ० 716)

सवाल-वे कौन-से सहाबी हैं जो हिजरत के बाद सबसे पहले अल्लाह को प्यारे हो गए?

जवाब-हिजरत के बाद सबसे पहले इन्तिक़ाल जिन सहाबी का हुआ, वह कुलसूम बिन हदम हैं। यह हिजरत के बाद कुछ देर ही ज़िंदा रहे। उनके बाद हज़रत असअ़द बिन ज़ुरारः का इन्तिक़ाल हुआ और हज़रत अबू उमामा की वफ़ात भी मस्जिदे नबवी की बुनियाद की तकमील से पहले हो गई थी।

(तबरी, हिस्सा 2, पृ० 118)

सवाल-हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु किस सन् में पैदा हुए और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से उम्र में कितने बड़े थे?

जवाब-हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु सन् 566 ईसवी में वाक़िआ-ए-फ़ील से तीन साल पहले पैदा हुए और आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की

1. फ़त्हे मक्का के वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया था "ला हिज-र-त बअ़्दल फ़त्हि" यानी फ़त्हे मक्का के बाद किसी की हिजरत मक़्बूल नहीं।

पैदाइश वाक़िआ-ए-फ़ील वाले साल हुई थी तो हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तीन साल बड़े थे।
(तहज़ीबुल अस्मा, एडीशन जर्मन, पृ0 34 व सियर आलामुन्नु ब ला पृ0 79)

दूसरा क़ौल यह है कि यह वाक़िआ-ए-फ़ील से एक साल पहले पैदा हुए।
(अस्माउर्रिजाल, मिश्कात शरीफ़, पृ0 606)

सवाल-क़ुरैश ने हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु को किस उम्र में बैतुल्लाह की ख़िदमत के लिए मुंतख़ब किया और उनके सुपुर्द क्या-क्या ओ़हदा किया गया था?

जवाब-जिस वक़्त हज़रत अ़ब्बास ग्यारह साल की उ़म्र को पहुंचे, बावुजूदे कि आपके दूसरे भाई ज़िंदा व मौजूद थे, मगर क़ुरैश ने हज़रत अ़ब्बास में हिल्म, शुजाअ़त, सख़ावत, सियादत, ख़ानदानी सिलारहमी देखकर उन्हीं को बैतुल्लाह की हिफ़ाज़त व हरम-ए-मोहतरम की ख़िदमत के लिए मुन्तख़ब किया था और सबने मुत्तफ़िक़ होकर आ़म इजाज़त दे दी थी और यह ऐलान कर दिया था कि जो आदमी हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का कहा नहीं मानेगा, उसको सारी क़ौम से मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाना चाहिए। सारी क़ौम का उससे बाइकॉट रहेगा और क़ुरैश ने आपको जो ओ़हदे दिए थे, उनको नीचे लिखा जाता है-

1. सक़ाया, (हाजियों को पानी और नबीज़ और नशावर चीज़ पिलाने की ख़िदमत)
2. रफ़ादा, यानी हाजियों को खाना खिलाने की ख़िदमत।
3. हजाबा, यानी ख़ुदा-ए-ज़ुल जलाल के मुक़द्दस घर की दरबानी की ख़िदमत,
4. नदवा, यानी दारुन्नदवा[1] (यह एक मकान था, जिसमें ख़ास मश्वरा होता था) में उसके सदूरे इजलास बनने का इस्तिह्क़ाक़।
5. लिवा, यानी लड़ाई के वक़्त अ़लमबरदारी की ख़िदमत।
6. क़यादा, यानी जंग के वक़्त लश्कर की सिपहसालारी की ख़िदमत।

(कामिल इब्ने असीर, हिस्सा, 1 पृ0 9)

---

1. अरबों ने एक पंचायत घर बना रखा था जिसमें अहम मश्वरा होता था उसको नदवा से ताबीर करते थे। इसी घर में अ़रब के सरदारों ने नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़त्ल का फ़ैसला किया था।

पैदाइश वाक़िआ-ए-फ़ील वाले साल हुई थी तो हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से तीन साल बड़े थे।

(तहज़ीबुल अस्मा, एडीशन जर्मन, पृ0 34 व सियर आलामुन्नु ब ला पृ0 79)

दूसरा क़ौल यह है कि यह वाक़िआ-ए-फ़ील से एक साल पहले पैदा हुए।

(अस्माउर्रिजाल, मिश्कात शरीफ़, पृ0 606)

सवाल-क़ुरैश ने हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु को किस उ़म्र में बैतुल्लाह की ख़िदमत के लिए मुंतख़ब किया और उनके सुपुर्द क्या-क्या ओ़हदा किया गया था?

जवाब-जिस वक़्त हज़रत अ़ब्बास ग्यारह साल की उ़म्र को पहुंचे, बावुजूदे कि आपके दूसरे भाई ज़िंदा व मौजूद थे, मगर क़ुरैश ने हज़रत अ़ब्बास में हिल्म, शुजाअ़त, सख़ावत, सियादत, ख़ानदानी सिलारहमी देखकर उन्हीं को बैतुल्लाह की हिफ़ाज़त व हरम-ए-मोहतरम की ख़िदमत के लिए मुन्तख़ब किया था और सबने मुत्तफ़िक़ होकर आम इजाज़त दे दी थी और यह ऐलान कर दिया था कि जो आदमी हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का कहा नहीं मानेगा, उसको सारी क़ौम से मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाना चाहिए। सारी क़ौम का उससे बाइकॉट रहेगा और क़ुरैश ने आपको जो ओ़स्दे दिए थे, उनको नीचे लिखा जाता है-

1. सक़ाया, (हाजियों को पानी और नबीज़ और नशावर चीज़ पिलाने की ख़िदमत)
2. रफ़ादा, यानी हाजियों को खाना खिलाने की ख़िदमत।
3. हजाबा, यानी ख़ुदा-ए-ज़ुल जलाल के मुक़द्दस घर की दरबानी की ख़िदमत,
4. नदवा, यानी दारुन्नदवा[1] (यह एक मकान था, जिसमें ख़ास मश्वरा होता था) में उसके सद्रे इजलास बनने का इस्तिह्क़ाक़।
5. लिवा, यानी लड़ाई के वक़्त अ़लमबरदारी की ख़िदमत।
6. क़यादा, यानी जंग के वक़्त लश्कर की सिपहसालारी की ख़िदमत।

(कामिल इब्ने असीर, हिस्सा, 1 पृ0 9)

---

1. अरबों ने एक पंचायत घर बना रखा था जिसमें अहम मश्वरा होता था उसको नदवा से ताबीर करते थे। इसी घर में अ़रब के सरदारों ने नबी आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के क़त्ल का फ़ैसला किया था।

सवाल-बैतुल्लाह पर सबसे पहले कीमती लिबास किसने चढ़ाया?

जवाब-हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु जिस वक़्त पांच साल के थे, यह गुम हो गए थे, उनकी वालिदा ने नज़्र मानी कि अगर बच्चा मिल गया तो मैं बैतुल्लाह पर रेशमी लिबास डालूंगी, चुनाँचे जब हज़रत अ़ब्बास मिल गए तो आपकी वालिदा ने बैतुल्लाह पर हरीर (यह एक रेशमी कीमती कपड़ा होता है) और दीबाज चढ़ाया। यही सबसे पहली औरत हैं जिन्होंने बैतुल्लाह पर सबसे पहले रेशमी लिबास डाला था। (सीरतुन्नुबुव्वतः, एडीशन जर्मन, पृ० 59)

सवाल-हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का इन्तिक़ाल किस माह व सन् में हुआ और दफ़न कहां हुए और जनाज़े की नमाज़ किसने पढ़ाई और उम्र कितनी हुई?

जवाब-हज़रत अ़ब्बास का इन्तिक़ाल जुमा के दिन 12 रजब सन् 32 हिजरी या 34 हिजरी में हुआ। तीसरा क़ौला 33 हिजरी का है (मदायनी) जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न हुए। नमाज़े जनाज़ा हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पढ़ाई और उ़म्र अठासी साल की हुई। (मिश्कात अस्माउर्रिजाल, पृ० 606, व सियर आला मिन्नु ब ला, पृ० 97)

सवाल-नबवी ज़माने में किन-किन सहाबा ने क़ुरआन पाक जमा किया?

जवाब-हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में चार सहाबा ने क़ुरआन पाक जमा किया-

1. हज़रत उबइ बिन काब रज़ियल्लाहु अ़न्हु
2. हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु
3. हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हु
4. हज़रत अबू ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु। (सियर आ़लामिन्नु ब ला, पृ० 445)

पहली हिजरत, हब्शा की तरफ़

सवाल-हब्शा की तरफ़ हिजरत किस माह और किस सन् में कितने सहाबा ने की और कितने दिन हब्शा में ठहरे?

जवाब-माह-ए-रजब सन् 05 नबवी में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से ग्यारह मर्द और पांच औरतों ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की जिनकी फ़ेहरिस्त अगले पृष्ठ पर देखें।

मर्द	औरतें
1. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु	1. हज़रत रुक़य्या बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में थीं।
2. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु	2. हज़रत सहला बिन्ते सुहैल रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत हुज़ैफ़ा की अह्लिया,
3. हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु	3. हज़रत उम्मे सलमा बिन्ते अबी उमैया (अबू सलमा की बीवी, जो अबू सलमा के इन्तिक़ाल के बाद अल्लाह के रसूल सल्ल. की ज़ौजियत में आईं और उम्मुल मोमिनीन में से हुईं।)
4. हज़रत अबू हुज़ैफ़ा बिन उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु	4. लैला बिन्ते अबी ख़ैसमा, आमिर बिन रबीआ की बीवी। (फ़त्हुलबारी, हिस्सा 7, पृ0 143)
5. हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु	5. उम्मे कुलसूम बिनते सुहैल बिन उमर, अबू सबरा की बीवी (उयूनुल असर, पृ0 115)
6. हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद रज़ियल्लाहु अन्हु	
7. हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु	
8. हज़रत आमिर बिन रबीआ रज़ियल्लाहु अन्हु	
9. हज़रत सुहैल बिन बैज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु	
10. हज़रत अबू सबरा बिन अबी रुहम रज़ियल्लाहु अन्हु	
11. हज़रत हातिब बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु	

ये सहाबा और सहाबियात मुल्क-ए-हब्शा में माह-ए-रजब से शव्वाल तक मुक़ीम रहे, शव्वाल में उन्होंने यह ख़बर सुनी कि मक्का वाले मुसलमान हो गए इस लिए हब्शा से आ गए। मक्का के क़रीब पहुंच कर उनको मालूम हुआ कि यह ख़बर ग़लत है। अब ये लोग सख़्त कशमकश में पड़े, इसलिए कोई छुप कर और कोई किसी की पनाह लेकर मक्का में दाख़िल हुआ। (सीरतुल मुस्तफ़ा हिस्सा 1, पृ0 242)

सवाल-दूसरी बार सहाबा ने हिज्रत हब्शा की तरफ़ किस वजह से की और कितने लोगों ने की?

जवाब-पहली हिज्रत के बाद जब मुसलमान मक्का वापस आ गए तो, अब मुश्रिकों ने और ज़्यादा सताना शुरू कर दिया, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दोबारा हिज्रत की इजाज़त दे दी। इस बार छियासी मर्दों और सतरह औरतों ने हिज्रत की।

(सीरत इब्ने हिशाम, हिस्सा 1, पृ0 111, उ़यूनुल असर, हिस्सा 1, पृ0 116)

मुहाजिरीन और अंसार के दर्मियान भाईचारगी

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा की मुवाख़ात (भाईचारगी) कितनी बार कराई और किस को किस का भाई बनाया?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा में दो बार मुवाख़ात कराई। एक बार तो हिजरत से पहले सिर्फ़ मुहाजिरीन में आपसी रिश्ता और मुवाख़ात कायम कराया, जिनकी तादाद अठारह मिलती है और दूसरी मुवाख़ात, हिजरत के बाद अंसार व मुहाजिरीन के दर्मियान हुई।

जो मुवाख़ात हिजरत से पहले सिर्फ़ मुहाजिरीन में मक्का में हुई, उनके नाम नीचे लिखे जाते हैं-

- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दर्मियान मुवाख़ात हुई।
- हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दर्मियान मुवाख़ात हुई।
- हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दर्मियान भाईचारगी हुई।
- हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के भाई हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु बने।
- हज़रत उ़बैदा बिन हारिस और बिलाल बिन रिबाह के दर्मियान भाईचारगी

हुई।

- ज़ुबैर बिन अव्वाम और अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दर्मियान भाईचारगी हुई।
- हज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु, हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु, के भाई बने।
- हज़रत अबू उ़बैदा बिन जर्राह और सालिम मौला अबी हुज़ैफ़ा दोनों भाई बने।
- हज़रत सईद बिन ज़ैद और हज़रत तलहा बिन उ़बैदुल्लाह के दर्मियान भाईचारगी हुई।

(उ़यूनुल असर फ़ी मुतूनिल मग़ाज़ी वश-शमाइल वस्सियर, हिस्सा1, पृ0 321)

सवाल-दूसरी बार मुवाख़ात कब किसके मकान पर कितने सहाबा के दर्मियान हुई?

जवाब-दूसरी मुवाख़ात हिजरत के पांच माह बाद हुई। कुछ कहते हैं कि दूसरी मुवाख़ात मस्जिदे नबवी की तामीर से पहले हुई और कुछ ने कहा है कि जिस वक़्त मस्जिदे नबवी की तामीर हो रही थी, उस वक़्त हुई और यह मुवाख़ात हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु के मकान पर पैंतालीस अन्सार और पैंतालीस मुहाजिरीन के दर्मियान हुई। (सीरतुल मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, पृ0 437)

सवाल-जिन मुहाजिरीन और अन्सार के दर्मियान मदीना में मुवाख़ात हुई, उनके नाम क्या-क्या हैं?

जवाब-इनमें से कुछ के नाम लिखे जाते हैं-

मुहाजिरीन	अंसार
1. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु	2. हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु
3. हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु	4. हज़रत उ़त्बान बिन मालिक रज़ियल्लाहु अ़न्हु
5. हज़रत अबू उ़बैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अ़न्हु	6. हज़रत साद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु
7. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु	8. हज़रत साद बिन रुबैअ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु

मुहाजिरीन	अंसार
9. हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु	10. हज़रत सलमा बिन सलामा बिन वक़्श रज़ियल्लाहु अन्हु
11. हज़रत उस्मान ज़ुन्नूरैन रज़ियल्लाहु अन्हु	12. हज़रत औस बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु
13. हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु	14. हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु
15. हज़रत सईद बिन ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल रज़ियल्लाहु अन्हु	16. हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु
17. हज़रत मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु	18. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु
19. हज़रत अबू हुज़ैफ़ा[1] बिन उत्बा रज़ियल्लाहु अन्हु	20. हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हु
21. हज़रत अम्मार[2] बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हु	22. हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हु
23. हज़रत अबूज़र गिफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु	24. हज़रत मुज़िर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु
25. हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु	26. हज़रत अबुद्दर्दा उवैमिर बिन सालबा रज़ियल्लाहु अन्हु
27. हज़रत बिलाल हब्शी रज़ियल्लाहु अन्हु	28. हज़रत अबू रुवैहा अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु
29. हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ रज़ियल्लाहु अन्हु	30. हज़रत उवैमिर बिन साइदा रज़ियल्लाहु अन्हु
31. हज़रत अबू मुरसद गनमी रज़ियल्लाहु अन्हु	32. हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु
33. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु	34. हज़रत आसिम बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु
35. हज़रत उत्बा बिन गज़्वान रज़ियल्लाहु अन्हु	36. हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु
37. हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद रज़ियल्लाहु अन्हु	38. हज़रत साद बिन ख़ुसैमा रज़ियल्लाहु अन्हु
39. हज़रत उस्मान बिन मज़्ऊन रज़ियल्लाहु अन्हु	40. हज़रत अबुल हैसम बिन तैहान रज़ियल्लाहु अन्हु
41. हज़रत उबैदा बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु	42. हज़रत उमैर बिन हुम्माम रज़ियल्लाहु अन्हु
43. हज़रत तुफ़ैल बिन हारिस यानी उबैदा बिन हारिस के भाई	44. हज़रत सुफ़ियान नस्र ख़ज़रजी रज़ियल्लाहु अन्हु
45. हज़रत सफ़्वान बिन बैज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु	46. हज़रत राफ़ेअ बिन मुअल्ला रज़ियल्लाहु अन्हु
47. हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़ियल्लाहु अन्हु	48. हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु
49. हज़रत ज़ुश्शिमालैन रज़ियल्लाहु अन्हु	50. हज़रत यज़ीद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु
51. हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु	52. हज़रत तलहा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु

1. हज़रत अबू हुज़ैफ़ा के मुतअल्लिक़ फ़त्हुलबारी, हिस्सा 7, सफ़्हा 27। में है कि यह गज़्वा-ए-उहुद के ज़माने में इस्लाम लाए।
2. दूसरा क़ौल साहिबे बिदाय: ने हिस्सा 3, सफ़्हा 223 पर लिखा है कि अम्मार बिन यासिर के भाई साबित बिन क़ैस बिन शमास बने।

मुहाजिरीन	अंसार
53. हज़रत ज़ैद बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु	54. हज़रत मान बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु
55. हज़रत अम्र बिन सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु	56. हज़रत साद बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु
57. हज़रत आक़िल बिन बुकैर रज़ियल्लाहु अन्हु	58. हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु
59. हज़रत ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु	60. हज़रत मुंज़िर बिन मुहम्मद रज़ियल्लाहु अन्हु
61. हज़रत सिर्रा बिन अबी रूहुम रज़ियल्लाहु अन्हु	62. हज़रत उबादा बिन ख़शख़ाश रज़ियल्लाहु अन्हु
63. हज़रत मिस्तह बिन असासा रज़ियल्लाहु अन्हु	64. हज़रत ज़ैद बिन मुज़य्यिन रज़ियल्लाहु अन्हु
65. हज़रत उक्काशा बिन मुहसिन रज़ियल्लाहु अन्हु	66. हज़रत मुजज़्ज़र बिन ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु
67. हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा रज़ियल्लाहु अन्हु	68. हज़रत हारिस बिन सम्मा रज़ियल्लाहु अन्हु
69. हज़रत महजा मौला उमर रज़ियल्लाहु अन्हु	70. हज़रत सुराक़ा बिन अम्र बिन अतिय्या रज़ियल्लाहु अन्हु
71. हज़रत जाफ़र[1] बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु	72. हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु
73. हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु	74. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मरसद रज़ियल्लाहु अन्हु
	(सीरतुलमुस्तफ़ा हिस्सा 1, सफ़हा 439 उयूनुल असर हिस्सा 1, सफ़हा 20)[2]

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नुक़बा (क़ौम के सरदार) के नाम

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किस वक़्त किस को नक़ीब बनाया और निशानदही किसने की?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नक़ीब उस वक़्त मुन्तख़ब फ़रमाए जबकि सत्तर अन्सार का क़ाफ़िला मदीना से हज के दिनों में मक्का आया और मिना की घाटी में इन सब लोगों ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हाथ पर बैअ़त की। जब सब बैअ़त कर चुके तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मूसा अलैहिस्सलाम ने बनी इसराईल में से बारह नक़ीब मुन्तख़ब फ़रमाए थे। इसी तरह मैं भी जिब्रील अलैहिस्सलाम के इशारे से तुम में से बारह नक़ीब मुन्तख़ब करता हूं। इन बारह से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि तुम अपनी क़ौम के कफ़ील और ज़िम्मेदार हो जैसे हवारी ईसा

1. हज़रत जाफ़र के बारे में फ़तहुल बारी में लिखा है कि मुवाख़ात (भाईचारगी) के वक़्त हब्शा में थे।
2. इनमें से कुछ नाम फ़तहुलबारी 7/271 से लिए गये हैं और कुछ नाम अल्-बिदाया वन्निहाया 7/226/227 से लिए गये हैं।

अलैहिस्सलाम के कफ़ील थे। इमाम ज़ुहरी फ़रमाते हैं कि नबी-ए- करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अन्सार से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि मैं तुममें से बारह नक़ीब मुन्तख़ब करूंगा। तुममें से कोई यह ख़्याल न करे कि मुझको क्यों नहीं नक़ीब बनाया गया, इसलिए कि मैं मामूर (जिस को किसी काम का हुक्म दिया गया हो) हूं। जिस तरह हुक्म है, उसी तरह करूंगा और जिब्रील अमीन आपके पास बैठे हुए थे, जिस-जिस को नक़ीब बनाने का हुक्म था, उसकी तरफ़ इशारा करते जाते। (रौज़ुल अनफ़, सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 1, पृ0 345 के हवाले से)

जिन-जिन हज़रात को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नक़ीब मुन्तख़ब फ़रमाया, उनके नाम नीचे तहरीर किए जाते हैं-

1. असद बिन ज़ुरारह रज़ियल्लाहु अन्हु, 2. साद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु, 3. अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु, 4. मुंज़िर बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु, 5. साद बिन रुबैअ् रज़ियल्लाहु अन्हु, 6. उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु, 7. राफ़ेअ् बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु, 8. उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हु, 9. अबू जाबिर अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु, 10. साद बिन ख़ुसैमा रज़ियल्लाहु अन्हु, 11. बरा बिन मारूर रज़ियल्लाहु अन्हु, 12. रिफ़ाआ बिन अब्दुल मुंज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु।

और कुछ उलमा ने रिफ़आ के बजाए अबुल हैसम बिन तैहान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम ज़िक्र किया है। (सीरतुल मुस्तफ़ा हिस्सा 1, पृ0 344)

सवाल-नबवी ज़माने में ज़कात वसूल करने वाले कौन-कौन सहाबा थे और किस सहाबी को कहां भेजा गया था?

जवाब-नबवी ज़माने में ज़कात वसूल करने वाले सहाबा की तादाद हम को सिर्फ़ पांच मिली है, जिनको नीचे लिखा जाता है।

1. हज़रत मुहाजिर बिन अबी उमैया बिन मुग़ीरह- उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सन्आ की तरफ़ भेजा था-

2. हज़रत ज़ियाद बिन लबीद, बनू ब्याज़ा अन्सारी के भाई को हज़्मौत के इलाक़े में ज़कात वसूल करने के लिए भेजा था।

3. हज़रत अदी बिन हातिम को क़बीला-ए-तै और क़बीला-ए-असद की तरफ़ भेजा।

4. अला बिन हज़रमी को बहरैन भेजा था।

5. हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु को नजरान भेजा था। (तारीख़ुल उमम वल मुलूक, हिस्सा 2, पृ 400)

सवाल-मदीना वालों में से सबसे पहले इस्लाम किसने क़ुबूल किया?

जवाब-असद बिन ज़ुरारा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और ज़कवान बिन अ़ब्दे कैस, ये दोनों हज़रात मदीना वालों में से सबसे पहले इस्लाम में दाख़िल हुए थे। (सियर आलामुन्नुबला, पृ० 302)

सवाल-वे कौन-से सहाबी हैं जिनको आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने 'फ़ि दा-क अबी व उम्मी' फ़रमाया था?

जवाब-वह सहाबी हज़रत साद रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं, उहुद की लड़ाई के दिन आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उनको तीर देते जाते थे और कहते 'इर्मि फ़िदा-क अ़बी व उम्मी' (ऐ साद! तीर फेंक! मेरे मां-बाप तुझ पर क़ुरबान हों।) (सियर आलामुन्नुबला, हिस्सा 1, पृ० 100)

सवाल-वे कौन-कौन सहाबी हैं जिनके लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ियाम किया, यानी उनके आने के वक़्त आप खड़े हुए?

जवाब-इस सिलसिले में सिर्फ़ चार सहाबा के नाम मिले हैं जिनको लिखा जाता है। शमाइल में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम कुछ अस्हाब के लिए खड़े हुए-

1. हज़रत इक्रिमा बिन अबी जह्ल, जिस वक़्त वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में इस्लाम क़ुबूल करने के लिए तशरीफ़ लाए।

2. हज़रत अ़दी बिन हातिम रज़ियल्लाहु अ़न्हु के लिए खड़े हुए, अपनी चादर भी इनके लिए बिछा दी थी।

3. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

4. हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु के लिए खड़े हुए। (मिश्कातुल मसाबीह, पृ० 243, व शरहे मिश्कात, हिस्सा 5, पृ० 233)

सवाल-जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मक्का से हिजरत करके मदीना आ गए, तो इन दोनों के अह्ल व अ़याल को मदीना कौन लाया था?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मदीना जाने के बाद मक्का

से अपने अह्ल व अ़याल मदीना लाने के लिए सौदा बिन्ते ज़म्आ, ज़ैद बिन हारिसा और अबू राफ़ेअ़ को भेजा। ये तीनों हज़रात आपके अह्ल को लेकर मदीना आए। इसकी कुछ तफ़सील हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा इस तरह ब्यान करती हैं कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सिद्दीक़े अकबर से दो ऊंटनियां लीं और पांच सौ दिरहम अबू राफ़ेअ़ और ज़ैद बिन हारिसा को देकर मक्का से अपने अह्ल व अ़याल लेने भेजा और हज़रत सिद्दीक़े अकबर ने अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़ित लैसी को दो या तीन ऊंटनियां देकर मक्का अपने अह्ल व अ़याल को लेने भेजा और अपने बेटे अ़ब्दुल्लाह को लिखा कि तुम अपनी वालिदा और बहनों को उनके साथ रवाना कर दो।

ये तीनों हज़रात मदीना से निकले। जब ये क़दीद नामी जगह पर पहुंचे तो ज़ैद बिन हारिसा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इन पांच सौ दिरहमों की तीन ऊंटनियां ख़रीद कर मक्का में इस हाल में दाख़िल हुए कि हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु के घर वाले हिजरत का इरादा किए हुए थे। उनके साथ तलहा बिन उ़बैदुल्लाह भी हिजरत का इरादा किए हुए थे। इन लोगों ने भी बतलाया कि हमारा इरादा भी यही है। अलग़रज़ हज़रत तलहा और अ़ब्दुल्लाह बिन उरैक़ित हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हु के घर वालों को लेकर चले।[1] और ज़ैद बिन हारिसा और अबू राफ़ेअ़ आले मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा, उम्मे कुलसूम, सौदा, उम्मे ऐमन, उसामा बिन ज़ैद को लेकर मदीना वापस हुए और यह क़ाफ़िला मदीना उस वक़्त पहुंचा कि मस्जिदे नबवी की तामीर शुरू हो चुकी थी। (सियर आलामिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ० 152, 153)

1. आले अबूबक्र में से अ़ब्दुल्लाह, तलहा और उम्मे रोमान थे।

अज़्वाजे मुतह्हरात (उम्मते मुस्लिमा की माँओं) से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कुल कितनी औ़रतों से शादी की? (दुख़ूल कितनी औ़रतों से हुआ?)

जवाब-इमाम ज़ुहरी फ़रमाते हैं। कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बारह अ़रबी औ़रतों से शादी की।

दूसरा क़ौल हज़रत क़तादा का है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पन्द्रह औ़रतों से शादी की, जिनमें छः क़ुरैशिया और एक क़ुरैश के हलीफ़ों की और सात दूसरी अ़रब औ़रतों में से थीं और एक बनी इस्राईल में से थी।

तीसरा क़ौल यह है कि हज़रत अबू उ़बैदा फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अठारह औ़रतों से शादी की। (निकाह फ़रमाया) जिनमें से सात क़ुरैशिया थीं, एक क़ुरैश के हलीफ़ों की लड़की थी और नौ दूसरी अ़रब औ़रतों में से थीं और एक बनी इस्राईल (हज़रत हारून अ़लैहिस्सलाम की औलाद) में से थी। (सियर आलामिन्नुबला हिस्सा 2, पृ0 254)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में कौन-सी औ़रत किसके बाद आई?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में एक के बाद एक जो औ़रतें आईं, उनके नाम तर्तीब के साथ ज़िक्र किए जाते हैं-

1. हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा[1]
2. हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा
3. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा
4. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा
5. हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा
6. हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु अन्हा
7. हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा
8. हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा
9. हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा
10. हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अन्हा
11. हज़रत फ़ातिमा बिन्ते शुरैह रज़ियल्लाहु अन्हा
12. हज़रत ज़ैनब बिन्ते खुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा
13. हज़रत हिन्द बिन्ते यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा
14. हज़रत अस्मा बिन्ते नोमान रज़ियल्लाहु अन्हा
15. हज़रत क़तीला रज़ियल्लाहु अन्हा अशअ़स की बहन,
16. हज़रत सना बिन्ते अस्मा सलमिय्या रज़ियल्लाहु अन्हा इनका असल नाम अस्मा बिन्ते सना है और इन्हीं को अस्मा बिन्ते काब जुवैनिया भी कहा जाता है। (सियर आलामुन्नुबला, हिस्सा 2, पृ 254) और साहिबे तारीख़

1. इसमें इख़्तिलाफ़ है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के इन्तिक़ाल के बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में कौन-सी बीवी आई, कुछ कहते हैं, हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के बाद निकाह हुआ और कुछ कहते हैं सौदा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से हुआ दोनों बातें इस तरह जमा हो सकती हैं कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा की वफ़ात के बाद निकाह तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा का हुआ, मगर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा छः साल की थीं, इसलिए रुख़्सती नहीं हुई और इसमें किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है कि रुख़्सती हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा से पहले हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा की हुई। (तारीख़ुल उमम वल मुलूक हिस्सा 2 पृ 411)

तबरी ने पृ0 411 से 417 तक इस तर्तीब को थोड़े फ़र्क़ के साथ ब्यान किया है।

1. हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा
2. हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा
3. हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा
4. हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा
5. हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा
6. हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु अन्हा
7. हज़रत उम्मे हबीबा बिन्ते अबू सुफ़ियान रज़ियल्लाहु अन्हा
8. हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा
9. हज़रत सफ़िया बिन्ते हुयइ बिन अख़्तब रज़ियल्लाहु अन्हा
10. हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस रज़ियल्लाहु अन्हा
11. हज़रत अन-नशा बिन्ते रफ़ाआ, कुछ ने इन का नाम सना बिन्ते अस्मा बिन सुल्त सलमिय्या ज़िक्र किया है, कुछ ने सबा बिन्ते अस्मा बिन सुल्त।
12. अश-शंबा बिन्ते अम्र ग़िफ़ारिया।
13. ग़ज़िया बिन्ते जाबिर और इब्ने कलबी ने कहा है कि ग़ज़िया ही उम्मे शुरैक और फ़ातिमा बिन्ते शुरैह हैं।
14. अस्मा बिन्ते नोमान बिन अल-अस्वद
15. ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा (अबू जाफ़र कहते हैं कि हिशाम ने इस हदीस में ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा का तज़्किरा नहीं किया)
16. इब्ने शिहाब कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आलिया (बनूबक्र की लड़की) से शादी की थी।

17. क़तीला बिन्ते क़ैस, यह दुख़ूल से पहले ही वफ़ात पा गई थी।

18. फ़ातिमा बिन्ते शुरैह। इब्ने कलबी का कहना है कि यही ग़ज़िया बिन्ते जाबिर हैं और इन्हीं को उम्मे शुरैक भी कहा जाता है।

19. अ़मरा बिन्ते यज़ीद बिन रुवास की एक औ़रत से भी आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने निकाह किया था।

(तारीख़ुल उमम वलमुलूक, हिस्सा 2, पृ० 417)

सवाल-वे कौन-कौन सी औ़रतें हैं, जिनको हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुख़ूल से पहले तलाक़ दे दी और क्यों?

जवाब-1. उन औ़रतों में से एक नशात बिन्ते रफ़ाआ़ बनी किलाब से थी। उन्हीं का नाम सना बिन्ते अस्मा बिन सुल्त था। कुछ ने उनका नाम सबा बिन्ते अस्मा बिन सुल्त कहा है। कुछ ने उन का नाम सना बिन्ते सुल्त बिन हबीब ब्यान किया है यह दुख़ूल से पहले ही वफ़ात पा गई थीं।

2. दूसरी औ़रत शंबा बिन्ते अ़म्र ग़िफ़ारिया थी। यह बनी क़ुरैज़ा के हलीफ़ों की लड़की थी। उसने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कहा कि आप अगर नबी होते तो आपके बेटे जो आपको अपनी औलाद में सबसे महबूब थे, इन्तिक़ाल न फ़रमाते, इसलिए आपने उसको दुख़ूल से पहले ही तलाक़ दे दी।

3. तीसरी औ़रत ग़ज़िया बिन्ते जाबिर है। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रात में उसके पास पहुंचे तो उसने आप से कहा, *'अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिन-क'* कि मैं आपसे अल्लाह की पनाह मांगती हूं। आपने दुख़ूल से पहले ही उसके घर वालों के पास उसको पहुंचा दिया और इब्ने कलबी का क़ौल है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके पास पहुंचे तो उसको बड़ी उ़म्र की पाया। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसको इस्लाम की दावत दी। उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया, इसके बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसको तलाक़ दे दी।

4. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अस्मा बिन्ते नोमान से शादी की। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके पास पहुंचे और उसको अपने क़रीब बुलाया तो उसने आपसे कहा कि आप ही आ जाइए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसको तलाक़ दे दी।

(सियर आलामुन-नुबला, हिस्सा 2, पृ० 255)

और दूसरा क़ौल यह है कि जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अस्मा बिन्ते नोमान पर दाख़िल हुए तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसको उसके घर वालों के पास पहुंचा दिया। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 228)

तीसरा क़ौल यह है कि नोमान अस्मा को लेकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आए। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस पर दाख़िल हुए, उसके क़रीब गए तो उसने कहा *'अऊज़ु बिल्लाहि मिन-क'* (मैं आपसे अल्लाह की पनाह मांगती हूं) आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसको कुछ देकर खुश कर दिया और उसको अलग कर दिया। (तारीख़े तबरी, हिस्सा 2, पृ. 416)

5. आ़लिया बनू ग़िफ़ार की एक लड़की से आप ने निकाह किया। जब उसके पास पहुंचे तो उसके पहलू में सफ़ेद दाग़ नज़र आए, आपने उसको कहा कि तू अपने कपड़े पहन ले और अपने घर वालों में जाकर मिल जा और उसको मह्र देने का हुक्म दे दिया। (सियर आलामुन्नुबला)

6. असमा बिन्ते काब जूनिया, इसको भी आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुख़ूल से पहले ही तलाक़ दे दी।

(सियर आलामिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ० 254)

सही क़ौल के मुताबिक़ उनका नाम अस्मा बिन्ते नोमान बिन शराहील था। इमाम ज़ोहरी कहते हैं कि आपने बनी जून की बहन कलाबिया से शादी की। जब आप सल्ल. उसके पास पहुंचे तो उसने पनाह मांगी। आपने उसको पनाह दे दी और कहा कि तू अपने घर चली जा।

सही क़ौल के मुताबिक़ यही वह एक औ़रत ऐसी है जिसने आपसे पनाह चाही। जूनिया के अ़लावा किसी ने 'इस्तिआ़ज़ा' (पनाह चाहना) का लफ़्ज़ अदा नहीं किया। (फ़त्हुलबारी, हिस्सा, 9 पृ० 311)

7. क़तादा कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उम्मे शुरैक से निकाह किया। यह उन औ़रतों में से थीं, जिन्होंने अपने को आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लिए हिबा कर दिया था। आपने दुख़ूल से पहले ही उनको तलाक़ दे दी।

8. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने कलाबिया यानी फ़ातिमा बिन्ते

ज़ह्हाक बिन सुफ़ियान से माह-ए-ज़ीक़ादः सन् 08 हिजरी में वाक़िया-ए-जाराना से लौटते वक़्त शादी की। अह्ले सियर ने उनके नाम में इख़्तिलाफ़ किया है- 1. कलाबिया, 2. कुछ ने कहा है कि उनका नाम आ़लिया बिन्ते ज़िब्यान था, 3. कुछ ने उनका नाम सना बिन्ते अबू सुफ़ियान बताया है। 4. कुछ ने कहा है कि कलाबिया ही अ़मरा बिन्ते यज़ीद बिन उबैद हैं। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके पास पहुंचे तो उसने पनाह चाही आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसको कहा कि तू अपने घर चली जा।[1]

9. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बनू किन्दा की एक औ़रत से माह-ए-रबीउ़ल अव्वल सन् 09 हिजरी में शादी की। अ़ल्लामा वाक़दी कहते हैं कि नोमान बिन अबिल जून जब मुसलमान हुए तो उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! क्या मैं आपकी शादी अ़रब की एक ख़ूबसूरत लौंडी से कर दूं जो आपको भी पसन्द आ जाए, चुनांचे किन्दिया से बारह औक़िया चांदी[2] और एक नश पर शादी हो गई। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू उसैद साइदी को भेजा कि किन्दिया को लेकर आओ। किन्दिया जब आ गई तो हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को कहा कि मैं उसके कंघी करूंगी और तू ख़िज़ाब कर दे। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसके पास आए और उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाया तो उसने कहा, *'अऊज़ु बिल्लाहि मिन-क'* कि 'मैं अल्लाह की पनाह मांगती हूं आपसे' तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अबू उसैद को कहा इसको ऊनी कपड़े पहना कर इसके घर पहुंचा दो। (सियर आ़लामिन-नुबला, हिस्सा 2, पृ0 259) (कुछ हिस्सा फुलवारी, हिस्सा 9, पृ0 313 से लिया गया है।)

10. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने क़ुतीला अश्अ़स की बहन से शादी की। अबू उ़बैदा कहते हैं सन् 11 हिजरी में जबकि किन्दा का वफ़्द आया, क़ुतीला का आपसे निकाह हुआ, मगर दुख़ूल से पहले इन्तिक़ाल कर गई।

11. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़ौला बिन्ते हकीम से निकाह फ़रमाया। (तारीख़ुल उमम वल मुलूक, हिस्सा 2, पृ0 416 व सियर आ़लामिन-नुबला, हिस्सा

1. कुछ ने कहा कि यह एक ही हैं, इनके नाम में इख़्तिलाफ़ है। कुछ ने सबको अलग-अलग बताया, चूंकि हर एक का क़िस्सा अलग-अलग है। (फुलवारी, हिस्सा 9, पृ0 313)
2. एक औक़िया चालीस दिरहम का होता है और एक नश बीस दिरहम का। इस हिसाब से बारह औक़िया पांच हज़ार दिरहम किन्दिया का मह्र मुक़र्रर हुआ, इतना मह्र किसी और बीवी का नहीं हुआ।

2, पृ० 260)

सवाल-वे औरतें कौन-सी हैं जिनसे आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने निकाह का पैग़ाम देकर निकाह नहीं फ़रमाया और क्यों नहीं फ़रमाया?

जवाब-इस किस्म की पांच औरतें हैं-

1. उम्मे हानी, जिनका नाम हिन्दा था, ज़्यादा औलाद वाली होने की वजह से उनसे निकाह नहीं किया।
2. ज़बाअ़: बिन्ते आ़मिर बिन करत से आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने निकाह का पैग़ाम दिया। ज़्यादा उम्र वाली होने की वजह से उससे निकाह नहीं किया।
3. सफ़िया बिन्ते बशामा आचर अंबरी की बहन से निकाह का पैग़ाम दिया, मगर निकाह न किया।
4. उम्मे हबीब बिन्ते अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब से पैग़ाम दिया, मगर चूंकि अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सुवैबा का दूध पिया है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने रज़ाअ़त की मुद्दत में उसका दूध पिया, इसलिए हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु आपके रज़ाई भाई हुए और रज़ाई भाई की लड़की से शादी जायज़ नहीं।
5. जमुरा बिन्ते हारिस बिन अबी हारिसा से निकाह का पैग़ाम दिया, मगर बर्स की बीमारी में मुब्तला होने की वजह से निकाह न फ़रमाया।

(तारीख़े तबरी, हिस्सा 2, पृ० 418)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में एक ही वक़्त में कितनी बीवियां रहीं? किस-किस का इन्तिक़ाल आपकी ज़िंदगी में हुआ? वफ़ात के वक़्त कितनी बीवियाँ थी?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में एक वक़्त में ग्यारह औरतें तक रहीं। दो का इन्तिक़ाल आपकी ज़िंदगी ही में हो गया था और वह ख़दीजा और ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा हैं। सीरत के माहिर उ़लमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि आपकी वफ़ात के वक़्त नौ बीवियां थीं।

(सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ० 281)

सवाल-उम्महातुल मोमिनीन का लक़ब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किन अज़्वाज (बीवियों) के साथ ख़ास है?

जवाब-उम्महातुल मोमिनीन का लक़ब उन्हीं अज़्वाज (बीवियों) के साथ ख़ास है जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में रहीं। बाक़ी जिन औरतों से आपने निकाह तो फ़रमाया, मगर उरूसी व मुक़ारबत से पहले ही उनको तलाक़ दे दी, उनके लिए यह लक़ब इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

(सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ० 278)

हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा से मुतअल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के मां-बाप के नाम क्या-क्या थे और पहले किस के निकाह में थीं और उनसे क्या औलाद हुई?

जवाब-वलिद का नाम ख़ुवैलद, वालिदा का नाम फ़ातिमा बिन्ते ज़ाइदा बिन असम्म था और यह क़बीला बनू आमिर बिन लुई से थीं और सय्यिदा ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आने से पहले दो शादियां हो चुकी थीं-एक अबू हाला बिन ज़ुरारह तमीमी से, दूसरी अतीक़ बिन आइज़ मख़्ज़ूमी से, अलबत्ता इसमें सीरत लिखने वालों का इख़्तिलाफ़ है कि पहला निकाह इन दोनों में से किस से हुआ। साहिबे इस्तीआब ने हिस्सा 4, पृ० 280 पर इस इख़्तिलाफ़ को नक़ल करने के बाद कहा है कि सही क़ौल यह है कि अबू हाला ने अतीक़ से पहले ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह किया। जब अबू हाला का इन्तिक़ाल हो गया, तब अतीक़ की ज़ौजियत में आईं। अबू हाला के ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से दो लड़के हाला और हिन्द पैदा हुए। दोनों बाद में इस्लाम की गोद में आ गए और साहिबे असदुल्ग़ाबा ने हिस्सा 1, पृ० 11 पर लिखा है कि अतीक़ के भी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से एक लड़का और एक लड़की पैदा हुई और साहिबे तबरी ने हिस्सा 2, पृ० 411 पर सिर्फ़ एक लड़की का तज़्किरा किया है और ज़ुरक़ानी ने हिस्सा 3, पृ० 220 पर लड़की का नाम हिन्द लिखा है।

सवाल-निकाह के वक़्त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की क्या उम्र थी?

जवाब-हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ 25 साल थी,

दूसरा कौल 21 साल का और तीसरा कौल 30 साल का है, मगर 25 वाला कौल ज़्यादा मशहूर है। अकसर सीरत लिखने वालों ने इसी को इख़्तियार किया है। (इस्तीआब अलल इसाबा, पृ० 280) और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र सही कौल की बुन्याद पर 40 साल थी। (सिफ़तुस्सफ़्वः हिस्सा 1, पृ० 334)

सवाल-हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह का पैग़ाम लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कौन गया था और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का वली कौन बना था?

जवाब-याला बिन उमैया की बहन नफ़ीसा नामी औरत हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह का पैग़ाम लेकर गईं। आपने अपने मेहरबान चचा अबू तालिब के मश्वरे से मंज़ूर फ़रमा लिया और आपके दूसरे चचा हमज़ा वग़ैरह ने भी इस रिश्ते को ख़ुशी के साथ पसन्द किया। (उसदुल ग़ाबा)

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के चचा अम्र बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा ने यह शादी कराई चूंकि वालिद इन्तिक़ाल कर गए थे, इसलिए उनको वली बनाया गया। (अल-इसाबा फ़ी तमयीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ० 282)

सवाल-हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा क निकाह किसने पढ़ाया और मह्र कितना मुकर्रर हुआ था?

जवाब-पहले हज़रत अबू तालिब ने निकाह का ख़ुत्बा पढ़कर पांच सौ दिरहम मह्र मुकर्रर किया, इसके बाद ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल ने मुख़्तसर सी तक़रीर की। (ज़ुरक़ानी 3/220/221)

और सीरत इब्ने हिशाम में है कि हज़रत अबू तालिब ने बीस ऊंट मह्र मुकर्रर किया या उनकी क़ीमत और इब्ने नौफ़ल के ख़ुत्बे में चार सौ मिस्क़ाल चांदी का ज़िक्र मौजूद है और ऐसे ही सीरत इब्ने हिशाम, हिस्सा 2, पृ 424 पर पांच सौ दिरहम या उसकी क़ीमत के ऊंट अबू तालिब ने अपने ज़िम्मे में लिए।

दूसरा कौल यह है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का मह्र साढ़े बारह औक़िया का था और एक औक़िया चालीस दिरहम का होता है, इसलिए कुल पांच सौ दिरहम मह्र मुकर्रर हुआ, (सीरतुल मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हिस्सा 1, पृ० 112, बहवाला ज़ुरक़ानी, हिस्सा 1, पृ० 202) ख़ुलासा यह हुआ कि मह्र के बारे में दो कौल हुए-एक चार सौ मिस्क़ाल चांदी का, दूसरा पांच सौ दिरहम का।

इन दोनों कौलों में तत्बीक़ (जमा होना) इस तरह मुम्किन है कि एक मिस्क़ाल साढ़े चार माशा का होता है और एक दिरहम साढ़े तीन माशा का होता

है तो इस हिसाब से चार सौ मिस्काल का वज़न पांच सौ चौहद दिरहम एक माशा बैठता है। यह कुछ ऐतिबार के क़ाबिल फ़र्क़ नहीं और अगर एक ऊंट की क़ीमत 25 दिरहम उस वक़्त के हिसाब से मान लें तो पांच सौ दिरहम सही हो जाते हैं। (असहहुस्सियर, पृ0 62)

सवाल-हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के अक़्द के बाद वलीमा किसने किया और क्या खिलाया?

जवाब-कुछ रिवायतों से पता चलता है कि ईजाब व क़ुबूल के बाद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक गाय जबह कराई और खाना पकवा कर मेहमानों को खिलाया। (ज़ुरक़ानी हिस्सा 3, पृ0 221)

सवाल-हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कितनी औलादें हुईं और उनकी पैदाइश की तर्तीब क्या है?

जवाब-सीरत लिखने वाले उलमा का इस सिलसिले में इत्तिफ़ाक़ है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जितनी औलाद हुईं, सब ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से हुईं[1], सिवाए इब्राहीम के। यह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मे वलद हज़रत मारिया क़िबतिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के लड़के थे। आपकी औलाद में चार तो लड़कियां हैं।

1. ज़ैनब, 2. रुक़ैया, 3. उम्मे कुलसूम, 4. फ़ातिमा। इन साहबज़ादियों के बारे में तो किसी का कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है, अलबत्ता साहबज़ादों के बारे में इख़्तिलाफ़ है कि कितने थे। साहिबे तारीख़े तबरी ने हिस्सा 2, पृ0 411 पर तहरीर किया है कि चार साहबज़ादे थे।

1. क़ासिम, 2. तय्यिब, 3. ताहिर, 4. अब्दुल्लाह।

और साहिबे ज़ुरक़ानी ने हिस्सा 3, पृ0 193 पर नक़ल किया है कि हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के छः साहबज़ादे हुए। पांचवें और छठे साहबज़ादे का नाम मुतिय्यब व मुतह्हर था। सबसे ज़्यादा मोतबर व मुस्तनद क़ौल यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पेट से दो लड़के और चार लड़कियां पैदा हुईं, जिनकी पैदाइश की तर्तीब अल्लामा कलबी ने इस तरह बयान की है-

---

1. अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से जितनी औलादें हुईं, उन सबको सफ़िया की बांदी सलमा ने दूध पिलाया। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 282)

1. जैनब, 2. क़ासिम, 3. उम्मे कुलसूम, 4. फ़ातिमा, 5. रुकैया, 6. अ़ब्दुल्लाह। इन्हीं को नुबुव्वत मिलने के बाद पैदा होने की वजह से तय्यिब व ताहिर कहा जाता है। यह आख़री क़ौल सबसे सही है। इस पर अह्ले इल्म का इत्तिफ़ाक़ व इज्माअ़ है। (इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 282)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साहबज़ादों में बड़े कौन-से थे और कितने साल ज़िंदा रहे? पहले किसका इन्तिक़ाल हुआ?

जवाब-आपके साहबज़ादों में बड़े क़ासिम थे और सबसे पहले क़ासिम ही अल्लाह को प्यारे हुए। वैसे तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सब साहबज़ादे बचपन ही में इन्तिक़ाल कर गए थे। (इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 281) हज़रत क़ासिम नुबुव्वत से पहले पैदा हुए, सिर्फ़ दो साल ज़िंदा रहकर नुबुव्वत से पहले ही इन्तिक़ाल कर गए। दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत क़ासिम सिन्ने तमीज़ को पहुंच कर इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हुए।

(ज़ुरक़ानी, हिस्सा 3, पृ0 197)

सवाल-हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल कितनी उ़म्र में, किस सन् व, किस माह में हुआ। आग़ोशे रसूल में कितने साल गुज़रे, जनाज़े की नमाज़ किसने पढ़ाई, तदफ़ीन कहां हुई?

जवाब-हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल पैंसठ[1] साल की उ़म्र में सन् 10 नबवी माह-ए-रमज़ान की 10 तारीख़ को हिजरत से तीन साल पहले हुआ। दूसरा क़ौल यह है कि हिजरत से चार साल पहले हुआ और तीसरा क़ौल पांच साल पहले का है, मगर अव्वल क़ौल सही है और साहिबे उ़म्दतुलक़ारी ने हिस्सा 1, पृ0 63 पर और साहिबे इस्तीआ़ब ने हिस्सा 4, पृ0 283 पर पहले ही क़ौल को सबसे ज़्यादा सही कहा है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के अ़क़्द में चौबीस साल छः माह रहकर ख़्वाजा अबू तालिब के इन्तिक़ाल के तीन दिन बाद इस दारे फ़ानी से रेहलत फ़रमा गईं। नमाज़े जनाज़ा मशरूअ़ न होने की वजह से आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बग़ैर नमाज़ के मक़ाम हजून[2] में ख़ुद दफ़न फ़रमाया। (उम्दतुल क़ारी व इस्तीआ़ब, हिस्सा 4, पृ0 280 व इसाबा पृ0 283 व सफ़्वतुस्सफ़्वः हिस्सा 1, पृ 336)

1. सही क़ौल के मुताबिक़ उ़म्र 55 साल हुई। (अल-बिदाया वन्निहाया-294)
2. "हजून" मक्का में एक पहाड़ का नाम है और मक़ाम-ए-हजून यह वह क़ब्रिस्तान है जिस को आज कल "जन्नतुल मुअ़ल्ला" के नाम से जाना जाता है, यह पहाड़ मक्का के ऊपर के हिस्से पर वाक़े है, इस पहाड़ के पास हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के रिश्तेदारों की क़ब्रें थीं (हाशिया आलामुन्नुबला 4/112)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा बिन्ते ज़म्आ से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के मां-बाप का क्या नाम था? उनकी विलादत किस सन् में हुई?

जवाब-वालिद का नाम ज़म्आ और वालिदा का नाम शमूस था। (इस्तीआब अ़लल इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 323) और विलादत पहली मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में हुई। (असह्हुस्सियर, पृ0 569)

सवाल-हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में आने से पहले किसके निकाह में थीं और उनसे कितनी और क्या औलाद हुई?

जवाब-उनका पहला निकाह सकरान बिन अ़म्र से हुआ था। यह उनके चचा के लड़के थे और इस्माईल बिन अ़म्र के भाई लगते थे। (इस्तीआ़ब, पृ0 323) इनसे हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के एक लड़का अ़ब्दुर्रहमान पैदा हुआ जिसका इन्तिक़ाल भी जवानी में जलूला (फ़ारस) में लड़ाई के दौरान हो गया था और उनके पहले शौहर हब्शा की हिजरत से वापस आकर मक्का में इन्तिक़ाल कर गए।

दूसरा क़ौल यह है कि सकरान ने हब्शा ही में वफ़ात पाई (तहज़ीब)।

तीसरा क़ौल यह है कि सकरान ने हब्शा की तरफ़ हिजरत की, वहां वह नसरानी हो गया था और नसरानियत के मज़हब ही पर उसका इन्तिक़ाल हुआ। (तबरी, हिस्सा 2, पृ0 411, मदारिजुन्नुबुव्वत, हिस्सा 3, पृ0 101)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का निकाह सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा से किसने कितने मह्र पर किस सन् में और किस उम्र में कराया?

जवाब-जिस वक़्त हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल हो गया और हज़रत सौदा भी बेवा हो गई थीं, इधर हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का ग़म था तो ख़ौला बिन्ते हकीम ज़ौजा उस्मान बिन मज़्ऊन रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इजाज़त लेकर हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के बाप से बात पक्की करके चार सौ दिरहम मह्र पर निकाह करा दिया। (असह्हुस्सियर, पृ 570 व

ज़ुरक़ानी हिस्सा 3, पृ0 227 व मदरिजुन्नुबुव्वत, हिस्सा 3, पृ0 101) और यह निकाह' सन् 10 नबवी मुताबिक़ 610 ईसवी हिजरत से तीन साल पहले 50 साल की उम्र में सन् 51 मीलादुन्नबी को हुआ।

(हयातुन्नबी, पृ0 47, असहहुस्सियर पृ0 570)

दूसरा क़ौल यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ख़ौला बिन्ते हकीम को हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास भेजा तो हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने ख़ौला को बाप के पास भेज दिया कि इनसे बात कर लो। चुनांचे ख़ौला ने ज़म्आ से बात मुकम्मल कर ली। ज़म्आ ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बुलवा कर निकाह कर दिया। हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के भाई अ़ब्द बिन ज़म्आ हज को गए हुए थे। जब उनको नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की शादी की ख़बर लगी तो सर पर मिट्टी डालते हुए हसरत व अफ़सोस के आ़लम में घर से भागे। जब अ़ब्द बिन ज़म्आ मुसलमान हो गए तो उनको जब यह हालत याद आती थी, तो बहुत अफ़सोस करते थे।

(अल-बिदायः वन्निहायः हिस्सा 3, पृ0 132, तारीख़ तबरी, हिस्सा 2, पृ0 412)

सवाल-हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की वफ़ात किस माह व सन् और किसकी ख़िलाफ़त के ज़माने में हुई और कहां मदफ़ून हुईं?

जवाब-उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की वफ़ात माह-ए-शव्वाल सन् 54 हिजरी में हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के ज़माने में हुई। इसी को अ़ल्लामा वाक़दी ने राजेह क़रार दिया है। (महीने की ताईन के अ़लावा बाक़ी मज़्मून इसाबा के हिस्सा 4, पृ0 339 पर है।) दूसरा क़ौल यह है कि अ़ल्लामा इब्ने हजर रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने उनकी वफ़ात सन् 55 हिजरी में ब्यान की है। तीसरा क़ौल यह है कि इमाम बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में सही सनद के साथ रिवायत नक़ल की है कि हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने के आख़री हिस्से में हुआ और अ़ल्लामा ज़हबी ने यक़ीन के साथ ब्यान किया है कि हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के आख़री दिनों में हुआ और हज़रत उ़मर

---

1. साहिबे सियरे आलामिन्नुबला ने हिस्सा 2, पृ0 267 में यह लिखा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने माह-ए-रमज़ान सन् 10 नबवी में हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से निकाह किया और मदीना में माह-ए-शव्वाल में सन् 54 हिजरी में उनका इन्तिक़ाल हुआ।

रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का क़िस्सा आख़री ज़िलहिज्जः सन् 23 हिजरी का है, इसलिए हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल यक़ीनन सन् 23 हिजरी से पहले हुआ होगा और हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा को जन्नतुल बक़ीअ़ में सुपुर्दे ख़ाक कर दिया गया। (असह्हुस्सियर, पृ० 570, रह्मतुल्लिल आलमीन, पृ० 16)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत किस सन् में हुई और निकाह कितनी उम्र में हुआ?

जवाब-हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत सन् 04 नबवी यानी नुबुव्वत मिलने के चार या पांच साल बाद हुई और निकाह के वक़्त सही क़ौल के मुताबिक़ छः या सात साल उम्र थी। इन दोनों क़ौलों को जमा करना इस तरह मुम्किन है कि छठा साल ख़त्म हो कर सातवां साल दाख़िल हो गया था। सन् 10 नबवी हिजरत से तीन साल पहले माह-ए-शव्वाल में निकाह हुआ और रुख़्सती 09 साल की उम्र में मदीना में जाकर सन् 01 हिजरी माह-ए-शव्वाल में हुई। (इसाबा फी तमयीज़िस्सहाबा, पृ० 359)

दूसरा क़ौल माह-ए-ज़ीक़ादः का है। (अल-कामिल फित्तारीख़, हिस्सा 2, पृ० 110 व मुस्तद्रक हाकिम मअ़ तलख़ीस, हिस्सा 4, पृ० 5, 6)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की तरफ़ से हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह का पैग़ाम सिद्दीक़े अकबर के घर कौन लेकर गया था?

जवाब-जिस वक़्त हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल हो गया, तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ग़मगीन रहते थे। आपको ग़मगीन देखकर उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! अगर आप चाहें-तो कुंवारी लड़की से आपकी शादी करा देंगे। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मुझको हुक्म मिला है, ख़ुदावन्द क़ुद्दूस की जानिब से हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी से शादी करने का, हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुशी-ख़ुशी निकाह का पैग़ाम लेकर सिद्दीक़े अकबर के घर पहुंचे, वहां हज़रत

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा उम्मे रोमान थीं। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने उम्मे रोमान को यह ख़ुशख़बरी सुनाई तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की वालिदा उम्मे रोमान ने कहा कि हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के वालिद साहब को आने दो, उनसे मश्वरा कर लेना। कुछ देर बाद सिद्दीके अकबर घर तशरीफ़ ले आए। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को हुक्मे खुदावन्दी की इत्तिला की। सिद्दके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस पर कोई चूं व चरा नहीं फ़रमाई और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह कर दिया। (अल-इसाबः फी तमयीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ0 359, 360)

दूसरा क़ौल यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ से निकाह का पैग़ाम ले कर हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर ख़ौला बिन्ते हकीम गई थीं। (सीरतुल मुस्तफ़ा सल्ल. 3/294)

सवाल-हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का मह्र क्या तय हुआ और वलीमा में क्या खाना खिलाया गया?

जवाब-हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा का मह्र चार सौ दिरहम मुक़र्रर हुआ और वलीमा के मुतअ़ल्लिक़ खुद हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ब्यान करती हैं कि न ऊंट ज़बह हुआ और न बकरी वग़ैरा, बल्कि साद बिन उबादा के घर से दूध का प्याला आया था, वही वलीमा था (तारीख़ुल ख़मीस हिस्सा 2, पृ 358)

सवाल-नबी-ए-अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल के वक़्त हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की क्या उम्र थी? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ौजियत में (बीवी बन कर) कितने दिन रहीं? और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद कितने साल ज़िंदा रहीं?

जवाब-जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विसाल हुआ तो हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र 18 साल की थी। नौ साल रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ैजियत में रहीं। (इस्तीआब अलल इसाबा, हिस्सा 2, पृ 357)

और 48 साल आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद ज़िंदा रहीं। (सीरतुल मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम, हिस्सा 3, पृ0 395)

सवाल-हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात का सन् क्या है? कुल उम्र कितनी हुई? जनाज़े की नमाज़ किसने पढ़ाई? कहां और किसने दफ़न किया?

जवाब-हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात सन् 58 हिजरी, 17

रमज़ानुल मुबारक की मंगल की रात में हुई। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 361, इस्तीआब, हिस्सा 4, पृ0 360) 66 साल की उम्र हुई। जनाज़े की नमाज़ हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने पढ़ाई। क़ासिम बिन मुहम्मद, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान व अ़ब्दुल्लाह बिन अबी अ़तीक़ और हज़रत ज़ुबैर के दोनों साहबज़ादों उर्वा और अ़ब्दुल्लाह ने क़ब्र में उतारा और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न किया गया। (इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा, पृ0 360)

सवाल-इफ्क का क़िस्सा किस सन् और किस उम्र में पेश आया था?

जवाब-इफ्क का क़िस्सा (मुनाफ़िक़ों का हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को तोहमत लगाने का वाक़िया) सन् 05 हिजरी ग़ज़्वा-ए-मुरीसीअ़ से लौटते वक़्त 12 साल की उम्र में पेश आया। (सियर आलामिन्नु ब ला, हिस्सा 2, पृ0 153)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के मां-बाप का क्या नाम है? हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की पैदाइश कब हुई? उनके पहले शौहर कौन थे?

जवाब-वालिद का नाम हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु और वालिदा ज़ैनब बिन्ते मज़ऊन थीं। हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की पैदाइश सन् 35 मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यानी नुबुव्वत मिलने के पांच साल पहले हुई, जिस वक़्त कि क़ुरैश काबा की तामीर कर रहे थे और हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा के निकाह में थीं। उनके शौहर उहुद की लड़ाई में ज़ख़्म लगने की वजह से शहीद हो गए थे। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 273, इस्तीआब, पृ0 270, सियर आलाम, पृ0 229-230)

सवाल-हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के निकाह का आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ क्या सबब बना और निकाह किस सन् में कितनी उम्र में हुआ?

जवाब-हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का निकाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ होने का यह सबब हुआ कि जब हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पहले शौहर ख़ुनैस बिन हुज़ाफ़ा सहमी का इन्तिक़ाल हो गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु

अन्हु ने हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह के बारे में हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से बात की हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कोई जवाब न दिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बहुत गुस्सा आया। फिर रुकैया बिन्ते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि आप चाहें तो हफ़्सा का निकाह आप से कर दूं। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया अभी मेरा निकाह का इरादा नहीं (एक क़ौल यह भी है कि हज़रत उस्मान ने फ़रमाया सोच कर बताऊंगा) दोबारा फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के सामने हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह की पेशकश की, तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, मेरा अभी निकाह का कोई इरादा नहीं। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 283)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु गुस्से में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गए और दोनों की शिकायत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से की। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी उस्मान से बेहतर शौहर से होगी और उस्मान की हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से बेहतर औरत से, चुनांचे ऐसा ही हुआ। हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से आपने खुद निकाह कर लिया और अपनी बेटी उम्मे कुलसूम की शादी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से कर दी।

फिर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई तो सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। कि उमर! तुम मेरी तरफ़ से दिल में कुछ मत रखो, क्योंकि मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा का तज़्किरा करते हुए सुना था, इसलिए मैंने निकाह नहीं किया, यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुद हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह का इरादा रखते थे। मैंने आपका राज़ फ़ाश नहीं करना चाहा। काश! कि अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हफ़्सा से निकाह न करते, तो मैं ज़रूर आपकी अर्ज़ को क़ुबूल कर लेता, यानी हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से निकाह कर लेता। (इसाबा, हिस्सा 7, पृ 273, इस्तीआब, पृ0 269, सियर आलामुन्नुबला, हिस्सा 2, पृ 228)

और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हफ़्सा से सही क़ौल के मुताबिक़ सन् 03 हिजरी में निकाह फ़रमाया, उस वक़्त हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा 20 साल की थीं और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 55 साल के हो चुके थे। (असहहुस्सियर, पृ0 573)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को कितनी तलाक़ दी थी और रूजूअ़ किस के कहने पर किया था?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को एक तलाक़ रजई दी थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब मालूम हुआ तो सर पर मिट्टी डालते हुए आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास आए और हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के दो मामूं हदाक़ा बिन मज़्ऊ़न और उस्मान बिन मज़्ऊ़न भी रोते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सिफ़ारिश करने लगे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया, मेरे पास जिब्रील अ़लैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए थे, उन्होंने आकर कहा कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बहुत रोज़े रखने वाली औ़रत है, बहुत ज़्यादा रात को जागने वाली, अल्लाह की इबादत करने वाली औ़रत है और यह कहा कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा जन्नत में आपकी औ़रत होंगी, तो जिब्रील के कहने से मैंने रुजूअ़ कर लिया है। (सियर आलामुन्नुबला हिस्सा 2, पृ 230)

दूसरी रिवायत में यह है कि दूसरे दिन मेरे पास जिब्रील तशरीफ़ लाए और अल्लाह का यह हुक्म पहुंचाया कि अल्लाह यह हुक्म देता है कि उ़मर पर रहम करते हुए हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से रुजूअ़ फ़रमा लें, इसके बाद हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पास गए, वह रो रहीं थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जाकर कहा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तुझको एक तलाक़ दी थी, फिर मेरी वजह से रजूअ़त फ़रमाली। अगर दूसरी बार तुझको तलाक़ दी तो मैं तुझसे हमेशा के लिए कलाम बन्द कर दूंगा, यानी तुझसे बात न करूंगा। (अबू याला, अबू सालेह की रिवायत, इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 273, सियर आलामुन्नुबला, हिस्सा 2, पृ० 230)

सवाल-हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल किस माह, किस सन् और किस जगह हुआ? जनाज़े की नमाज़ किसने पढ़ायी, कुल उम्र कितनी हुई?

जवाब-हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का विसाल माह-ए-शाबान 41 हिजरी मदीना में हुआ। नमाज़ मरवान वाली-ए-मदीना ने पढ़ाई और हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की कुल उ़म्र साठ साल हुई। (सियर आलामुन्नुबला, हिस्सा 2, पृ० 229) और दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की वफ़ात उस वक़्त हुई जबकि हज़रत हसन ने मुआ़विया से बैअ़त् की और यह बैअ़त् जुमादल ऊला सन् 41 हिजरी या 45 हिजरी में हुई। (इस्तीआ़ब, पृ० 270)

तीसरा क़ौल यह है कि सन् 27 हिजरी में वफ़ात हुई, मगर साहिबे इसाबा ने हिस्सा 4, पृ0 247 पर इस क़ौल को ग़लत कहा है और वजह यह ज़िक्र की है कि हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात अफ़्रीक़ा की आम फ़त्ह के वक़्त हुई और अफ़्रीक़ा की फ़त्ह दो बार पेश आई-एक बार हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के दौर सन् 27 हिजरी में, दूसरी फ़त्ह अमीर मुआविया के ज़माने सन् 45 हिजरी में हुई और हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा का विसाल फ़त्हे सानी के वक़्त हुआ।

हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का पहला निकाह किससे हुआ?

जवाब-इनका निकाह अ़ब्दुल्लाह बिन जह्श से हुआ था यह उहुद की लड़ाई में शहीद हो गए थे। दूसरा क़ौल अ़ल्लामा इब्ने कलबी का है कि यह पहले तुफ़ैल बिन हारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब के निकाह में थीं। तुफ़ैल ने उनको तलाक़ दे दी। तुफ़ैल के बाद उसके भाई उ़बैदा बिन हारिस ने उनसे निकाह किया। उ़बैदा बद्र की लड़ाई में क़त्ल कर दिया गया। (इसाबा फ़ी तमयीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ0 316 व इस्तीआ़ब हिस्सा 4, पृ0 319 व सियर आला मिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ0 218 व उसदुल ग़ाबा: फ़ी मारिफ़तिस्सहाबा, हिस्सा 5, पृ0 466)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से किस माह किस सन् में कितने मह्र पर निकाह किया और यह आपके अ़क़्द में कितने महीने रहीं?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से माह-ए-रमज़ान सन् 03 हिजरी में निकाह किया और यह आपकी ज़ौजियत में सिर्फ़ दो या तीन महीने रहकर वफ़ात पा गईं।

दूसरा क़ौल अ़ल्लामा इब्ने कलबी का है कि आठ माह निकाह में रहीं। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 315 व 316) और अ़ल्लामा वाक़दी का कहना है कि जब हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा इद्दत गुज़ार चुकी, आंहज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सन् 03 हिजरी में पांच सौ रुपए मह्र पर ज़ैनब से निकाह फ़रमाया, फिर दो या तीन माह निकाह में रहीं और इन्तिक़ाल हो गया।

(ज़ुरक़ानी, हिस्सा 3, पृ० 249)

सवाल-हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल कितनी उम्र में किस माह व सन् में हुआ, किस जगह दफ़न की गईं?

जवाब-अल्लामा वाक़दी का ब्यान है कि हज़रत ज़ैनब बिन्ते ख़ुज़ैमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल तीस साल की उम्र में माह-ए-रबीउ़ल अव्वल सन् 04 हिजरी में हुआ और जन्नतुल बक़ीअ् में उनको दफ़न किया गया और नमाज़े जनाज़ा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुद पढ़ाई। (इसाबा, 4/316 ज़ुरक़ानी, 3/249 व उयूनुल असर, 2/303)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के मां-बाप के नाम क्या क्या हैं?

जवाब-उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के वालिद का नाम हुज़ैफ़ा या सुहैल था और वालिदा का नाम आ़तिका बिन्ते आ़मिर था। (अल-इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 458)

सवाल-हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा का नाम और पैदाइश का सन क्या था?

जवाब-हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा का नाम सही क़ौल के मुताबिक़ हिन्द बिन्ते अबी उमैया था और यह अबू जह्ल के चचा की लड़की थी और उनकी पैदाइश सन् 31 मीलादुन्नबी को हुई। (उम्दतुलक़ारी, हिस्सा 3, पृ० 263)

सवाल-हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा पहले किसके निकाह में थीं। उनसे कितनी और क्या औलादें हुईं और उनके शौहर का इन्तिक़ाल कब हुआ?

जवाब-उनके पहले शौहर उनके चचेरे भाई अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल असद मख़्ज़ूमी थे जो अबू सलमा कुन्नियत से मशहूर थे। हिन्द के पेट से उनके छः औलादें हुईं-

1. उ़मर, 2. सलमा (यह हब्शा में पैदा हुए) 3. ज़ैनब, 4. दुर्रा, 5. मुहम्मद

बिन मस्लमा, 6. उम्मे कुलसूम बिन्ते अबू सलमा। (असहहुस्सियर, पृ0 582) और साहिबे इसाबा ने हिस्सा 4, पृ0 458 पर और साहिबे सियर आलामिन् नुबला ने हिस्सा 2, पृ0 206 पर सिर्फ़ चार के नाम ज़िक्र किए हैं- 1. सलमा, 2. उमर, 3. ज़ैनब, 4. दुर्रा। अबू सलमा बद्र की लड़ाई में शरीक हुए, उनको उहुद की लड़ाई में ज़ख़्म पहुंचा, इसी में उनका इन्तिक़ाल हुआ। (अल-कामिल फ़िततारीख़, हिस्सा 2, पृ 308) और अ़ल्लामा वाक़दी का ब्यान है कि अबू सलमा का इन्तिक़ाल उहुद की लड़ाई से वापसी के बाद सत्ताईस जुमादल उख़रा को हुआ। बनू उमैया के कुएं से आपको ग़ुस्ल दिया गया। इस कुएं को पहले अबीर कहते थे। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उसका नाम बुसैरा रखा, इसके बाद जनाज़ा बनू उमैया से मदीना लाया गया और वहीं दफ़न किया गया। (असहहुस्सियर, पृ0 579)

सवाल-जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को निकाह का पैग़ाम दिया, तो क्या उज़्र किया और आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इसका क्या जवाब दिया?

जवाब-जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को निकाह का पैग़ाम दिया तो उम्मे सलमा ने चार उज़्र ब्यान किए-

1. मुझमें ग़ैरत का माद्दा है। मक़्सद यह था कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में और भी बीवियां हैं, इसलिए रश्क और इख़्तिलाफ़ का अंदेशा है।
2. दूसरे यह कि मेरी उम्र ज़्यादा है।
3. तीसरे यह कि मैं बच्चों वाली औरत हूं।
4. चौथे यह कि मेरा कोई वली नहीं है।

आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इन उज़्रों को सुनकर फ़रमाया कि मैं अल्लाह से दुआ़ करूंगा, ख़ुदा तुम्हारी ग़ैरत को दूर कर देगा। बच्चों के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया कि उनकी निगरानी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़िम्मे होगी या यह फ़रमाया, तुम्हारे बच्चे मेरे ही बच्चे होंगे। उम्र के बारे में फ़रमाया कि मेरी उम्र तुमसे ज़्यादा है और वली के बारे में फ़रमाया कि तुम्हारा कोई वली इस निकाह को नापसन्द न करेगा, इसके बाद उम्मे सलमा राज़ी हो गईं और निकाह हो गया। (अल-इसाबा फ़ी तमयी ज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ0 457, असहहुस्सियर, पृ0 579, सियर आलामिन्नुबला, पृ0 205)

सवाल-हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किस माह, किस सन् में कितने महर पर हुआ और वली कौन बना?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से माह-ए-शव्वाल के ख़त्म पर सन 04 हिजरी में ग़ज़्वा-ए-अहज़ाब से पहले निकाह किया। (अल-कामिल फ़ित्तारीख़ पृ0 308) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने महर में कुछ सामान दिया जिस की क़ीमत 10 दिरहम थी और इब्ने इस्हाक़ से रिवायत है कि एक बिस्तर भी दिया, जिसमें बजाए रूई के खजूर की छाल भरी हुई थी और एक रिकाबी, एक प्याला और एक चक्की थी। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ0 306) और उनके पहले शौहर के लड़के हज़रत सलमा निकाह के वली बने। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 459)

सवाल-हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का इन्तिक़ाल किस माह व सन् में हुआ और जनाज़े की नमाज़ किसने पढ़ाई? क़ब्र में किसने उतारा? मदफ़न किस जगह है?

जवाब-अल्लामा वाक़दी के ब्यान के मुताबिक़ हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल माह-ए-शव्वाल सन् 59 हिजरी में हुआ। (इसाबा फ़ी तमयीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ0 459)

दूसरा क़ौल यह है कि इब्ने हिब्बान ने कहा है कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का इन्तिक़ाल हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद हुआ और शहादते हुसैन सन् 61 हिजरी में हुई। (अल-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पृ0 308)

और इमाम नववी कहते हैं कि अबू उमर बिन अब्दुल्लाह और अबूबक्र बिन ख़ुसैमा ने लिखा है कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की वफ़ात यज़ीद के इन्तिक़ाल के बाद हुई या यज़ीद की ख़िलाफ़त के ज़माने में हुई और यज़ीद की ख़िलाफ़त सन् 60 हिजरी के आख़िर में हुई।

चौथा क़ौल यह है कि अबू नुऐम कहते हैं कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का इन्तिक़ाल सन् 62 हिजरी में हुआ। हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी ने इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 424 और तक़रीबुत्तह्ज़ीब में इसी क़ौल को राजेह क़रार दिया है और इमाम बुख़ारी ने तारीख़े कबीर में सन् 58 हिजरी का क़ौल नक़ल

किया है और मुहारिब बिन दस्सार और इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने ब्यान किया कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने वसीयत की थी कि मेरी नमाज़े जनाज़ा सईद बिन ज़ैद पढ़ाएंगे, मगर हज़रत सईद की ज़िंदगी ने वफ़ा न की, हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से पहले ही सन् 50 हिजरी या 51 हिजरी या 52 हिजरी में पयामे अजल आ पहुंचा। उस वक़्त मदीने का वाली मरवान था। हाफ़िज़ इब्ने हजर ने लिखा है कि इसमें कोई टकराव की बात नहीं। मुम्किन है हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने बीमारी में यह वसीयत की हो, फिर ठीक हो गई हों, इसलिए सईद का इन्तिक़ाल पहले ही हो गया और जनाज़े की नमाज़ हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने पढ़ाई। पहले शौहर के दोनों बेटों उमर और सलमा और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी उमैया और अ़ब्दुल्लाह बिन वह्ब बिन ज़म्आ़, इन लोगों ने क़ब्र में उतारा। (इसाबा पृ0 424, पृ0 460, अस्माउर्रिजाल मिश्कात, पृ0 599, सियर आला मिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ0 208) और जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न किया गया। (असहहुस्सियर, पृ0 579, इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा हिस्सा 4, पृ0 422, अल-इसाबा, पृ0 460)

सवाल-अज़्वाजे मुतह्हरात में सबसे बाद में किसकी वफ़ात हुई?

जवाब-अज़्वाजे मुतह्हरात में सबसे बाद में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की वफ़ात हुई। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 460)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मुतअ़ल्लिक बातें

सवाल-हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के मां-बाप का नाम क्या है और यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की रिश्ते में क्या लगती थीं?

जवाब-वालिद का नाम जह्श और वालिदा का नाम उमैमा था जो अ़ब्दुल मुत्तलिब की लड़की थी, तो हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की फुफेरी बहन थीं। (अल-बिदायः वन्निहायः, हिस्सा 4, पृ० 146, सियर आलामिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ० 211, इस्तीआ़ब अलल इसाबा, हिस्सा 4, पृ 314)

सवाल-हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का पहला अ़क्द किससे कितने मह्र पर हुआ और उसके निकाह में कितने अ़र्से तक रहीं?

जवाब-हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का पहला अ़क्द आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के आज़ाद किए हुए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से दस दीनार और साठ दिरहम पर हुआ था। उनके निकाह में यह तक़रीबन एक साल या इससे कुछ ज़्यादा ज़माना रहीं। (अल-बिदायः, हिस्सा 4, पृ० 145, इस्तीआ़ब हिस्सा 4, पृ 314 व इसाबा हिस्सा 4, पृ० 313)

सवाल-हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का निकाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ किस उम्र, किस माह और किस सन् में और कितने मह्र पर हुआ और वलीमा में क्या खाना खिलाया गया?

जवाब-हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का निकाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ 35 साल की उम्र में हुआ।

दूसरा क़ौल 25 साल का है। माह-ए-ज़ीक़ादः सन् 05 हिजरी में हुआ यह क़ौल क़तादा का है, अबू उ़बैदा फ़रमाते हैं कि सन् 03 हिजरी में हुआ और हाफ़िज़ इब्ने सय्यिदुन्नास ने कहा कि ज़ैनब का निकाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ सन् 04 हिजरी में हुआ और चार सौ दिरहम मह्र मुक़र्रर हुआ।(इस्तीआ़ब हिस्सा 4, पृ० 314 सियर आलामिन्नुबला, पृ० 212, इसाबा, पृ० 313, अल-बिदायः वन्निहायाः, पृ 148, सीरतुल मुस्तफ़ा पृ० 317, असहहुस्सियर, पृ० 586)

और बुख़ारी शरीफ़ में है कि आपने वलीमा में एक बकरी ज़बह कराई और

सहाबा को गोश्त-रोटी खिलायी। जितने एहतिमाम से वलीमा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के निकाह में किया, उतना एहतिमाम किसी दूसरी बीवी के निकाह में न फ़रमाया। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ0 318)

सवाल-हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का नाम पहले क्या था और ज़ैनब किसने और किस वक़्त रखा और उनका लक़ब क्या था?

जवाब-जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निकाह अल्लाह ने आसमान पर कर दिया और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पास पहुंचे तो आपने मालूम किया कि तुम्हारा क्या नाम है। हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपना नाम बर्रा बतलाया। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनका नाम बदल कर ज़ैनब रखा और उनका लक़ब ज़्यादा ख़ैरात करने की वजह से उम्मुल मसाकीन था। (सियर आलामिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ0 217, अल-बिदाया, हिस्सा4, पृ0 146, उसदुल ग़ाबा, हिस्सा 5, पृ0 464)

सवाल-हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का इन्तिक़ाल कहां किस सन् में हुआ और जनाज़े की नमाज़ किसने पढ़ाई? और कहां दफ़न की गई?

जवाब-हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का इन्तिक़ाल मदीना में सन् 20 हिजरी में हुआ।

(सियर आलामिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ0 212, अल-बिदायः वन्निहायः, हिस्सा 4, पृ0 148)

दूसरा क़ौल यह है कि सन् 21 हिजरी में 53 साल की उम्र में इन्तिक़ाल हुआ। (अस्माउर्रिजाल, मिश्कात शरीफ़, पृ0 596)

तीसरा क़ौल इसाबा फी तमयीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ0 314 पर है कि हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का इन्तिक़ाल सन् 20 हिजरी में पचास साल की उम्र में हुआ। जनाज़े की नमाज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पढ़ाई जिसमें चार तकबीरें कहीं और जन्नतुल बक़ीअ् में दफ़न किया गया। (अल-बिदायः वन्निहायः, हिस्सा 4, पृ0 148, सियर आला मिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ0 212)

सवाल-हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों में आपके

विसाल के बाद सबसे पहले किसका विसाल हुआ?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी ज़िंदगी ही में यह पेशीन गोई फ़रमा दी थी कि मेरी वफ़ात के बाद मुझसे मेरी वह बीवी मिलेगी, जिसके हाथ लम्बे होंगे। या तो इस 'लम्बे हाथ' से मुराद ज़्यादा से ज़्यादा सदक़ा करने वाली है या वाकई हाथों का लम्बा होना मुराद है, दोनों एतिबार से हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा सब बीवियों में नुमायां थीं, चुनांचे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं, जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह इर्शाद फ़रमाया तो हम सब बीवियों ने अपने-अपने हाथों को नापा, तो सबसे बड़े हाथ हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के थे। अल-ग़रज़ आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इन्तिक़ाल के बाद सबसे पहले पाक बीवियों में से हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का इन्तिक़ाल हुआ था। (उसदुल ग़ाबा, हिस्सा 5, पृ0 465)

सवाल-हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के इन्तिक़ाल के बाद उनका मकान किसने कितने में ख़रीदा और क्यों?

जवाब-हज़रत उस्मान अ़ब्दुल्लाह जह्शमी ब्यान करते हैं कि वलीद मदीना के गवर्नर ने हज़रत ज़ैनब बिन्ते जह्श रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का मकान पचास हज़ार दिरहम में ख़रीद कर मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ में शामिल कराया।

(सियर आलामिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ0 218)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की पैदाइश का साल क्या है? वालिद का नाम क्या था? और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले किसके निकाह में थीं?

जवाब-हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा सन् 38 मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में पैदा हुईं। उनके वालिद का नाम हारिस बिन ज़ुरार था जो क़बीला बनू मुस्तलिक़ के सरदार थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में आने से पहले अपने चचा के लड़के मुसाफ़ेअ़ बिन

सफ़वान के निकाह में थीं, जो मुरीसीअ् (बनू मुस्तलिक़) की लड़ाई में मक़्तूल हुआ, दूसरा क़ौल यह है कि मालिक बिन सफ़वान मुस्तलक़ी के निकाह में थीं, उनसे उनके कोई औलाद नहीं हुई।(इसाबा पृ० 265, अल-कामिल फ़ित्तारीख़, पृ० 308)

सवाल-हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा किस ग़ज़्वे में क़ैद होकर आईं और किस मुसलमान के हिस्से में आईं? हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में कैसे आईं? क़बीले वालों को उनसे क्या फ़ायदा हुआ?

जवाब-हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा मुरीसीअ् की लड़ाई यानी ग़ज़्वा-ए-बनू मुस्तलिक़ में क़ैद होकर आईं। जब ग़नीमत का माल तक़सीम हुआ तो हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हज़रत साबित बिन क़ैस के हिस्से में आईं। हज़रत साबित बिन क़ैस ने उन्हें मुकातबा बना दिया यानी यह कह दिया कि इतना माल इतनी रक़म अदा कर दो तो तुम आज़ाद हो जाओगी। हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि मेरे मौला ने मुझको मुकातबा बना दिया, आप मेरी इस सिलसिले में मदद कीजिए। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने आज़ादी की क़ीमत अदा करके उनसे शादी करली। हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के क़बीले के दूसरे सौ आदमी भी सहाबा की क़ैद में थे। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से शादी कर ली और इसका इल्म सहाबा को हुआ तो तमाम सहाबा ने इन सौ लोगों को आज़ाद कर दिया, सिर्फ़ इस वजह से कि अब ये आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ससुराली बन गए, गोया कि हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के रसूल की ज़ौजियत में आने से उनको यह फ़ायदा हुआ। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 256, इस्तीआब अ़लल इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 260, व हाशिया सियर आलामिन्नुबला हिस्सा 2, पृ० 262)

सवाल-हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से किस सन् में कितनी उम्र में कितने मह्र पर हुआ? उनका पहले क्या नाम था? जुवैरिया नाम किसने रखा?

जवाब-साहिब इस्तीआब हिस्सा 4, पृ० 260 पर लिखते हैं कि हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में सन् 05 हिजरी में आईं। साहिबे आलामिन्नुबला ने हिस्सा 2, पृ० 263

पर लिखा है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह के वक़्त उन की उम्र बीस साल थी। उनका मह्र चार सौ दिरहम तय हुआ। यह उनकी आज़ादी की कीमत थी, गोया आज़ादी की कीमत मह्र में तय हुई। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ0 339) दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का मह्र बनू मुस्तलिक़ के हर गुलाम की आज़ादी ठहरा। (सियर आलामिन्नुबला, पृ0 263) और उनका पहला नाम बर्रा था। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनका नाम जुवैरिया रखा। (इसाबा फ़ी तमयीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ0 265)

सवाल-हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का इन्तिक़ाल किस महीने, किस साल और कितनी उम्र में हुआ और जनाज़े की नमाज़ किसने पढ़ाई?

जवाब-हज़रत जुवैरिया रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का इन्तिक़ाल सन् 50 हिजरी में हुआ। दूसरा क़ौल यह है कि अ़ल्लामा वाक़दी फ़रमाते हैं कि माह-ए-रबीउ़ल अव्वल सन् 56 हिजरी में इन्तिक़ाल हुआ, उनकी उम्र 65 साल की थी और मरवान ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। (इसाबा, पृ0 266)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के मां-बाप का नाम क्या था? हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की पैदाइश कब हुई? उनका असल नाम क्या था?

जवाब-वालिद का नाम सख़्र था। अबू सुफ़ियान कुन्नियत से मशहूर थे और वालिदा का नाम सफ़िया बिन्ते अबुलआ़स था। यह हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान की फूफी लगती हैं तो हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा उस्मान की फुफेरी बहन थीं। उनकी पैदाइश सन् 25 मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम यानी नुबुव्वत मिलने से सतरह साल पहले हुई। उनका असल नाम रमला था। (इस्तीआ़ब, पृ0 304, इसाबा 305)

सवाल-हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के पहले शौहर कौन थे? उनसे क्या औलाद हुई और उनके शौहर का कहां इन्तिक़ाल हुआ?

जवाब-उनके पहले शौहर उबैदुल्लाह[1] बिन जह्श थे। ये दोनों मियां-बीवी इस्लाम की दौलत से मुशर्रफ़ होकर हब्शा हिजरत कर गए थे। उनके शौहर नसरानी (ईसाई) हो गए। हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा इस्लाम पर क़ायम रहीं। उनके शौहर नसरनियत (ईसाइयत) पर इन्तिक़ाल कर गए। उनसे हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के एक लड़की हुई, जिसके नाम पर हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की कुन्नियत हुई। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 305)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह का पैग़ाम उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास कौन लेकर गया, वकील कौन बना और क्या इनाम दिया?

जवाब-जब हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की इद्दत पूरी हो गई तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अम्र बिन उमैया[2] ज़ुमरी को नजाशी के पास यह कहला भेजा कि अगर हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा मुझसे निकाह करना चाहे तो तुम वकील के तौर पर निकाह पढ़वा कर मेरे पास भेज दो। शाह-ए-हब्शा अस्हमा ने अपनी बांदी अबूरहा को हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास यह कहला भेजा कि मेरे पास रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक वाला नामा इस मज़्मून का यानी निकाह का पयाम आया है, अगर तुमको मंज़ूर हो तो अपनी तरफ़ से किसी को वकील बना लो। हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस पयाम को मंज़ूर किया और ख़ालिद बिन सईद बिन आस उमवी (जो उनके मामूं थे) को अपना वकील मुक़र्रर किया और इस बशारत और ख़ुशख़बरी के इनाम में हाथों के दोनों कंगन और पैरों की पाज़ेब और उंगलियों के छल्ले जो सब चांदी के थे, अबूरहा, शाहे हब्शा की बांदी को दे दिए। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ0 341 और इसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ0 305 पर सिर्फ़ दो कंगनों का ज़िक्र है।)

जब हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास मह्र पहुंचा तो हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अबूरहा बांदी को बुलवाया और उस मह्र में से

---

1. उनका नाम तस्ग़ीर के साथ है यानी उबैदुल्लाह और अब्दुल्लाह बिन जह्श उन के भाई थे जिन का इन्तिक़ाल जंग-ए-उहुद में हो गया था, इस लिए उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के पहले शौहर का नाम अब्दुल्लाह नहीं है जैसा कि कुछ किताबों में ग़लती से अब्दुल्लाह लिख दिया है। (हाशिया सीरतुल मुस्तफ़ा 1/340)
2. साहिबे सियरे आलामिन्नुबला ने हिस्सा 2, पृ0 230 पर लिखा है कि अबू जाफ़र बाक़र का क़ौल है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अम्र बिन उमैया ज़ुमरी को नजाशी के पास हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के लिए निकाह का पैग़ाम और चार सौ दीनार देकर भेजा।

पचास दीनार देना चाहे, बांदी ने पहला ज़ेवर वाला इनाम भी उन पचास दीनारों के साथ यह कहकर वापस कर दिया कि मुझको बादशाह ने लेने से मना किया है। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 306)

सवाल-हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ किसने किस सन् में कितने मह्र पर पढ़ाया और वलीमा में क्या खाना खिलाया, मदीना कौन लेकर आया और उनकी उम्र क्या थी?

जवाब-अबू उबैदा मामर बिन मुसन्ना कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी सन् 06 हिजरी में हुई निकाह किसने पढ़ाया, इसमें इख़्तिलाफ़ है-

1. हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना में उस वक़्त पढ़ाया जबकि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा हब्शा से मदीना आ गई थीं। मुम्किन है हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने हब्शा के निकाह की मदीना में तज्दीद की हो, क्योंकि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने वलीमा भी किया था, गोश्त के सरीद का- (अल-इस्तीआब, पृ0 304) और इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 306 पर है कि गोश्त खिलाया।
2. शाहे हब्शा ने पढ़ाया। साहिबे इस्तीआब ने पृ0 304 पर इस क़ौल को ज़्यादा सही कहा है।
3. नजाशी ने हज़रत जाफ़र और तमाम मुसलमानों को जमा करके खुद खुत्बा व निकाह पढ़ाया और चार सौ दीनार मह्र अपनी तरफ़ से तय किया और उसी वक़्त नजाशी ने चार सौ दीनार अपने पास से ख़ालिद बिन सईद के हवाले कर दिए।[1] जो हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के वकील थे और मामूं भी थे। साहिबे सियर आलामिन्नुबला ने पृ0 220 पर लिखा है कि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के निकाह के वली हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु थे।
4. ख़ालिद बिन सईद ने खुत्बा पढ़ा, तक़रीर की, जिसका खुलासा हम्द व सलात के बाद यह है कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्याम को क़ुबूल किया और आपसे हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह कर दिया, अल्लाह मुबारक फ़रमाए। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ0 341 से पृ0 342 तक और साहिबे इस्तीआब अलल इसाबा ने पृ0 304 पर इस इख़्तिलाफ़ को नक़ल करने के बाद

1. सईद ने क़तादा का क़ौल नक़ल किया है कि दो सौ दीनार मह्र तय हुआ और ज़ुहरी ने उर्वा से नक़ल किया है कि चार हज़ार दिरहम मह्र था।
(अल-इस्तीआब अलल इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 303 व 305)

लिखा है कि मुम्किन है, पैग़ाम देने वाले नजाशी शाह-ए-हब्शा हों और अक़्द करने वाले हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु हों और साहिबे इसाबा ने, हिस्सा 4, पृ0 306 पर लिखा है कि इब्ने हज़्म का इस बात पर पक्का यक़ीन है कि निकाह हब्शा में हुआ, इसी को अबुल हसन इब्नुल असीर ने उसदुल ग़ाबा में लिखा है कि अह्ले सियर का इसमें कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है और सियर आलामिन्नुबला में हिस्सा 2, पृ0 221 पर है कि हब्शा में निकाह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाया, अल-ग़रज़ जब शाह-ए-हब्शा अस्हमा नजाशी के दरबार में निकाह हो चुका तो लोगों ने उठने का इरादा किया, नजाशी ने कहा, अभी बैठिए। हज़रात अंबिया की सुन्नत यह है कि निकाह के बाद वलीमा भी होना चाहिए, चुनांचे खाना आया और दावत से फ़ारिग़ होकर सब रुख़्सत हुए। (सीरतुल मुस्तफ़ा हिस्सा 3, पृ0 343) हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का कुल जहेज़ नजाशी ने दिया। हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा को मदीना शुरहबील बिन हसना लेकर आए। दूसरा क़ौल यह है कि अम्र बिन उमैया ज़ुमरी लेकर आए, निकाह के वक़्त हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र सैंतीस साल थी। (सीतरुल मुस्तफ़ा, 4/344)

सवाल-हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल किस सन् में, कितनी उम्र में किसकी ख़िलाफ़त के ज़माने में हुआ?

जवाब-हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल सन् 44 हिजरी में हुआ। (इस्तीआब अ़लल इसाबा, पृ0 306) और साहिबे सियर अलामिन्नुबला ने हिस्सा 2, पृ0 222 पर लिखा है कि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का इन्तिक़ाल सन् 42 हिजरी में हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में हुआ (ऐसा ही इसाबा, पृ0 307 में है)

तीसरा क़ौल यह है कि हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात से एक साल पहले हो गई थी (सियर आलामिन्नुबला, पृ0 222 पर तीनों क़ौल दर्ज हैं) और उनकी उम्र इन्तिक़ाल के वक़्त 74 साल थी। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ0 344)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा बिन्ते हयइ बिन्ते अख़्तब से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा के मां-बाप के नाम क्या-क्या थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले किसके निकाह में थीं और उनसे क्या-क्या औलादें हुई?

जवाब-वालिद का नाम हयइ बिन अख़तब था जो क़बीला बनी नज़ीर का सरदार था, वालिदा का नाम ज़र्रा था। पहला निकाह सलाम बिन मुश्कम करज़ी से हुआ था। उसके तलाक़ देने के बाद कनाना इब्ने अबिल हुक़ैक़ से निकाह हुआ और कनाना ख़ैबर की लड़ाई में मारा गया।

(इसाबा फी तमयीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ0 346)

और साहिबे इस्तीआ़ब ने हिस्सा 4, पृ0 349 पर उनकी वालिदा का नाम बर्रा बिन्ते समवाल लिखा है और साहिबे असह्हुस्सियर ने पृ0 602 पर लिखा है कि उनके शौहर कनाना बिन अबिल हुक़ैक़ को आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से ख़ैबर की लड़ाई में मुहम्मद बिन मस्लमा ने क़त्ल कर दिया था।

सवाल-हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के निकाह में किस सन् में, किस उम्र में आईं? मदीना में किसके घर उनको उतारा गया? पहली रात कहां हुई? वलीमे में क्या खिलाया गया?

जवाब-साहिबे इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा ने पृ0 349 पर लिखा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा से सन् 07 हिजरी में शादी की और शबे ज़ुफ़ाफ़ (पहली रात) सहबा नामी जगह पर हुई जो ख़ैबर से एक बरीद यानी बारह मील की दूर पर था। (इसाबा, पृ0 347)

हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र ज़ौजियत में आने के वक़्त सतरह साल से कम ही थी। (इसाबा फी तमयीज़िस्सहाबा, पृ0 348) और मदीना में हारिस बिन नोमान के घर उनको उतारा गया। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 347) और सहबा नामी जगह में ही वलीमा हुआ। इस तरह और इस शान से कि चमड़े का एक दस्तरख़्वान था, वह बिछाया गया। आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि ऐलान करो (जिसके पास जो कुछ सामान खाने का जमा हो, लेकर आ जाए। कोई खजूर लाया, कोई पनीर और कोई सत्तू लाया और कोई घी। जब इस तरह बहुत सामान जमा हो गया, तो सब ने मिलकर

खाया। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ0 345) और इस्तीआब पृ0 347 पर है कि खजूर और सत्तू वलीमा में खिलाया और ज़ुरक़ानी, हिस्सा 3, पृ0 257 पर है कि मक़ामे सहबा में आपने तीन दिन क़ियाम किया।

इसाबा पृ0 347 पर है कि एक चबूतरे पर खजूरें डाल दी गईं और कहा गया कि खाओ यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का वलीमा है। बुख़ारी शरीफ़ किताबुल अतइमा, हिस्सा 2, पृ0 811 में है : हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा से निकाह किया और लोगों को वलीमा की दावत में बुलाया। आपने सुफ़रा (चमड़े का दस्तरख़्वान) बिछाने का हुक्म दिया। वह बिछा दिया गया। उस पर छुहारे और घी और पनीर वग़ैरह रखे गए। दूसरी रिवायत में हीस का ज़िक्र है जो छुहारे, घी और पनीर से बना हुआ एक खाना होता है। वह लोगों के सामने सुफ़रा पर रखा गया।

सवाल-हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा को ग़नीमत के माल में से पहले किस सहाबी ने ले लिया था, फिर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उन सहाबी को हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बदले में क्या दिया?

जवाब-जब ख़ैबर जीत लिया गया और ग़नीमत का माल सहाबा ने इकट्ठा कर लिया तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के पास हज़रत दह्याः कलबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु बांदी लेने आए। आपने फ़रमाया, ले लो, तो उन्होंने हज़रत सफ़िया बिन्ते हयइ रज़ियल्लाहु अ़न्हा को ले लिया। इसके बाद आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से एक सहाबी ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम! यह सफ़िया बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर के सरदार की बेटी है, यह तो आपके लायक़ है तो आपने हज़रत दह्याः कलबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को मअ़ हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के बुलवाया और उनसे कहा कि तुम दूसरी बांदी ले लो और सफ़िया को अपने लिए रख लिया।

दूसरा क़ौल इमाम शाफ़ई की किताबुलउम्म में अ़ल्लामा वाक़दी के वास्ते से रिवायत है कि हज़रत दह्याः कलबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने उनके पहले शौहर कनाना बिन रबीअ़ की बहन दे दी।
(असहहुस्सियर, पृ0 602)

और सही मुस्लिम शरीफ़ में है कि हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा को हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसललम ने हज़रत दह्याः कलबी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से सात

इन्सानों के बदले ख़रीदा। अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने कहा है कि यह ख़रीदना मजाज़न कहा गया। (इसी तरह इस्तीआ़ब में है हिस्सा 4, पृ0 347 व सियर आलामिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ0 232)

सवाल-हज़रत सफ़िया बिन्ते हयइ रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल किस माह, किस सन् और किसकी ख़िलाफ़त के ज़माने में हुआ और मदफ़न कहां हुआ?

जवाब-हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल माह-ए-रमज़ान सन् 50 हिजरी अमीर मुआ़विया के ज़माने में हुआ। (इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 349)

दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल सन् 52 हिजरी में हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त के ज़माने में हुआ।

तीसरा क़ौल सन् 36 हिजरी का है। यह इब्ने हिब्बान का क़ौल है और इब्ने मुन्दा ने इस पर यक़ीन किया है, मगर अ़ल्लामा इब्ने हजर ने इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 348 पर इस क़ौल को ग़लत क़रार दिया है, क्योंकि सन् 36 हिजरी में अ़ली बिन हुसैन पैदा भी नहीं हुए थे, हालांकि बुख़ारी व मुस्लिम में उनकी रिवायत सफ़िया से साबित है। वल्लाहु आ़लम।

अ़ल्लामा इब्ने हजर ने सन् 50 हिजरी वाले क़ौल को अक़रब इलस्सवाब (सही के क़रीब) कहा है। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 348) और हज़रत सफ़िया रज़ियल्लाहु अ़न्हा को जन्नतुल बक़ीअ़ में दफ़न किया गया। (सियर आलाम, हिस्सा 2, पृ0 238)

हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस रज़ियल्लाहु अ़न्हा से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवाल-हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा किस सन् में पैदा हुईं? उनका पहला नाम क्या था? और पहले किस के निकाह में थीं?

जवाब- 1. हज़रत मैमूना बिन्ते हारिस रज़ियल्लाहु अ़न्हा 25 मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में पैदा हुईं। उनका पैदाइशी नाम बर्रा था पहला निकाह मस्ऊद सक़फ़ी से हुआ था। इसके बाद उनका निकाह अबू रुहम बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा से हुआ। (सियर आलामिन्नुबला, पृ0 239) और इसाबा के हिस्सा 4, पृ0 411 पर है कि पहला निकाह अबू रुहम बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा से हुआ।

2. दूसरा क़ौल यह है कि सजरा बिन अबी रुहम से हुआ।
3. तीसरा क़ौल यह है कि पहला निकाह हुवैतिब बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा से हुआ था।

4. चौथा क़ौल यह है कि फ़रवा से हुआ था और फ़रवा हुवैतिब का भाई था।

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा से किस माह, किस सन में कितने मह्र पर निकाह किया, निकाह का पैग़ाम लेकर किसको भेजा और वली किसको बनाया?

जवाब-1. आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने निकाह का पैग़ाम हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु को देकर भेजा। उन्होंने हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मिलकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा की शादी करा दी।

2. दूसरा क़ौल यह है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने माह-ए-शव्वाल, तीसरा क़ौल माह-ए-ज़ीक़ादा सन् 07 हिजरी में ऐहराम की हालत में पांच सौ दिरहम मह्र के एवज़ में हज़रत अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु को निकाह का वली बनाकर हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा से निकाह फ़रमाया। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 411, 412, 413) और पहली रात सर्फ़ नामी जगह पर हुई। (सियर आलामिन्नुबला, हिस्सा 2, पृ0 239)। दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर ही में पहली रात हुई।

3. तीसरा क़ौल यह है कि ऐहराम से हलाल होने के बाद तनईम नामी जगह में पहली रात हुई। (इसाबा फ़ी तमयीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ0 413)

सवाल-हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल किस सन् में किस जगह हुआ? नमाज़ किसने पढ़ाई? क़ब्र में किस किसने उतारा? उम्र कितनी हुई?

जवाब-इन्तिक़ाल किस सन् में हुआ, इस सिलसिले की रिवायतों में काफ़ी इख़्तिलाफ़ है-

1. एक क़ौल यह है कि सन् 49 हिजरी में हुआ। याक़ूब बिन सुफ़ियान ने इसी क़ौल पर जज़्म (यक़ीन) नक़ल किया है।
2. दूसरा क़ौल सन् 51 हिजरी का है।
3. तीसरा क़ौल सन् 61 हिजरी का है।
4. चौथा क़ौल सन् 62 हिजरी का है।
5. पांचवां क़ौल सन् 63 हिजरी का है।
6. छठा क़ौल सन् 66 हिजरी का है, मगर अ़ल्लामा इब्ने हजर ने सन् 51 हिजरी वाले क़ौल को बिल्कुल सही क़रार देकर दूसरे क़ौलों को ग़ैर सही कहा है। (इसाबा, पृ0 413)

और इन्तिक़ाल सर्फ़ नामी जगह में ही हुआ। यह ही वह जगह है जिस जगह पहली रात गुज़री थी और सियर आलामुन्नुबला के हिस्सा 4, पृ० 245 पर है कि हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल यज़ीद की ख़िलाफ़त के ज़माने सन् 61 हिजरी में अस्सी साल की उम्र में हुआ। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, यज़ीद बिन असम्म, अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद और उ़बैदुल्लाह ख़ौलानी, इन चारों हज़रात ने क़ब्र में उतारा। (इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 408)

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सबसे आख़िर में किस औ़रत से शादी की और हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा किस के बाद निकाह में आईं?

जवाब-इब्ने साद कहते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की आख़री बीवी हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा बिन्ते हारिस थीं, जिनके बाद आपने फिर किसी और से निकाह नहीं फ़रमाया (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पृ० 348) और साहिबे इसाबा ने हिस्सा 3, पृ० 412 पर लिखा है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सफ़िया बिन्ते हयइ के बाद हज़रत मैमूना रज़ियल्लाहु अ़न्हा से शादी की।

बनाते मुतह्हरात का ज़िक्र यानी आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की साहबज़ादियां

सवाल-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सबसे बड़ी साहबज़ादी कौन-सी हैं, उनकी पैदाइश किस सन् में हुई?

जवाब-आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बड़ी साहबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा हैं, जिनकी विलादत बिलइत्तिफ़ाक़ अह्ले सियर सन् 30 मीलादुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में हुई। (अल-इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा, पृ० 311-312, असहहुस्सियर, पृ. 11, मदारिजुन्नुबुव्वा, पृ. 78 उसदुल ग़ाबा, 5/467)

सवाल-हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा की शादी किससे हुई थी?

जवाब-हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा की शादी हज़रत अबुल आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुई थी। यह हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की बहन हाला के बेटे थे यानी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा के ख़लेरे भाई लगते थे। इनके नाम में अह्ले सियर का इख़्तिलाफ़ है। सबसे सही क़ौल जिसे अक्सर लोगों ने अपनाया है, यह है कि हज़रत आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु का नाम लक़ीत था।
(इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 721)

सवाल-हज़रत अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हु किस महीने और किस सन् में इस्लाम लाए?

जवाब-हज़रत अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हु माह-ए-मुहर्रम सन् 07 हिजरी में मुसलमान हुए। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 312)

सवाल-हज़रत अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हु की हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा से कितनी औलाद हुई?

जवाब-हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के हज़रत अबुल आस रज़ियल्लाहु अन्हु से दो औलाद हुई, एक लड़का जिसका नाम अली था जो बालिग़ होने से पहले ही इन्तिक़ाल कर गया था, दूसरी लड़की थी, जिसका नाम उमामा था। (उसदुल ग़ाबा, हिस्सा 5, पृ0 467)

सवाल-हज़रत उमामा बिन्ते ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह किस-किस से हुआ? निकाह किसने पढ़ाया, औलाद कितनी हुई?

जवाब-हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह पहले तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ था, जो हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाया था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने मरज़े वफ़ात के वक़्त मुग़ीरह को कहा था कि तुम मेरी वफ़ात के बाद हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी कर लेना। चुनांचे मुग़ीरह ने ऐसा ही किया और यह निकाह हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाया, मगर मुग़ीरह की हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा से कोई औलाद न हुई। (इस्तीआब हिस्सा 4, पृ0 246 अलल इसाबा हिस्सा 4, पृ0 247)

दूसरा क़ौल यह है कि मुग़ीरह से हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा के एक लड़का हुआ, जिसका नाम यह्या था। इसी नाम से मुग़ीरह की कुन्नियत अबू यह्या थी। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 247) और दारे क़ुत्नी ने कहा है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद हज़रत उमामा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह अबुल हय्याज बिन अबू सुफ़ियान से हुआ था। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 237)

सवाल-हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात किस सन् में हुई ग़ुस्ल किसने दिया, कफ़न किस के कपड़े का बनाया गया और दफ़न किसने किया?

जवाब-हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा की वफ़ात सन् 08 हिजरी के शुरू में हुई। हज़रत उम्मे अतिय्या, सौदा बिन्ते ज़म्आ, उम्मे सलमा और उम्मे ऐमन इन चारों ने ग़ुस्ल दिया। उम्मे अतिय्या ब्यान करती हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु

अ़लैहि वसल्लम ने अपना तहबन्द भेजा कि इससे उनको कफ़न दो जो जिस्म से पैवस्त हो, तज्हीज़ व तकफ़ीन के बाद नमाज़ हुई। हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने खुद उनको क़ब्र में उतारा। (मदारिजुन्नुबुव्वः, हिस्सा 3, पृ० 82)

हज़रत रुक़ैया बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम

सवाल-हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा की विलादत किस सन् में हुई और शादी किससे हुई?

जवाब-हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा की विलादत के तीन साल बाद पैदा हुईं, यानी सन 33 मीलादुन्नबी में पैदा हुईं और सय्यिदा रुक़ैया की शादी नबी की बे'सत से पहले अबू लहब के लड़के उत्बा से हुई; सिर्फ़ निकाह हुआ था, रुख़्सती नहीं हुई थी। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपनी नुबुव्वत का ऐलान किया और *'तब्बत यदा अबी लहबिंव्-व तब्ब'* नाज़िल हुई तो अबू लहब ने बेटे को कहा कि तुम्हारे साथ उठना-बैठना, खाना-सोना सब हराम है, जब तक कि तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की बेटी को तलाक़ न दे दो। उत्बा ने बाप के हुक्म की तामील की और हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा को तलाक़ दे दी। इसके बाद हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा की शादी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुई। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 304)

सवाल-हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कितनी औलाद हुईं? वह औलाद कितने साल ज़िंदा रहीं? किस मरज़ में इन्तिक़ाल हुआ?

जवाब-हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से एक लड़का पैदा हुआ जिसका नाम अ़ब्दुल्लाह रखा था। जब उस बच्चे की उ़म्र छः साल की हुई, तो मुर्ग़ ने आंख में चोंच मार दी, जिससे चेहरे पर वरम आ गया था उसी मरज़ मे माह-ए-जुमादल ऊला सन् 04 हिजरी में मदीना में वफ़ात हो गई (उसदुल ग़ाबा, हिस्सा 5, पृ० 456 इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा, पृ० 300, सियर आलामिन्नुबला 251)

सवाल-हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा का इन्तिक़ाल कब और किस मरज़ में हुआ?

जवाब-सही क़ौल के मुताबिक़ हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा के जिस्म पर

सोज़िश के आबले पड़ गए थे। इसी मरज़ में बद्र के वाक़िए के वक़्त मुब्तला थीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा की तीमारदारी की वजह से बद्र की लड़ाई में शरीक न हो सके, यहां तक कि उसी मरज़ में बद्र के दिनों में हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा अल्लाह को प्यारी हो गईं और हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा को दफ़न करके जब सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम फ़ारिग़ हुए तो हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बद्र की फ़त्ह की ख़ुशख़बरी लेकर मदीना आए, उस वक़्त हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अ़न्हा की क़ब्र पर थे। एकदम तकबीर की आवाज़ सुनी, देखा तो हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु बद्र की लड़ाई की फ़त्ह की ख़ुशख़बरी लेकर तकबीर पढ़ते आ रहे हैं और बद्र की लड़ाई सन् 2 हिजरी माह-ए-रमज़ान में हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने ग़नीमत के माल में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु का भी हिस्सा लगाया था। (इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 302)

हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अ़न्हा बिन्ते रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का ज़िक्र

सवाल-हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अ़न्हा की शादी किस-किस से हुई, उनसे क्या औलाद हुई?

जवाब-हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अ़न्हा की पहली शादी अबू लहब के लड़के उतैबा से हुई। रुख़्सती से पहले ही जब *'तब्बत यदा अबी लहब'* नाज़िल हुई। तो बाप के कहने से तलाक़ दे दी। इसके बाद उनकी शादी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से हुई। निकाह रबीउ़ल अव्वल में हुआ और रुख़्सती जुमादल ऊला 03 हिजरी में हुई। सीरत लिखने वाले इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अ़न्हा के हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से कोई औलाद न हुई। (इस्तीआ़ब अ़लल इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 489, सियरे आलाम, हिस्सा 2, पृ० 252)

सवाल-हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अ़न्हा हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के निकाह में कितने दिनों तक रहीं, किस माह, किस सन् में इन्तिक़ाल हुआ, ग़ुस्ल किसने देकर किसने नमाज़ पढ़ाई, क़ब्र में कौन उतरा?

जवाब-हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु के निकाह में हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अ़न्हा छः साल रहीं। माह-ए-शाबान सन् 09 हिजरी में इन्तिक़ाल

हुआ। उम्मे अतिय्या, अस्मा बिन्ते उमैस और सफ़िया बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब ने गुस्ल दिया। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई और क़ब्र में हज़रत अली, फ़ज़्ल बिन अब्बास और उसामा बिन ज़ैद उतरे। एक रिवायत में है कि अबू तलहा को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ब्र में उतरने को कहा। तीसरी रिवायत में है कि अबू तलहा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनके साथ क़ब्र में उतरने की दरख़्वास्त की।

(इस्तीआब अलल इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 487)

हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु अन्हा

सवाल-हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु अन्हा की विलादत किस सन् में हुई और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र शरीफ़ उस वक़्त कितने साल की थी?

जवाब-इब्ने अब्दुल बर्र का कहना है कि हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु अन्हा की पैदाइश बे'सत के पहले साल की है। (सीरतुल मुस्तफ़ा, ज़ुरक़ानी, हिस्सा 3, पृ 202 के हवाले से) और इब्ने जौज़ी फ़रमाते हैं कि बे'सत यानी नुबुव्वत मिलने से पांच साल पहले पैदाइश हुई और मदायनी ने सन 35 मीलादुन्नबी वाले क़ौल पर जज़्म (यक़ीन) नक़ल किया है। ख़ाना काबा की तामीर में क़ुरैश मशग़ूल थे। हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पांच साल बड़ी थीं। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ0 377) और एक क़ौल सन् 40 मीलादुन्नबी का है और साहिबे मदारिजुन्नुबुव्वः, पृ0 86 पर सन् 41 नबवी का क़ौल नक़ल करते हैं। (इसी तरह हाशिया बुख़ारी, हिस्सा 1, पृ0 532, इस्तीआब से नक़ल किया गया)

सवाल-हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह किस सहाबी से किस माह किस सन् में कितनी उम्र में हुआ?

जवाब-हज़रत फ़ातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से माह-ए-रजब सन् 02 हिजरी में हुआ। दूसरा क़ौल माह-ए-रमज़ान का है। तीसरा क़ौल यह है कि माह-ए-ज़ीक़ादः सन् 02 हिजरी, बद्र के वाक़िए के बाद निकाह हुआ और रुख़्सती उहुद के बाद हुई

(तारीख़ुल ख़मीस, पृ0 362, सियर आलाम, हिस्सा 2, पृ0 199)

चौथा क़ौल यह है कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रुख़्सती के साढ़े चार

अन्हा को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के घर छोड़ कर आईं और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को जहेज़ में जो सामान दिया था, वह यह था-

1. एक मख़मली बिछौना।
2. चमड़े का एक तकिया जिसमें खजूर की छालें भरी हुई थीं।
3. दो चक्कियां।
4. दो मश्कीज़े। (इसाबा फ़ी तमयीज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पृ० 379)

दूसरा क़ौल यह है कि ऊपर जितनी चीज़ें ज़िक्र की गईं, उनके साथ एक चमड़े का तकिया और एक चारपाई भी थी।

(हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादियां, पृ० 39)

तीसरा क़ौल यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को जो सामान दिया था, वह यह था-

1. एक पलंग, 2. दो चादरें, 3. एक तकिया, 4. दो बाज़ूबन्द चांदी के, 5. एक मश्कीज़ा, 6. दो मिट्टी के घड़े थे। (तारीख़े मशाइख़े चिश्त, पृ० 206)

और एक रिवायत में यह है कि जो रात हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की शबे ज़ुफ़ाफ़ (पहली रात) वाली थी, उस रात का बिस्तर मेंढे की खाल का था। (अलग़रीब)

सवाल-हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने वलीमा कब किया और उसमें क्या खाना खिलाया?

जवाब-हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने निकाह के दूसरे दिन वलीमा किया, जिसमें जौ की रोटी, खजूरें, हरीरा और पनीर खिलाया (मिनल मवाहिब, हिस्सा 1, पृ० 386)

सवाल-हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की कुल कितनी औलाद हुई?

जवाब-हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से कुल छः औलाद हुईं-

1. हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु।
2. हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु।
3. हज़रत मुह्सिन रज़ियल्लाहु अन्हु और तीन लड़कियां।

4. हज़रत रुक़ैया रज़ियल्लाहु अन्हा।
5. हज़रत उम्मे कुलसूम[1] रज़ियल्लाहु अन्हा।
6. हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा।

(हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादियां, पृ० 45)

सवाल-हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कितने अर्से बाद, किस दिन और किस सन् में हुआ और लाश किस चीज़ में छुपा कर दफ़्न की गई?

जवाब-हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा कितने दिन ज़िंदा रहीं, इस बारे में बहुत ज़्यादा इख़्तिलाफ़ है-

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के तीन माह बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा भी इस दुनिया से रेहलत फ़रमा गईं।

(अस्माउर्रिजाल, मिश्कात, पृ० 613)

2. दूसरा क़ौल यह है कि 75 रातें गुज़ार कर इंतिक़ाल हुआ।
3. 70 दिन बाद।
4. 100 दिन ज़िंदा रह कर।
5. 8 माह ज़िंदा रह कर।
6. दो दिन कम छः माह ज़िंदा रह कर।
7. सातवां क़ौल यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के छः माह बाद इंतिक़ाल हुआ। यह आख़री क़ौल ही ज़्यादा सही है। (इस्तीआब पृ० 380, अल- कामिल पृ० 341, इसाबा, मदारिजुन्नुबुव्वः, पृ० 87 व 89) और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के जनाज़े को एक ऐसे हौदज में रखा गया जैसा हौदज शादी के लिए तैयार किया जाता है।

---

1. हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से चार हज़ार मह्र पर हुई, उनसे रुक़ैया और ज़ैद दो औलादें हुईं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद औन बिन जाफ़र से शादी हुई, उनसे कोई औलाद न हुई। इंतिक़ाल के बाद उनके भाई मुहम्मद बिन जाफ़र से निकाह हुआ, उनसे एक साहब ज़ादी हुई जो बचपन में इंतिक़ाल कर गईं, फिर हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा की शादी अब्दुल्लाह जाफ़र से हुई, उनसे कोई औलाद न हुई और उन ही के निकाह में रहते हुए हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा का इंतिक़ाल हुआ। (इसाबा, हिस्सा 4, पृ० 496)

इस तरह ताबूत में पोशीदा करके छुपा कर दफ़न किया गया और इस तरह ताबूत में करके दफ़न करना इस्लाम में सबसे पहले हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए ऐसा हुआ। दूसरी औरत हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। उन्होंने भी इसी तरह ताबूत में करके दफ़न करने की वसीयत की थी। (इस्तीआब अलल इसाबा पृ० 379, 380)

सवाल-हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हु को गुस्ल किसने दिया था, नमाज़ किसने पढ़ाई और क़ब्र में कौन उतरा?

जवाब-हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने गुस्ल दिया उनके साथ हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस भी गुस्ल में शरीक थीं। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई। दूसरा क़ौल यह है कि नमाज़ सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पढ़ाई, मगर साहिबे इसाबा ने दूसरे क़ौल को ज़ईफ़ कहा है और क़ब्र में हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु, ये तीनों हज़रात उतरे। (इस्तीआब अलल इसाबा, पृ० 380, सियर आलामिन्नुबला, पृ० 128, अल-कामिल, पृ० 341, अस्माउर्रिजाल मिश्कात, पृ० 619)

वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलमु व इल्मुहू अतम्मु व अहकमु व आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

अहक़रुल इबाद

मुहम्मद गुफ़रान रशीदी कैरानवी

मुदर्रिस, जामिया अशरफ़ुलउलूम रशीदी

गंगोह, ज़िला सहारनपुर (उ.प्र.)

ज़रूरी तंबीह (चेतावनी)

ज़ख़ीरा-ए-मालूमात के तमाम हिस्सों में चूंकि बहुत सी रिवायतें तारीख़ी हैं और तारीख़ी रिवायतें सही सक़ीम (कमज़ोर) क़वी व ज़ईफ़, राजेह व मरजूह हर तरह की होती हैं इसलिए इस किताब में लिखी हुई हर बात और रिवायत का राजेह व क़वी होना ज़रूरी नहीं, पढ़ने वाले इसी हैसियत से इसको देखें, मुहद्दिसीन और मुहक़्क़िक़ीन के उसूल पर न परखें। (लेखक)

ज़ख़ीरा
-ए-
मालूमात

(चौथा हिस्सा)

लेखक
मौलाना मुहम्मद गुफ़रान रशीदी कैरानवी

हिन्दी अनुवाद
मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताबः

ज़ख़ीरा-ए-मालूमात

(चौथा हिस्सा)

लेखकः

मौलाना मुहम्मद ग़ुफ़रान रशीदी कैरानवी

हिन्दी अनुवादः

मुहम्मद एजाज़ शादाब शरीफ़नगरी

बा एहतिमामः

फ़िरोज़ ख़ान

कम्पोज़िंगः अब्दुल तव्वाब

प्रकाशकः

فرید بک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159 Fax 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

Zakheera-e-Ma'lumaat (Part IV)

By: Maulana Muhammad Ghufran Rashidi Kairanvi

Pages: 104 | Edition: 2014 | Size: 23x36/16

Printed at Farid Enterprises, Delhi-6

विषय-सूची

□ □ □

तक़रीज़

आरिफ़ बिल्लाह फ़क़ीहुल इस्लाम
हज़रत मुफ़्ती मुज़फ़्फ़र हुसैन साहब मद्दज़िल्लहू
नाज़िम व मुतवल्ली जामिया मज़ाहिर-ए-उलूम वक़्फ़ सहारनपुर, यू०पी०

हामिदों-व मुसल्लियन! पेशे नज़र "ज़ख़ीरा-ए-मालूमात" का चौथा हिस्सा मुफ़ीद मालूमात पर मुश्तमिल अज़ीज़ मौलवी मुहम्मद गुफ़रान सल्लमहुल्लाह, मुदर्रिस जामिया अशरफ़ुल उलूम, गंगोह की इल्मी काविश का नतीजा है। अज़ीज़ मौसूफ़ नौजवान फ़ाज़िल हैं, जो तालीफ़ व तहरीर का ज़ौक़ रखते हैं।

मैंने यह मजमूआ लफ़्ज़-लफ़्ज़ करके तो नहीं अलबत्ता कुछ जगहों से देखा, मुफ़ीद पाया, तलबा-ए-अज़ीज़ व अवाम व ख़वास के लिए उम्दा तोहफ़ा है। इससे पहले इस मजमूए के तीन हिस्से नज़रे क़ारिईन होकर दाद-ए-तहसीन हासिल कर चुके हैं। मआख़ज़ व मराजेअ् ख़ुद मोअल्लिफ़ ने लिख दिए हैं, ज़रूरत पड़ने पर उनकी तरफ़ रूजूअ् किया जा सकता है। मैं दिल से दुआगो हूँ कि अल्लाह तआला अज़ीज़ मौसूफ़ की सई (कोशिश) को बार-आवर फ़रमाए और दोनों जहाँ की तरक़्क़ियों से नवाज़े, मज़ीद इन्हिमाक व इश्तिग़ाल फ़ित्तदरीस वल् मुताला की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाए। आमीन

अल-अब्द
मुज़फ़्फ़र हुसैन अल्-मज़ाहिरी

○ ○ ○

तक़रीज़

उस्ताज़ुल असातिज़ा

हज़रत मौलाना क़ारी शरीफ़ अहमद साहब मद्दज़िल्लहू

बानी व मोहतमिम जामिया अशरफ़ुल उ़लूम रशीदी, गंगोह, सहारनपुर

الحمد لله و كفى و سلامٌ على عباده الذين اصطفى، اما بعد!

अल्हम्दु लिल्लाहि व कफ़ा व सलामुन अ़ला इबादिहिल्लज़ी-नस्तफ़ा, अम्मा बाद!

अज़ीज़ मौलवी मुहम्मद ग़ुफ़रान सल्लमहू कैरानवी ने शुरू तालीम से आख़िर तालीम (दौरा) तक का ज़माना जामिया अशरफ़ुल उ़लूम रशीदी गंगोह में निहायत संजीदगी और सादगी से गुज़ारा। फ़ारिग़ होने के बाद मद्रसे में दर्स व तद्रीस में मशग़ूल हो गए। बड़ी ख़ुशी की बात है कि उन्होंने अपने ज़ौक़-शौक़, कुतुबबीनी (किताबें पढ़ना) और मुताला से एक बड़ा ज़ख़ीरा जो हर क़िस्म की मालूमात पर मुश्तमिल और हावी है, तैयार कर लिया, जो किताबी शक्ल में **"ज़ख़ीरा-ए-मालूमात"** के नाम से मन्ज़र-ए-आ़म पर आकर अ़वाम व ख़वास में बड़े शौक़ व ज़ौक़ से पढ़ा जा रहा है। मौसूफ़ ने अपनी सख़्त मेहनत और पूरी जिद्द-व-जहद से इसके एक-एक करके चार हिस्से तैयार कर लिए हैं। यह एक ज़ख़ीरा नहीं बल्कि उ़लूम व फ़ुनून और बहुत सी मालूमात के ज़ख़ीरों का मज्मूआ़ होकर एक बड़ी किताब की शक्ल में सामने आ गई है जो मुल्क-ग़ैर-मुल्कों में, जहां तक भी, जिसके हाथों में गई बड़े ज़ौक़-व-शौक़ और दिलचस्पी से पढ़ी जा रही है। अल्लाह तआ़ला क़ुबूल फ़रमाए और अपनी रज़ामन्दी का ज़रिया और आख़िरत का तोशा बनाए और हमेशा- हमेशा उससे अ़वाम व ख़वास फ़ैज़ हासिल करते रहें। वस्सलाम

अहक़र: **शरीफ़ अहमद**

मोहतमिम, जामिया अशरफ़ुल उ़लूम रशीदी, गंगोह

○ ○ ○

ज़रूरी तंबीह (चेतावनी)

ज़ख़ीरा-ए-मालूमात के तमाम हिस्सों में चूंकि बहुत सी रिवायतें तारीख़ी हैं और तारीख़ी रिवायतें सही सक़ीम (कमज़ोर) क़वी व ज़ईफ़, राजेह व मरजूह हर तरह की होती हैं इसलिए इस किताब में लिखी हुई हर बात और रिवायत का राजेह व क़वी होना ज़रूरी नहीं, पढ़ने वाले इसी हैसियत से इसको देखें, मुहद्दिसीन और मुहक़्क़िक़ीन के उसूल पर न परखें। (लेखक)

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुबहमातुल क़ुरआन

यानी वे बातें जो क़ुरआन पाक में ग़ैर वाज़ेह हैं

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'मालिकि यौमिद्दीन'** (सूरः फ़ातिहा) से कौन-सा दिन मुराद है?

जवाबः— इस आयत में **'यौमिद्दीन'** से मुराद क़ियामत का दिन है।

(मुफ़हमातुल अक़रान फी मुबहमातिल क़ुरआन अ़ला हाशियतिल जुमल, हिस्सा, 4, पेज 496)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अल्-मग़ज़ूबि अ़लैहिम'** (सूरः फ़ातिहा) से कौन लोग मुराद हैं?

जवाबः— **'मग़ज़ूबि अ़लैहिम'** से मुराद यहूदी क़ौम है? जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल हुआ। (ऊपर का हवाला)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अज़्ज़ाल्लीन'** (सूरः फ़ातिहा) से कौन मुराद हैं?

जवाबः— **'ज़ाल्लीन'** यानी गुमराह से मुराद नसारा (ईसाई) हैं।

(ऊपर का हवाला)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'इन्नी जाइलुन फ़िलअर्ज़ि ख़लीफ़ः'** (पारा 1, रुकूअ़ 4) में ख़लीफ़ा से कौन मुराद है?

जवाबः— अल्लाह तआ़ला के इस क़ौल में ज़मीन पर जिस ख़लीफ़ा के बनाने का ज़िक्र है, तर्जीही कौल के मुताबिक़ इससे हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम मुराद हैं।

(फ़तहुल-क़दीर फी इल्मितफ़सीर लिश्शौकानी, हिस्सा 1, पेज 62)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'व ज़ौजु-क'** (पारा 1, रूकूअ़ 4) में ज़ौजा से मुराद किसकी ज़ौजा है? उनका नाम क्या है और क्यों यह नाम रखा गया?

जवाबः— आयत में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की अहलिया मुराद हैं, जिनका नाम ज़िन्दा से पैदा होने की वजह से 'हव्वा' रखा गया। ('हव्वा' हयात यानी ज़िन्दगी से लिया गया है)। (मुफ़हमातुल क़ुरआन, पेज 499)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'वला तक़्रबा हाज़िहिश श-ज-रः'** (पारा 1, रूकूअ़ 4) में ख़िताब किसको है और शजरः से मुराद कौन सा पेड़ है?

जवाबः— आयत में ख़िताब हज़रत आदम और हज़रत हव्वा अ़लैहिमस्सलाम को है और पेड़ के बारे में इख़्तिलाफ़ है:

1. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसूऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरह फ़रमाते हैं कि यह अंगूर का पेड़ था।

2. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का क़ौल है कि वह सुंबलः यानी एक बाल ख़ोश-ए-गुन्दुम था।

3. यह पेड़ तीन यानी इंजीर था।

4. यह शजरतुल इल्म (इल्म का पेड़) था।

5. काफ़ूर का पेड़ था।

6. यह खजूर का पेड़ था।

7. यह शजरतुल ख़ुल्द था।

8. यह लौज़ यानी बादाम का पेड़ था।

9. एक क़ौल यह है कि उतरूजा (तुरंज) का पेड़ था।

(ज़ादुल मसीर, हिस्सा 1, पेज 50, फ़त्हुल क़दीर (शौकानी) हिस्सा 1, पेज 68)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'क़ुल्नह्बितू मिन्हा जमीअ़न'** (पारा 1, रूकूअ़ 4) में यह उतरने का ख़िताब किसको है?

जवाबः— यह ख़िताब हज़रत आदम व हव्वा अ़लैहिमस्सलाम को है। जब उनसे मना किए गए पेड़ से खाने का काम हो गया था, तो अल्लाह ने उनको जन्नत से ज़मीन पर उतरने का हुक्म दिया था और उस हुक्म में हज़रत आदम व हव्वा अ़लैहिमस्सलाम, इब्लीस और साँप सब दाख़िल हैं। इसलिए **'इह्बितू'** जमा का सीग़ा लाया गया। (फ़त्हुल क़दीर (शौकानी) हिस्सा 1, पेज 71)

सवाल:– अल्लाह के फ़रमान **'व इज़ फ़-रक़्ना बिकुमुल बहरः'** (पारा 1, रुकूअ़ 6) में यह दरिया कौन सा है?

जवाब:– आयत में जिस दरिया का ज़िक्र है, वह **बहरेक़ुल्ज़ुम** है, जिसकी कुन्नियत अबू ख़ालिद है।

(मुफ़हमातुल अक़रान फ़ी मुबहमातिल क़ुरआन अ़ला हाशियतिल जुमल, हिस्सा 4, पेज 499)

सवाल:– अल्लाह के फ़रमान **'व इज़ वाअ़द्ना मूसा अरबई न लैलतन'** (पारा 1, रुकूअ़ 6) में जिस वादे का ज़िक्र है, यह कब लिया गया?

जवाब:– 1. आयत में चालीस रातों के जिस वादे का ज़िक्र है, वह ज़िलहिज्जा और मुहर्रम की दस रातों में लिया गया।

2. दूसरा[1] क़ौल यह है कि ज़ीक़ादा और ज़िलहिज्जा की दस रातों की मीआ़द (तादाद) मुराद है।

(मुफ़हमातुल अक़रान फ़ी मुबहमातिल क़ुरआन अ़ला हाशियतिल जुमल, हिस्सा 4, पेज 500)

सवाल:– अल्लाह के फ़रमान **'उदख़ुलू हाज़िहिल क़रयः'** (पारा 1, रुकूअ़ 6) में उस क़रया का नाम क्या था?

जवाब:– आयत में जिस क़रया यानी गाँव का ज़िक्र है, वह बैतुल-मक़्दिस है। दूसरा क़ौल यह है कि अरीहा है। (ऊपर का हवाला, पेज 501)

सवाल:– इर्शाद-ए-ख़ुदावन्दी **'सुम्मत्तख़ज़्तुमुल इज-ल'** (पारा 1, रुकूअ़ 6) में उस बछड़े का नाम क्या था?

जवाब:– आयत में जिस बछड़े का ज़िक्र है, यह वही बछड़ा है जो सामरी ने ज़ेवरों से तैयार किया था और बनी-इस्राईल ने उसकी इबादत की थी। उसका नाम 'भमूत' या 'भभूत' था। (मुफ़हमातुल अक़राम फ़ी मुबहमातिल क़ुरआन अ़ला हाशियति तफ़्सीरिल जुमल, हिस्सा 4, पेज 500)

सवाल:– अल्लाह के फ़रमान **'व इज़ क़तल-तुम नफ़्सन'** (पारा 1, रुकू 9) में क़त्ल करने वाले किस क़ौम के थे, कौन थे और मक़्तूल का नाम क्या था?

---

1. इख़्तिलाफ़ की वजह यह है कि कुछ उलमा इस वादे को तकलीम (बातचीत करने) का वादा शुमार करते हैं, इसलिए वे कहते हैं कि माह-ए-ज़िलहिज्जा के तीस-दिन-रात और मुहर्रम के दस दिन-रात मुराद हैं और कुछ उलमा इस वादे के एता-ए-तौरात (तौरात शरीफ़ दिए जाने) का वादा शुमार करते हैं। वे कहते हैं कि माह-ए-ज़ीक़ादा की तीस रातें और माह-ए-ज़िलहिज्जा की दस रातें मुराद हैं।

(ज़ादुल मसीर, हिस्सा 1, पेज 69)

जवाबः– मारने वाले मक़्तूल के चचा या भाई के लड़के थे, बनी इस्राईल में से थे और मक़्तूल का नाम आमील था। (अल-इतक़ान, 2, पेज 185)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इन्नल्ला-ह यामुरुकुम अन् तज़्बहू ब-क़-रः'** (पारा 1, रुकू 8) में उस गाय का नाम क्या था? बनी इस्राईल ने उसको कितनी क़ीमत में ख़रीदा था?

जवाबः– उस गाय का नाम **'मुज़हहबा'** था जो एक भले आदमी के क़ब्ज़े में थी। बनी इस्राईल ने उसे इतनी क़ीमत पर ख़रीदा कि उसकी खाल को माल से भर देंगे। (तफ़्सीर-ए-क़ादरी, हिस्सा 1, पेज 17)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'रब्बना वब्-अस फ़ीहिम रसूला'** (पारा 1, रुकूअ् 15) (ऐ हमारे रब! भेज तू उनमें एक रसूल) में कौन सा रसूल मुराद है?

जवाबः– आयत-ए-शरीफ़ा में जिस रसूल को भेजने की दुआ है, वह आख़री नबी मुहम्मद-ए-अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

(जलालैन शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 19)

सवालः– अल्लाह का फ़रमान है **'व वस्सा बिहा इब्राहीमु बिबनीह'** (पारा 1, रुकूअ् 16) में हज़रत इब्राहीम के उन बेटों के नाम क्या हैं?

जवाबः– आयत में हज़रत इब्राहीम के जिन बेटों का ज़िक्र है, उनसे मुराद ये हैं: 1. इस्माईल अलैहिस्सलाम, 2. इस्हाक़ अलैहिस्सलाम, 3. मान, 4. ज़मरान, 5. सुर्ख़, 6. नफ़्श, 7. नफ़्शान, 8. उमैम, 9. कैसान, 10. सूरह, 11. लूतान, 12. नाफ़िश। (अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 185)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'वल्-अस्बाति'** (पारा 1, रुकूअ् 16) में किसकी औलाद मुराद है? और उनके नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः– इस मुबारक आयत में हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम की औलाद का ज़िक्र है, जो 12 थे:

1. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, 2. रूबील, 3. शमऊन, 4. लावी, 5. यहूदा, 6. दान, 7. नफ़्ताली, 8. आशिर, 9. जाद, 10. यश्जुर, 11. ज़बूलून, 12. बिन यामीन।

(ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 5)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व मिनन्नासि मंय्युजिबु-क क़ौलुहू'** (पारा 2, रुकूअ् 9) में कौन आदमी मुराद है?

जवाबः– इस आयत में अख़्नस बिन शुरैक़ मुराद है।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 185)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व मिनन्नासि मंय्यश्री नफ़्सहू'** (पारा 2, रूकूअ् 9) में कौन शख़्स मुराद है?

जवाबः– इस आयत में हज़रत सुहैब रूमी मुराद हैं?

(रूहुल मआनी, हिस्सा 2, पेज 96)

सवालः– अल्लाह का फ़रमान **'इज़् क़ालू लिनबिय्यिल्लहुमुब्अ़स'** (पारा 2, रूकूअ् 16) में कौन-से नबी मुराद हैं?

जवाबः– इस आयत में हज़रत शमवील बिन हन्ना बिन आ़क़िर मुराद हैं। हज़रत सुद्दी फ़रमाते हैं कि शमूऊ़न मुराद हैं। हज़रत क़तादा फ़रमाते हैं कि हज़रत यूशअ़् बिन नून मुराद हैं, मगर पहला क़ौल सही है।

(रूहुल-मआ़नी, हिस्सा 2, पेज 164)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इन्नल्ला-ह मुब्तलीकुम बिनहर'** (पारा 2, रूकू 17) में यह नहर किस शहर में थी?

जवाबः– हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि–

1. यह नहर-ए-फ़िलस्तीन थी।

2. हज़रत क़तादा और रूबैअ़् कहते हैं, यह नहर जॉर्डन और फ़िलस्तीन के दर्मियान थी।

(रूहुल मआ़नी, हिस्सा 2, पेज 169)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व मिन्हुम मन कल्लमल्लाहु'** (पारा 3, रूकूअ् 1) में अल्लाह से बात करने वाले कौन थे?

जवाबः– इस आयत में अल्लाह से बात करने वाले से मुराद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम हैं।

(रूहुल मआ़नी, हिस्सा 2, पेज 3)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व र-फ़-अ़ बाअ़्ज़हुम द-र-जात'** (पारा 3, रूकू 1) में कौन मुराद है?

जवाबः– इस मुबारक आयत में जिस हस्ती के दर्जों का बुलन्द होना फ़रमाया, वह मुहम्मद-ए-अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं।

(रूहुल मआ़नी, हिस्सा 3, पेज 2)

सवालः– अल्लाह का फ़रमानः **'फ़-ख़ुज़ अर-ब-अ़-तम मिनत्तैर'** (पारा 3, रूकू 3) में ये चार परिन्दे कौन-से थे?

जवाबः— आयत में जिन चार परिन्दों को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने पकड़ा वे ये हैं। 1. मोर, 2. गिध (करगस), 3. कौवा, 4. मुर्ग़ा।

(जलालैन शरीफ़, पारा 3, पेज 41)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अल्लज़ी हाज-ज इब्राही-म फ़ी रब्बिही'** (पारा 3, रुकूअ़ 3) में मुहाज्जः (मुनाज़रा) करने वाला कौन शख़्स था?

जवाबः— ख़ुदा के इस फ़रमान में हज़रत ख़लीलुल्लाह से तौहीद-ए-ख़ुदावन्दी पर मुनाज़रा करने वाला नमरूद बिन किन्आन था।(रूहुल मआनी, हिस्सा 3, पेज 15)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'औ कल्लज़ी मर-र अ़ला क़रयतिन'** (पारा 3, रुकूअ़ 3) में कौन शख़्स मुराद है?

जवाबः— आयते मुबारका में जिस आदमी का ज़िक्र है, उसके बारे में अलग-अलग क़ौल हैं। 1. उज़ैर बिन शरख़िया मुराद हैं, 2. अरमियां बिन ख़लक़िया मुराद हैं, 3. तीसरा क़ौल यह है कि हज़रत हिज़क़ील मुराद हैं।(रूहुल मआनी, हिस्सा 3, पेज 20, इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 186, शेख़ज़ादा, पेज 573, हाशिया जलालैन शरीफ़, पेज 40)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'इम-र-अतु इमरान'** (पारा 3, रुकूअ़ 12) में उस औ़रत का क्या नाम है?

जवाबः— आयत में जिस औ़रत का ज़िक्र है, वह हज़रत इमरान की घर वाली थी, जिसका नाम हन्ना[1] बिन्ते फ़ाक़ूद था। (रूहुल मआनी, हिस्सा 3, पेज 133)

सवालः— अल्लाह का फ़रमान **'वम-र-अती आ़क़िर'** (पारा 3, रुकूअ़ 12) में उस औ़रत का मुबारक नाम क्या था?

जवाबः— इस आयत में जिस औ़रत का ज़िक्र है, उसका नाम 'अशयाअ़'[2] या 'अशयअ़ बिन्ते फ़ाक़ूद' था। (अल्-इतक़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 186)

सवालः— अल्लाह का फ़रमान **'मुनादियंय्युनादी लिल ईमान'** (पारा 4, रुकूअ़ 11) में ईमान की आवाज़ लगाने वाला कौन है?

जवाबः— इस आयत में ईमान की आवाज़ लगाने वाले नबी आख़िरूज़्ज़माँ मुहम्मद-ए-अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं। (जलालैन)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अत्ताग़ूति'** (पारा 5, रुकूअ़ 5) में कौन मुराद है?

---

1. यह हज़रत मरयम की वालिदा थीं।
2. यह हज़रत मरयम की ख़ाला और हज़रत यहया की माँ थीं।

जवाबः– हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अत्ताग़ूत से मुराद कअ़्ब बिन अशरफ़ है। (अल्-इत्क़ान, हिस्सा 2, पेज 186)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व इन्-न मिन्कुम लमल्-ल युबत्तिअन्-न'** में कौन मुराद है?

जवाबः– इससे मुराद अ़ब्दुल्लाह बिन उबई है।

(अल्-इत्क़ान, हिस्स 2, पेज 186)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व ला तक़ूलू लिमन अल्क़ा इलैकुमुस्सलाम'** (पारा 5, रुकूअ़ 10) में कौन शख़्स मुराद है? और इस क़ौल को कहने वाला कौन है?

जवाबः– 1. इस आयत में जिस शख़्स को कहा गया वह आ़मिर बिन अज़्बत अशजई था। 2. दूसरा क़ौल यह है कि वह मिरदास था और इस बात को कहने वाले कुछ मुसलमान थे। उनमें से अबू क़तादा व महलम बिन जुसामा भी थे। कुछ ने कहा कि यह बात जिसकी ज़बान से निकली, वह महलम ही था। (अल्-इत्क़ान, हिस्सा 2, पेज 186)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व ब-अ़स्ना मिन्हुमुस्नै अ़-श-र नक़ीबा'** (पारा 6, रुकूअ़ 7) में उन 12 नक़ीबों (क़ौम के सरदार) के क्या-क्या नाम थे? और कौन किस की औलाद में से था?

जवाबः– आयत शरीफ़ा में जिन 12 सरदारों का ज़िक्र है, उनके नाम ये हैं:

1. शमूऊ़न बिन ज़कूर, यह रूबील की औलाद में से था।
2. शूक़ुत बिन हूरी, यह शमूऊ़न की औलाद में से था।
3. कालिब बिन यूक़ना, यह यहूदा की औलाद में से था।
4. बऊरक बिन यूसुफ़, यह ईशाजिरा की औलाद में से था।
5. यूशअ़् बिन नून, यह अफ़राईम की औलाद में से था।
6. बलती बिन रौफ़ू, यह बिनयामीन की औलाद में से था।
7. कराबील बिन सूरी, यह ज़बालून की नस्ल में से था।
8. लुद बिन सूसास, यह मंशा बिन यूसुफ़ की औलाद में से था।
9. अमाईल बिन कस्ल, यह दान की औलाद में से था।
10. स्तूर बिन मीख़ाईल, यह अशीर की नस्ल से था।

11. यूहन्ना बिन वक़ूसी, यह नफ़्ताल की नस्ल में से था।

12. आल बिन मूख़ा, यह काज़ की नस्ल में से था।

(अल्-इत्क़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 186, अरबी एडीशन)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'क़ा-ल रजुलानि'** (पारा 6, रूकूअ् 8) में उन दोनों के नाम क्या थे?

जवाबः– इस आयत में जिन दो आदमियों का ज़िक्र है, वे यूशअ् और कालिब थे। (ऊपर का हवाला)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'न-ब-अब्नै आदम'** में इन दोनों के नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः– इस आयत में हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम के दो बेटों का ज़िक्र है, जिनका नाम क़ाबील और हाबील था। क़ाबील क़ातिल और हाबील मक़्तूल था।

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अल्लज़ी आतैनाहु आयातिना फ़न्-स-ल-ख़ मिन्हा'** में कौन मुराद है?

जवाबः– इस मुबारक आयत में जिसका ज़िक्र है, हज़रत इब्ने मसूऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं किः

1. वह बलआ़म बिन आबर था।

2. यह बाऊ़र था जो जब्बारीन के शहर का था।

3. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु वग़ैरहुम कहते हैं कि उमैया बिन अबी सुल्त था।

4. सैफ़ी बिन राहिब था। (ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 158)

5. हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहते हैं कि वह कन्आ़नीन का आ़लिम था, जिसका नाम बलूअ़म बिन बाऊ़रा था।

(तफ़्सीर कश्शाफ़, सूरः आराफ़, हिस्सा 2, पेज 103)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इन्नी जारूल्लकुम'** में कौन मुराद है?

जवाबः– इस आयत में जिस का ज़िक्र है, वह सुराक़ा बिन जोशम है।

(ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 201, पारा 10, रूकू 2)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'फ़क़ातिलू अइम्मतल कुफ़्रि'** में अल्लाह ने किसको मुराद लिया है?

जवाबः— इस आयत में जिन काफ़िरों के गिरोह का ज़िक्र है, उसके बारे में हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि इस गिरोह से मुराद ये लोग हैं:

1. अबू सुफ़ियान बिन हर्ब, 2. अबू जहल, 3. उमैया बिन ख़ल्फ़, 4. सुहैल बिन अ़म्र, 5. उत्बा बिन रबीआ़। (ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 220, पारा 10, रूकूअ़ 8)

सवालः— अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के फ़रमान **'इज़ यक़ूलु लिसाहिबिही'** में साथी से मुराद कौन है?

जवाबः— इस आयत में साहिब (साथी) से मुराद हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं, क्योंकि हिजरत के वक़्त ग़ार में यही आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथी थे। (ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 240, पारा 10, रूकूअ़ 11)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'व फ़ीकुम सम्माऊ़-न लहुम'** (पारा 10, रूकूअ़ 13) में कौन-कौन मुराद हैं?

जवाबः— आयत पाक में जिस-जिस का ज़िक्र है, वहः

1. अ़ब्दुल्लाह बिन उबई, 2. रफ़ाआ़ बिन ताबूत, 3. औस बिन क़ैज़ी थे।

(अल्-इत्क़ान, हिस्सा 2, पेज 186)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'व मिन्हुम मंय्यक़ूलुअ़् ज़ंल्ली'** में इस क़ौल का कहने वाला कौन था?

जवाबः— इसका कहने वाला जद्द बिन क़ैस था।

(तफ़्सीर ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 248, पारा 10, रूकूअ़ 13)

सवालः— अल्लाह तअ़ला के कलाम **'मिन-हुम मंय्यल्मिज़ु-क फ़िस्सदक़ाति'** में कौन मुराद है?

जवाबः— आयत-ए-मुबारका में जिस आदमी का ज़िक्र है वह ज़ुल ख़ुवैसरा था। यह बनी नुऐम का शख़्स था। (ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 250)

सवालः— अल्लाह का फ़रमान **'इनू-नअ़्फ़ु अ़न ताइफ़तिम् मिन्कुम'** में कौन आदमी मुराद है?

जवाबः— इस आयत में जिसका ज़िक्र है, वह मख़्शी बिन हुमैर था। (अल्-इत्क़ान, अ़रबी एडीशन, हिस्सा 2, पेज 186) और साहिब-ए-ख़ाज़िन ने कहा है कि वह मख़्शिन बिन हुमैर अशजई था। (ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 258, पारा 10, रूकूअ़ 15)

सवालः— ख़ुदावन्दे करीम के फ़रमान **'व मिन्हुम् मन आ़हदल्लाह'** में कौन

आदमी मुराद है?

जवाबः– आयत-ए-करीमा में जिसका ज़िक्र है, वह सालबा बिन हातिब अन्सारी था। (ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 262, पारा 10, रूकूअ़ 16)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व आख़रू-नअ्-त-र फ़ू बिज़ुनूबिहिम'** (पारा 11, रूकूअ़ 2) में अपने गुनाहों का एतिराफ़ करने वाला कौन आदमी है?

जवाबः– हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस आयत में जिसका ज़िक्र है, वे सात आदमी हैं। यानी अबू लुबाबा और उसके साथी और अबू क़तादा ने कहा है कि वे सात आदमी अन्सार के गिरोह में से थेः

1. अबू लुबाबा, 2. जद्द बिन क़ैस, 3. हराम, 4. औस, 5. करदम, 6. मरदास, 7. सातवां आदमी इत्क़ान में नहीं लिखा है। (इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 186)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व आख़रू-न मुरजौ न'** (पारा 11, रूकूअ़ 2) में कौन लोग मुराद हैं?

जवाबः– आयत-ए-मुबारका में जिनका ज़िक्र है, वे ये हैं:

1. हिलाल बिन उमैया, 2. मुरारा बिन रबीआ़, 3. कअ्ब बिन मालिक।

(तफ़्सीर ख़ाज़िन, पेज 280, पारा 11, रूकूअ़ 2)

सवालः– अल्लाह के इर्शाद **'वल्लज़ी-नत्तख़ज़ू मस्जिदन ज़िरारन'** (पारा 11, रूकूअ़ 2) में मस्जिद बनाने वाले कौन लोग हैं?

जवाबः– इब्ने इस्हाक़ का कहना है कि इस आयत में जिस मस्जिद का ज़िक्र है, उसको बनाने वाले अन्सार के 12 लोग थेः

1. हिज़ाम बिन ख़ालिद, 2. सालबा बिन हातिब, 3. हज़ाल बिन उमैया, 4. मोतब बिन क़ुशैर, 5. अबू हबीबा बिन अज़अर, 6. इबाद बिन हनीफ़, 7. जारिया बिन आ़मिर और उसके दोनों बेटे, 8. मजमा, 9. ज़ैद, 10. नबतल बिन हारिस, 11. बजाद बिन ऐमान, 12. वदीआ़ बिन साबित।

(ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 281, पारा 11)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'लिमन हारबल्ला-ह-व रसूलहू'** में कौन मुराद है?

जवाबः– आयत में जिसका ज़िक्र है वह अबू आमिर राहिब था।

(ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 281, पारा 11, रूकूअ़ 2)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अ-फ़-मन का-न अ़ला बय्यिनतिम मिर्रब्बिही'**

(पारा 12, रुकूअ् 2) में कौन मुराद है?

जवाबः— इस आयत में जिस हस्ती का ज़िक्र है, वह मुहम्मद-ए-अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं। (अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 187)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'व यत्लूहु शाहिदुम मिन्हु'** में शाहिद से कौन मुराद है?

जवाबः— इस आयत में शाहिद से मुराद कौन हैं, इसके बारे में अलग-अलग क़ौल हैं:

1. अक्सर तफ़्सीर लिखने वाले कहते हैं कि आयत में शाहिद से मुराद क़ुरआन है।

2. सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु मुराद हैं।

3. हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु मुराद हैं।

4. हज़रत हुसैन बिन फ़ुज़ैल कहत हैं कि शाहिद से मुराद क़ुरआन है।

(ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 345)

सवालः— अल्लाह तआ़ला के कलाम **'व नादा नुहु-निब-न हू'** में हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के लड़के का नाम क्या था?

जवाबः— आयत में हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के उस बेटे का नाम 1. किन्आ़न है। (तफ़्सीर ख़ाज़िन, हिस्सा 2, पेज 253) 2. उसका नाम याम था।

(तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 38)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'वम र-अ तुहू क़ाइमतुन'** में यह औ़रत किस की थी और उसका नाम क्या था?

जवाबः— यह हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की घर वाली थी, जिसका नाम बीबी सारा अ़लैहस्सलाम था। (तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 67)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'या क़ौमि हाउलाइ बनाती'** में ये लड़कियाँ किस की थीं? और उनके नाम क्या थे?

जवाबः— यह हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की लड़कियाँ थीं, जिनके नाम ये थे:

1. रीसा, 2. रग़ूसा। (इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 187)

दूसरा क़ौल यह है कि 1. ज़ीसा, 2. ज़ऊ़रा नाम थे।

(तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 76)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'यूसुफ़ु व अख़ूहु'** में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के जिस भाई का ज़िक्र है उसका नाम क्या था?

जवाबः– इस आयत में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के सगे भाई बिनयामीन मुराद हैं। (तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 130, ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 5)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'क़ा-ल क़ाइलुम मिन्हुम'** में इस कहने वाले का नाम क्या था?

जवाबः– आयत में जिस कहने वाले का ज़िक्र है, वह रोबील था। दूसरा क़ौल यह है कि यहूदा था। तीसरा क़ौल यह है कि शमऊ़न था।

(तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 132)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'फ़-अर-सलू वारि-दहुम'** (पारा 12, रुकूअ़ 12) में उस आने वाले का नाम क्या था?

जवाबः– उस आदमी का नाम मालिक बिन दअ़र था। (उसी ने हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को कुंए से निकाला था।) (तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 152)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व क़ालल्लज़िश्तराहु'** (पारा 12, रुकूअ़ 13) में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को ख़रीदने वाले का नाम क्या था?

जवाबः– इस मुबारक आयत में हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम को ख़रीदने वाले का नाम क़ित्फ़ीर या इत्फ़ीर था। (तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 159, पारा 12)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'मिम् मिस्-र लिम्-र-अतिही'** (पारा 12, रुकू 13) में उस औ़रत का क्या नाम था?

जवाबः– यह मिस्र के बादशाह की बीवी थी, जिसका नाम कुछ ने राईल और कुछ ने ज़ुलैख़ा ज़िक्र किया है। (अल्-इतक़ान, क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 159)

सवालः– अल्लाह के कलाम **'व द-ख़-ल मअ़हुस्सिज्न फ़-त-यानि'** (पारा 12, रुकूअ़ 15) में उन क़ैदी जवानों के नाम क्या थे?

जवाबः– उन जवानों के नामों में अलग-अलग क़ौल हैं:

1. मुजल्लस और बिनौ, 2. सरहम और शरहम, 3. राशान और मिरतीश, 4. बसरहम और सरहम, 5. महल्लत और बिन्नौ।

(क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 189, अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 187)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'ज़न्-न अन्नहू नाजिन'** में कौन मुराद है?

जवाबः– इस आयत में जिसका ज़िक्र है, वह शराब पिलाने वाला था, जिस का नाम बिन्नौ था। (यह हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के साथ जेल में था।)

(क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 189, पारा 12, रुकूअ़ 15)

सवालः– आयत **'उज़्कुरनी इन्-द रब्बिक'** (पारा 12, रुकू 15) में रब से मुराद कौन है?

जवाबः– आयत में रब से मुराद वक़्त का बादशाह है, जिसका नाम रय्यान बिन वलीद था। (क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 189)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इ'तूनी बि अख़िल्लकुम'** (पारा 13, रुकू 2) में यह किसका भाई था? उसका नाम क्या था?

जवाबः– इस आयत में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के सगे भाई बिन यामीन का ज़िक्र है। (तफ़्सीर क़ुर्तबी, पारा 13, रुकूअ़ 2)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'फ़-क़द स-र-क़ अख़ुल्लहू मिन-क़ब्लु'** (पारा 13, रुकूअ़ 3) यह कलाम किसका है? 'अख़ुन से मुराद कौन है?

जवाबः– यह कलाम हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों का है। 'अख़ुन' से मुराद हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हैं। (क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 239)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'क़ा-ल कबीरुहुम'** (पारा 13, रुकूअ़ 4) में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बड़े भाई का नाम क्या था?

जवाबः– इस आयत में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बड़े भाई का जो ज़िक्र आया है, उसका नाम कुछ ने शमऊ़न (यह समझ-बूझ वाला था) और कुछ ने रोबील बताया है। यह उम्र में सबसे बड़ा था। (तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 239)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'आवा इलैहि अ-ब-वैहि'** (पारा 13, रुकूअ़ 5) में किसके माँ-बाप का ज़िक्र आया है और उनके नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः– आयत में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के माँ-बाप का ज़िक्र है। वालिद का नाम हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम और वालिदा का नाम राहील था।

(तफ़्सीर ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 5)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व इन्दहू इल्मुल किताब'** (पारा 13, रुकूअ़ 12) में कौन आदमी मुराद है?

जवाबः– इस आयत में जिसका ज़िक्र है, वह अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम था। कुछ ने कहा कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम थे। (तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 9, पेज 336)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इन्नी अस्कन्तु मिन् ज़ुर्रिय्यती'** (पारा 13, रूकूअ् 18) में ज़ुर्रिय्यत से मुराद कोन हैं?

जवाबः– इस आयत में हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम मुराद हैं।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 187)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'रब्बनग़् फ़िरली वलि वालिदय्यः'** (पारा 13, रूकूअ् 18) में किसके माँ-बाप मुराद हैं और नाम क्या हैं?

जवाबः– इस आयत में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के माँ-बाप मुराद हैं। वालिद का नाम कुछ ने तारूख़, कुछ ने आज़र, कुछ ने याज़र बताया है और माँ का नाम कुछ ने सानी, कुछ ने नौफ़ा और कुछ ने ल्युसा भी बताया है।

(अल्-इतक़ान फी उ़लूमिल क़ुरआन, पेज 187)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इन्ना कफ़ैनाकल मुस्तह्ज़िईन'** (पारा 14, रूकूअ 6) में इस्तेह्ज़ा (मज़ाक़) करने वाले कौन थे?

जवाबः– हज़रत सईद बिन ज़ुबैर ने कहा है कि यह तमस्ख़ुर (मज़ाक़) करने वाले पाँच आदमी थेः

1. वलीद बिन मुग़ीरह, 2. आ़स बिन वाइल, 3. अबू ज़म्आ, 4. हारिस बिन क़ैस, 5. अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस। (तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 10, पेज 62)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'रजुलैनि अहदुहुमा अब्कमु'** (पारा 14, रूकूअ् 16) में उस गूंगे आदमी का नाम क्या था?

जवाबः– इस आयत में जिस गूंगे का ज़िक्र है, वह उसैद बिन अबी असीस[1] था। (अल्-इतक़ान, पेज 182)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'यामुरू बिल-अ़द्लि'** (पारा 14, रूकूअ् 16) में कौन मुराद है?

जवाबः– आयत में 'अ़द्ल' (इंसाफ़) का हुक्म करने वाले शख़्स हज़रत उ़स्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। (क़ुर्तबी, हिस्सा 1, पेज 149)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'कल्लती न-क़-ज़त् ग़ज़्लहा'** (पारा 14, रूकूअ् 19) में उस औ़रत का नाम क्या था?

1. यह हज़रत उ़स्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ग़ुलाम था, इसको इस्लाम से सख़्त नफ़रत थी, ख़ुद भी काफ़िर था। दूसरों को भी इस्लाम में दाख़िल होने से रोकता था।

(तफ़्सीर मज़हरी, हिस्सा 6, पेज 418, पारा 14, रूकूअ् 16)

जवाबः– आयत में जिस औरत का ज़िक्र है उसका नाम रीता बिन्ते सईद था। (अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 187) दूसरा क़ौल यह है कि रीता बिन्ते अम्र था।

(क़ुर्तबी, हिस्सा 10, पेज 171)

सवालः– अल्लाह के कलाम **'इन्नमा युअल्लिमुहू बशरुन'** (पारा 14, रूकूअ् 20) से मुश्रिकों ने किस को मुराद लिया था?

जवाबः– 1. मुश्रिकों ने बशर से मुराद अ़ब्द बिन हज़्रमी को लिया था जिसका असल नाम मुक़ीस था।

2. दूसरा क़ौल यह है कि अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम हज़्रमी के दो गुलामों यसार और जबर को मुराद लिया था।

3. मुश्रिकों ने इस कहने से हज़रत सलमान फ़ारसी को मुराद लिया था।

4. बशर से मुराद मुश्रिकों ने शहर मक्का के एक आहनगर (लोहार) को लिया था जिसका नाम बलआम था। मुख़ालिफ़ों का गुमान था कि यह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तालीम देता है।[1]

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 187, क़ुर्तबी, हिस्सा 10, पेज 178)

सवालः– अल्लाह के कलाम **'मन् अग़्फ़ल्ना क़ल्बहू'** (पारा 15, रूकूअ् 16) में किसको मुराद लिया गया?

जवाबः– आयत में जिसका ज़िक्र है वह उऐना बिन हसन था। दूसरा क़ौल यह है कि यह आयत उमैया बिन ख़ल्फ़ जमई के बारे में उतरी।

(क़ुर्तबी, हिस्सा 10, पेज 392, पारा 15)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'वज़्रिब लहुम म-स-लर्रजुलैनि'** (पारा 15, रूकूअ् 17) में उन दोनों आदमियों के नाम क्या थे?

जवाबः– 1. आयत में जिन दो आदमियों का ज़िक्र है, वह तमलीख़ा और फ़तरोस थे।[2]

---

1. पांचवां क़ौल यह है कि बनी मुग़ीरह का एक गुलाम था, जिसका नाम यईश था, वह किताबें पढ़ता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उसको क़ुरआन सिखाते थे। क़ुरैश कहने लगे, इन को यईश सिखा देता है।

2. यह हुवैतिब बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा का एक गुलाम था, जिसकी ज़बान अजमी थी। उसका नाम आइश था, मुश्रिकीन कहने लगे, यह आइश से सीखते हैं। आख़िर में आइश मुसलमान हो गया था।

(तफ़सीर मज़हरी, हिस्सा 6, पेज 438, पारा 14, रूकूअ् 20)

2. दूसरा क़ौल यह है कि फ़रतूश जो काफ़िर था। (क़र्तबी, हिस्सा 10, पेज 392)

3. तीसरा क़ौल यह है कि उनमें एक मुसलमान था, जिसका नाम अबू सलमा अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल असद था और दूसरा काफ़िर, जिसका नाम अस्वद बिन अ़ब्दुल असद था। (क़र्तबी, हिस्सा 10, पेज 399)

सवालः– अल्लाह का फ़रमान **'व इज़ क़ा-ल मूसा लि फ़ताहु'** (पारा 15, रूकू 21) में जिस नौजवान का ज़िक्र आया है, उसका नाम क्या था?

जवाबः– 1. आयत में जिस नौजवान का ज़िक्र है, वह हज़रत यूशअ़ बिन नून थे।

2. यसरबी था, जो यूशअ़ का भाई था। (रूहुल मआ़नी, पेज 319, पारा 15)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'हत्ता अब्-लु-ग़ मजूमअ़ल बहरैन'** (पारा 15, रूकूअ़ 21) में ज़िक्र किए गए दो दरिया कहाँ हैं?

जवाबः– ये दोनों दरिया फ़ारस और रूम में हैं।

(तन्वीरूल मिक़्यास, तफ़सीर इब्ने अ़ब्बास, पेज 187)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'फ़-व-ज-दा अ़ब्दन'** (पारा 15, रूकूअ़ 21) में 'अ़ब्द' (बन्दा) से मुराद कौन है?

जवाबः– अ़ब्द से मुराद हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम हैं, जिनका नाम बलिया था। (अल्-इतक़ान, पेज 187)

सवालः– आयत **'व का-न वराअहुम मलिक'** (पारा 16, रूकू 1) में उस बादशाह का नाम क्या था?

जवाबः– आयत में जिस बादशाह का ज़िक्र है, उसके बारे में अलग-अलग क़ौल हैं:

1. उसका नाम हुदद बिन बदद था।

2. जलन्दी बिन कुरकुर था, यह ग़स्सान का बादशाह था।

3. मफ़वाद बिन जलन्दी बिन सईद अज़दी था। (रूहुल मआ़नी, पेज 10,)

सवालः– अल्लाह का कलाम **'व अम्मल गुलामु फ़-का-न अ-ब-वाहु'** में माँ-बाप के नाम क्या-क्या थे?

जवाबः– बाप का नाम ज़ीर और माँ का नाम सह्वा था।

(रूहुल मआ़नी, पेज 10, पारा 16, रूकूअ़ 1)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'लि ग़ुलामैनि यतीमैनि'** (पारा 16, रूकू 1) में उन दो यतीम ग़ुलामों के नाम क्या क्या थे?

जवाबः– इस आयत में जिन दो ग़ुलामों का ज़िक्र है उनके नाम 'असरम' और 'सरीम' थे। (ऊपर का हवाला)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व का-न अबू हुमा सालिहा'** में ये किस के माँ-बाप थे, उनके नाम क्या-क्या थे?

जवाबः– ये 'असरम' और 'सरीम' के माँ-बाप थे, जिनका ज़िक्र 'लि ग़ुलामैनि यतीमैनि' में आया है और उनके वालिद का नाम काशेह और वालिदा का नाम धन्ना था। (रूहुल मआनी, पेज 13, पारा 16, रूकूअ 1)

सवालः– अल्लाह के कलाम **'फ़नादाहा मिन तह्तिहा'** (पारा 16, रूकू 5) में निदा यानी आवाज़ देने वाले कौन थे?

जवाबः– 1. कुछ ने कहा है कि पुकारने वाले हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम थे।

2. पुकारने वाले हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम थे।

(रूहुल मआनी, हिस्सा 16, पेज 82)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व यक़ूलुल् इन्सानु'** (पारा 16, रूकू 8) में इन्सान से मुराद कौन है?

जवाबः– 1. आयत में जिसका ज़िक्र है वह उबई बिन ख़ल्फ़ था।

2. उमैया बिन ख़ल्फ़ था। 3. अबू जहल था। 4. वलीद बिन मुग़ीरह था। 5. आ़स बिन वाइल था। (तफ़्सीर रूहुल मआनी, पेज 116)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अ-फ़-र अयु-तल्लज़ी क-फ़र'** (पारा 16, रूकू 8) में कौन मुराद है?

जवाबः– आ़स बिन वाइल मुराद है। कुछ ने कहा, यह आयत वलीद बिन मुग़ीरह के बारे में उतरी। (रूहुल मआनी, हिस्सा 16, पेज 129)

सवालः– अल्लाह के कलाम **'व क़तल-त नफ़्सन'** (पारा 16, रूकूअ 11) में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने किसको क़त्ल किया?

जवाबः– यह एक क़िब्ती शख़्स था, जिसका नाम क़ानून था।

(रूहुल मआनी, हिस्सा 16, पेज 192)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अल्-क़स्सामिरिय्यु'** में उस सामिरी का नाम

क्या था?

जवाबः– उसका नाम मूसा बिन ज़फ़र था।

(हाशिया जलालैन, पेज 265, पारा 16, रुकूअ् 15)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'मिन अ-स-रिर्रसूलि'** में किस का ज़िक्र है?

जवाबः– इस आयत में रसूल से मुराद हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम हैं।

(जलालैन, पेज 266, पारा 16, रुकूअ् 14)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व मिनन्नासि मंय्युजादिलु'** में किसका ज़िक्र है?

जवाबः– इस आयत में जिसका ज़िक्र है, वह नज़्र बिन हारिस था।

(ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 299, पारा 17, रुकूअ् 8)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'हाज़ानि ख़स्मानि'** में उन झगड़ने वालों के नाम क्या थे?

जवाबः– शैख़ैन (बुख़ारी व मुस्लिम) ने हज़रत अबूज़र रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत किया है कि उन्होंने कहा कि यह आयत हज़रत हम्ज़ा अ़ब्दुल्लाह बिन हारिस, अ़ली बिन अबी तालिब, उ़त्बा बिन रबीआ़, शैबा बिन रबीआ़ और वलीद बिन उ़त्बा के बारे में नाज़िल हुई। (ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 303, पारा 17, रुकूअ् 9)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व मंय्युरिद् फ़ीहि बिइल्हादिन'** (पारा 17, रुकूअ् 10) यह आयत किस के बारे में उतरी?

जवाबः– हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने कहा कि यह आयत अ़ब्दुल्लाह बिन उनैस के बारे में नाज़िल हुई। (अल्-इत्क़ान, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल इफ़्कि'** (पारा 18, रुकू 8) में तोहमत लगाने वाले कौन थे?

जवाबः– इस आयत में जिनका ज़िक्र है, ये वे हैं जिन्होंने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा पर तोहमत लगाई थी, इनमें से हस्सान बिन साबित, मिस्तह बिन असासा, हम्ना बिन्ते जह्श और अ़ब्दुल्लाह बिन उबई मुनाफ़िक़ हैं।

(अल्-इत्क़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व यौ म यअ़ज़्ज़ुज़्ज़ालिमु'** में ज़ालिम से कौन शख़्स मुराद है?

जवाबः– इस आयत में ज़ालिम से उ़क़्बा बिन अबी मुईत मुराद है।

(ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 371, पारा 19, रुकूअ् 1)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'लम अत्तख़िज़ फ़ुलानन ख़लीला'** में फ़ुलाँ से कौन मुराद है?

जवाबः– इस आयत में जिसको मुराद लिया गया है, वह उमैया बिन ख़ल्फ़ है, दूसरा क़ौल यह है कि उबई बिन ख़ल्फ़ मुराद है?

(ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 371, पारा 19, रूकूअ़ 1)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व कानल काफ़िरू'** (पारा 19, रूकूअ़ 3) में इस काफ़िर से मुराद कौन है?

जवाबः– आयत में जो लफ़्ज़ काफ़िर आया है, उससे मुराद अबू जहल है।[1]

(शाबी, ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 377)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इम र-अतन तमलिकुहुम'** (पारा 19, रूकूअ़ 17) में जिस औरत का ज़िक्र है, उसका नाम क्या था?

जवाबः– आयत में जिस औरत का ज़िक्र है, उसका नाम बिल्क़ीस[2] बिन्ते शराहील था। (ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 407)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'फ़-लम्मा जा-अ सुलैमा-न'** (पारा 19, रूकूअ़ 18) में हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के पास आने वाला कौन था?

जवाबः– हज़रत सुलैमान की ख़िद्मत में आने वाले का नाम मुन्ज़िर था और यह मलका-ए-सबा बिल्क़ीस बिन्ते शराहील का क़ासिद था।

(अल्-इतक़ान, पेज 188, तफ़्सीर मज़्हरी, हिस्सा 9, पेज 255)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'क़ा-ल इफ़्रीतुम मिनल जिन्न'** (पारा 19, रूकूअ़ 18) में उस इफ़रीत (जिन्न) का नाम क्या था?

जवाबः– इस आयत में जिस जिन्न का ज़िक्र आया है, उसका नाम 1. गोज़न था, 2. ज़कवान था, 3. सख़्र था। (इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अल्लज़ी इन्दहू इल्मुम्मिनल किताब'** (पारा 19, रूकूअ़ 18) में किताब का इल्म किसके पास था?

---

1. सही यह है कि यह आयत हर काफ़िर से मुतअ़ल्लिक़ है।

2. बिल्क़ीस के वालिद की चालीस पुश्तों से बादशाहत विरासत में चली आ रही थी। चालीसवाँ बादशाह उसका बाप था और बाप की वफ़ात के बाद लोगों ने बिल्क़ीस में शाही सलाहियत देखीं तो उसके बाप की जगह उसको गद्दी पर बिठा दिया। उसका बाप यमन देश का बादशाह था।

(ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 407)

जवाबः– आयत की मुराद के बारे में अलग-अलग क़ौल हैं:

1. आसिफ़ा बिन बरख़िया था जो हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का मुन्शी था, 2. ज़ुन्नूर नामी एक आदमी था, 3. उसका नाम उस्तूम था, 4. तमलीख़ाँ नाम था, 5. बलग़ था, 6. उसका नाम ज़ब्बा अबुल क़बीला था, 7. मुराद हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम हैं, 8. हज़रत ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम थे।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'तिस्अ़तु रह्तिन'** (पारा 19, रूकू 19) में यह कौन सी जमाअ़त थी?

जवाबः– आयत में जिन लोगों का ज़िक्र है, वे हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की ऊंटनी को क़त्ल करने वाले थे, जिनके नाम ये हैं:

1. रामा, 2. रईम, 3. हरमा, 4. हरीम, 5. दाब, 6. रबाब, 7. मिस्तह, 8. सवाब, 9. क़िदार बिन सालिफ़। (अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'फ़ल-त-क़-तहू आलु फ़िरऔ़न'** (पारा 20, रूकूअ़ 4) में किसका ज़िक्र है?

जवाबः– हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा ने तीन महीने आपको दूध पिलाकर दुश्मनों के ख़ौफ़ से आपको एक छोटे से सन्दूक़ में बन्द करके दरिया में बहा दिया था। जब यह सन्दूक़ फ़िरऔ़न के महल के पास को तैरता हुआ आया, तो फ़िरऔ़न ने उसको निकालने का हुक्म दिया। आयत में उस सन्दूक़ को निकालने वाले का ज़िक्र है, जिसका नाम तायूस था।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व क़ालतिम र-अतु फ़िरऔ़न'** (पारा 20, रूकू 4) में फ़िरऔ़न की बीवी का क्या नाम था?

जवाबः– फ़िरऔ़न की बीवी का नाम हज़रत आसिया था। (यह हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम पर ईमान रखती थीं) (ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 425)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'उम्मि मूसा'** (पारा 20, रूकू 4) में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा का नाम क्या था?

जवाबः– हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की वालिदा का नामः

1. यूहानज़ बिन्ते यस्हर बिन लावी था,

2. यूख़ा था, 3. अबाज़ख़त था। (अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'वक़ालत लिउख़्तिही'** (पारा 20, रुकूअ् 4) में यह किस की बहन थी, नाम क्या था?

जवाबः– आयत में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की उस बहन का ज़िक्र है जिसने फ़िरऔ़न की दूध पिलाने वाली की तरफ़ रहबरी की थी, जिसका नाम 1. मरयम था, 2. कुलसूम था। (ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 426)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'हाज़ा मिन शीअ़तिही'** (पारा 20, रुकूअ् 5) से कौन मुराद है?

जवाबः– अल्लाह के इस फ़रमान में जिसका ज़िक्र है, वह सामिरी है, (जिसका नाम मूसा बिन ज़फ़र था।) (तफ़्सीर ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 427)

सवालः– अल्लाह के कलाम **'व जा-अ रजुलुम मिन अक़्सल मदीनति यस्आ़'** (पारा 20, रुकूअ 5) में इस दौड़ कर आने वाले का नाम क्या था?

जवाबः– यह आदमी आले फ़िरऔ़न में से एक मोमिन था जिसका नाम 1. सम्आ़न, 2. शमूऊ़न, 3. जब्र, 4. हबीब, 5. हिज़क़ील ब्यान किया गया है।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188, हाशिया जलालैन, पेज 328)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इम् र-अतैनि तज़ूदानि'** (पारा 20, रुकूअ् 6) में ये दोनों औरतें किसकी थीं, उनके नाम क्या थे?

जवाबः– ये दोनों बच्चियाँ हज़रत शुऐब अ़लैहिस्सलाम की थीं और इनमें से एक का नाम लय्या और दूसरी का नाम सफ़ूरिया था।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व इज़ क़ा-ल लुक़मा-नु लिब्निही'** (पारा 21, रुकूअ् 11) में हज़रत लुक़मान अ़लैहिस्सलाम के बेटे का नाम क्या था?

जवाबः– आयत में हज़रत लुक़मान अ़लैहिस्सलाम के जिस बेटे का ज़िक्र किया गया है, उसका नाम 1. बारान, 2. वरान ब्यान किया गया है। (अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188) और साहिब-ए-ख़ाज़िन ने पेज 470 पर नअ़म और मुश्कम ब्यान किया है। (पारा 21)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'मलकुल मौति'** (पारा 21, रुकूअ् 14) में रूह निकालने वाले फ़रिश्ते का नाम क्या है?

जवाबः— मलकुल मौत फ़रिश्ते का नाम हज़रत इज़्राईल अ़लैहिस्सलाम है।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'व मस्ताज़िनु फ़रीक़ुम मिन्हुमुन्नबिय्य'** (पारा 21, रुकू 18) में कौन आदमी मुराद है?

जवाबः— हज़रत इमाम सुद्दी जो एक बहुत बड़े तफ़्सीर लिखने वाले हैं, वह फ़रमाते हैं कि इस आयत में जिस आदमी का ज़िक्र है, वह बनी हारिसा में से था, जिसका नाम अबू अ़राना बिन औस बिन क़ैज़ी था।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अह्लल बैत'** (पारा 22, रुकूअ़ 1) में अह्ले बैत में कौन-कौन दाख़िल हैं?

जवाबः— इस आयत में अह्ले बैत से मुराद हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु, हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा, हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अ़न्हु, हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। (ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 499)

सवालः— अल्लाह के कलाम **'अन्अ़मल्लाहु अ़लैहि'** (पारा 22, रुकूअ़ 2) में कौन आदमी मुराद है जिस पर अल्लाह ने इनआ़म किया?

जवाबः— आयते करीमा में जिनका ज़िक्र है, वह हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अ़न्हु थे। (ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 501, पारा 22)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अम्सिक अ़लै-क ज़ौ-ज-क'** (पारा 22, रुकूअ़ 2) में जिस बीवी का ज़िक्र है, वह कौन थी?

जवाबः— इस आयत में हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अ़न्हा बिन्ते जह्श का ज़िक्र है। (ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 501)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'व ह-म-लहल इन्सानु'** (पारा 22, रुकूअ़ 6) में अल्लाह के हुक्मों के उठाने वाले कौन थे?

जवाबः— आयत में जिस उठाने वाले का ज़िक्र है, वह हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम थे। (ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 514)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'इज़ अर्सल्ना इलैहिमुस्नैनि'** (पारा 22, रुकू 19) में जिनका ज़िक्र है, कौन थे?

जवाबः— आयते करीमा में जिन दो आदमियों का ज़िक्र है, वे हज़रत शमूऊन और यूहन्ना थे और इनके बाद **'फ़-अ़ज़्ज़ज़्ना बिसालिसिन'** (पारा 22, रुकूअ़ 19)

में जो तीसरे का ज़िक्र है, उसका नाम यूनुस था।

दूसरा क़ौल यह है कि ये तीनों सादिक़ व मस्दूक़ व शलूम थे।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व जा-अ रजुलुम मिन अक़्सल मदीन-ति'** (पारा 22, रुकूअ़ 19) में आने वाले का नाम क्या था?

जवाबः– आयत में जिस आने वाले का ज़िक्र है, वह हबीब नज्जार था।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अ-व-लम यरल इन्सानु'** में कौन शख़्स मुराद है?

जवाबः– 1. आयते करीमा में जिसका ज़िक्र है, वह आस बिन वाइल था,

2. उबई बिन ख़ल्फ़ था।

3. उमैया बिन ख़ल्फ़ था। (अल्- इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'फ़-बश्शरनाहु बिग़ुलामिन'** (पारा 23, रुकूअ़ 7) में जिस ग़ुलाम की बशारत दी गई, वह कौन है?

जवाबः– हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बेटे हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम या हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम हैं, दोनों क़ौल मश्हूर हैं।

(अल्- इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के कलाम **'व हल अता-क न-ब उल ख़स्मि'** (पारा 23, रुकूअ़ 11) में ये झगड़ा करने वाले कौन थे?

जवाबः– ये दोनों आपस में झगड़ा करने वाले फ़रिश्ते थे। किसी ने कहा जिब्रील अ़लैहिस्सलाम थे, किसी ने कहा, मीकाईल अ़लैहिस्सलाम थे।

(अल्- इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अ़ला कुर्सिय्यिही ज-स-दन'** (पारा 23, रुकू 12) में इस जसद से मुराद क्या है?

जवाबः– वह शैतान था जिसको उसैद कहा जाता है।

2. उसका नाम सख़्र था।

3. उसका नाम ज़ुक़ैक़ था। (अल्- इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अन्नी मस्सनियश-शैतानु'** (पारा 23, रुकूअ़ 13)

में शैतान ने किस को छुआ और उस शैतान का नाम क्या था?

जवाबः– जिस शैतान ने हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम को छुआ, उसका नाम मसूअत था। (अल्- इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 188)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'वल्लज़ी जा-अ बिस्सिद्क़ि'** में कौन मुराद है?

जवाबः– 1. आयत में जिस हस्ती का ज़िक्र है, वह नबी आख़िरूज़्ज़माँ मुहम्मद-ए-अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

2. दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मुराद हैं।

(अल्- इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 168)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व सद्द-क़ बिही'** (पारा 24, रूकूअ् 1) में किसको मुराद लिया गया है?

जवाबः– इस आयत में हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु मुराद हैं, 2. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुराद हैं। (ऊपर का हवाला)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अल्लज़ी-न अज़ल्लाना'** (पारा 24, रूकूअ् 18) में कौन मुराद हैं?

जवाबः– आयत में गुमराह करने वाले इब्लीस लईन और क़ाबील दोनों मुराद हैं। (सावी, हिस्सा 4, पेज 24)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'अ़ला रजुलिम मिनल क़रयतैनि अज़ीम'** (पारा 25, रूकू 9) में कौन मुराद है?

जवाबः– आयत में जिसका ज़िक्र है, वह शहर मक्का का रहने वाला वलीद बिन मुग़ीरह या मसूऊद बिन अ़म्र सक़फ़ी था। (सावी, हिस्सा 4, पेज 50-51)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व लम्मा ज़ुरिबब्नु मर्य-म म-स-ला'** (पारा 25, रूकूअ् 12) में मसल ब्यान करने वाला कौन था?

जवाबः– इस मसल का ब्यान करने वाला अ़ब्दुल्लाह बिन ज़बअ़री था।

(सावी, पेज 55)

सवालः– अल्लाह के कलाम **'तआमुल असीम'** (पारा 25, रूकूअ् 16) में कौन मुराद है?

जवाबः– इब्ने ज़ुबैर ने कहा कि वह अबू जहल है। (सावी, पेज 65)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व शहि-द शाहिदुन'** (पारा 26, रूकूअ् 1) में कौन

मुराद है?

जवाबः– आयत में शाहिद से मुराद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम हैं।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 76)

सवालः– अल्लाह के इर्शाद **'उलुल अ़ज़्मि मिनर्रुसुलि'** (पारा 26, रुकूअ़ 4) में कौन-से रसूल मुराद हैं?

जवाबः– सबसे सही क़ौल इस आयत के मुताल्लिक़ यह है कि उलुल अ़ज़्म रसूल पाँच हैं:

1. हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम, 2. हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, 3. हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, 4. हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम, 5. हज़रत मुहम्मद-ए-अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 84)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'युनादिल मुनादि'** (पारा 26, रुकूअ़ 17) में निदा (आवाज़) देने वाला कौन है? यह किस जगह खड़ा होकर निदा देगा?

जवाबः– मुनादी से मुराद हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम हैं जो बैतुल-मक़्दिस की चट्टान पर खड़े होकर निदा देंगे।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 122)

सवालः– इर्शाद-ए-ख़ुदावन्दी **'हल अता-क हदीसु ज़ैफ़ि इब्-राहीमल मुक्रमीन०'**

(पारा 26, रुकूअ़ 19)

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرَاهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ

में 'ज़ैफ़' से मुराद कौन-कौन से फ़रिश्तें हैं?

जवाबः– हज़रत इम्रान बिन हुसैन फ़रमाते हैं, इस आयत में जिन फ़रिश्तों का ज़िक्र है, वे चार हैं:

1. हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम, 2. हज़रत मीकाईल अ़लैहिस्सलाम

3. हज़रत रिफ़ाईल अ़लैहिस्सलाम, 4. हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम।

(अल्-इतक़ान फी उ़लूमिल क़ुरआन, पेज 189)

सवालः– अल्लाह तआ़ला के फ़रमान **'व बश्शरूहु बिग़ुलामिन'** (पारा 26, रुकूअ़ 19) में किसको किसकी बशारत है?

जवाबः– आयत में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को बेटे की बशारत है। अ़ल्लामा किरमानी ने कहा कि तमाम तफ़्सीर लिखने वालों का इस बात पर इज्माअ़ इत्तिफ़ाक़ है कि वह फ़रज़न्दे हक़ीक़ी हज़रत इस्हाक़ अ़लैहि० थे, मगर

हज़रत मुजाहिद इसमें इख़्तिलाफ़ करके फ़रमाते हैं कि आयत में जिस फ़रज़न्द की बशारत है वह हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम थे। (इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 189)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अल्ल-महू शदीदुल क़ुवा'** (पारा 27, रूकू 5) में ज़बरदस्त क़ुव्वत वाले से कौन मुराद है?

जवाबः— इस आयत में **'शदीदुल क़ुवा'** से मुराद हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम हैं। (सावी, पेज 136)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अ-फ़ रअयूतल्लज़ी त-वल्ला'** (पारा 27, रूकू 26) में कौन शख़्स मुराद है?

जवाबः— कुछ कहते हैं कि आस बिन वाइल और कुछ के क़ौल के मुताबिक़ वलीद बिन मुग़ीरह मुराद है। (अल्-इतक़ान, पेज 189)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'यौ-म यद्उद्दाइ'** में पुकारने वाले कौन हैं?

जवाबः— यह हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम हैं। (अल्-इतक़ान, पेज 189)

सवालः— अल्लाह के इर्शाद **'क़द समिअल्लाहु क़ौ-लल्लती तुजादि लु-क फ़ी ज़ौजिहा'** (पारा 28, रूकू 1) में उन शौहर और बीवी के नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः— अल्लाह के इर्शाद में जिन मर्द और बीवी का ज़िक्र है, यह शौहर तो औस बिन सामित थे और औरत का नाम ख़ौला बिन्ते सालबा था। (सावी, हिस्सा 4, पेज 179)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'लि म तुहर्रिमु मा अ-हल्लल्लाहु ल-क'** (पारा 28, रूकू 19) में किस बांदी को आप सल्ल० ने अपने ऊपर हराम किया था?

जवाबः— वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बांदी हज़रत मारिया क़िब्तिया रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। (सावी, हिस्सा 4, पेज 219)

सवालः— अल्लाह के कलाम **'व इज़् असर्रन्-नबिय्यु इला बअ्ज़ि अज़्वाजिही हदीसन०'** (पारा 28, रूकू 19) में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कौन सी बीवी मुराद हैं?

जवाबः— हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हा मुराद हैं। (सावी, हिस्सा 4, पेज 220)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'फ़लम्मा नब्-ब अत् बिही'** (पारा 28, रूकू 19) में जिस राज़ का ज़िक्र है इसकी ख़बर किसने किसको दी?

जवाबः— आयते करीमा में जिस राज़ का ज़िक्र है, उसकी ख़बर हज़रत

हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा को दी थी।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 220)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इन ततूबा इलल्लाहि'** और **'व इन तज़ाहरा'** में किसको ख़िताब था?

जवाबः– इस ख़िताब में आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की दो बीवियाँ हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा मुराद हैं।

(अल्-इतक़ान, पेज 189)

सवालः– अल्लाह के कलाम **'व सालिहुल मोमिनीन'** (पारा 28, रुकू 19) में कौन मुराद है?

जवाबः– इस आयत में हज़रात शैख़ैन (हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) मुराद हैं।

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'इम् र अ त नूहिंव्-वम् र-अ त लूत'** (पारा 28, रुकू 20) में उन दोनों नबियों की घर वलियों के क्या-क्या नाम हैं?

जवाबः– हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की अह्लिया का नाम वालिआ था।

(अल्-इतक़ान, पेज 189)

दूसरा क़ौल यह है कि वाहिला था, (सावी, हिस्सा 4, पेज 223) और हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम की अह्लिया का नाम वालिहा और कुछ ने वाइला ब्यान किया है।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 223)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'व ला तुतिअ् कुल-ल हल्लाफ़िम महीन'** (पारा 29, रुकू 3) किसके हक़ में उतरी?

जवाबः– इसमें तीन क़ौल हैं:

1. अस्वद बिन अ़ब्दे यग़ूस के हक़ में नाज़िल हुई।
2. अख़्नस बिन शुरैक़ के हक़ में।
3. जम्हूर मुफ़स्सिरीन कहते हैं, यह आयत वलीद बिन मुग़ीरह के बारे में नाज़िल हुई।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 232)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'स-अ-ल साइलुन'** (पारा 29, रुकूअ् 7) में सवाल करने वाला कौन आदमी था?

जवाबः– यह सवाल करने वाला नज़्र बिन हारिस था।

(सावी, पेज 245, तन्वीरूल मिक़्यास, पेज 367)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'रब्बिग़्फ़िर ली वलि वालिदय्-य'** (पारा 29, रूकूअ् 10) में किस के माँ-बाप का ज़िक्र है, और उनके नाम क्या-क्या थे?

जवाबः— इस आयत में हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के माँ-बाप का ज़िक्र है। वालिद का नाम लमक बिन मत्तूशलख़ और वालिदा का नाम समहा बिन्ते अनूश था। दूसरा क़ौल यह है कि शमूख़ा ब वज़न सकरा बिन्ते अनूश था।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 252)

सवालः— अल्लाह का फ़रमान **'सफ़ीहुना अ़लल्लाहि श-त-ता'** (पारा 29, रूकूअ् 11) में कौन मुराद है?

जवाबः— इस आयत में जिसका ज़िक्र है, वह इबलीस लईन है।

(अल्-इतक़ान, पेज 189)

सवालः— अल्लाह का फ़रमान **'ज़रनी व मन ख़लक़्तु वहीदा'** में कौन मुराद है?

जवाबः— आयत में जिसका ज़िक्र है वह वलीद बिन मुग़ीरह मख़्ज़ूमी था।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 265)

सवालः— अल्लाह का फ़रमान **'फ़ला सद्-क़ वला सल्ला'** (पारा 29, रूकूअ् 18) में कौन मुराद है?

जवाबः— इस आयत में अबू जह्ल मुराद है, उसके हक़ में यह आयत नाज़िल हुई थी।

(अल्-इतक़ान, पेज 189)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'हल अता अ़लल् इन्सानि हीनुम्-मिनद्दहरि'** (पारा 29, रूकूअ् 19) में इन्सान से मुराद कौन है?

जवाबः— इस आयत में इन्सान से मुराद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हैं।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 275)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'व यक़ूलुल् काफ़िरू यालैतनी कुन्तु तुराबा'** (पारा 30, रूकूअ् 2) में इसका कहने वाला कौन होगा?

जवाबः— इस कलाम का कहने वाला इबलीस लईन होगा।

(अल्-इतक़ान, पेज 189)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अन जा अ हुल आमा'** (पारा 30, रूकू 5) में उस नाबीना (अंधे) का नाम क्या था?

जवाबः— उनका नाम हज़रत 'अब्दुल्लाह' बिन उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु था। (सावी, हिस्सा 4, पेज 291)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अम्मा मनिस्तग्ना'** (पारा 30, रुकूअ् 5) में कौन मुराद है?

जवाबः— उमैया बिन ख़ल्फ़ मुराद है? (सावी, हिस्सा 4, पेज 292) दूसरा क़ौल यह है कि उत्बा बिन रबीआ़ मुराद है।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 292, इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 189)

सवालः— क़ुरआन करीम में आयत **'फ़-अम्मल इन्सानु इज़ा मब्तलाहु'** (पारा 30, रुकूअ् 14) किसके बारे में नाज़िल हुई?

जवाबः— यह आयत उमैया बिन ख़ल्फ़ के बारे में नाज़िल हुई।

(अल्-इतक़ान, हिस्सा 2, पेज 189)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'व वालिदिंव्-वमा व-लद्'** (पारा 30, रुकूअ् 15) में वालिद से कौन मुराद है?

जवाबः— आयत में वालिद से मुराद हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम हैं।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 321)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'फ़-क़ा-ल लहुम् रसूलुल्लाहि'** (पारा 30, रुकूअ् 16) में रसूल से मुराद कौन हैं?

जवाबः— इस आयत में रसूल से मुराद हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम हैं।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 324)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अल्-अत्क़ा'** (पारा 30, रुकूअ् 17) में जिस मुत्तक़ी और नेक-बख़्त का ज़िक्र है, उससे कौन मुराद है?

जवाबः— आयत में जिस मुत्तक़ी का ज़िक्र है, वह हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। (सावी, हिस्सा 4, पेज 326)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'अल्लज़ी यन्हा॰ अ़ब्दन'** (पारा 30, रुकूअ् 21) में किस मना करने वाला का ज़िक्र है और अ़ब्द से मुराद कौन है?

जवाबः— मना करने वाला अबू जहल था और अ़ब्द से मुराद हज़रत मुहम्मद-ए-अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हैं। (सावी, हिस्सा 4, पेज 326)

सवालः— अल्लाह के फ़रमान **'इन्न्-न शानि-अ-क'** (पारा 30, सूरः कौसर) में

कौन मुराद है?

जवाबः– इसमें कई क़ौल हैं: 1. आस बिन वाइल, 2. अबू जह्ल, 3. उक़्बा बिन अबी मुईत, 4. अबू लहब, 5. कअ़ब बिन अशरफ़।

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'वम्‌-र-अतुहू हम्मा ल-तल्‌ हतब'** (पारा 30, सूरः लह्ब) में यह औरत किसकी बीवी थी, नाम क्या था?

जवाबः– यह अबू लह्ब की बीवी थी, जिसका नाम उम्मे जमील था और यह कानी (एक आँख से अंधी) थी। (अल्‌-इतक़ान फ़ी उलूमिल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 189)

क़ुरआन पाक से मुताल्लिक़ दूसरी मालूमात

सवालः– क़ुरआन पाक में कौन-कौन से लफ़्ज़ सुरयानी ज़बान में आये हैं?

जवाबः– क़ुरआन पाक में सुरयानी ज़बान के चार लफ़्ज़ आए हैं:

1. **रब्बानिय्यून** (पारा 6), 2. **ताहा** (पारा 16), 3. **तूर** (पारा 27), 4. **असीम** (पारा 29)। (मुक़द्दमतुल मुन्जिद, पेज 16)

सवालः– क़ुरआन पाक में रूमी ज़बान के कितने और कौन-कौन से लफ़्ज़ हैं?

जवाबः– तीन हैं। 1. **सिरात**, 2. **क़िस्तास**, 3. **फ़िर्दौस**। (ऊपर का हवाला)

सवालः– क़ुरआन पाक में हब्शी ज़बान के अल्फ़ाज़ कितने हैं और कौन-कौन से हैं?

जवाबः– दो लफ़्ज़ हैं। 1. मिश्कात (पारा 18) में, 2. क़िफ़्लैनि (पारा 27) में। (मुक़द्दमा मुन्जिद, पेज 16)

सवालः– क़ुरआन पाक में लैल (रात) मुक़द्दम (पहले) और नहार (दिन) मुअख़्ख़र (बाद में) आने की वजह क्या है?

जवाबः– इस वास्ते कि लैल पैदाइश के ऐतिबार से मुक़द्दम है और दिन मुअख़्ख़र, यानी अल्लाह तआ़ला ने पहले रात को बनाया, इसके बाद दिन बनाया। (हिदायतुत्तर्तील, लि तिलावतित्तंज़ील, हिस्सा 2, पेज 403)

सवालः– वह कौन सी सूरः है जिसमें सिर्फ़ एक ही कस्रा (ज़ेर) है?

जवाबः– वह सूरत सूरः इख़्लास है। (यानी **क़ुल हुवल्लाहु अहद...**)

(हिदायतुत्तर्तील, हिस्सा 2, पेज 404)

सवालः– आयत-ए-क़ुतुब कौन-सी है?

जवाबः– **'सुम्-म अन्-ज़-ल अ़लैकुम मिम् बादिल ग़म्म'** आयते क़ुतुब है।

(हिदायतुत्तर्तील, हिस्सा 2, पेज 404)

सवालः– क़ुरआन करीम में सबसे बड़ी आयत कौन सी है?

जवाबः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने एक सहाबी से मालूम किया कि क़ुरआन में बड़ी आयत कौन-सी है, तो उन सहाबी ने अ़र्ज़ किया, आयत-ए-मुदायना (**या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तदायन्तुम बिदैनिन**) (सूरः बक़रा, आयत 282) सबसे बड़ी आयत है। (ऊपर का हवाला)

सवालः– क़ुरआन में सबसे बड़ी सूरः कौन-सी है?

जवाबः– सूरः बक़रा है। (हिदायतुत्तर्तील, हिस्सा 2, पेज 404)

सवालः– क़ुरआन में सबसे बड़ा रुकूअ़ कौन-सा है?

जवाबः– सबसे बड़ा रुकूअ़ **'अफ़ल्लाहु अन्-क'** (पारा 10) में है।

(ऊपर का हवाला)

सवालः– क़ुरआन करीम में कौन-सा इताब (गुस्सा) है जिसमें एक सहाबी के अ़लावा सब सहाबा दाख़िल थे?

जवाबः– वह इताब बद्र की लड़ाई में क़ैदियों से फ़िद्या लेने के बाब में था और वह सहाबी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं, जिन्होंने क़ैदियों से फ़िद्या लेने की राय नहीं दी थी, बल्कि सबको क़त्ल करने की राय दी, जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमायाः **'मा का-न लि नबिय्यिन अंय् यकू-न लहू असरा हत्ता युस्ख़ि-न फ़िल् अर्ज़ि...'** (पारा 10, रुकू 5)

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ...الخ

तर्जुमाः नहीं मुनासिब है नबी के लिए कि उसके पास क़ैदी आएं, यहां तक कि उनको क़त्ल कर डालें। (हिदायतुत्तर्तील, हिस्सा 2, पेज 397)

सवालः– क़ुरआन करीम में कौन सा हुक्म है जिस पर एक ही सहाबी ने अ़मल करके सवाब हासिल किया और क़ियामत तक कोई आदमी उस हुक्म पर अ़मल करके सवाब न पाएगा और वह सहाबी कौन हैं?

जवाबः– वह हुक्म सदक़ा-ए-मुनाजात है और सहाबी हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं। उसकी तफ़्सील यह है कि मुनाफ़िक़ सुर्ख़रूई के लिए बे-फ़ायदा बातें आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के कान में राज़ के तौर पर कहते थे। अल्लाह तआ़ला ने उनके रद्द में यह हुक्म नाज़िल फ़रमायाः

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نَـٰجَيْتُمُ ٱلرَّسُولَ فَقَدِّمُوا۟ بَيْنَ يَدَىْ نَجْوَىٰكُمْ صَدَقَةً ۚ

'या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा ना-जयतुमुर रसू-ल फ़-क़द्दिमू बै-न यदय् नजुवाकुम स-द-क़तन्' (सूरः मुजादला, आयत 12)

तर्जुमाः– 'ऐ ईमान वालो! जब तुम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से कोई राज़ कहो, तो कहने से पहले सद्क़ा दो। मुनाफ़िक़ों ने सद्क़ा देना गवारा न किया और आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के साथ राज़ के तौर पर सरगोशी तर्क कर दी। इसी बीच हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को सरवर-ए- आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सरगोशी की ज़रूरत हुई थी, तो उन्होंने वह एक दीनार जो उनके पास था, तोड़वा कर सद्क़ा देकर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सरगोशी की। कुछ दिनों के बाद यह सद्क़े का हुक्म मन्सूख़ (रद्द, ख़त्म) हो गया था। (इस तरह इस हुक्म पर हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के अ़लावा कोई अ़मल न कर सका और न कर सकेगा।)

(हिदायतुत्तर्तील लि तिलावतित्तंज़ील, पेज 400, मआ़रिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 8, पेज 346)

सवालः– लफ़्ज़ **'कल्ला'**, जो डांट-डपट के मअ़्ना में आता है, सिर्फ़ मक्की सूरतों में आया है, मदनी में नहीं, इसकी वजह क्या है?

जवाबः– मदनी सूरतों में डांट-डपट न होने की वजह यह है कि मदीना वाले (उन पर हज़ार-हज़ार सलाम व रहमत हो) अल्लाह वाले और नर्म दिल थे, इसलिए अल्लाह ने उनके अह्काम और उनकी बस्ती में उतरे कलाम में डांट-डपट का कलिमा इस्तेमाल नहीं फ़रमाया।

(हिदायतुत्तर्तील लि तिलावतित्तंज़ील, हिस्सा 2, पेज 400)

सवालः– क़ुरआन करीम में जगह-जगह **'समावात'**, जमा के सीग़े के साथ इस्तेमाल हुआ है और अर्ज़ (ज़मीन) मुफ़रद के सीग़े से, हालांकि आसमानों की तरह ज़मीनें भी सात हैं, जैसा कि इर्शाद-ए-बारी तआ़ला हैः

خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ط

ख़-ल-क़ सब्अ समावातिंव वमिनल् अर्ज़ि मिस्लहुन्न' (पारा 28, रूकू 18)

पस अर्ज़ को मुफ़रद (एक वचन) लाने की वजह क्या है?

जवाबः– क़ुरआन में समावात (आसमानों) को जमा लाने की वजह यह है कि सातों असमानों की माहियतें अलग-अलग हैं, अलग-अलग माद्दों से उनको बनाया गया है और हर तबक़े में फ़ासला है, ज़मीन के ख़िलाफ़ कि इसके सब तबक़ों की एक ही माहियत है और हर तबक़े के दर्मियान फ़ासला नहीं है, तो चूंकि ज़मीन के सातों तबक़े एक ही हैं, इसलिए सीग़ा मुफ़रद (अकेला) लाया गया है। वल्लाहु आलम। (हिदायतुत्तर्तील लि तिलावतित्तंज़ील, हिस्सा 2, पेज 402)

सवालः– क़ुरआन शरीफ़ में मक़ाम-ए-अज़ाब में 'रीह' का लफ़्ज़ मुफ़रद के सीग़े के साथ इस्तेमाल किया गया है, जैसा कि इर्शाद-ए-बारी है:

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا

'फ़ अरसल्-न अ़लैहिम रीहन सर-सरन' (हामीम सज्दा, आयत 16)

और मक़ाम-ए-रहमत में 'रियाह' जमा के सीग़े के साथ इस्तेमाल हुआ है, जैसा कि अल्लाह का इर्शाद है:

وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ج

'व हुवल्लज़ी अरसलर रिया-ह बुशरम बै-न यदय रहमतिही'

(सूरः अल-फ़ुरक़ान, आयत 48)

ऐसे ही दीगर जगहों पर भी इसी तरह है। इस तरह आने की वजह क्या है?

जवाबः– **'रीह'** अ़रबी ज़बान का लफ़्ज़ है। यह मुफ़रद का सीग़ा है और अल्लाह का अ़ज़ाब रहमत के मुक़ाबले में कमतर है, इसलिए अ़ज़ाब के वास्ते मुफ़रद का सीग़ा लाया गया और चूंकि अल्लाह की रहमत ज़्यादा है अ़ज़ाब के मुक़ाबले में, इसलिए जमा का सीग़ा इस्तेमाल किया गया है।

(हिदायतुत्तर्तील लि तिलावतित्तंज़ील, हिस्सा 2, पेज 403)

सवालः– अल्लाह के फ़रमान **'या अय्युहन्नासु'** (ऐ लोगो!) के ख़िताब में काफ़िर और मोमिन दोनों शरीक हैं या सिर्फ़ मोमिन?

जवाबः– एक क़ौल यह है कि दोनों शरीक हैं, क्योंकि **नास** का लफ़्ज़ दोनों

को आम है। दूसरा क़ौल यह है कि इसमें काफ़िर दाख़िल नहीं, क्योंकि काफ़िर अहकाम का मुकल्लफ़ नहीं होता, इसी तरह ग़ुलाम भी दाख़िल नहीं क्योंकि उसके तमाम फ़ायदे अपने आक़ा की तरफ़ राजेअ होंगे।

(इतक़ान उर्दू, हिस्सा 2, पेज 46)

क़िरअत के सात इमामों से मुतअल्लिक़ मालूमात

सवाल:— क़ुरआन करीम कितनी लुग़तों पर नाज़िल हुआ?

जवाब:— अल्लाह के महबूब मुहम्मद-ए-अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ुरआन करीम सात लुग़तों पर नाज़िल किया गया यानी क़ुरआन करीम सात तरीक़ों (सात क़िरातों) से पढ़ा जा सकता है। इसी वजह से हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ुरआन पाक के सात नुस्ख़ों को सातों लुग़तों पर लिखवा कर सात मुख़्तलिफ़ (अलग-अलग) शहरों में भेजा था। हर नुस्ख़ा एक अलग मुस्तक़िल लुग़त व क़िरअत पर था, इसलिए सातों लुग़तों को सात इमामों ने ले लिया और सातों इमामों ने एक-एक लुग़त व क़िरअत को मेहनत करके महफ़ूज़ कर लिया और उसकी ख़ूब तर्वीज और इशाअत की और फैलाया, इसलिए इन सात इमामों की तरफ़ ये सातों लुग़तें और क़िरअतें मन्सूब हैं। (अल-बुरहान फ़ी उलूमिल क़ुरआन, हिस्सा 1, पेज 329)

सवाल:— क़िरअत के सातों इमामों के नाम क्या-क्या हैं? और उनकी पैदाइश और वफ़ात किस सन् और किस मुक़ाम पर हुई?

जवाब:— क़िरअत के सात इमाम हैं, जिनके नाम नीचे लिखे जा रहे हैं:

1. हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ दमिश्क़ी, जिनकी पैदाइश सन् 21 हि० के शुरू में हुई। दूसरा क़ौल यह है कि सन् 08 हि० में पैदा हुए और वफ़ात 118 हि० में 10 मुहर्रम (आशूरा के दिन) को दमिश्क़ में हिशाम बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में हुई। ([illegible], हिस्सा 1, पेज 31)

2. अब्दुल्लाह बिन कसीर मक्की, यह फ़ारसी नस्ल के थे, जिनकी पैदाइश हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में सन् 45 हि० में मक्का मुकर्रमा में हुई और वफ़ात सन् 120 हि० या 122 हि० में मक्का ही में हिशाम बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में हुई।

3. अबू अम्र बिन अला बिन अम्मार बिन अब्दुल्लाह बसरी हैं, जिनके नाम में तारीख़ लिखने वालों ने इख़्तिलाफ़ किया है। एक क़ौल तो यह है कि उनका नाम ज़ब्बान था। दूसरा क़ौल यह्या, तीसरा क़ौल उस्मान और चौथा क़ौल यह है कि उनका नाम महबूब था और कुछ ने उनकी कुन्नियत को ही उनका नाम बताया है। कुछ ने उनका नाम जुनैद और कुछ ने उऐना और अयाद भी ज़िक्र किया है, मगर सबसे सही क़ौल पहला है कि उनका नाम ज़ब्बान था। (मारिफ़तु क़ुर्राइल किबार अलत् तबक़ाति वल आसारि पेज 58) और साहिब-ए-तहज़ीबुत्तहज़ीब ने (हिस्सा 12, पेज 199) पर लिखा है कि अकसर उलामा ने उनका नाम उर्यान लिखा है और मेरे नज़दीक भी यही सही है और ज़ुब्बान भी साबित है, मगर उर्यान के बाद। उनकी पैदाइश मक्के में सन् 70 हि० या 68 हि० में हुई और वफ़ात शहर कूफ़ा में सन् 154 हि० में हुई।

(मारिफ़तु क़ुर्राइल किबार, पेज 62 व तहज़ीबुत्तहज़ीब, हिस्सा 12, पेज 199)

4. चौथे इमाम नाफ़ेअ बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी नुऐम इस्फ़हानी हैं, जिनकी पैदाइश सन् 70 हि० में हुई और वफ़ात शहर मदीनतुर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में सन् 169 हि० में हुई और जन्नतुल बक़ीअ् में मद्फ़ून हुए। इमाम नाफ़ेअ् ने 70 ताबिईन से पढ़ा, रंग उनका सियाह था।

(तबक़ातुल क़ुर्रा, पेज 330, व 334, मारिफ़ुत क़ुर्राइल किबारि, पेज 71)

5. पांचवे इमाम हम्ज़ा बिन हबीब बिन अम्मारा बिन इस्माइल कूफ़ी हैं, जिनकी पैदाइश कूफ़ा मक़ाम पर सन् 80 हि० में हुई और वफ़ात शहर हलवान 108 हि० में हुई और दूसरा क़ौल सन् 156 हि०, तीसरा 158 हि० का है।

(तबक़ातुल क़ुर्रा, हिस्सा 1 पेज 693, हिस्सा 1, पेज 261)

6. छठे इमाम आसिम बिन अबी नुजूद असदी कूफ़ी हैं, जिनकी पैदाइश सन् 95 हि० में हुई। (तैसीरूत्तबअ्, पेज 32) और वफ़ात सन् 127 हि० के आख़िर में हुई। (मारिफ़तुल क़ुर्राइल किबार, पेज 54)। दूसरा क़ौल यह है कि सन् 128 हि० में हुई।

7. सातवें इमाम किसाई हैं, उनका नाम अली बिन हमज़ा है। यह भी कूफ़ा के रहने वाले थे। असलन फ़ारसी हैं, इनकी पैदाइश कूफ़ा में सन् 119 हि० में हुई और वफ़ात मुल्क-ए-रैय जाते हुए मौज़ा नैनुविया में 70 साल की उम्र में सन् 189 हि० में हुई।

(तैसीरूत्तबअ्, हिस्सा 1, पेज 34)

पैदाइश में दूसरा क़ौल 120 हि० का है। (मारिफ़तु क़ुर्राइल किबार, पेज 72)

वफ़ात में दूसरा क़ौल सन् 187 हि० का है। (मारिफ़तु क़ुर्राइल किबार, पेज 72)

सातों क़ारियों के रावियों से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– क़िरअत के सातों इमामों के रावियों के नाम और उनकी पैदाइश की तारीख़ और वफ़ात क्या है?

जवाबः– इन सातों इमामों के वैसे तो बहुत से रावी और शागिर्द हैं, मगर हर एक के दो-दो रावी (रिवायत करने वाले) ज़्यादा मशहूर हैं, उन्हीं का ज़िक्र किया जाता है।

1. अ़ब्दुल्लाह बिन आमिर शामी के दो रावी (रिवायत करने वाले) हैं।

(1) हिशाम बिन अ़म्मार दमिश्क़ी, जिनकी पैदाइश दमिश्क़ में सन् 152 हि० में हुई, आप जामा मस्जिद दमिश्क़ के मुफ़्ती व ख़तीब भी थे। उनकी वफ़ात दमिश्क़ में मुहर्रम सन् 245 हि० में 92 साल की उम्र में हुई।

(2) दूसरे रावी इब्ने ज़क्वान यानी अबू अ़म्र अ़ब्दुल्लाह बिन अहमद बिन बशीर बिन ज़क्वान दमिश्क़ी हैं। आपकी विलादत आशूरा के दिन सन् 173 हि० में हुई और दमिश्क़ में सन् 242 हि० में 69 साल की उम्र में इस दुनिया से रूख़्सत हो गए।[1] (तौसीरूत्तबअ़ फ़ी इज्राइस्सबअ़, हिस्सा 1, पेज 32)

2. इब्ने कसीर के दो रावी ये हैं: 1. बिज़्ज़ी, 2. क़ुम्बल।

बिज़्ज़ी का नाम अहमद बिन मुहम्मद बिज़्ज़ी है, कुन्नियत अबुल हसन है। यह अपने दादा हज़रत अबुल बिज़्ज़ा की तरफ़ मन्सूब होने की वजह से बिज़्ज़ी कहलाते हैं। बिज़्ज़ी की पैदाइश सन् 170 हि० में हुई और वफ़ात सन् 250 हि० में मक्का मुअ़ज़्ज़मा में हुई। दूसरे रावी क़ुम्बल का नाम मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान मख़्ज़ूमी मक्की है, कुन्नियत अबू उ़मर और क़ुम्बल लक़ब है। सन् 195 हि० में पैदा हुए और 291 हि० में वफ़ात पाई।[2]

(तौसीरूत्तबअ़ फ़ी इज्राइस्सबअ़, हिस्सा 1, पेज 30)

---

1. ये दोनों उनसे वास्ते के साथ रिवायत करते हैं।
2. ये दोनों इब्ने कसीर से सनद के ज़रिए रिवायत करते हैं।

3. अबू अम्र बसरी के एक रावी तो दौरी बसरी हैं, जिनका नाम हफ़्स बिन उमर है। उनकी पैदाइश सन् 150 हि० में बग़दाद के क़रीब 'दूर' नामी एक गाँव में हुई। उसी की तरफ़ निस्बत करते हुए आपको दूरी कहते हैं और दूसरे रावी सूसी हैं। इनका असल नाम सालेह बिन ज़ियाद है। आपकी पैदाइश सन् 171 हि० में अह्वाज़ के क़रीब सोस नामी गांव में हुई और ख़ुरासान में मोहर्रम के महीने में 261 हि० में वफ़ात पाई। (तौसीरूतबा, पेज 31)

4. इमाम नाफ़ेअ् के एक रावी क़ालून हैं जिनका नाम ईसा बिन मीना है, जिनकी पैदाइश 120 हि० में मदीना मुनव्वरा में हुई और सन् 220 हि० मदीना में वफ़ात पाई। क़ालून इनका लक़ब था और दूसरे रावी वरश हैं जिनका नाम उस्मान बिन सईद मिस्री है, वरश लक़ब है। सन् 110 हि० में मिस्र में विलादत हुई और 197 हि० में मिस्र ही में रहते हुए इंतिक़ाल हुआ। (ऊपर का हवाला)

5. हमज़ा कूफ़ी के एक रावी ख़ल्फ़ बिन हिशाम हैं जो सन् 150 हि० में पैदा हुए और सन् 229 हि० माह जुमादल-उख़्रा में वफ़ात पा गए। दूसरे रावी ख़ल्लाद बिन ख़ालिद सैरफ़ी हैं, जिनकी वफ़ात सन् 220 हि० में कूफ़ा में हुई।

6. इमाम किसाई के एक शार्गिद (रावी) अबुल हारिस हैं, जिनका नाम लैस बिन ख़ालिद है। इनकी वफ़ात सन् 240 हि० में हुई। दूसरे रावी जिनका नाम हफ़्स बिन उमर दौरी है, उनके हालात का ज़िक्र अबू अम्र बसरी के रावियों के हालात में आ चुका है, क्योंकि दौरी दोनों के शार्गिद हैं। (तैसीरूत्तबअ्, पेज 35)

7. इमाम आसिम कूफ़ी के एक रावी शोबा हैं, जिनकी कुन्नियत अबू बक्र और नाम शोबा है, जो सन् 95 हि० में कूफ़ा में पैदा हुए। आपकी वफ़ात 21 जुमादल-उख़्रा 193 हि० में कूफ़ा में हुई। दूसरे रावी हफ़्स हैं जिनकी कुन्नियत अबू उमर और नाम हफ़्स बिन सुलैमान है, सन् 90 हि० में पैदा हुए। आप इमाम आसिम के रबीब थे। इब्ने मुईन फ़रमाते हैं कि यह ख़ुदा की बख़्शी हुई मक़बूलियत है कि आलम-ए-इस्लाम के तमाम मदारिस व मकातिब में हफ़्स की रिवायत पढ़ाई जाती है और उन्हीं की रिवायत को आसान समझ कर उसके मुवाफ़िक़ क़ुरआन शरीफ़ में नुक़्ते व आराब (ज़ेर, ज़बर, पेश) लगाए गए। वफ़ात सन् 180 हि० में हुई। (मारिफ़तुल क़ुर्राइल किबार, पेज 84, तैसीरूत्तबअ्, पेज 33)

फ़रिश्तों से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— आसमान में सबसे पहले अज़ान किसने पढ़ी और इमामत किसने कराई?

जवाबः— सबसे पहले आसमान पर अज़ान जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ने पढ़ी और इमामत हज़रत मीकाईल अ़लैहिस्सलाम ने बैत-ए-मामूर के पास कराई।

(रूहुल ब्यान, हिस्सा 8, पेज 216)

सवालः— अ़र्श को उठाने वाले कितने फ़रिश्ते किस-किस सूरत पर हैं और क़ियामत के दिन कितने और किस-किस सूरत पर होंगे?

जवाबः— इस वक़्त अ़र्श को उठाने वाले चार फ़रिश्ते हैं:

1. एक इन्सानी शक्ल पर है, 2. दूसरा शेर की शक्ल पर, 3. तीसरा बैल की शक्ल पर, 4. चौथा गिध की शक्ल पर है।

और एक रिवायत में है कि क़ियामत के दिन अ़र्श को उठाने वाले फ़रिश्तों की तादाद आठ होगी और सबके सब जंगली बकरों की शक्ल पर होंगे।

(तफ़्सीर-ए-मज़हरी, पेज 72, अद-दुर्रुल मन्सूर, हिस्सा 7, पेज 124, हिस्सा 6, पेज 261)

सवालः— हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश कब हुई?

जवाबः— अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मालूम किया कि आपकी पैदाइश कब हुई, तो जिब्रील अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया, मुझको मालूम नहीं! अलबत्ता इतना ज़रूर मालूम है कि अल्लाह तआ़ला चार हज़ार साल के बाद एक कौकब (सितारा) पैदा करते हैं और अब तक चार हज़ार कौकब पैदा हो चुके हैं।

(रूहुल-ब्यान, हिस्सा 1, पेज 93)

सवालः— हज़रत इज़्राईल अ़लैहिस्सलाम ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश के वक़्त ज़मीन से कितनी मिट्टी ली और उनके ज़मीन से क्या सवाल व जवाब हुए?

जवाबः— जब अल्लाह तआ़ला ने मलकुल मौत को ज़मीन की तरफ़ मिट्टी लेने भेजा तो ज़मीन ने जवाब दिया कि उस अल्लाह की इज़्ज़त की क़सम! जिसने तुझको एक मुट्ठी मिट्टी लेने भेजा, क्योंकि क़ियामत के दिन आग का उसमें हिस्सा हो जाएगा, तो मलकुल मौत ने जवाब दिया कि मैं अल्लाह की इज़्ज़त की पनाह मांगता हूँ, इससे कि हुक्म की ख़िलाफ़-वर्ज़ी करूं। पस हज़रत

इज़्राईल अ़लैहिस्सलाम ने ज़मीन के चारों तरफ़ से चालीस ज़िराअ़[1] के बराबर मिट्टी ली। (रूहुल-ब्यान, हिस्सा 1, पेज 199)

सवालः— इन्सान के साथ नेकी लिखने वाले फ़रिश्ते और बुराई लिखने वाले शैतान के नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः— नेकी लिखने वाले फ़रिश्ते का नाम मुल्हिम है, जो इन्सान को अच्छाई पर उभारता है और रग़बत पैदा करता है और बुराई पर उभारने वाले शैतान का नाम अह्रमन या वस्वास है। (तोह्फ़तुल मिरआत, शरह मिश्कात, पेज 144)

सवालः— मलकुल मौत के आवान व अन्सार (मदद करने वाले) कितने फ़रिश्ते हैं जो रूह निकालते वक़्त उनकी मदद करते हैं?

जवाबः— रूह निकालते वक़्त मलकुल मौत के मुईन व मददगार छः फ़रिश्ते होते हैं। तीन उनमें से ईमान वालों की रूह निकालते वक़्त और तीन कुफ़्फ़ार की रूह निकालते वक़्त मदद करते हैं। (अल्-फ़ुतुहाते इलाहिय्या, हिस्सा 2, पेज 417)

सवालः— काफ़िरों को अ़ज़ाब देने वाले फ़रिश्तों को क्या कहा जाता है?

जवाबः— जो फ़रिश्ते कुफ़्फ़ार को अ़ज़ाब देंगे, उनको ज़बानिया कहा जाता है। (जुमल, हिस्सा 2, पेज 417)

सवालः— करोबिय्यीन किन फ़रिश्तों को कहा जाता है और उनका जुस्सा यानी जिस्म कितना बड़ा है?

जवाबः— अ़र्श को उठाने वाले फ़रिश्तों को करोबिय्यीन कहा जाता है। उनमें से हर एक के कान की लौ से उसकी हंसली तक इतना फ़ासला है कि तेज रफ़्तार परिन्दा पाँच साल में पहुंचे।(फ़रिश्तों के अजीब हालात, पेज 216, रवाहु अबू-शैख़)

सवालः— रूहानिय्यीन किन फ़रिश्तों को कहा जाता है और वे किस आसमान पर हैं?

जवाबः— हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि सातवें आसमान पर एक मुक़ाम है जिसको हज़ीरतुल क़ुदुस कहा जाता है। इसमें (बहुत से) फ़रिश्ते रहते हैं जिनको रूहानिय्यीन कहा जाता है।

(फ़रिश्तों के अ़जीब हालात, पेज 261, बहवाला शोबुल ईमान लिल् बैहक़ी)

सवालः— अम्र बिल मारूफ़ के लिए कौन-कौन से फ़रिश्तें मुक़र्रर हैं?

---

1. ज़िराअ़ से मुराद हज़रत इज़्राईल अ़लैहिस्सलाम का ज़िराअ़ मुराद है, या किसी और का? इसको अल्लाह ही जानता है।

जवाबः– अम्र बिल मारूफ़ यानी अच्छे कामों के लिए तीन फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं। 1. हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम, 2. हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम, 3. हज़रत इस्राफ़ील अलैहिस्सलाम। (तन्वीरूल-मिक़्यास, पारा 29, पेज 377)

मुहम्मद-ए-अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सर और दाढ़ी के कितने बाल सफ़ेद हो गए थे?

जवाबः– इस सिलसिले में तीन क़ौल हैं:

1. आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक दाढ़ी और मुबारक सर के कुल 17 बाल सफ़ेद हुए थे।

2. दूसरा क़ौल 27 बालों का है। और

3. तीसरा क़ौल 20 बालों के सफ़ेद होने का है। (रूहुल-ब्यान, हिस्सा 8, पेज 208)

सवालः– शब-ए-मेराज में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आसमान पर जाते वक़्त कौन से फ़रिश्ते साथ थे?

जवाबः– शब-ए-मेराज में सातवें आसमान तक आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम और हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम रहे। इस तरह कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आपके दाहिनी तरफ़ और हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम बाईं जानिब रहे।

(तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 15, पेज 15)

सवालः– क़ियामत के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का लिबास किस रंग का होगा?

जवाबः– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन मेरा रब मुझको हरे रंग का लिबास पहनाएगा।

(तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 2, पेज 111)

सवालः– क़ियामत के दिन सबसे पहले शफ़ाअत कौन करेगा?

जवाबः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन सबसे पहले शफ़ाअत मैं करूंगा यानी सबसे पहले शफ़ाअत की इजाज़त

मुझको मिलेगी। (तज़्किरा फ़ी ज़िक्रिल्-वियियम हबीब, पेज 185)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शफ़ाअत करने वालों में चौथे होंगे। पहले नम्बर पर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम शफ़ाअत करेंगे, दूसरे नम्बर पर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, तीसरे नम्बर पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, फिर हमारे नबी मुहम्मद-ए-अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शफ़ाअत करेंगे, फिर फ़रिश्ते अलैहिमुस्सलाम, फिर तमाम नबी अलैहिमुस्सलाम, फिर सिद्दीक़ीन, फिर शहीद हज़रात शफ़ाअत करेंगे।

(तफ़्सीर क़ुर्तबी, हिस्सा 8, पेज 88, पारा 29)

सवालः— आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ियामत के दिन सबसे पहले किसकी शफ़ाअत करेंगे?

जवाबः— आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे पहले मदीना वालों की, फिर मक्का वालों की और फिर ताइफ़ वालों की शफ़ाअत करेंगे और दूसरी रिवायत जिसकी तख़्रीज तबरानी ने की है और इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से उसका मरफ़ू होना साबित किया है, यह है कि मैं सबसे पहले अपने घर वालों की शफ़ाअत करूंगा, फिर क़रीबी रिश्तेदारों की, फिर उनके बाद जो क़रीबी रिश्ते वाले हैं, उनकी शफ़ाअत करूंगा, फिर सारे अरब की, फिर सारे अजमी (मुसलमान) लोगों की शफ़ाअत करूंगा। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 428)

सवालः— आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक सर पर मक्का की फ़तह के दिन कैसे रंग का अमामा था?

जवाबः— स्याह रंग का अमामा था। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 2, पेज 232)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जिस बद्-बख़्त ने तलवार उठाकर कहा था कि या मुहम्मद! बतला अब मुझसे तुझको कौन बचाएगा, उसका नाम क्या था?

जवाबः— उस बद्-बख़्त का नाम ग़ौरिस बिन हारिस था। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक पेड़ के नीचे आराम फ़रमा रहे थे, तो यह मौक़ा पाकर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और तलवार उठाकर बोलाः ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! बतला तुझको मुझसे कौन बचाएगा? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बड़ी दिलेरी और बहादुरी से

बे-ख़ौफ़ो ख़तर मर्दाना जवाब दियाः 'अल्लाह'! ग़ौरिस बिन हारिस अल्लाह का नाम सुनते ही काँप उठा और उसके बदन पर इतनी कपकपी आई कि तलवार हाथ से छूट गई। (नसीमुर्रियाज़ लिल ख़फ़ाज़ी, हिस्सा 2, पेज 135, बहवाला बैहक़ी फ़ी शोबिल ईमान मुरसलन)

नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में ज़कात व सद्क़ात वसूल करने वाले हज़रात

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़कात व सद्क़ात की वसूलयाबी के लिए किन-किन लोगों को किस क़बीले की तरफ़ भेजा?

जवाबः— मक्का फ़तह करने के बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सन् 08 हि० के आख़िर में 09 हि० का हिलाल-ए-मुहर्रम (मुहर्रम का चाँद)[1] निकलते ही बहुत-से क़बीलों की तरफ़ सद्क़ों की वसूलयाबी के लिए सहाबा भेजे, चुनांचेः—

1. उऐना बिन हिस्न को बनू तमीम क़बीले की तरफ़ भेजा।
2. यज़ीद बिन हुसैन को क़बीला-ए-अस्लम और क़बीला-ए-ग़िफ़ार की तरफ़ भेजा।
3. इबाद बिन बशीर अशहली को क़बीला-ए-सुलैम और मुज़ैना की तरफ़ भेजा।
4. राफ़ेअ् बिन मुकैस को क़बीला जुहैना की तरफ़ भेजा।
5. हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को क़बीला-ए-बनू फ़ज़ारा की तरफ़ भेजा।
6. ज़हहाक बिन सुफ़ियान को बनू कल्ब की तरफ़ भेजा।
7. बशीर बिन सुफ़ियान को बनू कअ्ब की तरफ़ भेजा।
8. इब्नुल लुबैया अज़्दी को बनू ज़िबयान की तरफ़ भेजा।

1. वाज़ेह (याद) रहे कि ये सारे उम्माल माह-ए-मुहर्रम सन् 09 हि० में ही रवाना नहीं कर दिए गए थे बल्कि किसी-किसी की रवानगी ख़ासी ताख़ीर से उस वक़्त अमल में आई जबकि उस क़बीले ने इस्लाम की आग़ोश में अपना सर रखा, अलबत्ता रवानगी की शुरूआत सन् 09 हि० मुहर्रम ही से हो गई थी। (अर्रहीक़ुल मख़्तूम, पेज 262)

9. मुहाजिर[1] इब्ने अबी उमैया को शहर सन्आ की तरफ़ भेजा।

10. ज़ियाद बिन लुबैद को इलाक़ा हज़्र-मौत की तरफ़ भेजा।

11. अ़दी बिन हा़तिम को क़बीला-ए-तै और बनू असद की तरफ़ भेजा।

12. मालिक बिन नुवैरा को बनू हन्ज़ला की तरफ़ भेजा।

13. ज़बरक़ान बिन बदर को क़बीला बनू सअ़्द की एक शाख़ की तरफ़ भेजा।

14. क़ैस बिन आ़सिम को बनू सअ़्द की दूसरी शाख़ की तरफ़ भेजा।

15. हज़रत अ़ला बिन हज़्रमी को इलाक़ा बहरैन में भेजा।

16. हज़रत अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को इलाक़ा नजूरान में भेजा और आपको ज़कात व जिज़्या दोनों वसूल करने भेजा था।

17. बाज़ान[2] जिस वक़्त मुसलमान हुआ, उसी को यमन वालों पर हाकिम और आ़मिल बनाया था। जब बाज़ान दुनिया से रूख़्सत हो गया, तो यमन पर आ़मिल लोग बदलते रहे, चुनांचे दूसरे क़ौल में:

18. नजूरान पर अ़म्र बिन हज़्म को आ़मिल बनाकर भेजा।

19. ख़ालिद बिन सईद बिन आ़स को नजूरान और मुक़ामे ज़ुबैद के दर्मियान इलाक़े का हाकिम बनाया।

20. आ़मिर बिन शहर को हम्दान शहर पर आ़मिल व हाकिम बनाया।

21. शहर सन्आ पर बाज़ान के बेटे को।

22. मुक़ामे इक और अल्-अश्अ़रिय्यीन पर ताहिर बिन अबी हाला को।

23. मआरिब पर हज़रत अबू मूसा अश्अ़री को?

24. शहर जुन्द पर याला बिन उमैया को। (अर्रहीक़ुल मख़्तूम, पेज 660-661)

सवालः— हज़्र-मौत और यमन के आ़मिलों पर किस को हाकिम बनाया गया?

जवाबः— यमन[3] और हज़्र-मौत के इलाके में जो आ़मिल और हाकिम थे, उन

---

1. इनकी तरफ़ इनकी मौजूदगी में इनके ख़िलाफ़ असवद अन्सी, नुबुव्वत के झूठे दावेदार ने ख़ुरूज किया था। (अर्रहीक़ुल मख़्तूम, पेज 661)

2. नम्बर 17 से जो आ़मिल लोग लिखे गए, ये सारे इलाक़ा यमन व हज़्र-मौत के आ़मिल व हाकिम मुक़र्रर किए गए।

3. हज़्र-मौत और यमन के इलाक़े में जहाँ क़ुरआन की तालीम की ज़रूरत पड़ती, तो हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हु वहां तालीम की ग़र्ज़ से मुन्तक़िल (एक जगह से दूसरी जगह जाना) होते रहते थे। (अल्-कामिल, हिस्सा 2, पेज 336)

पर ज़ियाद बिन लुबैद को बड़ा हाकिम बनाया गया था और सकासिक और अस्सुकून पर उकाशा बिन सौर को बड़ा अफ़सर मुक़र्रर किया गया था और बनी मुआविया बिन कुंदः पर अब्दुल्लाह या अल्-मुहाजिर को बड़ा अफ़सर मुक़र्रर किया गया था। (अल्-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पेज 336)

हज़रात अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलाम से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कुल उम्र कितनी हुई और नुबुव्वत कितने साल में मिली?

जवाबः– आपकी कुल उम्र 1780 साल हुई। 480 साल में नुबुव्वत मिली।

(अल्-बिदायः वन्निहायः, हिस्सा 1, पेज 120)

सवालः– तुफ़ान नुबुव्वत मिलने के कितने साल बाद आया? और तूफ़ान के बाद कितने साल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ज़िन्दा रहे?

जवाबः– हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को नुबुव्वत मिलने के 950 साल बाद तूफ़ान आया और तूफ़ान के बाद हज़रत नूह अलैहिस्सलाम 350 साल ज़िन्दा रहे। (अल्-बिदायः वन्निहायः, हिस्सा 1, पेज 120)

सवालः– हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को कहाँ दफ़्न किया गया?

जवाबः– सबसे सही क़ौल के मुताबिक़ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम को मस्जिद-ए-हराम में दफ़्न किया गया। (अल्-बिदायः वन्निहायः, हिस्सा 1, पेज 120)

सवालः– हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम को कितने साल में नुबुव्वत मिली और कुल कितने साल ज़िन्दा रहे?

जवाबः– हज़रत इद्रीस[1] अलैहिस्सलाम को 100 साल की उम्र में नुबुव्वत मिली और 405 साल ज़मीन पर रहे। इसके बाद आसमान पर ज़िन्दा उठा लिये गए। (तारीख़-ए-दमिश्क़, इब्ने असाकिर, हिस्सा 1, पेज 27)

सवालः– हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने 'हाज़ा रब्बी' किस सितारे को देखकर कहा था?

1. हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के इंतिक़ाल के वक़्त हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम की उम्र 100 साल थी। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 1, पेज 77)

जवाबः– मुश्तरी नामी सितारे को देखकर कहा था।

(हाशिया तारीख़ इब्ने ख़लदून उर्दू, हिस्सा 1, पेज 70)

सवालः– हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब आग से निकले तो शाह-ए-नमरूद ने आपको क्या हिबा (तोहफ़ा) किया था?

जवाबः– जिस वक़्त हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम आग से सही-सलामत बाहर निकल आए तो नमरूद ने आपको एक ग़ुलाम हिबा किया था, जिसका नाम दमिश्क़ था।

(तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 1, पेज 44)

सवालः– हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम कहाँ दफ़न हुए, कितनी औलादें छोड़ीं और उनके नाम क्या-क्या थे?

जवाबः– हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम अपनी वालिदा मोहतरमा के पास मीज़ाबे रहमत और हजरे अस्वद के दर्मियान दफ़न हुए और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने अपने बाद बनी जुरहुम में बारह लड़के छोड़े, जिनके नाम ये थेः

1. नबायूत, जिसको अरब के लोग नाबित व याबनत कहते थे, 2. क़ीदार, 3. रूबील, 4. बिसात, 5. मुशम्मअ़, 6. ज़दमा, 7. मस्सा, 8. हर्रानं, 9. क़ीमा, 10. बतूर, 11. नाफ़िस, 12. क़दमा।

(तारीख़ इब्ने ख़लदून, हिस्सा 1, पेज 92)

सवालः– हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जिन सितारों को ख़्वाब में देखा, कि वे सितारे उनको सज्दा कर रहे हैं, उन सितारों के नाम क्या थे?

जवाबः– उन सितारों के नाम ये थेः

1. जरहान, 2. अत्तारिक़, 3. अज़्ज़ियाल, 4. क़ानिस, 5. अमूदान, 6. अल्-फ़लीक़, 7. अल्-मुस्बेह, 8. अल्-फ़रअ़, 9. अल्-वसाब, 10. ज़ुल-किलफ़ैन।[1]

(हाशिया इब्ने ख़लदून, हिस्सा 1, पेज 96)

सवालः– हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में मिस्र पर किसकी हुकूमत थी और आपने वज़ारत में किसकी क़ायम मुक़ामी की थी?

जवाबः– हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम क़ैदख़ाने में थे। उस वक़्त मिस्र में वलीद बिन दूमा की हुकूमत थी। इतफ़ीर उसका वज़ीर था। यही अज़ीज़े मिस्र के लक़ब से मशहूर था, उसी की क़ायम मुक़ामी वज़ारत में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने की थी।

(तारीख़ इब्ने ख़लदून, हिस्सा 1, पेज 158)

1. सितारे अगरचे 11 थे, मगर हाशिया तारीख़ इब्ने ख़लदून में सिर्फ़ 10 के नाम दर्ज हैं।

सवालः— हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ओहदा-ए-हुकूमत तलबी की दरख़्वास्त कितने दिनों में क़ुबूल हुई?

जवाबः— अगर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ओहदे को तलब न करते तो अज़ीज़-ए-मिस्र उनकी लियाक़त को देखकर ख़ुद ही तख़्त-ए-शाही पर पहले ही साल बिठा देता, मगर चूंकि आपने ख़ुद ही पेशकश कर दी, इसलिए एक साल के लिए अपने घर रखा और एक साल बाद तख़्त-ए-शाही पर बिठाया, इस तरह कि ताजे शाही पहनाया और शाही तलवार बांधी। (तफ़्सीरे मज़्हरी, हिस्सा 6, पेज 168)

सवालः— हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जिस तख़्ते शाही पर जलवा अफ़रोज़ हुए, उसकी लम्बाई-चौड़ाई कितनी थी और उस पर कितने बिस्तर और पर्दे थे?

जवाबः— तख़्ते शाही की लम्बाई 30 हाथ और चौड़ाई 10 हाथ थी और उस तख़्त पर 10 बिस्तरे और 60 बारीक पर्दे सजावट के लिए पड़े थे।

(मज़्हरी, हिस्सा 6, पेज 168)

सवालः— किस नबी के साथ क़ियामत के दिन उसकी उम्मत नहीं होगी?

जवाबः— क़ियामत के दिन हर नबी के साथ उसकी क़ौम और उम्मत होगी, मगर हज़रत लूत अलैहिस्सलाम के साथ उनकी उम्मत न होगी, बल्कि वह तन्हा खड़े होंगे। (कश्फ़ुल असरार बहवाला रूहुल-ब्यान, हिस्सा 8, पेज 9, अद्दुर्रुल मन्सूर फ़ित्तफ़्सीर बिल मासूर, हिस्सा 6, पेज 159)

सवालः— हज़रत अरमिया बिन ख़लक़िया नुबुव्वत मिलने के बाद कितने साल ज़िन्दा रहे?

जवाबः— 46 साल ज़िन्दा रहे। (रौज़ुल उन्फ़, हिस्सा 1, पेज 68)

सवालः— नबियों में से किस-किस नबी ने शादी यानी निकाह नहीं किया?

जवाबः— दो नबियों ने शादी नहीं की। 1. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, 2. हज़रत यह्या अलैहिस्सलाम। (सीरतुल मुस्तफ़ा, हिस्सा 3, पेज 353)

सवालः— हज़रत आदम अलैहिस्सलाम दुनिया में आने से पहले कौन-सी जन्नत में ठहरे रहे?

जवाबः— इस सिलसिले में दो क़ौल हैं। एक यह कि जन्नते अ़द्‌न में रहे, दूसरा यह कि जन्नत-ए-ख़ुल्द में ठहरे रहे। (ज़ादुल मसीर, हिस्सा 1, पेज 57)

सवालः— हज़रत इद्‌रीस अलैहिस्सलाम और हज़रत हूद अलैहिस्सलाम की उम्र कितनी हुई?

जवाबः— हज़रत इद्रीस अ़लैहिस्सलाम की उ़म्र 405 साल हुई और हज़रत हूद अ़लैहिस्सलाम की कुल उ़म्र 464 साल हुई। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 1, पेज 27)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदावन्द-ए-करीम से कितनी जगहों पर बात की और कितनी बातें कीं?

जवाबः— हज़रत वह्ब फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम से एक हज़ार जगहों पर बातें की और अल्लाह ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ 24 हज़ार एक सौ कलिमों के साथ बातें कीं।

(अबू अय्यूब अल्-मुक़री)

हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह ने हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के साथ एक लाख कलिमात के साथ मुनाजात की, जिनमें से चालीस हज़ार कलिमात के साथ तीन दिन में मुनाजात की जो सबकी सब वसीयतें थीं। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 363)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम अल्लाह से मुनाजात किस जगह करते थे और उसका असर कितने दिन तक रहता था?

जवाबः— हज़रत अ़ता बिन साइब फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के लिए एक क़ुब्बा था, जिसका तूल यानी लम्बाई छः सौ हाथ थी, जिसमें आप अपने रब्ब-ए-करीम से मुनाजात करते थे और हज़रत वह्ब बिन मुनब्बह: फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ख़ुदावन्दे करीम से मुनाजात करते थे तो तीन दिन तक आपके चेहरे में नूर चमकता था और जब तक ख़ुदावन्दे करीम से मुनाजात करते रहते थे, इस दौरान आप अपनी औ़रतों में से किसी औ़रत को नहीं छूते थे। (तारीख़-ए-दमिश्क़, इब्ने अ़साकिर, हिस्सा 25, पेज 363)

सवालः— जब हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने क़िब्ती को थप्पड़ मारकर क़त्ल कर दिया, तो फ़िरऔ़न के क़त्ल के इरादे के बारे में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम को किसने ख़बर दी थी कि फ़िरऔ़न आपके क़त्ल का मन्सूबा बना रहा है?

जवाबः— उस आदमी का नाम हिज़बील बिन नूहा बील था। यह फ़िरऔ़न का ख़ाज़िन था और मोमिन (ईमान वाला) था। सौ साल से अपने ईमान को छुपाए हुए था। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 311) साहिब-ए-ज़ादुल मसीर, हिस्सा 7, पेज 77 ने उस शख़्स के नाम में पाँच क़ौलों का ज़िक्र किया है।

1. हिज़बील, 2. शमूक़न, 3. हबीब, 4. शमूआ़न, 5. जिब्रील और साहिब बहरुल

मुहीत ने (हिस्सा 7, पेज 110) उसका नाम जिब्रील बिन शमूऊन या शमूऊन बिन इस्हाक़ नक़ल किया है।

सवालः– हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने जादूगरों से मुक़ाबला किस दिन किया और उनकी तादाद क्या थी? और कितनी सफ़ें थीं?

जवाबः– हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़िरऔनियों की ईद के दिन, जिसको वे नौरोज़ कहते थे, मुक़ाबला किया था। और इत्तिफ़ाक़ से वह साल का पहला दिन हफ़्ते का था और चाश्त का वक़्त था। कुछ ने कहा, वह आशूरा यानी दस मुहर्रम का दिन था और जादूगरों की तादाद 15 हज़ार थी और हर जादूगर ऐसा जादू जानता था कि दूसरे के पास वह जादू नहीं था। उनमें एक हज़ार बड़े जादूगर थे। जब वे सफ़ लगा कर खड़े हुए तो एक सफ़ में एक हज़ार जादूगर थे, तो कुल सफ़ें 15 थीं। दूसरा क़ौल यह है कि सब जादूगरों की सफ़ें 25 थीं।

(तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 331)

सवालः– हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जादूगरों से मुक़ाबला करके कितने दिन फ़िरऔनियों में ठहरे?

जवाबः– हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मुक़ाबले के बाद 20 साल उन में ठहरे।

(तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 7, पेज 342)

सवालः– हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से किस जगह मुलाक़ात की और वह नदी कौन-सी थी?

जवाबः– हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम से बहरे जीलान पर मुलाक़ात की। यह वही जगह थी जहां हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम मछली भूल गए थे। यह चट्टान रौहा की चट्टान थी। उस चट्टान पर 70 अंबिया अलैहिमुस्सलाम का गुज़र हुआ और यह जगह शहर शरवान के क़रीब थी।

(मोजमुल बुलूदान, हिस्सा 3, पेज 339, तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 389)

सवालः– हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने दरिया में से निकाले जाने के बाद कितने दिनों तक वालिदा का दूध नहीं पिया?

जवाबः– इसके जवाब में एक क़ौल तो (क़िस्त 2) में गुज़र चुका है। दूसरा क़ौल यहाँ दर्ज किया जाता है कि जब फ़िरऔन ने दरिया से ताबूत निकाल कर खोला तो देखा कि उसमें एक छोटा सा बच्चा है। अल्लाह तआला ने फ़िरऔन

और उसकी बीवी हज़रत आसिया के दिल में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम की मुहब्बत डाल दी। फ़िरऔन ने दूध पिलाने वालियों को बुलवाया। आपने आठ दिन तक किसी औरत का दूध नहीं पिया यानी पिस्तान को मुँह नहीं लगाया। फ़िरऔन के दिल में रिक़्क़त तारी हो गई और मज़ीद (ज़्यादा) दूध पिलाने वालियों को बुलाया। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 303)

सवालः— बनी इस्राईल ने बछड़े की इबादत कितने दिनों तक की?

जवाबः— इस बारे में दो क़ौल हैं: 1. चालीस दिन तक बछड़े की इबादत की। 2. दूसरा क़ौल यह है कि सात दिन तक बनी इस्राईलन ने बछड़े की इबादत की। इसलिए कि बनी इसराईल यह कहते थे कि दुनिया की मुद्दत सात हज़ार साल है। उनको अ़ज़ाब भी हर दिन के बदले एक हज़ार साल तक दिया जाएगा। (तफ़्सीरुर्रहमान, हिस्सा 1, पेज 50)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम के अ़सा मारने की वजह से दरिया में कितने रास्ते बने और क्यों बने? इन रास्तों की लम्बाई-चौड़ाई क्या थी?

जवाबः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से जब नदी (दरिया-ए-नील) में अ़सा मारा तो बनी इस्राईल के बारह फ़िरक़े होने की वजह से बारह रास्ते बन गए थे और उनका तूल यानी लम्बाई दो मिल और चौड़ाई एक मील थी। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 341)

सवालः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम जादूगरों पर ग़लबा पाने के बाद आले फ़िरऔन में किनते दिन ठहरे?

जवाबः— जादूगरों पर ग़लबा पाने के बाद हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम फ़िरऔनियों के पास बीस साल ठहरे। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 353)

सवालः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की उम्र क्या हुई?

जवाबः— हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की कुल उम्र 175 साल हुई। दूसरा क़ौल 201 साल का है और हज़रत सालेह अ़लैहिस्सलाम की उम्र 200 साल हुई। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 1, पेज 28)

सवालः— हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम, हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम और हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की उम्रें कितनी-कितनी हुईं?

जवाबः— हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम की उम्र 139 साल हुई। हज़रत

इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की 180 साल और हज़रत याक़ूब अ़लैहिस्सलाम की उम्र 149 साल हुई। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 1, पेज 28)

सवालः— ज़माना-ए-फ़तरत किन नबियों के दर्मियान गुज़रा है?

जवाबः— ज़माना-ए-फ़तरत (यानी एक नबी के इन्तिक़ाल के बाद दूसरे नबी को नुबुव्वत मिलने तक का ऐसा ज़माना जिसमें कोई नबी नहीं आया) सिर्फ़ हज़रत इद्रीस अ़लैहिस्सलाम और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के दर्मियान और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाह अ़लैहि वसल्लम के दर्मियान गुज़रा है। (तारीख़-ए-दमिश्क़, हिस्सा 1, पेज 27)

सवालः— इन चारों नबियों के दर्मियान कितना-कितना ज़माना-ए-फ़तरत गुज़रा है?

जवाबः— हज़रत इद्रीस अ़लैहिस्सलाम और हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम के दर्मियान 100 साल का ज़माना और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दर्मियान 443 साल का ज़माना-ए-फ़तरत गुज़रा है। (तारीख़-ए-दमिश्क़ लि इब्नि असाकिर, हिस्सा 1, पेज 27, 29)

सवालः— हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर माइदा (खाने का दस्तरख़्वान) कितने दिन तक किस कैफ़ियत के साथ नाज़िल होता रहा और माइदा किस रंग का था?

जवाबः— हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम पर आसमान से माइदा 40 दिन तक इस कैफ़ियत से नाज़िल होता था कि एक दिन नाज़िल होता, एक दिन नहीं और उस दस्तरख़्वान का रंग लाल था।

(अल्-मुन्तज़िम फ़ी तारीख़िल उमम लि इब्निल जौज़ी, हिस्सा 2, पेज 36)

सवालः— हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के हवारिय्यीन की तादाद क्या थी? और उनके नाम क्या थे?

जवाबः— इस सवाल का कुछ हिस्सा क़िस्त 2 में भी आ चुका है। वहां 12 और 29 दोनों क़ौल दर्ज हैं, मगर पूरे नाम नहीं लिखे गए। इन दोनों क़ौलों के अ़लावा एक तीसरा क़ौल यह भी है कि उनकी तादाद 17 थी, जिनमें से 12 हवारिय्यों के नाम अल्-बिदायः वन्निहायः, हिस्सा 2, पेज 92 पर ये ज़िक्र किए गए हैं:

1. बतरस, 2. याक़ूब बिन ज़ैदा, 3. यहनस, यह याक़ूब बिन ज़ैदा के भाई थे,

4. इन्द्रावस, 5. फ़लीबीस, 6. अब्र सलमा, 7. मत्ता, 8. तूमास, 9. याक़ूब बिन हलक़िया, 10. नदावस, 11. फ़तातिया, 12. यू दस करयायू[1]। और इब्नुल जौज़ी की अल मुन्तज़िम के हिस्सा 2, पेज 31 पर इनके नाम इस तरह दर्ज हैं:

1. शमऊनुस्सफ़ा, 2. इन्दरवास, 3. ज़ैदी, यह इन्दरवास का भाई था, 4. यूहन्ना, 5. तोलोस, यह यूहन्ना का भाई था, 6. लूक़ा, 7. बरतमली, 8. सोमा, 9. मत्ता अल्-माक्स, 10. याक़ूब बिन ख़ाल्फ़ी, 11. शमऊन फ़त्तानी, 12. मारतूश। (अल्-मुन्तज़िम, हिस्सा 2, पेज 31)

सवालः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आसमान से नाज़िल होने के कितने साल बाद किस क़बीले की किस औ़रत से शादी करेंगे?

जवाबः– हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु का ब्यान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम दुनिया में नाज़िल होने के 21 साल बाद क़बीला-ए-जज़ाम की एक ख़ातून से निकाह फ़रमाएंगे और आपसे उनकी औलाद भी होगी।

(अ़लामात-ए-नुज़ूले मसीह, पेज 90, इसके जवाब का कुछ हिस्सा फ़त्हुल बारी में और कुछ हिस्सा अल्-ख़ुतत लिल अल्लामा मुक़रेज़ी में है)

सवालः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम निकाह करने के बाद कितने साल ज़िन्दा रहेंगे?

जवाबः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम निकाह करने के बाद 19 साल ज़िन्दा रहेंगे। (अ़लामाते नुज़ूले मसीह अ़लैहिस्सलाम, पेज 90)

सवालः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का साँस कहां तक पहुंचेगा और उसकी तासीर क्या होगी?

जवाबः– जहाँ तक आपकी निगाह जायेगी वहाँ तक आपका साँस पहुंचेगा उस का असर यह होगा कि जिस काफ़िर को आपके साँस की हवा लग जायेगी उसका काम तमाम हो जायेगा यानी मर जायेगा।

(अ़लामाते क़ियामत और नुज़ूल मसीह, पेज 22)

सवालः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम रसूल-ए-अ़रबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के किस सहाबी के मुशाबेह होंगे?

---

1. जिस वक़्त यहूद हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को क़त्ल करने के लिए तलाश कर रहे थे और आप अ़लैहिस्सलाम एक मकान में छुप गए, तो इसी नालायक़ ने उस मकान का पता दिया था।

जवाबः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के मशहूर सहाबी हज़रत उर्वः बिन मसऊ़द सक़फ़ी रज़ि० के मुशाबेह होंगे।

(अ़लामाते क़ियामत और नुज़ूले मसीह, पेज 20)

सवालः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद आपका जानशीन कौन बनेगा? और आपकी वफ़ात के कितने साल बाद क़ियामत क़ायम होगी?

जवाबः– हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद आपके फ़रमाम के मुताबिक़ मक़अ़द नामी शख़्स आपका जानशीन होगा जो क़बीला-ए-बनी तमीम का एक आदमी होगा और हज़रत कअ़ब अह्बार की रिवायत है कि जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और तमाम मोमिनीन याजूज-माजूज के फ़ित्ने से फ़ारिग़ हो जाएंगे तो कई साल बाद (जबकि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के इंतिक़ाल को भी कई साल गुज़र जाएंगे) लोगों को ग़ुबार की तरह एक चीज़ नज़र आएगी तो अचानक मालूम होगा कि यह एक हवा है जो अल्लाह ने मोमिनों की रूह क़ब्ज़ करने के लिए भेजी, पस वह हवा मोमिनों की रूहें क़ब्ज़ कर लेगी। इसके बाद 100 साल तक ऐसे काफ़िर लोग दुनिया में रहेंगे जो किसी दीन को मानते ही न होंगे, यहां तक कि लोग गधों की तरह खुल्लम खुल्ला खुली सड़क पर जिमाअ़ करेंगे। इन्हीं लोगों पर क़ियामत आ जाएगी। (अल-हावी, हिस्सा 2, पेज 90) और एक रिवायत में 120 साल का भी ज़िक्र है कि दज्जाल के बाद और मसीह अ़लैहिस्सलाम के उतरने के बाद उस वक़्त तक क़ियामत क़ायम न होगी जब तक अ़रब लोग 120 साल तक उन चीज़ों की इबादत न कर लें जिनकी इबादत उनके बाप-दादा करते थे। (अल्-इशाअ़तु लि अश्रातिस्साअ़ः पेज 346) और फ़त्हुल बारी में है कि जब सूरज मग़्रिब से तुलूअ़ (निकलना) हो जाएगा तो उसके 120 साल बाद तक लोग दुनिया में आबाद रहेंगे, इसके बाद क़ियामत आएगी।

(फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 354)

सवालः– क़ियामत के क़रीब क़ुरआन मोमिनों के सीने से कब उठा लिया जाएगा?

जवाबः– जब हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का इंतिक़ाल हो जाएगा, फिर आपकी वसीयत के मुताबिक़ लोग क़बीला-ए-बनी तमीम के मक़्अ़द नामी एक शख़्स को ख़लीफ़ा बना लेंगे, फिर मक़्अ़द का भी इंतिक़ाल हो जाएगा। अभी मक़्अ़द के इंतिक़ाल को 30 साल भी न गुज़रने पाएंगे कि क़ुरआन पाक

मोमिनों के सीनों और मुस्हफ़ों से उठा लिया जाएगा।

(अलामाते क़ियामत व नुज़ूले मसीह, पेज 87)

हज़रात सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से मुताल्लिक़ मालूमात

सवालः– इस्लाम में सबसे पहले ख़लीफ़ा कौन-से हैं जिनका रिआ़या (पब्लिक) ने वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया?

जवाबः– वह ख़लीफ़ा हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु हैं, जिनका वज़ीफ़ा बैतुल-माल से रिआ़या ने मुक़र्रर किया था।

(अल्-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पेज 424)

सवालः– इस्लाम में सबसे पहले ख़लीफ़ा लक़ब किसका पड़ा?

जवाबः– हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को इस्लाम में सबसे पहले ख़लीफ़ा का लक़ब अ़ता हुआ। (ऊपर का हवाला)

सवालः– इस्लाम में वे कौन से ख़लीफ़ा गुज़रे जिनके वालिद ख़िलाफ़त के वक़्त हयात (ज़िन्दा) थे?

जवाबः– वह ख़लीफ़ा हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु थे, जिनके वालिद हयात थे, मक्के में रहते थे। (ऊपर का हवाला)

सवालः– हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के माँ-बाप का नाम क्या था? और वालिद ने कब और कितने साल की उम्र में वफ़ात पाई?

जवाबः– हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के वालिद का नाम अबु क़ुहाफ़ा था जिनकी वफ़ात मक्का में रहते हुए हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वफ़ात के छः माह कुछ दिन बाद 97 साल की उम्र में हुई और हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वालिदा मोहतरमा का नाम उम्मुल ख़ैर सलमा बिन्ते सख़्र था। (तारीख़ुल उमम वल् मुलूक, हिस्सा 2, पेज 421)

सवालः– हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अंगूठी में क्या लिखा हुआ था?

जवाबः– आपकी अंगूठी में **'नेमल क़ादिरुअल्लाहु'** लिखा हुआ था, यानी बेहतरीन क़ुदरत वाला अल्लाह है। (अल्-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पेज 421)

सवालः– हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कितनी औरतों से शादी की और किससे क्या औलाद हुई?

जवाबः– 1. जाहिलियत के ज़माने में हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़तीला बिन्ते अब्दुल उज़्ज़ा बिन आमिर से शादी की, जिनसे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा दो बच्चे हुए।

2. दूसरी शादी हज़रत उम्मे रोमान से की, जिनका असल नाम द-अद बिन्ते आमिर बिन उमैर कनानिया था। इनसे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु पैदा हुए।

3. तीसरी शादी इस्लाम के ज़माने में अस्मा बिन्ते उमैस[1] से की, जिनसे मुहम्मद बिन अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पैदा हुए।

4. चौथी शादी आख़िरी उम्र में हबीबा बिन्ते ख़ारिजा बिन ज़ैद अंसारिया से की। इनके पेट से हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात के बाद एक बच्ची पैदा हुई, जिसका नाम उम्मे कुलसूम था।

(अल्-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पेज 420)

सवालः– हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में किस इलाक़े में किसको क़ाज़ी या हाकिम बनाकर भेजा?

जवाबः– हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु नेः

1. मक्का मुकर्रमा में हज़रत इताब बिन उसैद[2] को क़ाज़ी व आमिल बनाया।
2. शहर ताइफ़ में हज़रत उस्मान बिन आस को आमिल मुक़र्रर किया था।
3. हज़रत मुहाजिर बिन उमैया को सन्आ पर आमिल मुक़र्रर किया।
4. हज़्र-मौत के इलाक़े पर हज़रत ज़ियाद बिन लबीद अंसारी को।
5. ख़ौलान के इलाक़े पर याला बिन मनीह को।
6. शहर ज़ुबैद और रिमा पर हज़रत अबू मूसा को।
7. जनद के इलाक़े पर हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु को।

1. हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस पहले हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु के निकाह में थीं।
(अल्-कामिल, हिस्सा 2,पेज 420)

2. हज़रत इताब बिन उसैद की वफ़ात उसी दिन हुई जिस दिन हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वफ़ात पाई। दूसरा क़ौल यह है कि बाद में हुई।
(अल्-कामिल, हिस्सा 2, पेज 421)

8. बहरैन पर हज़रत अ़ला हज़रमी को।

9. नजरान पर हज़रत जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली को।

10. अ़ब्दुल्लाह बिन सौर को मुक़ाम जुर्श पर आ़मिल मुक़र्रर किया।

11. अ़याज़ बिन ग़नम को दौमतुल जुन्दल पर।

12. मुल्के शाम पर हज़रत अबू उ़बैद और शुरहबील और यज़ीद और अ़म्र चारों को आ़मिल और क़ाज़ी मुक़र्रर करके भेजा था।

(अल्-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पेज 420-421)

सवालः— हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के कातिबीन (लिखने वाले) कौन-कौन सहाबा थे?

जवाबः— वे हज़रात जिनसे हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ख़तों को लिखवाया करते थे, वे तीन थे।

1. हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

2. हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु।

3. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अ़न्हु। इन तीनों में से जो भी हाज़िर होता, उससे लिखवा लेते थे। (अल्-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पेज 420)

सवालः— क़ुरआन करीम का नाम 'मुस्हफ़' सबसे पहले किसने रखा?

जवाबः— क़ुरआन करीम का नाम 'मुस्हफ़' सबसे पहले हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने रखा। (अल्-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पेज 424)

सवालः— हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु की ख़िलाफ़त का ख़त किससे लिखवाया था और उसमें क्या लिखवाया था?

जवाबः— हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु को बुलवाया, ताकि हज़रत उ़मर रज़ियल्लाह अ़न्हु के मुताल्लिक़ ख़िलाफ़त नामा लिखवाएं, चुनांचे हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया, लिखोः—

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ هٰذَا مَا عَهِدَ أَبُوْ بَكْرِ ابْنِ أَبِيْ قُحَافَةَ إِلَى
الْمُسْلِمِيْنَ. أَمَّا بَعْدُ

इतना लिखवा कर ग़शी तारी हो गई। हज़रत उ़स्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु

ने जल्दी से हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के ग़शी तारी होने की हालत में लिखाः—

قَدِ اسْتَخْلَفَ عَلَيْكُمْ عُمَرُ ابْنُ الْخَطَّابِ .....الخ

इसके बाद हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को इफ़ाक़ा हुआ तो मालूम किया कि जो लिखा गया, पढ़कर सुनाओ तो हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह सारा पढ़कर सुना दिया। हज़रत सिद्दीक़े अक्बार रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुनकर ऊंची आवाज़ से 'अल्लाहु अकबर' कहा और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया किः 'ऐ उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु! क्या तूने ख़ौफ़ किया था कि मैं अगर इस ग़शी की हालत में मर गया तो लोग ख़िलाफ़त के मामले में इख़्तिलाफ़ करेंगे, इसलिए तुमने जल्दी से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम लिख दिया। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा, बिल्कुल इसी तरह है, मैंने इसी वजह से उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम लिख दिया था।

(अल्-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पेज 425)

सवालः— अशरा-मुबश्शरा में से कितने और कौन हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर ईमान लाए?

जवाबः— हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर अशरा मुबश्शरा में से पाँच सहाबा मुसलमान हुए। 1. हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु, 2. हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु, 3. हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु, 4. हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु, 5. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (मुहम्मद बिन इस्हाक़)।

(सफ़्वतुसफ़्वः, हिस्सा 1, पेज 99)

सवालः— हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़िलाफ़त के मन्सब पर बैठने के बाद सबसे पहले क्या फ़रमान जारी किया था?

जवाबः— हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सबसे पहले यह हुक्म जारी किया कि अबू उबैदा बिन जर्राह के नाम ख़त लिखा कि शहर जनद पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को माज़ूल करके ख़ुद हाकिम बन जाओ। जनद वालों पर वाली (हाकिम) बन जाओ।

(अल्-कामिल फ़ित्तारीख़, हिस्सा 2, पेज 427)

सवालः— हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बद्री मुहाजिरों और अन्सार में से

किसका कितना वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया था?

जवाबः– हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैतुलमाल में से बद्री मुहाजिरों का पांच हज़ार दिरहम वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया था और बद्री अंसार का वज़ीफ़ा चार हज़ार दिरहम और अज़्वाजे मुतह्हरात उम्महातुल मोमिनीन के लिए बारह हज़ार दिरहम वज़ीफ़े के तौर पर मुक़र्रर किए थे।(हाशिया बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 573)

सवालः– अस्हाब-ए-बद्र में से सबसे आख़िर में किसका इन्तिक़ाल हुआ?

जवाबः– बद्र की लड़ाई में शरीक होने वाले सहाबा में सबसे आख़िर में हज़रत सअ्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु का विसाल हुआ।

(बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 573)

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने 'हकीमु हाज़िहिल उम्मतिः' (इस उम्मत का हकीम) किस सहाबी के लिए फ़रमाया था और उनका नाम क्या था?

जवाबः– हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु को आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने 'इस उम्मत का हकीम' लक़ब दिया था, जिनका नाम उवैमिर बिन मालिक बिन ख़ज़्रज था। दूसरा क़ौल यह है कि उनका असल नाम आमिर बिन मालिक था और अबू दर्दा का लक़ब उवैमिर भी था।

(उसदुल ग़ाबा, हिस्सा 5, पेज 185)

सवालः– चारों ख़लीफ़ों में से कौन-से ख़लीफ़ा के माँ-बाप हाशमी थे?

जवाबः– हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु बाप और माँ दोनों की तरफ़ से हाशमी थे। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु अबू तालिब के बेटे, वह अब्दुल मुत्तलिब के बेटे और वह हाशिम के बेटे थे और हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अन्हु की वालिदा का नाम फ़ातिमा बिन्ते असद बिन हाशिम था।

(इब्ने ख़ल्दून, हिस्सा 1, पेज 551)

सवालः– बि'रे रूमा किसने कितने में ख़रीदा था?

जवाबः– हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने 35 हज़ार दिरहम में ख़रीदा था। (तिर्मिज़ी शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 211) दूसरा क़ौल यह है कि 400 दीनार में बनी ग़िफ़ार के एक आदमी से ख़रीद कर मुसलमानों के लिए वक़्फ़ कर दिया था।

(तारीख़े दमिश्क़, हिस्सा 16, पेज 127)

तीसरा क़ौल यह है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने बि'रे रूमा 20

हज़ार दिरहम में ख़रीद कर वक़्फ़ कर दिया था।

(हाशिया बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 522)

सवालः– हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इंतिक़ाल के वक़्त कितने और किन-किन हज़रात की शूरा (मज्लिस) बनाई थी?

जवाबः– हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इंतिक़ाल के वक़्त 6 हज़रात की शूरा बनाई थी, जिनके नाम ये हैं:

1. हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 2. हज़रत उ़स्मान रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 3. हज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 4. हज़रत तलहा बिन उ़बैदुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 5. हज़रत सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अ़न्हु, 6. हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु। (बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 524)

सवालः– बैअ़तुर्रिज़्वान में सहाबा की तादाद क्या थी और सबसे पहले हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दस्ते मुबारक पर बैअ़त किसने की?

जवाबः– बैअ़तुर्रिज़्वान में सहाबा की तादाद सही क़ौल के मुताबिक़ 1400 थी और सबसे पहले बैअ़त अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने की। दूसरा क़ौल यह है कि हज़रत सलमा बिन अक्वअ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने की।[1]

(सीरत हलबिया, हिस्सा 3, पेज 18)

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने किस सहाबी को किस शहर का अमीर व हाकिम व क़ाज़ी बनाकर भेजा?

जवाबः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने तक़रीबन ग्यारह हज़रात को अलग-अलग शहरों की तरफ़ अमीर व हाकिम और क़ाज़ी बनाकर भेजा, जिनकी मुख़्तसर तफ़सील यह है:

1. बाज़ान बिन सासान, यह अ़जम के बादशाहों में से बहराम की औलाद में से था। बाज़ान को यमन का गवर्नर बनाया। यह इस्लाम में अ़जमियों में सबसे पहले गवर्नर हुए।

---

1. कुछ लोगों ने कहा कि सबसे पहले बैअ़त करने वाले हज़रत सिनान बिन अबी सिनान असदी हैं यही सही क़ौल है और कुछ ने अबू सिनान को लिखा है ऐसा ही इस्तिआ़ब में है, मश्हूर क़ौल यही है, ज़्यादा तर तारीख़ लिखने वालों ने इसी को तर्जीह दी है, और अबू सिनान यह उ़काशा बिन मुह़सिन के बड़े भाई हैं जो उ़काशा से 10 साल बड़े थे। साहिबे असल ने अबू सिनान वाले क़ौल को कमज़ोर कहा है क्योंकि अबू सिनान बनू क़ुरैज़ा के हिसार (घिराव) के वक़्त इन्तिक़ाल कर गए थे और वहीं उन्हीं के क़ब्रिस्तान में दफ़न हुए। (सीरत हलबिया, हिस्सा 3, पेज 18)

2. हज़रत ख़ालिद बिन सईद को सन्आ का गवर्नर बनाया।

3. ज़ियाद बिन लबीद अंसारी को हज़्रमौत का गवर्नर बनाया।

4. हज़रत अबू मूसा अश्अरी को शहर ज़ुबैद व अ़दन का हाकिम बनाया।

5. हज़रत मुआज़ बिन जबल को शहर जनद का अमीर बनाया।

6. अबू सुफ़ियान बिन हर्ब को शहर नजरान का हाकिम बनाया।

7. अबू सुफ़ियान के बेटे को शहर तैमा का।

8. इताब बिन उसैद को हज के मौसम में मक्का का गवर्नर बनाया।

9. हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु को शहर यमन का क़ाज़ी बनाया।

10. अम्र बिन आ़स को शहर ओमान का आ़मिल बनाया।

11. हज़रत सिद्दीक़े अकबर को सन् 09 हि० में हुज्जाज किराम का अमीर व हाकिम बनाकर रवाना फ़रमाया। (मवाहिबुल्लदुन्निया, हिस्सा 3, पेज 156)

सवालः— दुनिया के बूढ़ों के सरदार जन्नत में कौन होंगे?

जवाबः— जो लोग दुनिया में बूढ़े होकर फ़ौत हुए (मर गए), उनके सरदार जन्नत में हज़रात शैख़ैन यानी हज़रत अबू बक्र व हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा होंगे, चाहे वे लोग उम्मते मुहम्मदिया में से हों या पिछली उम्मतों में से।

(अल्-जामिउ़स्सग़ीर, हदीस 68, कन्ज़ुल उ़म्माल, हिस्सा 3, पेज 10, फ़ैज़ुल क़दीर, पेज 88)

सवालः— जन्नत में नौजवानों के सरदार कौन होंगे?

जवाबः— हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह के फ़रिश्तों में से एक फ़रिश्ता है जिसने अपने रब से मुझे सलाम करने और मेरी ज़ियारत करने के लिए इजाज़त तलब की और यह फ़रिश्ता इससे पहले ज़मीन पर कभी नहीं उतरा। उसने मुझे बशारत सुनाई कि हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा जन्नत के नौजवानों के सरदार होंगे। (तबरानी कबीर, हिस्स 3, पेज 26, जमउ़ल जवामेअ़ पेज 716, कन्ज़ुल उ़म्माल, पेज 342, 74, मजमउ़ज़्ज़वाइद, हिस्सा 9, पेज 181)

सवालः— हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अंगूठी के नक़्श में क्या लिखा हुआ था?

जवाबः— हज़रत अमीर मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने अपनी अंगूठी में यह नक़्श कराया था। **'लि कुल्लि अ़मलिन सवाब'** (हर अ़मल का बदला है) दूसरा

क़ौल यह है किः **'ला हौ-ल व ला क़ुव्व त इल्ला बिल्लाह'** लिखवा रखा था।

(तारीख़े दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 42)

सवालः– अहले शाम ने हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से किस मुक़ाम पर किस माह और किस सन् में बैअ्त की?

जवाबः– मुल्के शाम वालों ने हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु से मुक़ाम ऐलिया में माह-ए-रमज़ान सन् 37 हि० में बैअ्त की।

(तारीख़े दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 43)

सवालः– हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु को किसने शहीद किया?

जवाबः– एक बार जब अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु सुबह की नमाज़ पढ़ने लगे तो सजूदे की हालत में तुर्क बिन अ़ब्दुल्लाह ने आपको तलवार से ज़ख़्मी कर दिया। (तारीख़े दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 40-42)

सवालः– हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु का सबसे आख़िरी कलाम क्या था?

जवाबः– हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान से सबसे आख़िरी कलाम यह निकालाः

اِتَّقُوا اللّٰهَ فَاِنَّهٗ لَا يَقِيْنَ لِمَنْ لَّا يَتَّقِى اللّٰهَ

(अल्लाह से डरो, इसलिए कि जो अल्लाह से नहीं डरता,
उसका कोई यक़ीन नहीं।) (तारीख़े दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 43)

जिन्नात से मुताल्लिक़ मालूमात

सवालः– जिन्नात किस दिन पैदा हुए?

जवाबः– हज़रत अबुल आलिया से रिवायत है कि अल्लाह ने जिन्नात को जुमेरात के दिन पैदा किया। (तारीख़े जिन्नात व शयातीन, पेज 57)

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जिन्नात की जिस क़ौम ने बैअ्त की, वे कितने थे, किस जगह के थे, उनके नाम क्या-क्या थे?

जवाबः– रिवायतों के इख़्तिलाफ़ के साथ किसी ने कहा है कि शहर नसीबैन के छः या सात अश्‌राफ़ ख़ानदान के थे। दूसरा क़ौल यह है कि ये जिन्नात शहर मूसल के क़रीब मक़ाम-ए-नैनवा के शाही लोग थे। (रूहुल ब्यान, हिस्सा 10, पेज 48) साहिबे ऐनुल मआनी ने उनके नाम ये ज़िक्र किए हैं:

1. शासिर, 2. नासिर, 3. दस, 4. हस, 5, अंज़दादनान, 6, अहक़म[1], 7. उमर, 8. सरक़, 9. ज़ौबआ[2]।

दूसरा कौल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु का इनके नामों के मुताल्लिक़ यह है: 1. सलीत, 2. शासिर 3. मासिर, 4. हासिर, 5. हिस्सन, 6. मिस्सन, 7. अलीम, 8. अरक़म, 9. अदरस। (रूहुल ब्यान, हिस्सा 10, पेज 87)

सवालः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन्नात की जिस जमाअत को बैअ्त किया था, उनमें किसको क्या बशारत दी थी?

जवाबः– अब्बास बिन अबी राशिद अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि एक बार हम सफ़र पर निकले। हमारा गुज़र एक वादी पर हुआ तो हमने रास्ते पर एक मुर्दा साँप पड़ा हुआ देखा। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ सवारी से उतरे और उस मुर्दा साँप की लाश को रास्ते से एक तरफ़ करके दफ़न कर दिया, फिर सवारी पर सवार होकर चल दिए। हम चले ही थे कि एक आवाज़ ग़ैब से सुनाई दी कि कोई कहने वाला कह रहा है 'या ख़रक़ा! या ख़रक़ा![3] हमनें दाएं-बाएं देखा तो कुछ नज़र न आया। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने

1. साहिब-ए-क़ामूस ने अहक़म को अहक़ब नक़ल किया है।
2. यह शैतान का भाई था और साहिबे क़ामूस ने कहा है कि यह शैतान का नाम था और इन जिन्नों का सरदार था।
3. ख़रक़ा नाम है बैअ्त करने वाले जिन्नात में से एक की अहलिया का। (इसाबा, हिस्सा 4, पेज 284)

कहा, ऐ हातिफ़! मैं तुझको अल्लाह की क़सम देकर कहता हूँ कि अगर तू इस मख़्लूक़ में से है जो ज़ाहिर हो सकती है तो हमारे समाने आ, वरना हमको ख़रक़ा के मुताल्लिक़ ख़बर दे। उस हातिफ़ ने जवाब दिया, यह साँप जिसको तुमने अभी फ़्लां जगह इस तरह दफ़न किया है, मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से इसके बारे में यह कहते हुए सुना है कि ऐ ख़रक़ा! तू फ़्लां जंगल में मरेगी और तुझको उस वक़्त जो ज़मीन पर सबसे बेहतर शख़्स होगा, वह दफ़न करेगा। हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने उस हातिफ़ से कहा, क्या तूने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से यह ख़ुद सुना है? उसने कहा, जी हाँ, मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को यह कहते हुए ख़ुद ही सुना है, हज़रत उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने इस पर बड़ा ताज्जुब किया। (अल्-इसाबा फ़ी तम्यी ज़िस्सहाबा, हिस्सा 4, पेज 285)

सवालः– अबुल जिन्नात का नाम क्या है और उसको किस चीज़ से पैदा किया गया है?

जवाबः– हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जिन्नात के बाप का नाम समूम है जिसको अल्लाह तआ़ला ने आग के शोले से पैदा किया है। (तारीख़-ए-जिन्नात, पेज 54)

चाँद, सूरज और सितारों से मुताल्लिक़ मालूमात

सवालः– चाँद की मंज़िलें कितनी हैं और उनके नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः– चाँद की 28 मंज़िलें हैं, जिनके नाम ये हैं:

1. अश-शरतीन, 2. अल्-बित्तीन, 3. अस-सुरैया, 4. दबरान, 5. हतआ़, 6. हन्आ़, 7. ज़राअ़, 8. नस्र, 9. तूफ़, 10. जिब्हा, 11. ज़ुब्दा, 12. सरफ़ा, 13. अ़वा, 14. समाक, 15. गफ़र, 16. ज़बानी, 17. अकील, 18. क़ल्ब, 19. शोला, 20. नआ़यम, 21. बलूदा, 22. सादुज़्ज़ाबेह, 23. साद बलह, 24. सादुल मसऊ़र, 25. सादुल अख़्बिया, 26. फ़रउद-दलुवुल मुक़द्दम, 27. फ़रउद् दलुवुल मुअख़्ख़र, 28. बतनुल हूत। (तफ़सीर बग़वी, हिस्सा 2, पेज 344)

सवालः– चाँद की इन 28 मंज़िलों को कितने बुर्जों पर तक़्सीम किया गया है और उनके नाम क्या-क्या हैं?

जवाबः– इन 28 मंज़िलों को 12 बुर्जों पर तक़्सीम किया गया है। एक बुर्ज में दो मंज़िलें हैं। अगर महीना 30 का होता है तो चाँद दो रात 28वीं और 29वीं रात में नहीं निकलता और अगर महीना 29 दिन का होता है तो चाँद एक रात में नहीं निकलता। (जिसको हमारे अ़वाम कहते हैं कि चाँद उठ बैठा है) और इन बारह बुर्जों के नाम ये हैं:

1. हमल, 2. सौर, 3. जौज़ा, 4. सरतान, 5. असद, 6. सुंबला, 7. मीज़ान, 8. अक़रब, 9. क़ौस, 10. जदी, 11. दल्व, 12. हूत। इन बारह बुर्जों के नाम इस एतिबार से रखे गए कि जो बुर्ज जिस जानवर या जिस चीज़ की शक्ल का है, उसका वही नाम यानी उसी चीज़ के नाम पर उसका नाम रख दिया गया। वल्लाहु आलम। (तफ़सीर बग़वी, हिस्सा 2, पेज 344)

सवालः– कवाकिब-ए-सब्आ़ सैयारा (वे सात सितारे जो चलते रहते हैं) के नाम क्या-क्या हैं और इनमें से कौन-सा सितारा कौन-से आसमान पर है।

जवाबः– कवाकिब-ए-सब्आ़ सैयारा के नाम ये हैं:

1. **ज़ुहल**, जो सातवें आसमान पर है।
2. **मुश्तरी**, जो छठे आसमान पर है।
3. **मिर्रीख़**, जो पांचवें आसमान पर है।
4. **शम्स**, जो चौथे आसमान पर है।
5. **ज़ोहरा**, जो तीसरे आसमान पर है।
6. **अतारिद**, जो दूसरे आसमान पर है।
7. **क़मर**, जो पहले आसमान, यानी असमाने दुनिया पर है।

(सावी, हिस्सा 4, पेज 226, पारा 29, रूहुल ब्यान, हिस्सा 8, पेज 238)

सवालः– सितारों में सवाबित नामी सितारे (जो एक जगह ठहरे रहते हैं) किस आसमान पर हैं?

जवाबः– आठवें[1] आसमान पर हैं। (रूहुल ब्यान, पारा 24, पेज 238)

सवालः– सूरज की कितनी मंज़िलें हैं?

जवाबः– मश्रिक़ (यानी वह सिम्त जिधर से सूरज निकलता है) में गर्मी व सर्दी के हिसाब से सूरज की 180 मंज़िलें हैं। इसी तरह इतनी ही (180 मंज़िलें)

1. यह फलसफ़ियों के क़ौल के एतिबार से है। उनके यहां आसमान नौ हैं। वे लोग अर्श और कुर्सी को भी आसमान बताते हैं।

मग़्रिब (वह सिम्त जिधर सूरज डूबता है) में हैं। दूसरा क़ौल यह है कि मशरिक़ (पूरब) में गर्मी व सर्दी के हिसाब से सूरज की 177 मंज़िले हैं। इसी तरह मग़्रिब में एक मंज़िल से दो दिन तक सूरज निकलता है। इसी तरह दो दिन तक मग़्रिब में एक मंज़िल में डूबता है।

(तन्वीरुल मिक़्यास मिन तफ़सीर इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु, पेज 368, पारा 29)

सवालः– चाँद और सूरज दोनों में किसकी रफ़्तार तेज़ है?

जवाबः– चाँद अपनी मसाफ़त (दूरी) एक महीने में तय कर लेता है और सूरज एक साल में अपनी तमाम मंज़िलें तय करता है। अल्लाह का फ़रमान हैः

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ

'न आफ़्ताब की मजाल है कि चाँद को जा लेवे। (क्योंकि चाँद की रफ़्तार तेज़ है, इसलिए सूरज उसको पकड़ नहीं सकता)

अलग-अलग फ़िर्क़ों से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– कुल फ़िर्क़े कितने हैं और किस फ़िर्क़े की कितनी जमाअतें और गिरोहबन्दियाँ हैं?

जवाबः– कुल फ़िर्क़े 73 हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद[1] फ़रमाया कि इन 73 फ़िर्क़ों में से एक फ़िर्क़ा नाजी (निजात पाने वाला) सही रास्ते पर होगा, बाक़ी सब गुमराह और ग़लत रास्ते पर होंगे और वह एक फ़िर्क़ा अहले सुन्नत वल-जमाअत का है और अहले सुन्नत वल जमाअत से मुराद वे लोग हैं जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के पैरूकार

1. आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारा हाल बनी इस्राईल जैसा होगा, कि वे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से अलग होकर 71 फ़िर्क़े बन गये थे। एक के सिवा बाक़ी सब गुमराह थे, यानी एक गिरोह इस्लाम पर क़ायम रहा। इसी तरह बनी इस्राईल के 72 गिरोह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अलग हो गये थे, सब गुमराह हो गए, सिर्फ़ एक फ़िर्क़ा सीधी राह पर क़ायम रहा, तो तुम भी 73 गिरोह बन जाओगे, सब गुमराह होंगे, मगर एक इस्लाम पर क़ायम रहेगा। दूसरी रिवायत में है कि 72 फ़िर्क़े बन जाएंगे एक गिरोह के सिवा सब आग में जलेंगे। सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! उस जन्नती गिरोह की निशानी क्या होगी? आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, वह गिरोह मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े पर होगा? (ग़ुनियतुत्तालिबीन, पेज 181, उर्दू)

(मानने वाले) हैं और जिन मामलों में क़ुरआन और हदीस ख़ामोश हैं उनके बारे में ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के मुत्तफ़क़ा फ़ैसलों के मुताबिक़ अमल करते हैं। फ़िर्क़ों की तादाद और नामों का नक़्शा नीचे दिया जाता है।

नाम	तादाद	नाम	तादाद	कैफ़ियत
अह्ले सुन्नत वल जमाअ़त	1	नजरिया	1	ये कुल 73 फ़िर्क़े हुए।
मोतज़िला की गिरोहबन्दियाँ	6	ज़रारिया	1	इनके अलावा जो फ़िर्क़े हैं वे इन्हीं फ़िर्क़ों में से किसी न किसी के साथ मुशाबहत रखते हैं।
मुरजिया की क़िस्में	12	कलाबिया	1	
शीया और राफ़ज़ियों की जमाअतें	32	मुशब्बहा	3	
जहमिया	1	ख़ारजी फ़िर्क़े	15	

सवालः— फ़िर्क़ा-ए-मोतज़िला को मोतज़िला क्यों कहते हैं? और उस गिरोह का बानी और रूहे रवां कौन है?

जवाबः— मोतज़िला एतिज़ाल से बना है जिसके मानी अलग होने के आते हैं। मोतज़िला के मानी हैं अलग होने वाली जमाअ़त। असल में इस फ़िर्क़े वाले हज़रत हसन बसरी की मज्लिस में जाते थे। ये आपकी मज्लिस से अलग हो गए। इनका सरदार अ़म्र बिन उ़बैद था। उसी के ये पैरूकार (मानने वाले) थे। दूसरा क़ौल यह है कि वासिल बिन अ़ता इस फ़िर्क़े का बानी था। उसी की तरफ़ यह फ़िर्क़ा मन्सूब है, क्योंकि यह मुसलमानों और मोमिनों से अलग हो गया था, इसलिए इनको मोतज़िला कहते हैं। मोतज़िला का दूसरा नाम क़दरिया भी है। इस वजह से कि ये लोग अल्लाह तआ़ला की क़ज़ा व क़द्र का ताल्लुक़ बन्दों से नहीं मानते, यानी यह कहते हैं कि इनके गुनाह अल्लाह की तक़दीर से नहीं, बल्कि उनके अपने नफ़्स से सरज़द हुए हैं। (ग़ुनियतुत्तालिबीन, उर्दू पेज 195)

सवालः— फ़िर्क़ा-ए-मोतज़िला के कितने गिरोह और जमाअ़तें हैं और कौन-सी जमाअ़त किसकी तरफ़ मन्सूब है?

जवाबः— मोतज़लियों के छः गिरोह हैं:

1. **हज़ुलिया**, जिसका बानी अबू हुज़ैल है।
2. **निज़ामिया**, जिसका रूहे रवां मियां निज़ाम है।
3. **मामरिया**, ये लोग मामर नामी शख़्स के पैरूकार हैं।
4. **जब्बाइया**, यह फ़िर्क़ा जब्बाई नाम के शख़्स की तरफ़ मन्सूब है।
5. **काबिया**, जिसका बानी अबुल क़ासिम काबी था जो बग़दाद के

मोतज़लियों का इमाम था।

6. **बहशमिया,** जिसका सरदार अबू हाशिम (जब्बाई का बेटा) था।

सवाल:— फ़िर्क़ा-ए-मुरजिया की कितनी शाख़ें (गिरोह व जमाअ़तें) हैं और किस जमाअ़त की निस्बत किस की तरफ़ है?

जवाब:— फ़िर्क़ा-ए-मुरजिया के बारह गिरोह हैं:

1. **जहमिया,** जिसका बानी व सरदार जहम बिन सफ़्वान है।

2. **सालिहिया,** इस गिरोह के लोग अपने आपको हुसैन सालिही के पैरुकार बतलाते हैं।

3. **यूनुसिया,** जो युनूस बरमी की तरफ मन्सूब है।

4. **शिमरिया,** जो अबू शिम्र की पैरवी करने वाला है।

5. **यूनानिया,** यह यूनान की तरफ़ मन्सूब है।

6. **नज्जारिया,** इनका सरदार हसन बिन मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह नज्जार है।

7. **ग़ीलानिया,** जो ग़ीलान की तरफ़ मन्सूब है और यह गिरोह शिमरिया से मुशाबहत रखता है।

8. **शबीबिया,** यह गिरोह मुहम्मद बिन शबीब की तरफ मन्सूब है।

9. **हनफ़िया,** इस गिरोह वाले अपने को इमाम आज़म अबू हनीफ़ा (नोमान बिन साबित) की तरफ मन्सूब करते हैं, मगर दरअसल इनको इमाम आज़म का मानने वाला नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इस गिरोह वाले इमाम आज़म के फ़रूअ़ में मुक़ल्लिद हैं, उसूल में नहीं। और जो शख़्स चारों इमामों में से किसी का सिर्फ़ फ़ुरूअ़ में मुक़ल्लिद हो उसूल में उस इमाम का पैरुकार (मानने वाला) न हो, तो वह उस इमाम का मानने वाला नहीं कहलाएगा। इसी तरह फ़िर्क़ा-ए-हनफ़ीया का हाल है। वल्लाहु आलमु

10. **मुआज़िया,** यह गिरोह मुआज़ वसी की तरफ मन्सूब है।

11. **मुरीसिया,** यह मुरीसी की तरफ मन्सूब है।

12. **किरामिया,** जो अबू अ़ब्दुल्लाह बिन किराम की तरफ मन्सूब है।

बनू उमैया के ज़माने में फ़िर्क़ा-ए-मुरजिया ने ख़ूब परवरिश पाई।

(ग़ुनियतुत्तालिबीन, पेज 192-195)

सवाल:— फ़िर्क़ा-ए-शीया व रवाफ़िज़ की कितनी जमाअ़तें और गिरोह हैं

और किस जमाअ़त की निस्बत किसकी तरफ़ है?

जवाबः— शीआ़ें के कुल 32 गिरोह हैं:—

1. **बनानिया**, यह फ़िर्क़ा बनान बिन सम्आ़न की जानिब मन्सूब है।
2. **तैयारा**, जो अ़ब्दुल्लाह बिन मुआ़विया की जानिब मन्सूब है।
3. **मुग़ीरिया**, इसका सरदार मुग़ीरह बिन साद था।
4. **मंसूरिया**, जो अबू मन्सूर की जानिब मन्सूब है।
5. **ख़त्ताबिया**, यह फ़िर्क़ा अबू ख़त्ताब की तरफ़ मन्सूब है।
6. **मुअ़म्मरिया**, इसके अक़ीदे ख़त्ताबिया जैसे ही हैं।
7. **बज़ीइय्या**, यह फ़िर्क़ा बज़ीअ़ की जानिब निस्बत करता है।
8. **मुफ़ज़्ज़लिया**, यह अपनी निस्बत मुफ़ज़्ज़ल की तरफ़ करता है, जो उनका सरदार था।
9. **शरीइय्या**, यह शरीअ़ की तरफ़ मन्सूब है।
10. **सबाइय्या**, जिसका सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन सबा था।
11. **मुफ़व्वज़िया**
12. **ज़ैदिया**, यह फ़िर्क़ा ज़ैद बिन अ़ली के क़ौल की ताईद करता है।
13. **जारूदिया**, जो अबू जारूद की तरफ़ मन्सूब है।
14. **सुलैमानिया**, यह फ़िर्क़ा सुलैमान बिन कसीर की तरफ़ मन्सूब है।
15. **बितरिया**, जो अबतर की तरफ़ मन्सूब है, जिसे अबतर से मुलक़्क़ब किया है।
16. **नईमिया**, इसका सरदार नईम बिन यमान है, यह अबतर से मुवाफ़क़त रखता है।
17. **याक़ूबिया**।
18. **क़लईया**।
19. **केसानिया**, जो केसान की तरफ़ मन्सूब है।
20. **कुरैबिया**, जो कुरैब की तरफ़ मन्सूब है।
21. **उमैरिया**, इनके इमाम उमैर थे उनही की तरफ़ मन्सूब है।
22. **मुहम्मदिया**, इसके सरदार मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हसन बिन हुसैन थे।
23. **हुसैनिया**, जो हुसैन बिन मन्सूर की तरफ़ मन्सूब है।

24. **नावसिया,** जो नावस बसरी की तरफ़ मन्सूब है, जो इस गिरोह का सरदार था।

25. **इस्माईलिया,** यह फ़िर्क़ा इमाम इस्माईल का पैरूकार है।

26. **क़रामज़िया।**

27. **मुबारकिया,** इसकी निस्बत मुबारक नामी शख़्स की तरफ़ है।

28. **शमीतिया,** जिसका सरदार यहया बिन शमीत था।

29. **अम्मारिया,** जिसे क़हतिया भी कहते हैं।

30. **मम्तूरिया।**

31. **मूसविया,** जिसके सरदार मूसा बिन जाफ़र थे।

32. **इमामिया,** इस गिरोह का कहना है कि इमामत के मुस्तहिक़ मुहम्मद बिन हसन अस्करी हैं, वही मेहदी आख़िरूज़्ज़मां होंगे।

(ग़ुनियतुत्तालिबीन, पेज 187, 191 उर्दू)

सवालः– फ़िर्क़ा-ए-जहमिया का सरदार और रूहे रवां कौन था? इस फ़िर्क़े के लोग कहां रहते थे? इसके सरदार को किसने क़त्ल किया?

जवाबः– इस फ़िर्क़े के बानी व सरदार का नाम जहम बिन सफ़्वान था। यह फ़िर्क़ा उसी की तरफ़ मन्सूब है। इस फ़िर्क़े के लोग शहर तिर्मिज़ या मर्व में रहते थे। ये ख़ुदा की सिफ़ात का इन्कार करते हैं। जहम को मुस्लिम बिन अहवर मावरानी ने क़त्ल किया था। (ग़ुनियतुत्तालिबीन, पेज 198 उर्दू)

सवालः– फ़िर्क़ा-ए-नज्जारिया अपनी निस्बत किस तरफ़ करता है। इस फ़िर्क़े के लोग ज़्यादातर कहां रहते थे?

जवाबः– फ़िर्क़ा-ए-नज्जारिया की निस्बत हुसैन बिन मुहम्मद नज्जार से है और इस फ़िर्क़े वाले ज़्यादातर तरक़ाशान में रहते थे।

(ग़ुनियतुत्तालिबीन, पेज 198, उर्दू)

सवालः– फ़िर्क़ा-ए-ज़रारिया का सरदार कौन था?

जवाबः– यह फ़िर्क़ा ज़रार बिन उमर की तरफ़ मन्सूब है। इस फ़िर्क़े वाले हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उबई बिन कअ़ब रज़ियल्लाहु अन्हु की क़िरअ़त के इन्कारी हैं।

सवालः– फ़िर्क़ा-ए-कलाबिया व सालमिय्या किसकी तरफ़ मन्सूब हैं?

जवाबः– फ़िर्क़ा-ए-कलाबिया अब्दुल्लाह बिन कलाब की तरफ़ मन्सूब है

और सालमिय्या इब्ने सालिम की तरफ़ मन्सूब है। (गुनियतुत्तालिबीन, पेज 198, उर्दू)

सवालः– फ़िर्क़ा-ए-मुशब्बह की कितनी जमाअ़तें हैं और किस जमाअ़त का कौन सरदार था?

जवाबः– फ़िर्क़ा-ए-मुशब्बह के तीन गिरोह हैं:–

1. हिशामिया, 2. मुक़ातिलिया, 3. वासमिया।

ये लोग रवाफ़िज़ और करामिया फ़िर्क़ों से मुशाबहत रखते हैं। हिशाम बिन हकम ने इनके अ़क़ाइद की किताबें लिखीं, इसलिए हिशामिया फ़िर्क़ा हिशाम बिन हकम की तरफ़ अपनी निस्बत करता है। एक फ़िर्क़े का ताल्लुक़ मुक़ातिल बिन सुलैमान से है और उसी की तरफ़ वह मन्सूब है।

(गुनियतुत्तालिबीन, पेज 198, उर्दू)

सवालः– ख़ारिजी फ़िर्क़े के नाम क्या-क्या हैं और क्यों?

जवाबः– ख़ारिजी फ़िर्क़े का एक नाम **हकमिया** भी है, क्योंकि जुमल की लड़ाई जो हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु के दर्मियान हुई थी, उसमें हकम (फ़ैसला करने वाला) हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु की तरफ़ से हज़रत मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु बने और हज़रत मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हु की तरफ़ से हज़रत अ़म्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु अ़न्हु हकम बने थे, तो जब इन दोनों को फ़ैसले के लिए चुन लिया गया, तो इनकी बात मानना ज़रूरी हो गया था। ख़ारजियों ने इनको हकम (फ़ैसला करने वाला) न माना और कहा कि हम अल्लाह के अ़लावा किसी को हकम बनाना नहीं चाहते, तो ये लोग मुसलमानों की जमाअ़त से निकल गये थे, (ख़ारिज हो गए थे), इसलिए इनको **ख़ारिजिया** कहते हैं और उन्होंने हकम की बात मानने से इंकार कर दिया, इसलिए इनको **हकमिया** कहते हैं। तीसरा नाम इसका **हरुरिया** है, क्योंकि ये लोग हरुरा में उतरे थे। (गुनियतुत्तालिबीन)

सवालः– ख़वारिज के कितने गिरोह और जमाअ़तें हैं और कौन-सी जमाअ़त किसकी तरफ़ मन्सूब है?

जवाबः– ख़वारिज के 15 गिरोह हैं:

1. **नजूदात** जो नज्द बिन आ़मिर[1] हनफ़ी की तरफ़ मन्सूब है। यह आ़मिर

---

1. दूसरा क़ौल यह है कि इस फ़िर्क़े का बानी नज्द बिन उवैमिर हनफ़ी था, जो यमामा में रहता था। (तारीख़ुल मज़ाहिबिल इस्लामिया, पेज 46, उर्दू)

का बाशिंदा (रहने वाला) था और इसको मानने वाले अ़ब्दुल्लाह बिन नासिर के असहाब (साथी) कहलाते हैं।

2. **इज़ारक़ा,** ये लोग नाफ़ेअ् बिन अज़रक़ के साथी थे।

3. एक गिरोह इब्ने फ़ितरीक की तरफ़ मन्सूब है।

4. एक गिरोह अतिय्या बिन अस्वद की तरफ़ मन्सूब है।

5. एक गिरोह **अ़जारदा** कहलाता है जो अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ज्रद की जानिब मन्सूब है, इनके बहुत से गिरोह हैं जो मैमूनिया कहलाते हैं।

6. एक गिरोह **जाज़िया** है और जाज़िया से एक जमाअ़त और निकली है जिसको मालूमिया कहा जाता है।

7. एक गिरोह **बिदअ़तिया** है। इनके अ़क़ीदे अज़्रक़िया फ़िर्क़े से मिलते जुलते हैं।

8. एक गिरोह **मज्हूलिया** है।

9. एक गिरोह **सलतिया** है जो अपनी निस्बत उस्मान बिन सलत की तरफ़ करता है।

10. एक जमाअ़त **अख़्नसिया** कहलाती है जो अपने को अख़्नस नामी शख़्स की पैरूकार बताती है।

11. एक जमाअ़त **ख़ारजियों** की ज़फ़रिया है।

12. एक गिरोह **हफ़्सिया** कहलाता है।

13. एक गिरोह **रियाज़िया** कहलाता है।

14. **बनसिया** जो अबू बनस की तरफ़ मन्सूब है।

15. ख़ारजियों का एक गिरोह **शमराख़िय** है जो अ़ब्दुल्लाह बिन शमराख़ का पैरूकार था। (ग़ुनियतुत्तालिबीन, पेज 184 से 186 तक, उर्दू)

सवालः– फ़िर्क़ा-ए-मजूस यानी आग की इबादत करने वाले कितने ख़ालिक़ मानते हैं?

जवाबः– दो ख़ालिक़ मानते हैं: 1. यज़्दान जो ख़ैर का ख़ालिक़ है, 2. अहरमन, यह शर्र का ख़ालिक़ है। (तोह्फ़तुल मिरआत, पेज 170)

सवालः– उम्मते मुहम्मदिया के मजूस कौन से फ़िर्क़े के लोग हैं?

जवाबः– हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का इर्शाद है कि इस उम्मत के

मजूस क़दरिया (तक़दीर के इन्कारी) हैं। ये लोग भी बहुत से ख़ालिक़ होने के क़ायल हैं। इन्सान को ख़ालिक़े अफ़आले इख़्तियारिया[1] मानते हैं।

(ऊपर का हवाला)

क़ियामत की अलामतों से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— आदमी का ईमान और अ़मले सालेह किस वक़्त तक क़ुबूल हो सकता है?

जवाबः— सूरज के मग़्रिब से निकलने से पहले तक आदमी का ईमान लाना भी सूदमंद और मक़्बूल और अ़मले सालेह भी। क़ियामत के क़रीब जब सूरज मग़्रिब से निकलेगा, उस वक़्त किसी का ईमान लाना और अ़मले सालेह करना मक़्बूल न होगा। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 361)

सवालः— बाबुत्तौबा कहां और कितना बड़ा है?

जवाबः— हज़रत सफ़वान बिन अ़स्साल की एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया[2] कि मग़्रिब में एक दरवाज़ा खुला हुआ है तौबा के लिए जो 70 साल की मसाफ़त (दूरी) जितना है, वह उस वक़्त तक बन्द नहीं होगा जब तक सूरज मग़्रिब से निकल नहीं जाएगा। इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को हसन कहा है। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 362)

सवालः— जब सूरज ग़ुरूब होता है, तो कहां जाता है और जब सूरज मग़्रिब की तरफ़ से निकलेगा, तो कितनी रात तक ग़ायब होने के बाद निकलेगा?

जवाबः— रिवायत में आता है कि जब सूरज छुपता है तो रब्बे करीम की बारगाह में सलाम करके सज्दा-रेज़ होकर आइन्दा निकलने की इजाज़त तलब करता है, उसको खुदावन्दे करीम की जानिब से मश्रिक़ की तरफ़ से तुलूअ़ (निकलने) की इजाज़त मिलती है, तो तुलूअ़ होता है। यहां तक कि एक रात जब सूरज इजाज़त तलब करेगा, तो उसको रोक लिया जाएगा, निकलने की इजाज़त नहीं दी जाएगी, जब तक अल्लाह तआ़ला चाहेगा। फिर सूरज को मग़्रिब से तुलूअ़ होने की इजाज़त मिलेगी यानी कहा जाएगा कि जिस जानिब से ग़ुरूब हुआ, उसी जानिब से निकल। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 362)

---

1. इसलिए यह मजूस के मुशाबह है।
2. इब्ने माजा, पेज 295।

दूसरी रिवायत में यह इज़ाफ़ा है कि दो या तीन रात जितना उसे रोक लिया जाएगा। मुज्तहिदीन के अलावा कोई इन रातों को नहीं पहचानेगा। ये लोग रात को उठकर अपने वज़ीफ़े मुकम्मल करके सो जाएंगे, फिर उठकर पढ़ेंगे, फिर सो जाएंगे, फिर लोग उठ जाएंगे और फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर अभी बैठे ही होंगे कि सूरज मग़्रिब से तुलूअ़[1] हो जाएगा। इमाम बैहक़ी ने अपनी किताब "अल-बास वन्नुशूर" में ये इज़ाफ़ा किया कि (लम्बी रात होने की वजह से) एक आदमी अपने पड़ोसी को आवाज़ देगा, ऐ फ़्लां! ऐ फ़्लां! यह रात कैसी है। मैं पेट भर सोया यानी ख़ूब सो चुका और नमाज़ पढ़ता-पढ़ता थक गया, अब तक सुबह नहीं हुई। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 363, अल्-इशाअ़तु लिअश्रातिस्साअ़:, पेज 342-343)

सवालः– सूरज मग़्रिब से कब तक तुलूअ़ होगा?

जवाबः– याजूज-माजूज के निकलने के कुछ ही मुद्दत के बाद सूरज मग़्रिब से तुलूअ़ हो जाएगा। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 363)

तबरानी की एक रिवायत में आता है कि जब सूरज मग़्रिब से तुलूअ़ होगा, इब्लीस लईन सज्दे में पड़ जाएगा और रब्बे दो जहाँ से इल्तिजा करके कहेगा, ऐ अल्लाह! मुझको हुक्म दे दे। जिसको तू कहे, मैं सज्दा करूं।

(फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 361)

सवालः– इन्सान के आमाल का सहीफ़ा कब बन्द हो जाएगा और हफ़ज़ा (आमाल लिखने वाले फ़रिश्ते) कब हट जाएंगे?

जवाबः– रिवायत में आता है कि जब सूरज मग़्रिब से तुलूअ़ होगा तो लोगों के दिलों पर मुहर लगा दी जाएगी। (यानी जो मोमिन है, वह मोमिन ही रहेगा और जो काफ़िर है, वह काफ़िर ही रहेगा) और किरामन कातिबीन भी बन्दों के आमाल का दफ़्तर बन्द कर देंगे और हफ़ज़ा हट जाएंगे और फ़रिश्तों को कह दिया जाएगा कि अब इसका कोई अमल न लिखो और एक रिवायत में है कि क़ियामत की (बड़ी) निशानियों में एक ही के ज़ाहिर होने पर सहीफ़ा-ए-आमाल बन्द कर दिया जायेगा और हफ़ज़ा की छुट्टी कर दी जाएगी।

(फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 363)

सवालः– मग़्रिब से सूरज तुलूअ़ होने के बाद कितने साल बाद क़ियामत आएगी?

---

1. सूरज एक बार मग़्रिब से निकल कर आधे आसमान से वापस मग़्रिब की तरफ़ जाकर डूब जाएगा, फिर पहले की तरह मश्रिक़ से निकलेगा, फिर लोग दुनिया की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाएंगे, अचानक क़ियामत आ जाएगी। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 363)

जवाबः– मग़रिब से सूरज तुलूअ् होने के 120 साल[1] बाद क़ियामत आ जाएगी। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 361)

दज्जाल से मुताल्लिक़ बातें

सवालः– दज्जाल के साथ कितना लश्कर होगा और उनका कैसा लिबास होगा?

जवाबः– जिस वक़्त हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम दज्जाल से जिहाद करेंगे तो दज्जाल के साथ 70 हज़ार यहूदी होंगे। उनका जंगी लिबास होगा और उनके पास हथियार होंगे और बेश-क़ीमत दबीज़ यानी मोटे कपड़े साज का लिबास होगा। (इब्ने माजा, पेज 298)

सवालः– दज्जाल की सवारी क्या होगी और उसकी सवारी के दोनों कानों के दर्मियान कितना फ़ासला होगा?

जवाबः– हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु अ़न्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि दज्जाल के गधे के दोनों कानों के दर्मियान 40 हाथ का फ़ासला होगा। (अ़लामाते क़ियामत, पेज 109)

सवालः– दज्जाल की पैरवी करने वाले ज़्यादातर लोग कौन होंगे और कितने लोग उसके फ़िल्ने से महफ़ूज़ रहेंगे?

जवाबः– दज्जाल की पैरवी करने वाले ज़्यादातर यहूदी औरतें होंगी और उसके फ़िल्ने से 12 हज़ार मर्द, 7 हज़ार औरतें महफ़ूज़ रहेंगी।

(अल्-इशाअ़तु लिअशरातिस्साअ़ः, पेज 318)

सवालः– दज्जाल को कौन-सी आँख से नज़र न आएगा?

जवाबः– दज्जाल दाहिनी आँख से अंधा होगा, उससे उसको कुछ नज़र न आएगा। (बुख़ारी, हिस्सा 2, पेज 1036)

सवालः– क़ियामत की बड़ी-बड़ी निशानियाँ यानी जिनके बग़ैर क़ियामत न आएगी, कौन-कौन सी हैं?

---

1. दूसरी रिवायत में जो आया है कि छः महीने में ये सारी निशानियां ज़ाहिर हो जाएंगी। इनमें मेल इस तरह मुम्किन है कि वे 120 साल 120 महीनों की तरह गुज़र जाएंगे, क्योंकि मुस्लिम में इस तरह की रिवायत है कि क़ियामत के क़रीब साल महीने की तरह जल्दी गुज़र जाएगा। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 354)

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा से फ़रमाया कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक तुम दस निशानियाँ न देख लो और वे दस निशानियाँ[1] ये हैं:

1. दुख़ान यानी धुएं का निकलना।

2. दज्जाल का निकलना।

3. दाब्बः का निकलना, (यह एक जानवर होगा जो ज़मीन से निकलेगा और लोगों से बातें करेगा)।

4. सूरज का मग़रिब से तुलूअ़ होना।

5. हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का आसमान से नाज़िल होना।

6. याजूज-माजूज का निकलना।

7. तीन बार अलग-अलग जगहों में लोगों का ज़मीन में धंसना। पहला ख़सूफ़ यानी ज़मीन में धंसना मश्रिक़ में होगा।

8. दूसरी बार मग़रिब में यानी जिस तरफ़ सूरज छुपता है

9. तीसरा ख़सूफ़ जज़ीरा-ए-अ़रब (अ़रब प्रायद्वीप) में होगा।

10. क़ारे अ़द्न से आग का निकलना, जो लोगों को मह्शर में जमा करेगी।

(अद्दुर्रुल मन्सूर, हिस्सा 6, पेज 60, मिश्कात शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 482)

क़ियामत से मुतअ़ल्लिक़ बातें

सवालः— जब हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम सूर फूकेंगे, तो उनके दाएं-बाएं कौन होगा?

जवाबः— सूर फूकते वक़्त हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम के दाहिनी तरफ़ हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम और बाईं तरफ़ हज़रत मीकाईल अ़लैहिस्सलाम होंगे।

(मिश्कात शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 482)

सवालः— लोग मह्शर के मैदान में कैसे पहुंचेंगे?

जवाबः— ख़ुदावन्दे करीम मश्रिक़ से एक आग भेजेंगे, जिसको फ़रिश्ते हंका

---

1. क़ियामत की ये दस की दस निशानियाँ छः माह के अर्से में ही ज़ाहिर हो जाएंगी। (फ़त्हुल बारी, शरह बुख़ारी, हिस्सा 11, पेज 362) दूसरी रिवायत में आठ महीने का ज़िक्र है।

(अल्-इशाअ़ः पेज 346)

रहे होंगे। यह आग तमाम लोगों को हंका कर मैदाने महशर में ले जाकर जमा कर देगी। (हाशिया मिश्कात, हिस्सा 2, पेज 484, अद्दुर्रुल मन्सूर, हिस्सा 6, पेज 60) दूसरी रिवायत यह है कि जो लोग दुनिया में आमाले सालिहा करते थे, वे अपने आमाल पर सवार होकर जाएंगे और कुछ पैदल चलकर जाएंगे और कुछ चेहरों के बल। (मिश्कात, हिस्सा 2, पेज 484) और बुख़ारी शरीफ़, किताबुर्रिक़ाक़, हिस्सा 2, पेज 965 पर है कि लोगों का हश्र तीन तरीक़े से किया जाएगा।

1. राग़िबीन राहिबीन।

2. दूसरा गिरोह उनका होगा जो दो-दो, तीन-तीन, चार-चार, दस-दस एक-एक ऊंट पर सवार होंगे। और

3. बाक़ी लोगों को आग इकट्ठा करेगी, जहाँ वे लोग ठहरेंगे, आराम करेंगे। वह आग भी ठहरेगी और जहां वे रात गुज़ारेंगे, आग भी वहीं रात गुज़ारेगी। जहां वे सुबह करेंगे, वहां वह सुबह करेगी, जहां वे शाम करेंगे, वहां वह शाम करेगी।

सवालः– क़ियामत के दिन जब लोग क़ब्रों से नंगे उठेंगे, तो क्या एक दूसरे के सतर को नहीं देखेंगे?

जवाबः– हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मालूम किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या क़ियामत के दिन औरतें मर्दों के साथ नंगी होंगी, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः हाँ। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अफ़सोस की आह भरी और रोने लगीं। बहुत रोईं तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ऐ आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) तू मत रो, क्या तूने अल्लाह का फ़रमानः

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُّغْنِيهِ ۝

नहीं पढ़ा कि वहां हर आदमी की अज़ीम शान (हालत) होगी, हर आदमी को अपनी-अपनी फ़िक्र होगी। एक दूसरे की तरफ़ देखने की जुर्रत ही नहीं करेगा। उस दिन ख़ौफ़ व हैबत से किसी को एक दूसरे की तरफ़ देखने की हिम्मत ही न होगी कि वह दूसरे के सतर पर नज़र डाल सके।

(मिश्कात व बुख़ारी किताबुर्रिक़ाक़, हिस्सा 2, पेज 966)

सवालः– क़ियामत के दिन सूरज लोगों के सरों से कितना ऊंचा होगा?

जवाबः– क़ियामत के दिन सूरज सिर्फ़ एक मील की ऊंचाई पर होगा।

(फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 402, मिश्कात, हिस्सा 2, पेज 483)

सवालः– क़ियामत के दिन लोग पसीने में कहां तक डूब रहे होंगे?

जवाबः– अपने-अपने आमाल के ऐतिबार से कुछ के पसीना टख़नों तक होगा; कुछ के घुटनों तक; कुछ के नाफ़ तक; कुछ के हलक़ तक और कुछ पसीने में मुंह और कानों तक ग़र्क़ होंगे, डूब रहे होंगे। (मिश्कात, हिस्सा 2, पेज 483)

बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में कानों तक पसीने का ज़िक्र है और दूसरी रिवायत हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ब्यान करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन लोगों को इस क़दर पसीना आएगा कि ज़मीन पर सत्तर गज़[1] ऊंचाई तक पसीना चढ़ जाएगा और लोगों के मुंह तक पहुंच कर कानों तक पहुंच जाएगा।

(बुख़ारी व हाशिया बुख़ारी हिस्सा 2, पेज 967)

इमाम हाकिम ने मरफ़ूअ़न रिवायत किया है कि पसीना आमाल के एतिबार से आएगा। चुनाँचे कुछ लोगों के पिंडलियों तक, कुछ के आधी पिंडलियों तक, कुछ के घुटनों तक, कुछ के रानों तक और कुछ के कूल्हों तक और कुछ के मूंहों तक पसीना होगा। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 401-402)

सवालः– क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा पसीना किन लोगों को आएगा?

जवाबः– आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, सबसे ज़्यादा पसीना कुफ़्फ़ार को आएगा, उनसे कम गुनाह कबीरा करने वालों को और उनसे कम गुनाह सग़ीरा करने वालों को। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 402)

सवालः– क़ियामत के दिन लोगों को अपने घर वाले भी याद आयेंगे या नहीं?

जवाबः– हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मालूम किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्या क़ियामत के दिन अपने अहल व अयाल यानी बाल बच्चे भी याद आयेंगे या नहीं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया, मगर तीन जगहों पर इन्सान उनको भी भूल जाएगा।

1. सत्तर ज़िराअ् (गज़) ऊंचाई तक पसीने का पहुंचना ज़ाहिर है, क्योंकि उस दिन सबका क़द सत्तर हाथ के बराबर लम्बा होगा।

1. जब अपने आमाल को पढ़ेगा, 2. आमाल का वज़न होते वक़्त।

3. पुल-सिरात पर से गुज़रते वक़्त। (अबू-दाऊद शरीफ़, हिस्सा 2, पेज 654, 655)

सवालः— क़ियामत के दिन अ़र्शे ख़ुदावन्दी के साए में कौन-कौन लोग होंगे?

जवाबः— हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि सात शख़्सों को ख़ुदावन्दे करीम ज़ुल-जलाल अपनी रहमत के साए में ऐसे दिन जगह अ़ता फ़रमाएंगे जिस दिन उसके अर्श के साए के सिवा कोई साया न होगा।

1. आ़दिल (न्यायी, इंसाफ़ पसन्द) बादशाह।

2. वह आदमी जो जवानी में अल्लाह की इबादत करता हो।

3. वह आदमी जिसका दिल मस्जिद में अटका हुआ हो।

4. वे दो आदमी, जिनमें अल्लाह ही के लिए आपस में मुहब्बत हो, उसी पर उनका इज्तिमा (जमा होना) होता हो और अल्लाह ही की मुहब्बत में जुदाई होती हो।

5. वह आदमी जिसको कोई हसीन जमील औ़रत अपनी तरफ़ मायल करे और वह यह कह दे कि मुझको अल्लाह का डर (रुकावट) है।

6. वह आदमी जो छुपे और पोशीदा तरीक़े से सदक़ा करे इस तरह कि दाहिने हाथ से दे और बाएं हाथ को भी ख़बर न हो।

7. वह आदमी जो अल्लाह का ज़िक्र तन्हाई में इस इस्तिहज़ार के साथ करे कि उसके आँसू बहने लगते हों। (बुख़ारी शरीफ़, हिस्सा 1, पेज 191, "बाबुस्सदक़ा बिल यमीन", रिवायत मुस्लिम, हिस्सा 1, पेज 331, "बाब फ़ज़्लु इख़्फ़ाइस्सदक़ा", हिस्सा 2, पेज 1005)

सवालः— क़ियामत के दिन सबसे पहले कौन किस मामले में बहस करेगा?

जवाबः— क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला से सबसे पहले हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु झगड़े के मुताल्लिक़ बहस करेंगे। (सावी, हिस्सा 3, पेज 97)

सवालः— क़ियामत के दिन जब अल्लाह तआ़ला ज़बान पर मुहर लगा देंगे तो सबसे पहले कौन-सा उज़्व (हिस्सा) बोलेगा?

जवाबः— क़ियामत के दिन अल्लाह तआ़ला ज़बान पर मुहरे सुकूत (ख़ामोशी) लगाकर इन्सान के हाथ-पैरों से बात करेंगे, चुनांचे सबसे पहले इन्सान की दाहिनी रान बोलेगी (कि ऐ अल्लाह! मुझसे इसने फ़्लां दिन फ़्लां

गुनाह किया था) जो भी इन्सान ने उससे काम लिया होगा, उसके मुताल्लिक़ वह जवाब देगी। (रुहुल मआनी, पेज 43, सूरः यासीन, हिस्सा 1 पेज 23)

सवालः— क़ियामत के दिन लिवाउल हम्द (हम्द का झंडा) किस के हाथ में होगा?

जवाबः— क़ियामत के दिन लिवाउल-हम्द हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ में होगा। (अद्दुर्रुल मन्सूर, हिस्सा 6, पेज 301)

सवालः— क़ियामत के दिन जहन्नम पर कितने पुल बिछाए जाएंगे और किस पुल पर किस चीज़ के मुताल्लिक़ सवाल होगा?

जवाबः— रिवायतों के इख़्तिलाफ़ के साथ इब्ने जरीर ने इब्ने क़ैस के हवाले से यह बात ब्यान की है कि मुझको यह ख़बर पहुंची कि जहन्नम पर क़ियामत के दिन 3 पुल बिछाए जांएगेः

1. एक पर अमानत के बारे में सवाल होगा।
2. दूसरे पर रहम यानी रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक से मुताल्लिक़ सवाल होगा।
3. तीसरे पुल पर ख़ुद अल्लाह तआ़ला होगा।

दूसरा क़ौल इमाम बैहक़ी ने 'अल्-अस्मा वस्सिफ़ात' में इस रिवायत की तख़रीज की है। हज़रत मुक़ातिल के हवाले से वह कहते हैं कि मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि बेशक अल्लाह की मुराद **'इन-न रब्ब-क लबिल मिर्साद'** से सिरात है और सिरात वह है कि जहन्नम पर सात पुल बिछाए जाएंगे। हर पुल पर फ़रिश्ते[1] खड़े होंगे जिनके चेहरे मिस्ल चिंगारी के होंगे और आँखें बिजली की तरह चमकने वाली होंगी।

1. पहले पुल पर ईमान से मुताल्लिक़ सवाल होगा।
2. दूसरे पुल पर पाँचों नमाज़ों से मुताल्लिक़ सवाल होगा।
3. तीसरे पर ज़कात से मुताल्लिक़।
4. चौथे पर रमज़ान के रोज़ों से मुताल्लिक़।
5. पांचवें पर हज से मुताल्लिक़।
6. छठे पर उमरा से मुताल्लिक़।

---

1. फ़तहुल बारी, पेज 462 पर है कि पुल के दोनों तरफ़ फ़रिश्ते खड़े होंगे और यह कहते होंगे 'या रब्बि! सल्लिम सल्लिम।

7. सातवें पर मज़ालिम यानी ज़ुल्म से मुताल्लिक़।

जिसने इन पुलों पर सवाल की गई बातों का सही-सही जवाब दे दिया तो वह पुल-सिरात पर से गुज़ार दिया जाएगा, वर्ना वहीं रोक लिया जाएगा।

(अद्दुर्रुल मन्सूर फ़ी तफ़्सीर बिल मासूर, हिस्सा 6, पेज 348)

सवालः– पुल-सिरात की मसाफ़त (दूरी) कितनी होगी?

जवाबः– फ़ुज़ैल बिन अयाज़ कहते हैं कि हमको यह बात पहुंची है कि पुल-सिरात की मसाफ़त (दूरी) 15 हज़ार साल होगी। इस तरह कि पांच हज़ार साल चढ़ने में लगेंगे और पांच हज़ार साल नीचे उतरने में और पांच हज़ार साल उस पर बराबर चलने में लगेंगे और पुल-सिरात बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ होगा।[1] (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 462)

सवालः– हौज़े कौसर की लम्बाई व चौड़ाई कितनी होगी और गहराई क्या होगी?

जवाबः– इमाम बुख़ारी की रिवायत के मुताबिक़ हौज़े कौसर की लम्बाई व चौड़ाई का फ़ासला ज़रबा[2] से अज़रूह तक का दर्ज है। दूसरी रिवायत में मदीना से सन्आ-ए-यमन तक का फ़ासला ज़िक्र किया गया है। तीसरी रिवायत में ऐला से सन्आ-ए-यमन[3] तक का फ़ासला दर्ज है और इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में एक महीने की मसाफ़त ज़िक्र की गई है। और एक रिवायत में मक्का से शहर ऐला[4] तक जितना फ़ासला है, वह बयान किया गया है।[5]

(बुख़ारी, हिस्सा 2, पेज 974)

सवालः– क़ियामत के दिन दूसरे नबियों (अलैहिमुस्सलाम) का भी हौज़ होगा या नहीं?

---

1. इसकी तख़्रीज इब्ने असाकिर ने अपने तर्जुमे में की और इसको मोज़ल और ग़ैर साबित कहा है। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 462)
2. ज़रबा और अज़रूह ये दोनों मुल्के शाम की दो जगहें हैं जिनके दर्मियान की मसाफ़त तीन रातें हैं।
3. सन्आ-ए-यमन कहकर सन्आ-ए-शाम से अलग करना मक़सूद है। (हाशिया, बुख़ारी, हिस्सा 2, पेज 974)
4. 'ऐला' मुल्के शाम के साहिल पर लाल सागर के किनारे पर एक शहर है। मिस्र से आने वाले हाजी इस जगह से ही गुज़रते हैं। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 478)
5. एक रिवायत में है कि हौज़े कौसर की चौड़ाई मुक़ाम-ए-ऐला और अदन के दर्मियान की दूरी है। (अद्दुर्रुल मन्सूर, हिस्सा 6, पेज 402) और एक रिवायत में है कि हौज़े कौसर की गहराई 70 हज़ार फ़र्सख़ (मील) होगी। (अद्दुर्रुल मन्सूर, हिस्सा 6, पेज 402)

जवाबः– तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत समुरा रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि क़ियामत के दिन हर नबी के लिए एक हौज़ होगा। अलबत्ता हौज़े कौसर सिर्फ़ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए ख़ास होगा।

(हाशिया बुख़ारी, पेज 973, हिस्सा 2, आख़िरी जुज़ अहुर्रुल मन्सूर, हिस्सा 2, पेज 402)

सवालः– पुल सिरात पर से सबसे पहले कौन गुज़रेगा और गुज़रने वालों की कितनी क़िस्में होंगी?

जवाबः– सबसे पहले मुहम्मद अ़रबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मत को गुज़रने की इजाज़त दी जाएगी। गुज़रने वाले तीन क़िस्म के लोग होंगे।

1. पहली क़िस्म उन लोगों की होगी जो बग़ैर किसी ख़दशे के बिला हिसाब व किताब के गुज़र जाएंगे।

2. दूसरी क़िस्म वालों को कुछ परेशानी होकर निजात मिलेगी अपने आमाल के बराबर पुल-सिरात पर परेशानी होगी।

(फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 454, किताबुर्रिक़ाक़)

3. तीसरी क़िस्म वाले अव्वल वहले में ही हलाक हो जाएंगे।

(फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 454)

सवालः– क़ियामत के दिन मीज़ाने अमल में कौन-सा अमल सबसे पहले रखा जाएगा?

जवाबः– तबरानी ने बरिवायत हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु नक़ल किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान की मीज़ाने अमल में सबसे पहले जो अमल रखा जाएगा, वह अपने अहल व अयाल पर ख़र्च करने और उनकी ज़रूरतें पूरी करने का नेक अमल होगा।

(मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 3, पेज 523, पारा 9, सूरः आराफ़)

सवालः– जन्नत में सबसे बाद में कौन शख़्स किस क़बीले का दाख़िल होगा?

जवाबः– सबसे आख़िर में जन्नत के अन्दर क़बीला-ए-जुहैना का एक शख़्स दाख़िल होगा। अ़ल्लामा सुहैली ने उसका नाम हन्नाद ब्यान किया है।

(फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 467)

सवालः— दोज़ख़ वाले आह व ज़ारी कितने अ़र्से तक करेंगे। उनकी फ़रियाद-रसी का जवाब कितने दिनों तक नहीं दिया जाएगा?

जवाबः— जहन्नमी लोग दोज़ख़ के अन्दर सब मिलकर 500 साल तक फ़रियाद व आह व ज़ारी करेंगे, लेकिन उनका यह रोना-धोना सूदमन्द न होगा। फिर 500 साल तक सब्र करेंगे, उनका सब्र करना भी फ़ायदेमन्द न होगा। उस वक़्त ना-फ़रमान लोग कहेंगेः—

سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ۝

(हम सबके हक़ में बराबर है चाहे हम परेशान हों चाहे सब्र करें, हमारे लिए कोई ठिकाना नहीं) फिर अहले जहन्नम, जहन्नम के दारोग़ा (मालिक) से कहेंगे, ऐ मालिक! अपने रब से कह दे कि हमको मौत ही दे दे। तो मालिक-ए-दोज़ख़ उनको 80 साल तक कोई जवाब न देगा। इन 80 सालों में का हर साल 360 दिन का होगा, मगर हर एक दिन 1000 साल का होगा यानी हमारे 1000 साल के बराबर एक दिन होगा। (तफ़सीरे मज़्हरी, हिस्सा 6, पेज 296, पारा 13)

सवालः— कुफ़्फ़ार जब जहन्नम में डाल दिए जाएंगे, तो उनके दोनों मोंढों के दर्मियान कितना फ़ासला हो जाएगा?

जवाबः— कुफ़्फ़ार का बदन आग से फूलकर इतना बढ़ जाएगा कि काफ़िर के एक मोंढे से दूसरे मोढें तक इतना फ़ासला हो जाएगा कि तेज़ रफ़्तार घोड़ा तीन दिन में इतना रास्ता तय करता है। दूसरी रिवायत में पांच दिन चलने के बराबर फ़ासले का ज़िक्र है। तीसरी रिवायत में है कि अहले जहन्नम के एक कान की लौ से मोंढें तक 700 साल की दूरी के बराबर दूरी होगी और एक रिवायत में सात ख़रीफ़ यानी फ़स्लों और मौसमों का ज़िक्र है।

(तफ़्सीरे मज़्हरी, हिस्सा 3, पेज 90, पारा 5)

सवालः— जहन्नमियों की खाल और दाढ़ की मोटाई कितनी हो जाएगी?

जवाबः— हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि खाल की मोटाई तीन दिन की दूरी के बराबर होगी। एक दूसरी रिवायत में 42 हाथ के बराबर, तीसरी रिवायत में है कि 70 हाथ के बराबर मोटाई होगी और अहले जहन्नम की दाढ़ उहुद पहाड़ से भी मोटी हो जाएगी।

(तफ़्सीरे मज़्हरी, हिस्सा 3, पेज 99, पारा 5)

क़ुर्बे क़ियामत में ज़मीन से निकलने वाले दाब्बः (जानवर) से मुताल्लिक़ बातें

सवालः— उस जानवर का नाम व काम क्या होगा?

जवाबः— उस जानवर का नाम जस्सासा होगा। उसका काम यह होगा कि उसके दाहिने हात में हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम का अ़सा होगा और बाएं हाथ में हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम की अंगूठी होगी। अ़सा के ज़रिए वह मोमिन की पेशानी पर सफ़ेद निशान लगाएगा, जिससे मोमिन का चेहरा चमकता होगा और काफ़िर की नाक पर एक स्याह नुक़्ता लगाएगा जिससे उस काफ़िर का चेहरा स्याह हो जाएगा। दूसरी रिवायत में है कि मोमिन की पेशानी पर लिख देगा **'हु-व मोमिन'** और काफ़िर की पेशानी पर लिख देगा **'हु-व काफ़िर'**। इसके बाद कहेगाः ऐ फ़ुलां! तू जन्नती है! ऐ फ़ुलां! तू दोज़ख़ी है। यह जानवर लोगों से बातचीत करेगा। (बैज़ावी व रुहुल ब्यान, हाशिया जलालैन शरीफ़, पेज 324)

सवालः— उस जानवर का क़द कितना होगा और वह कहाँ से निकलेगा?

जवाबः— उसका क़द 60 हाथ होगा। दूसरा क़ौल हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर का यह है कि उसका सर बादल में लग रहा होगा और पैर ज़मीन पर होंगे। (ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 420)

यह जानवर कहाँ से निकलेगा, इस सिलसिले में रिवायतों में इख़्तिलाफ़ बहुत ज़्यादा है।

1. मस्जिदे हराम से निकलेगा, 2. सफ़ा पहाड़ी से निकलेगा।

3. यमन के आख़िरी हिस्से से निकलेगा। इसका ज़िक्र आस-पास के इलाक़ों, गावों और देहातों में फैल जाएगा, मगर मक्का में उसका ज़िक्र यमन से निकलने से नहीं होगा।

यह जानवर यहां लम्बे अ़र्से तक ठहरेगा। फिर दूसरी बार मक्का के क़रीब से निकलेगा, उसका ज़िक्र क़रीब-क़रीब के इलाक़ों में फैल जाएगा, यहां तक कि मक्का में भी उसका चर्चा होगा और एक रिवायत में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से मालूम किया कि यह दाब्बः कहां से निकलेगा? आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मस्जिदे हराम से निकलेगा। उस वक़्त जबकि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम

मुसलमानों के साथ ख़ाना-ए-कअ्बा का तवाफ़ कर रहे होंगे। अचानक ज़मीन हिलेगी और सफ़ा पहाड़ी फटेगी, यह जानवर उस पहाड़ी से नमूदार होगा। पहले उसका सर निकलेगा और उसके सर पर बाल होंगे।

(तफ़्सीरे ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 420)

सवालः— इस जावनर की सूरत-शक्ल क्या होगी और यह किस दिन निकलेगा?

जवाबः— हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उसका हुलिया यह होगा कि सर बैल के सर जैसा, आँखें ख़िंज़ीर की आँखों की तरह, कान हाथी के कानों की तरह, सींग बारह सिंघा हिरन के सींगों जैसे, सीना शेर के सीने की तरह, रंग चीते के रंग की तरह, कोख बिल्ली की कोख की तरह, दुम (पूंछ) मेंढे की दुम की तरह, पैर ऊंट के पांव जैसे होंगे और उसके बदन के अंगों के जोड़ों के दर्मियान बारह-बारह हाथ का फ़ासला होगा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि उस जानवर के दुम तो न होगी अलबत्ता उसके मुँह पर दाढ़ी होगी और यह दाब्बः जुमे की रात में निकलेगा।

(तफ़्सीरे ख़ाज़िन, हिस्सा 3, पेज 420)

सवालः— यह जानवर पैदा हो चुका है या जिस दिन निकलेगा उसी दिन पैदा होगा?

जवाबः— एक क़ौल तो यह है कि उसी दिन पैदा होगा, दूसरा क़ौल यह है कि पैदा हो चुका। चुनांचे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने एहराम की हालत में अपना असा सफ़ा पहाड़ी पर मारा और फ़रमाया कि इस लाठी की खटखटाहट की आवाज़ दाब्बः सुन रहा है। जो लोग दाब्बः अज़्दहा को बताते हैं या जस्सासा को, उनके नज़्दीक भी यह पैदा हो चुका है। कुछ तो कहते हैं कि पिछले नबियों के ज़माने में पैदा हो चुका। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से दाब्बः को देखने की दरख़्वासत की थी, जिस पर यह दाब्बः निकलना शुरू हुआ। तीन दिन, तीन रात तक निकलता रहा, आसमान तक बुलन्द होता रहा। उसके ऊपर का किनारा नज़र न आता था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम यह मन्ज़र देखकर घबरा गए और अल्लाह से उसको लौटाने की दरख़्वास्त की। अल्लाह ने उसको लौटा दिया।

(रुहुल मआनी, हिस्सा 20, पेज 23)

मुतफ़र्रिक़ात

सवालः— नेक लोगों के आमाल किस तख़्ती में लिखे जाते हैं और वह किस रंग की है? किस आसमान पर है?

जवाबः— अ़र्श के नीचे सातवें आसमान से ऊपर हरे रंग के ज़बरजद पत्थर की एक तख़्ती है, जिसमें नेक लोगों के आमाल लिखे जाते हैं, उसका नाम इ़ल्लियीन है।(तन्वीरुल मिक़्यास, तफ़्सीरे इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु, पेज 384, पारा 30)

सवालः— काफ़िरों, नाफ़रमानों, गुनहगारों के आमाल किस चीज़ में लिखे जाते हैं, उसका रंग कैसा है और वह कहां है?

जवाबः— सातवीं ज़मीन के नीचे हरे रंग की चट्टान है, उसमें बुरे लोगों के आमाल लिखे जाते हैं, उसी का नाम सिज्जीन है।

(तन्वीरुल मिक़्यास, तफ़्सीर इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु, पेज 383)

सवालः— अ़र्शे ख़ुदावन्दी की क़न्नातों की तादाद क्या है?

जवाबः— अ़र्शे ख़ुदावन्दी के सुरादक़ात (क़न्नातों) की तादाद 6 हज़ार है।

(रुहुल ब्यान, पेज 92)

सवालः— हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब ने कितनी उ़म्र में वफ़ात पाई? उस वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उ़म्र क्या थी?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दादा हज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब ने कुछ लोगों के क़ौल के मुताबिक़ 82 साल की उ़म्र में वफ़ात पाई। दूसरा क़ौल 110 का और तीसरा क़ौल 120 साल का है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम उस वक़्त आठ साल के थे। सीरत लिखने वाले कुछ उलमा ने लिखा है कि दादा की वफ़ात के वक़्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की उ़म्र 8 साल दो माह दस यौम (दिन) की थी।

(उयूनुल अ़स्र फ़ी फ़ुनूनिल मग़ाज़ी वश-शमाइल वस्सियर, हिस्सा 1 पेज 77)

सवालः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के वालिदे मोह्तरम हज़रत अ़ब्दुल्लाह की जब हज़रत आमिना से शादी हुई तो हज़रत आमिना पहली बार कितने दिन हज़रत अ़ब्दुल्लाह के पास रहीं और हज़रत अ़ब्दुल्लाह की उ़म्र उस वक़्त क्या थी?

जवाबः— उस ज़माने का दस्तूर था कि जब किसी की शादी होती तो

अहलिया (बीवी) शौहर के पास पहली बार तीन दिन रहती थी, फिर अपने माँ-बाप के यहां चली जाया करती थी। उसी दस्तूर के मुवाफ़िक़ हज़रत आमिना हज़रत अ़ब्दुल्लाह के पास रुख़्सती के बाद तीन दिन रहीं। उस वक़्त हज़रत अ़ब्दुल्लाह की उम्र 30 साल थी। कुछ उ़लमा ने 20 साल और कुछ ने 28 साल ब्यान की है। (उयूनुल अस्र फी फुनूलिल मग़ाज़ी वशशमाइल वस्सियर, पेज 77)

सवालः– क्या आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से रमज़ानुल मुबारक में तरावीह की वित्र नमाज़ के अ़लावा 20 रकअ़तें पढ़ना साबित है?

जवाबः– हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम रमज़ान में तरावीह की वित्र के अ़लावा 20 रकअ़तें पढ़ते थे। मगर इस हदीस में उस्मान बिन अबी शैबा रावी ज़ईफ़ हैं, लेकिन इस रिवायत को हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के फ़ेल और इज्माए सहाबा से तक़्वियत मिल जाती है और हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने तरावीह की 20 रकअ़तों पर सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को एक इमाम की इक़्तिदा में इसलिए जमा किया था कि वे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में पढ़ी जाती थीं। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से 20 रकअ़तें साबित न होतीं तो हज़रत उ़मर रज़ियल्लाहु अ़न्हु शैदाई-ए-रसूल होते हुए ऐसा हुक्म न देते।

(फ़तावा महमूदिया, हिस्सा 13, पेज 76, बहवाला नस्बुर्राया, हिस्सा 2, पेज 153 व फ़तावा महमूदिया, हिस्सा 13, पेज 96)

सवालः– ज़माना-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में उस्ताज़ (मुअ़ल्लिम) को किस नाम से याद किया जाता था?

जवाबः– ज़माना-ए-नबवी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम में उस्ताज़ व मुअ़ल्लिम को मुक़री के नाम से पहचाना जाता था, क्योंकि हज़रत मुस्अ़ब बिन उ़मैर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मदीना में मुअ़ल्लिम बनाकर भेजा तो उन्होंने मदीने में इस्लाम की तब्लीग़ शुरू की तो मदीना में हज़रत मुस्अ़ब को मुक़री (पढ़ाने वाला) के ख़िताब से याद किया जाता था।

(अर्रहीक़ुल मख़्तूम, पेज 250)

सवालः– ख़लीफ़ा मन्सूर की ख़िलाफ़त कितने साल रही और उनकी वफ़ात कहां हुई?

जवाबः– ख़लीफ़ा मन्सूर की ख़िलाफ़त व हुकूमत 21 साल 11 महीने और

14 दिन रही और वफ़ात बिरे मैमून में हुई। (शज़रातुज़्ज़हब, हिस्सा 1, पेज 244)

सवालः– हवाओं की कितनी क़िस्में हैं और किस हवा का नाम और काम क्या है?

जवाबः– हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हवा और पानी अल्लाह के बड़े लश्करों में से हैं। क़ाज़ी जुरैज फ़रमाते हैं कि जो भी हवा चलती है या तो किसी बीमारी से शिफ़ा देती है या किसी बीमारी को लाती है। कुछ हज़रात फ़रमाते हैं कि तीन हवाओं में बशारत है।

1. हवा-ए-सबा, 2. हवा-ए-शिमाल, 3. हवा-ए-जुनूब। अलबत्ता हवा-ए-दबूर जो कि अ़क़ीम भी है, अक़मियत (बांझ होने) की वजह से इसमें कोई बशारत नहीं। दूसरा क़ौल यह है कि हवाओं की आठ क़िस्में हैं, जिनमें से चार रहमत के लिए ख़ास हैं और चार अ़ज़ाब के लिए। रहमत वाली हवाएं ये हैंः

1. अल्-मुबश्शिरात, 2. अन्-नाशिरात, 3. अज़्-ज़ारियात, अल्-मुरसलात और चार अ़ज़ाब वाली हवाएं ये हैंः

1. अ़क़ीम, 2. सर-सर, ये दोनों ख़ुश्की की हवा कहलाती हैं, 3. क़ासिफ़, 4. आ़सिफ़। ये दोनों हवाएं दरियाई कहलाती हैं।

(तफ़सीरे जुमल, हिस्सा 1, पेज 131, अद्दुर्रुल-मन्सूर फ़ित्तफ़्सीरिल मासूर, हिस्सा 7, पेज 303)

सवालः– किस हवा की तबीअ़त व ख़ासियत कैसी है?

जवाबः– तबीबों (हकीमों) ने इन आठों हवाओं की तबीअ़तें ब्यान की हैंः

1. चुनांचे सबा हवा की ख़ासियत यह है कि वह हरारत (गर्मी) और ख़ुश्की पैदा करती है। अहले मिस्र इस हवा को मश्रिक़ की तरफ़ से चलने की वजह से शरक़िया कहते हैं। इसी का नाम क़िब्ला की तरफ़ चलने की वजह से क़बूला भी है।

2. दबूर हवा की ख़ासियत यह है कि यह ठंडक और रतूबत पैदा करती है। अहले मग़्रिब इसको मग़्रिब की तरफ़ से चलने की वजह से ग़रबिया कहते हैं और यह हवा कअ़्बा के पीछे की तरफ़ से आती है। इन दोनों को पुरवा और पछवा हवा कहते हैं।

3. हवा-ए-शिमाल की ख़ासियत यह है कि यह बुरुदत यानी ठंडक और यबूसत यानी ख़ुश्की लाती है। इसको समुद्रों में चलने की वजह से बहरिया कहते हैं।

4. हवा-ए-जुनूबी की ख़ासियत यह है कि यह हरारत (गर्मी) पैदा करती है।

(अल्-फ़ुतुहातुल इलाहिया अल्-मुश्तहर बिल जुमल, हिस्सा 1, पेज 131)

सवालः– फ़िरऔन के ग़र्क़ हो जाने के बाद मिस्र पर किसकी कितने साल हुकूमत रही?

जवाबः– फ़िरऔन के नील नदी में डूब जाने के बाद मिस्र पर शाही ख़ानदान की दलूका नामी औरत हाकिम बनी, जिसने मिस्र पर 20 साल हुकूमत की।

(तारीख़े इब्ने ख़लदून, हिस्सा 1, पेज 159)

सवालः– बख़्ते नस्सर बादशाह को किस लक़ब से याद किया जाता था?

जवाबः– बख़्ते नस्सर बादशाह को शाहे बाबिल के लक़ब से याद किया जाता था।

(रौज़ुल-उनुफ़, हिस्सा 1, पेज 68)

सवालः– बख़्ते नस्सर बादशाह और उसकी क़ौम किसको पूजते थे?

जवाबः– बख़्ते नस्सर बादशाह और उसकी क़ौम सूरज की पूजा करते थे।

सवालः– शहर उन्दुलुस और स्पेन की वज्हे तस्मिया (नाम रखने की वजह) क्या है?

जवाबः– तारीख़ लिखने वालों ने लिखा है कि तूफ़ाने नूह अलैहिस्सलाम के बाद इस ख़ित्ते (जगह) में जो क़ौम आबाद हुई उसका नाम उन्दुलुश था। अरबों ने 'श' को 'स' से बदल कर इस पूरे इलाक़े का नाम उन्दुलुस रख दिया। बाद में यहां एक रूमी बादशाह की हुकूमत हुई, जिसका नाम इस्तिबान था, उसी ने यहां एक शहर आबाद किया, जिसका नाम अशबीला था। बाद में उसी शहर अशबीला को अशबानिया कहा जाने लगा, फिर धीरे-धीरे यह नाम पूरे मुल्क के लिए बोला जाने लगा। इसी का बिगड़ा हुआ और बदला हुआ नाम हस्पानिया है और इसी को स्पेन भी कहा जाता है। (उन्दुलुस में कुछ दिन, बहवाला नफ़हुत्तीब)

सवालः– सिद्रतुल-मुन्तहा से कितने चश्में और नहरें जारी हुईं?

जवाबः– एक चश्मा जिसका नाम सलसबील है और दो नहरें: 1. नहरे कौसर और 2. नहरे रहमत। ये तीनों सिद्रतुल-मुन्तहा से जारी हुई हैं।

सवालः– सिद्रतुल-मुन्तहा किस चीज़ का पेड़ है और किस आसमान पर है?

जवाबः– सिदरः अ़रबी ज़बान में बेरी के पेड़ को कहते हैं और मुन्तहा के मअ़्ना हैं इन्तिहा की जगह। सातवें आसमान पर अ़र्शे रहमान के नीचे बेरी का

पेड़ है और मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में इसको छठे आसमान पर बतलाया है। दोनों रिवायतों में मेल इस तरह किया जा सकता है कि इसकी जड़ छठे आसमान पर और शाख़ें सातवें आसमान पर फैली हुई हैं।

(मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 8, पेज 200, बहवाला क़रतबी)

सवालः— जन्नत और जहन्नम कहां हैं?

जवाबः— अल्लाह का फ़रमान है:

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ○

जिससे पता चलता है कि जन्नत सातवें आसमान के ऊपर और अ़र्शे रहमान के नीचे है। गोया सातवां आसमान जन्नत की ज़मीन और अर्शे रहमान उसकी छत है और दोज़ख़ का महल्ल-ए-वुक़ूअ़ किसी आयते क़ुरआन या रिवायते हदीस में खुलकर ज़िक्र नहीं किया गया। अलबत्ता सूरः तूर की आयत 'वल्-बहरिल मस्जूर' से कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने यह मतलब निकाला है कि दोज़ख़ समुद्र के नीचे ज़मीन के क़ार (गहराई) में है जिस पर इस वक़्त कोई भारी और सख़्त ग़िलाफ़ चढ़ा हुआ है जो क़ियामत में फट जाएगा और उसकी आग फैलकर पूरे समुद्र को आग में तब्दील कर देगी।

(मआरिफ़ुल क़ुरआन, हिस्सा 8, पेज 200)

सवालः— वे कौन-सी चीज़ें हैं जिनको अल्लाह ने अपने हाथ से पैदा किया?

जवाबः— 1. हदीस शरीफ़ में आता है कि अल्लाह ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को अपने मुबारक हाथ से पैदा किया।

2. तौरात शरीफ़ को अपने हाथ से पैदा किया, यानी लिखा।

3. तूबा दरख़्त (पेड़) को अपने हाथ से पैदा किया, यानी लगाया।

(तफ़्सीरे बग़वी, हिस्सा 9, पेज 199, पारा 8)

सवालः— वे सात चीज़ें कौन-सी हैं जिनका बदला बन्दे को मरने के बाद भी मिलता रहता है?

जवाबः— इब्ने माजा ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अ़न्हु से मरफ़ूअ़न रिवायत किया है कि सात चीज़ें ऐसी हैं, जिनका सवाब बन्दे को उसकी मौत के बाद क़ब्र में भी मिलता है।

1. जिसने इल्मे दीन सीखा हो।

2. जिसने कोई नहर खुदवाई हो या जारी की हो।

3. जिसने आम फ़ायदे के लिए कोई कुंवा खुदवाया हो।

4. जिसने अवाम (जनता) के फ़ायदे के लिए कोई फलदार पेड़ लगवाया हो।

5. जिसने कोई मस्जिद बनवाई हो।

6. जिसने कोई औलाद ऐसी नेक छोड़ी हो जो उसकी मौत के बाद उसके लिए मग़्फ़िरत की दुआ करती रहे।

7. जिसने अपने तर्के यानी मीरास में मुस्हफ़ यानी क़ुरआन पाक छोड़ा हो।

(अल्-इत्क़ान फ़ी उ़लूमिल क़ुरआन, हिस्सा 2, पेज 424)

सवालः— किस नबी की क़ौम को अल्लाह ने सनीचर (हफ़्ते) के दिन मछली पकड़ने की वजह से अ़ज़ाब दिया? और वे लोग किस गांव में रहते थे?

जवाबः— हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम ने ख़ुदा के हुक्म से यह इरादा किया कि अपनी क़ौम के लिए एक दिन ऐसा तय कर दिया जाए जिसमें क़ौम ख़ालिस (सिर्फ़) अल्लाह की इबादत करे। आपने क़ौम के सामने जुमा का दिन पेश किया। क़ौम ने अल्लाह की इबादत के लिए जुमा का दिन मुन्तख़ब (चुनना) करने के बजाए सनीचर का दिन मुन्तख़ब किया, इस वजह से कि उस दिन अल्लाह ने कोई चीज़ नहीं पैदा की। उनमें से कुछ लोग तो क़स्बा एला में रहते थे। हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम के ज़माने में उन्होंने शैतानी बहकावे से सनीचर के दिन मछलियां पकड़नी शुरू कर दीं। अल्लाह के नबी ने उनको मना किया था कि सनीचर के दिन ख़ास अल्लाह की इबादत का है, ये लोग बाज़ नहीं आए तो अल्लाह ने नाफ़रमानी की वजह से क़स्बा एला वालों की सूरतों को बिगाड़ डाला। (तफ़्सीर बैज़ावी, पेज 80, पारा 1)

सवालः— वे तीन चीज़ें कौन-कौन सी हैं कि वे अगर मोमिन के अन्दर हों तो ईमान की मिठास नसीब हो जाए?

जवाबः— वे तीन चीज़ें ये हैं:

1. अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तमाम चीज़ों से ज़्यादा महबूब जाने।

2. जिससे इन्सान मुहब्बत करे, तो अल्लाह के लिए करे।

3. कुफ़्र की तरफ़ जाने को इतना बुरा जाने, जैसा कि आग में डाले जाने को बुरा जानता है। (अस्सिराजुल मुनीर, शरह जामिउ़स्सग़ीर, हिस्सा 3, पेज 45)

सवालः— बैअ़त किसको कहते हैं और बैअ़त की कितनी क़िस्में हैं और किस वक़्त किससे कौन-सी बैअ़त हुई?

जवाबः— बैअ़त[1] के मअ़ना इताअ़त का मुआहदा (समझौता) है और इस्तिलाह में किसी बुज़ुर्ग के हाथ पर गुनाहों से तौबा करने और शरीअ़त की पाबन्दी के समझौते का नाम है और बैअ़त की चार क़िस्में हैं:

1. बैअ़ते इस्लाम, 2. बैअ़ते जिहाद, 3. बैअ़ते ख़िलाफ़त, 4. बैअ़ते तरीक़त।

- बैअ़ते इस्लाम सहाबा ने की।
- बैअ़ते जिहाद हुदैबिया के मौक़े पर डेढ़ हज़ार सहाबा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के हाथ पर की।
- बैअ़ते ख़िलाफ़त सहाबा ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अ़न्हु के हाथ पर की।
- बैअ़ते तरीक़त क़ुरआनी आयत **'या अयुहन्नबिय्यु इज़ा जा-अ-कल मोमिनातु युबा यिअ़्न-क'** (पारा 28) से और हज़रत उ़बादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अ़न्हु की हदीस से साबित है जो मिश्कात, हिस्सा 1, पेज 13 पर मौजूद है।

(तोहफ़तुल मिरअति फ़ी दुरूसिल मिश्कात, पेज 121)

सवालः— एक वस्क़ का वज़न कितना होता है?

जवाबः— एक वस्क़ का वज़न इतना होता है कि जितना वज़न (बोझ) एक ऊंट आसानी से उठा सके। (सीरतुन्-नबी, हिस्सा 5, पेज 226)

सवालः— बकरी, गाय, भैंस और ऊंटनी के हमल की मुद्दत क्या होती है?

जवाबः— बकरी के हमल की मुद्दत 6 माह है, गाय की 9 माह, भैंस के हमल की मुद्दत 12 महीने और ऊंटनी की 11 महीने है। (ऊपर का हवाला)

सवालः— अ़रब के क़बीलों की कितनी क़िस्में हैं?

जवाबः— इब्ने देहया कहते हैं कि अ़रब के क़बीलों की तीन क़िस्में हैं:

1. अ़रब आ़रबा: 2. अ़रब मुतअ़र्रबा, 3. अ़रब मुस्तारबा, अ़रब आरबा ख़ालिस अ़रब हैं जिनके 9 क़बीले हैं जो सब इरम बिन साम बिन नूह की

---

1. बैअ़त "बैअ़" (ख़रीदना-बेचना) की तरह है। जिस तरह बैअ़ में क़ीमत बेची गई चीज़ का बदला होती है, उसी तरह बैअ़त में सवाब इताअ़त का बदला होता है, जैसा कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है: 'बेशक अल्लाह ने ईमान वालों की जान और उनका माल जन्नत के बदले में ख़रीद लिया है'।

औलाद में से हैं और इन 9 क़बीलों के नाम ये हैं:

1. आद, 2. समूद, 3. उमैम, 4. उबील, 5. तस्म, 6. जदलिश, 7. अमलीक़, 8. जुरहुम, 9. दबार। अरब मुतअर्रबा और मुस्तारबा, इन दोनों क़िस्मों के लोग ख़ालिस अरब नहीं, बल्कि दूसरी क़ौमों के इम्तिज़ाज व मिलावट से ये अरब कहलाने लगे। चुनांचे अरब बुतअर्रबा ये क़हतान की औलाद हैं, जिनकी असल ज़बान सुरयानी थी। बाद में इन लोगों ने बनू-इस्माईल से अरबी सीखी और अरब मुस्तारबा वे अरब हिजाज़ हैं जो इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद हैं। इनकी औलाद को अरब मुस्तारबा कहा जाता है। (अल्-मुन्जिद फ़िल्लुग़त, पेज 12)

सवाल:— पहाड़ों की कुल तादाद क्या है? और अल्लाह ने सबसे पहले किस पहाड़ को पैदा किया?

जवाब:— पहाड़ों की कुल तादाद 6670 है। अल्लाह ने सबसे पहले जबल -ए-अबी क़ुबैस को पैदा किया। इसके बाद दूसरे पहाड़ों को पैदा फ़रमाया।

(रुहुल बयान, हिस्सा 8, पेज 232)

सवाल:— दुनिया में वह कौन-सी जगह है जो जन्नत से आई फिर जन्नत में उठा ली जायेगी।

जवाब:— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी क़ब्र और मेरे मिम्बर के बीच की जगह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुबारक हुजरे और मिम्बर शरीफ़ के दर्मियान की जगह हक़ीक़त में जन्नत के बाग़ों में की एक क्यारी है और क़ियामत के दिन वह जगह फ़िर्दौसे आला में मुन्तक़िल हो जाएगी और यह जगह ज़मीन की दूसरी जगहों की तरह फ़ना और हलाक न होगी।

(मदारिजुन्नुबुव्वः क़िस्त नम्बर 9, पेज 116)

सवाल:— शहर ताइफ़ पहले किस मुल्क में था और मक्का के क़रीब किसने क्यों बसाया और उसको ताइफ़ क्यों कहते हैं?

जवाब:— रिवायत में आया है कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलम ने दुआ की, जिसका ज़िक्र क़ुरआन ने इन लफ़्ज़ों के साथ किया है:

وَارْزُقْ اَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرٰتِ

(ऐ अल्लाह! मक्का वालों को फलों से रिज़्क़ अता फ़रमा)

तो अल्लाह तआला ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम को हुक्म दिया कि वह मुल्के शाम या उर्दुन (जॉर्डन) से ताइफ़ बस्ती को ज़मीन समेत उखाड़ कर मक्का के क़रीब ले जाकर बसा दे। चुनांचे आपने ऐसा ही किया। ताइफ़ को फ़लस्तीन या उर्दुन से उखाड़ा और बैतुल्लाह के सात चक्कर लगाकर फिर मक्का से तीन मील की दूरी पर ले जाकर बसा दिया तो शहर ताइफ़ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ का नतीजा है। इसमें पहले बिल्कुल बंजर ज़मीन थी। अल्लाह ने ताइफ़ की ज़मीन को फलों से भर दिया और चूंकि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने उसको उखाड़कर बैतुल्लाह के सात चक्कर लगाये थे, इसलिए इस शहर को ताइफ़ कहते हैं। (ताइफ़ के मअ़्ना हैं, तवाफ़ करने वाला, यानी चक्कर लगाने वाला) (रूहुल मआ़नी, हिस्सा 1, पेज 382)

सवालः— मस्जिदे ज़िरार किसके इशारे व मशवरे से कितने लोगों ने किस सन्ः में बनाई?

जवाबः— मस्जिदे ज़िरार अबू आमिर फ़ासिक़ व मुनाफ़िक़ के मशवरे व हुक्म से 12 लोगों ने सन्ः 07 हिज्री में तामरी की। इन 12 मुनाफ़िक़ों के नाम ये हैंः

1. जुज़ाम[1] बिन ख़ालिद, 2. सालबा[2] बिन हातिब, 3. मोतब बिन क़ुशैर बिन ज़ैद बिन गत्ताफ़, 4. अबू हबीबह बिन अज़्अर बिन ज़ैद बिन अ़त्ताफ़, 5. उबादा बिन हुनैफ़, 6. जारिया बिन आमिर, 7. मुजम्मा बिन जारिया, 8. ज़ैद बिन जारिया, 9. नीतल बिन हारिस, 10. बख़्रज, 11. बजाद बिन उस्मान, 12. वदीआ़ बिन साबित। (असहहुस्सियर, पेज 335)

सवालः— मस्जिदे ज़िरार किस के हुक्म से कब ढाई गई?

जवाबः— आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब तबूक की लड़ाई से वापस तशरीफ़ लाए तो आपने मालिक बिन दख़्शम (जो कि बनू सलमा बिन औफ़ के एक बुज़ुर्ग थे) और मान बिन अ़दी अ़जूलानी को बुलवाया और हुक्म दिया कि जाओ और उन ज़ालिमों की मस्जिद को गिरा कर जला दो। ये दोनों तेज़ी से रवाना हुए। जब बनी सालिम बिन औफ़ में आए तो मालिक बिन दख़्शम ने कहाः ठहरो! मैं अपने घर से आग लेकर आता हूँ, क्योंकि इसी क़बीले में उनका मकान था। यह गये और एक पेड़ की डाली जलाकर लाए, फिर ये दोनों मिलकर मस्जिदे ज़िरार में गये और उसको गिराकर मिट्टी में मिला

1. यह ख़ुन्सा का वालिद (बाप) है।
2. एक सालबा बिन हातिब बद्री सहाबी हैं जो उहुद की लड़ाई में शहीद हुए।

दिया। (असहहुस्सियर, पेज 336)

सवालः– मुक़ाम-ए-'मुहस्सब' किस जगह वाक़ेअ् है?

जवाबः– मुहस्सब[1], यह उस जगह का नाम है जो मिना की दो पहाड़ियों के दर्मियान वाक़ेअ् है। इस मुक़ाम को ख़ैफ़ बनी कनाना और अब्तह व बत्हा के नाम से भी याद किया जाता है।

(हाशिया शरह मआनिल आसार, मुतर्जम उर्दू, हिस्सा 2, पेज 176)

सवालः– जुह्फ़ा किस जगह का नाम है और मक्का से कितनी दूरी पर वाक़ेअ् है?

जवाबः– यह एक गांव का नाम है जो मक्का से पाँच-छः मंज़िल के फ़ासले पर वाक़ेअ् है। अ़ल्लामा अबुत्तय्यिब हनफ़ी शारेह तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं, पहले उस मुक़ाम का नाम मईआ़ था। एक बार पानी की बाढ़ इतनी आई कि बस्ती के लोगों को बहा ले गई, जब से उस जगह का नाम जुह्फ़ा पड़ गया। मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अब उस मुक़ाम का नाम रातेअ् है।

(हाशिया शरह मआनिल आसार, मुतर्जम, उर्दू, हिस्सा 2, पेज 170)

सवालः– यलमलम मक्का से कितनी दूरी पर वाक़ेअ् है?

जवाबः– यह एक पहाड़ का नाम है जो मक्का से दो मंज़िल के फ़ासले पर वाक़ेअ् है। अ़ल्लामा अबू तय्यिब शारेह तिर्मिज़ी और अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती तालीक़ुल मुज्तबा में फ़रमाते हैं कि उसे अलमलम भी कहते हैं क्योंकि असल में यह 'अ' के साथ है। इस्तेमाल की ज़्यादती की वजह से यह 'य' के साथ बोला जाने लगा। और कुछ लोगों ने यलमलम के बजाए यरमरम भी नक़ल किया है, "मिस्बाहुल मुनीर" में है कि 'यलमलम' अगरचे पहाड़ का नाम है लेकिन ज़्यादातर इसका इस्तेमाल उस मैदान पर होता है जो यलमलम के सामने वाक़ेअ् है। (ऊपर का हवाला)

सवालः– क़र्न किस जगह का नाम है? मक्का से किस तरफ़ कितनी दूरी पर है?

जवाबः– अ़ल्लामा इब्ने असीर बिदायः में फ़रमाते हैं कि इस जगह को क़र्नुल-मनाज़िल और क़र्नुस्सआलिब भी कहते हैं, क्योंकि यह सख़्त अंडे की शक्ल का गोल एक पहाड़ है। अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती फ़रमाते हैं कि यह

1. मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि इस जगह कुफ़्फ़ार ने जमा होकर आपको नुक़सान पहुंचाने का हलफ़ उठाया था।

पहाड़ मक्का से मश्रिक़ की तरफ़ दो मंज़िल के फ़ासले पर वाक़ेअ है।

(हाशिया शरह मआनिल आसार, मुतर्जम उर्दू, हिस्सा 2, पेज 170)

सवालः— ज़ुल-हुलैफ़ा किस जगह वाक़ेअ् है?

जवाबः— इमाम नववी शरह मुस्लिम में फ़रमाते हैं कि यह मुक़ाम मदीना से 6 मील के फ़ासले पर वाक़ेअ् है। अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि यह जगह हाजियों की उन सब जगहों से दूर है जहां से हाजी लोग एहराम बांधते हैं। मुल्ला अ़ली क़ारी रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि आजकल यह मुक़ाम **बि'रे अ़ली** के नाम से मश्हूर है।

(हाशिया शरह मआनिल आसार, मुतर्जम उर्दू, हिस्सा 2, पेज 170)

सवालः— ज़ाते इर्क़ मक्का से कितनी दूर है?

जवाबः— यह एक छोटे से पहाड़ का नाम है और मक्का से दो मंज़िल के फ़ासले पर वाक़ेअ् है। यही पहाड़ तिहामा और नज्द के दर्मियान की सरहद है। यहां की ज़मीन शोरीली है और सिवाए झाऊ के पेड़ के और कुछ इसमें पैदावार नहीं होती। (हाशिया शरह मआनिल आसार, मुतर्जम उर्दू, हिस्सा 2, पेज 170)

सवालः— बक़रा-ईद की नमाज़ किन लोगों पर वाजिब नहीं?

जवाबः— बक़रा-ईद की नमाज़ उन हाजी लोगों पर वाजिब नहीं, जो बक़रा-ईद के दिन मिना व अरफ़ात में रहते हुए हज के कामों के अन्दर मश्गूल रहते हैं। (शामी बहवाला मब्सूत, फ़ज़ाइलुल अय्याम वश्शुहूर, पेज 296)

सवालः— सूर किस चीज़ का है?

जवाबः— अबुश्शैख़ किताबुल अ़ज़्मः में हज़रत वहब बिन मुनब्बह के तरीक़ से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआ़ला ने सूर को सफ़ेद मोती से जो आईने की तरह चमकदार साफ़-शफ़्फ़ाफ़ है, पैदा किया। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 367)

सवालः— अब्रहा बादशाह की हुकूमत कितने साल रही?

जवाबः— अब्रहा बादशाह की हुकूमत 183 साल रही।

(रूहुल ब्यान, हिस्सा 8, पेज 419)

सवालः— आ़लमे अरवाह में रूहों की कितनी सफ़ें थीं?

जवाबः— अ़ह्दे अलस्तु में (यानी जिस वक़्त अल्लाह ने हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पुश्त पर हाथ मारकर क़ियामत तक आने वाले तमाम इन्सानों की रुहें निकाली थीं, तो) उन रूहों की चार सफ़ें थीं।

पहली सफ़ में नबियों और रसूलों की रूहें थीं।

दूसरी सफ़ में औलिया और अस्फ़िया की रूहें थीं।

तीसरी सफ़ में मोमिनीन मुस्लिमीन की रूहें थीं।

चौथी सफ़ में कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन की रूहें थीं।

(हाशिया जलालैन शरीफ़, पेज 273, पारा 29)

सवालः— क़ुरआन पाक की तिलावत किन-किन फ़रिश्तों ने की?

जवाबः— क़ुरआन पाक की तिलावत का ऐज़ाज़ कुछ फ़रिश्तों को मिला, जिनमें से 1. हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम, 2. हज़रत मीकाईल अ़लैहिस्सलाम, 3. हज़रत इस्राफ़ील अ़लैहिस्सलाम, 4. और इनके अ़लावा 'मलाइका सफ़रा' जैसा कि अल्लाह ने फ़रमायाः

بِاَیْدِیْ سَفَرَةٍ ۙ كِرَامٍ ۭ بَرَرَةٍ

'बि अयदी स-फ़-रतिन किरामिम ब र रः' (हाशिया जलालैन, पेज 373, पारा 30)

सवालः— नाफ़रमानी की वजह से अल्लाह ने फ़िरऔ़नियों पर कितनी क़िस्म का अ़ज़ाब भेजा?

जवाबः— नाफ़रमानी की वजह से अल्लाह ने फ़िरऔ़नियों पर सात क़िस्म का अ़ज़ाब भेजाः

1. टिड्डियों का अ़ज़ाब, जिन्होंने खेतियों को ख़राब कर दिया।

2. जुओं का अ़ज़ाब।

3. मेंढकों का अ़ज़ाब कि हर जगह मेंढक नज़र आते थे, यहां तक कि हांडी में, पीने के पानी में।

4. ख़ून का अ़ज़ाब, यहां तक कि पीने का पानी ख़ून बन जाता था। कुछ फ़िरऔ़नी लोग बनी इस्राईल के किसी आदमी को कहते कि तू अपने मुँह में पानी लेकर मेरे मुँह में डाल दे। जब तक इस्राईली के मुँह में पानी रहता, तो पानी होता, और जब क़िब्ती के मुँह में जाता तो ख़ून बन जाता।

5. अकाल का अ़ज़ाब।

6. फल कम कर दिये गये।

7. तूफ़ान का अ़ज़ाब, इन सब अ़ज़ाबों का ज़िक्र क़ुरआन पाक में पारा 9 में है।

(तारीख़े दमिश्क़, हिस्सा 25, पेज 333)

सवालः— जहन्नम में काफ़िरों की रान, सुरीन और ज़बान की क्या कैफ़ियत होगी?

जवाबः— जहन्नम वालों यानी काफ़िरों की रान, मिस्ले वरक़ान, जो हिजाज़ का एक मशहूर पहाड़ है, हो जाएगी और उसकी मक़्अद यानी सुरीन इतनी मोटी हो जाएगी कि मदीने से रबज़ा तक के दर्मियानी ख़ला (जगह) को भर दे और एक कमज़ोर रिवायत में है कि उसकी ज़बान एक मील या दो मील लम्बी हो जाएगी यानी दो मील तक खिंच जाएगी। चलते वक़्त लोग उसको रौंदते हुए चल रहे होंगे। (फ़त्हुल बारी, हिस्सा 11, पेज 423-424)

वल्लाहु आलमु व इल्मुहू अतम्मु व अह्कमु
व आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन०

—अहक़रुल इबाद

मुहम्मद ग़ुफ़रान रशीदी केरानवी
ख़ादिम-ए-तदरीस, जामिया अशरफ़ुल उलूम, गंगोह
माह सफ़र 1421 हिजरी

फ़रीद बुक डिपो की हिन्दी किताबें

किताब	लेखक	मूल्य
इन्तिख़ाबे रशीद		7/-
इस्लामिक कुइज़	शाहिद हुसैन नदवी	27/-
अल्लाह से शर्म कीजिए	मौलाना मुहम्मद सलमान मन्सूरपूरी	125/-
अनवारे हिदायत	मुफ़्ती शब्बीर अहमद क़ासमी	158/-
आसान दीनी मसाइल	मुफ़्ती शब्बीर अहमद क़ासमी	60/-
अन्तिम संदेष्टाः कहां, कब और कौन?	मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी	90/-
इक़बाल की उर्दू शायरी	संपादकः मुहम्मद आरिफ़ इक़बाल	42/-
दीवान-ए-ग़ालिब	संकलनः एजाज़ शादाब शरीफ़ नगरी	65/-
प्रतिक्रिया (उपन्यास)	अज़ीज़ बर्नी	60/-
जिन्नात, सेक्स और इंसान	नागी बी.ए.	60/-
फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ का मुन्तख़ब कलाम	फ़ारूक़ अर्गली	50/-
नाफ़रमान औलाद का अंजाम	मुफ़्ती मुहम्मद राशिद	10/-
कुल्लियाते इक़बाल (मुकम्मल)	अल्लामा मुहम्मद इक़बाल	165/-
नूरे ख़िरामा	मुतरिब निज़ामी	15/-
सूरज चाँद ग्रहण और पवित्र क़ुरआन	अब्दुल करीम पारेख	14/-
समाज का मानसिक तनाव	अब्दुल करीम पारेख	6/-
सब्ज़ियों से इलाज	डा० वलीयुद्दीन जावेद	23/-
इश्क़िया शायरी	अता इब्ने फ़ितरत	75/-
दवा के बग़ैर एहतिलाम (स्वपनदोष) का साइन्टिफ़िक इलाज	डा० आफ़ताब अहमद शाह	12/-
शिकवा जवाबे शिकवा	अल्लामा मुहम्मद इक़बाल	12/-
नौजवानों के गुप्त रोग और उनका इलाज	अली असग़र चौधरी	23/-
नौजवानों की समस्यायें और उनका हल	अली असग़र चौधरी	44/-
हयातुस्सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) हिस्सा 1	मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी	200/-
हयातुस्सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) हिस्सा 2	मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी	275/-
हयातुस्सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) हिस्सा 3	मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ कांधलवी	275/-
सद्दाम हुसैनः सफ़र ज़िन्दगी का	अज़ीज़ बर्नी	100/-
अमलियात, आसेब और तसख़ीरे जिन्नात	अनुवादकः एम.एम. ख़ान	25/-
हल्लुल मुशकिलात	अनुवादकः एम.एम. ख़ान	35/-
पुराना असली इन्द्रजाल	अनुवादकः एम.एम. ख़ान	25/-
अमलियाते मुहब्बत	अनुवादकः एम.एम. ख़ान	22/-
ज़ीनतुल मीलाद उर्फ़ ज़नाना मीलाद शरीफ़	अनुवादकः एम.एम. ख़ान	50/-
मज़े-मज़े के सूप और सौस बनाइये और खाइये	शकीला नग़मा	32/-
मज़े-मज़े के आलू और अंडे के पकवान	शकीला नग़मा	20/-